समवाय-सुत्तं

महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर

प्रकाशक

प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

श्री जैन श्वे नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर

श्री जितयशाश्री फाउडेशन, कलकत्ता

प्रकाशकीय

आगमवेत्ता महोपाध्याय श्री चन्द्रप्रभसागर जी सम्पादित-अनुवादित 'समवाय-सुत्त' प्राकृत-भारती, पुष्प-७४ के रूप मे प्रकाशित करते हुए हमे प्रसन्नता है ।

आगम-साहित्य जैनधर्म की निधि है । इसके कारण आध्यात्मिक वाड्मय की अस्मिता अभिवर्द्धित हुई है । जैन-आगम-साहित्य को उसकी मौलिकताओ के साथ जनभोग्य सरस भाषा मे प्रस्तुत करने की हमारी अभियोजना है । 'समवाय-सुत्त' इस योजना की क्रियान्विति का अगला चरण है ।

'समवाय-सुत्त' जैन आगम-साहित्य का प्रमुख ग्रन्थ है । इसमे जैन धर्म के इतिहास के परिवेश मे जिन सूत्रो एव सन्दर्भो का आकलन हुआ है, उसकी उपयोगिता आज भी निर्विवाद है । इसके अनेक सूत्र वर्तमान अनुसन्धित्सुओ के लिए एक स्वस्थ दिशा-दर्शन हैं ।

ग्रन्थ के सम्पादक चन्द्रप्रभजी देश के सुप्रतिष्ठित प्रवचनकार है, चिन्तक है, लेखक हैं, कवि हैं । आगमो मे उनकी मेघा एव पकड तलस्पर्शी है । उनकी वैदुष्यपूर्ण प्रतिभा प्रस्तुत आगम मे सर्वत्र प्रतिबिम्बित हुई है । अनुवाद एव भाषा-वैशिष्ट्य इतना सजीव एव सटीक है कि ग्रन्थ की बोधगम्यता सहज, स्वाभाविक एव प्रभावक बन गई है । मूल पाठ की विशुद्धता ग्रन्थ की अतिरिक्त विशेषता है ।

गणिवर श्री महिमाप्रभसागरजी ने इस आगम-प्रकाशन-अभियान के लिए हमे उत्साहित किया, एतदर्थ हम उनके हृदय से आभारी हैं ।

पारसमल मसाली	**प्रकाशचन्द दफ्तरी**	**देवेन्द्रराज मेहता**
अध्यक्ष	सचिव	सचिव
श्री जैन श्वे नाकोडा	श्री जितयशाश्री फाउण्डेशन	प्राकृत भारती अकादमी
पार्श्व तीर्थ, मेवानगर	कलकत्ता	जयपुर

पूर्व स्वर

आगम-सम्पदा अध्यात्म-पुरुषो की अभिव्यक्त अस्मिता है। युग-युग के मनीषी-चिन्तन आगमो मे सकलित एव सरक्षित हैं। धर्म एव दर्शन तो इनकी आधार-भूमिका है, किन्तु जन-सस्कृति आगमो मे जिस ढग से आत्मसात् हुई है, वह बेमिसाल है। आगम प्राचीन है, किन्तु वर्तमान के द्वार पर सदैव उसका स्वागत होता रहेगा।

आगमो की रचना हुए कई शतक बीत गये, परन्तु ऐतिहासिक सन्दर्भों की अगवानी के लिए हमारी दस्तक युग-युग की देहरी पर है। 'समवाय-सुत्त' मात्र आगम ही नही, अपितु इतिहास का एक बडा दस्तावेज भी है। इसमे हमारा प्राचीन गौरव और इतिहास सुरक्षित हुआ है।

'समवाय-सुत्त' आगम-क्रम मे चौथा अग-आगम होते हुए भी आगमो की समग्रता का प्रतिनिधि-ग्रन्थ है। आगम-सूत्रो का यह प्रास्ताविक भी है और उपसहार भी। एक प्रकार से यह सग्रह-ग्रन्थ है, सन्दर्भ-कोष है, विज्ञप्ति-विधान है। इसके दस्तावेज मे ऐसे अनेक सूत्र इन्द्राज हुए हैं, जिनसे अतीत के मोटे परदे उघडते हैं। कोष-शैली एव सख्यात्मक तथ्य-प्रस्तुति 'स-सु' के व्यक्तित्व की पारदर्शिता है। ग्रन्थ का प्रारम्भ एकत्ववाची तथ्यो से हुआ है, पर समापन अनन्त की गोद मे। इतिहास किलकारियाँ भर रहा है, तथ्य अँगडाईयाँ ले रहे हैं, 'स-सु' के वर्तमान धरातल पर।

यह वह समृद्ध-कोष है, जिससे कई वैज्ञानिक सम्भावनाएँ जन्म ले सकती है। यदि सृजन-धर्मी अनुशीलन किया जाए, तो अतीत की यह थाती वर्तमान के लिए विस्मयकारी रोशनी की धार साबित हो सकती है। भौतिकी, जैविकी एव भौगोलिकी को उघाडने/निहारने के लिए 'स-सु' की वैज्ञानिकता एव उपयोगिता विवाद-मुक्त है। जल, थल, नभ की मोटी-मोटी परतो का 'स-सु' ने आखिर कितना बारीकी से उद्घाटन किया है। ऋषि-मुनि कहलाने वाले वैरागी लोगो

विषय-निर्देश

नवमो समवाओ/नौवा समवाय

ब्रह्मचर्य-गुप्तियाँ, अगुप्तियाँ, ब्रह्मचर्य/आचाराग के अध्ययन, पार्श्व की अवगाहना, नक्षत्र, तारा-सचार, जम्बूद्वीप मे मत्स्यप्रवेश, विजयद्वार, वाणमन्तरो की सुधर्मा-सभा, दर्शनावरण की प्रकृतियाँ, स्थिति, श्वासो-च्छ्वास, आहार, सिद्धि । ३०

दसमो समवाओ/दसवा समवाय

श्रमण-धर्म, समाधिस्थान, मन्दर-पर्वत, अरिष्टनेमि की अवगाहना, ज्ञानवृद्धिकारी नक्षत्र, कल्पवृक्ष, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि । ३४

एक्कारसमो समवाओ/ग्यारहवा समवाय

उपासकप्रतिमा, ज्योतिश्चक्र, महावीर के गणधर, मूलनक्षत्र, ग्रैवेयक, मदर-पर्वत, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि । ३८

बारसमो समवाओ/बारहवा समवाय

भिक्षुप्रतिमा, सभोग, कृतिकर्म, विजया-राजधानी, बलदेव-राम, मन्दर-चूलिका, जम्बूद्वीप-वेदिका, न्यूनतम रात्रि-दिवस, ईषत्प्राग्भार पृथ्वी, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि । ४१

तेरसमो समवाओ/तेरहवा समवाय

क्रियास्थान, विमानप्रस्तट, जलचर-पचेन्द्रिय जीवो की कुलकोटि, प्राणायुपूर्व के वस्तु, प्रयोग, सूर्यमण्डल का विस्तार, स्थिति, आहार, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, सिद्धि । ४५

चउद्दसमो समवाओ/चौदहवा समवाय

भूतग्राम, पूर्व, जीवस्थान, भरत-ऐरवत-जीवा, चक्रवर्ती-रत्न, महा-नदी, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि । ४८

पण्णरसमो समवाओ/पन्द्रहवा समवाय

परमाधार्मिक देव, नमि की अवगाहना, ध्रुवराहु नक्षत्र, पन्द्रह मुहुर्त्त के दिन-रात्रि, विद्यानुवाद-पूर्व के वस्तु, मनुष्य-प्रयोग, स्थिति, श्वासोच्छ्-वास, आहार, सिद्धि । ५२

सोलसमो समवाओ/सोलहवा समवाय

गाथाषोडशक, कषाय, मन्दरनाम, पार्श्व की श्रमण-सपदा, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि । ५६

सत्तरसमो समवाओ/सतरहवा समवाय

असयम, सयम, मानुषोत्तर-पर्वत, आवासपर्वत, चारणगति, चमर

□□

समवाय - सुत्तं

पढमो समवाओ

१ सुयं मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

२ इह खलु समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगुत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरणाणदंसणधरेणं वियट्टच्छउमेणं जिणेणं जावएणं तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते, तं जहा—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विआहपण्णत्ती नायधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए ।

पहला समवाय

१ सुना है मैंने आयुष्मन् ! उन भगवान् द्वारा इस प्रकार कथित है—

२ आदिकर, तीर्थंकर, स्वयं-सम्बुद्ध, पुरुषोत्तम, पुरुष-सिंह, पुरुषवर-पुण्डरीक / पुरुष-कमल, पुरुष-वर-गन्धहस्ती, लोकोत्तम, लोकनाथ, लोक-हृदय, लोक-प्रदीप, लोक-प्रद्योतकर, अभयदाता, चक्षुदाता, मार्गदाता, शरणदाता, जीवदाता, बोधिदाता, धर्मदाता, धर्मदेशक, धर्मनायक, धर्म-सारथी, धर्म-वर-चातुरन्त/चतुर्दिक्-चक्रवर्ती, अप्रतिहत/शाश्वत-श्रेष्ठ-ज्ञान-दर्शन-धारक, विवृत्तछद्म/निर्दोष, जिन, ज्ञापक, तीर्ण, तारक, बुद्ध, बोधक, मुक्त, मोचक, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, शिव, अचल, अरुज / रोगमुक्त, अनन्त, अक्षय, अव्याबाध / व्यवधान-रहित, अपुनरावर्तक/पुनर्जन्म-रहित, सिद्धि-गति नामक स्थान सम्प्राप्त करने वाले श्रमण भगवान् महावीर द्वारा यह द्वादशांग गणिपिटक प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

आचार, सूत्रकृत, स्थान, समवाय, व्याख्या-प्रज्ञप्ति, ज्ञाता-धर्मकथा, उपासक-दशा, अन्तकृत्-दशा, अनुत्तरोपपाति-दशा, प्रश्न-व्याकरण, विपाक-श्रुत और दृष्टिवाद ।

३. तत्थ ण जेसे चउत्थे अगे समवाएत्ति आहिते, तस्स ण अयमट्ठे, तं जहा—	३ इनमे जो चौथा अग है, वह समवाय कथित है । उसका यह अर्थ है । जैसे कि—
४. एगे आया ।	४ आत्मा एक है ।
५. एगे अणाया ।	५ अनात्मा एक है ।
६. एगे दडे ।	६ दण्ड/हिसा एक है ।
७. एगे अदडे ।	७ अदण्ड/अहिसा एक है ।
८. एगा किरिआ ।	८ क्रिया एक है ।
९. एगा अकिरिआ ।	९ अक्रिया एक है ।
१०. एगे लोए ।	१० लोक एक है ।
११. एगे अलोए ।	११ अलोक एक है ।
१२. एगे धम्मे ।	१२. धर्म एक है ।
१३ एगे अधम्मे ।	१३ अधर्म एक है ।
१४. एगे पुण्णे ।	१४ पुण्य एक है ।
१५. एगे पावे ।	१५ पाप एक है ।
१६. एगे बधे ।	१६ बन्ध एक है ।
१७. एगे मोक्खे ।	१७ मोक्ष एक है ।
१८. एगे आसवे ।	१८ आस्रव/कर्म-स्रोत एक है ।
१९ एगे सवरे ।	१९ सवर/कर्म-अवरोध एक है ।
२०. एगा वेयणा ।	२० वेदना एक है ।
२१. एगा णिज्जरा ।	२१ निर्जरा/कर्म-क्षय एक है ।

२२ जबुद्दीवे दीवे एग जोयणसय-सहस्स आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।

२२ जम्बुद्वीप-द्वीप एक शत-सहस्र/एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२३ अप्पइट्ठाणे नरए एग जोयण-सयसहस्स आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।

२३ अप्रतिष्ठान नरक एक शत-सहस्र/एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२४ पालए जाणविमाणे एग जोयण-सयसहस्स आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।

२४ पालक-यान विमान एक शत-सहस्र/एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२५ सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण पण्णत्ते ।

२५ सर्वार्थसिद्ध महाविमान एक शत-सहस्र/एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२६ अद्दानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२६ आर्द्रा-नक्षत्र का एक तारा प्रज्ञप्त है ।

२७ चित्तानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२७ चित्रा-नक्षत्र का एक तारा प्रज्ञप्त है ।

२८ सातिनक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते ।

२८ स्वाति-नक्षत्र का एक तारा प्रज्ञप्त है ।

२९ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

२९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिको की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

३० इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिको की उत्कृष्टत एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३१ दोच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

३१ दूसरी [शर्कराप्रभा] पृथ्वी पर नैरयिको की जघन्यत/न्यूनत एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३२ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

३२ कुछेक असुरकुमार देवो की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३३ असुरकुमाराण देवाण उक्कोसेण एग साहिय सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

३३ असुरकुमार देवो की उत्कृष्टत स्थिति एक सागरोपम से अधिक प्रज्ञप्त है ।

३४. असुरकुमारिंदवज्जियाण भोमिज्जाण देवाण अत्थेगइयाण एग पलिओवमं ठिई पण्णत्ता ।

३४ असुरकुमारेन्द्र को छोडकर कुछेक भौमिज्ज/भवनवासी देवो की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३५ असखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणियाण अत्थेगइयाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

३५ कुछेक असख्य-वर्षायु सज्ञी/समनस्क पचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक जीवो की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३६ असखेज्जवासाउयगब्भववकतियसण्णिमणुयाण अत्थेगइयाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

३६ कुछेक असख्य-वर्षायु गर्भोपक्रान्तिक/गर्भज सज्ञी/समनस्क मनुष्यो की एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३७ वाणमतराण देवाण उक्कोसेण एग पलिओवण ठिई पण्णत्ता ।

३७ वान-व्यन्तर देवो की उत्कृष्टत एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

३८ जोइसियाण देवाण उक्कोसेण एग पलिओवम वाससयसहस्समब्भहिय ठिई पण्णत्ता ।

३८ ज्योतिष्क देवो की उत्कृष्टत एक पल्योपम से एक शत-सहस्र/एक लाख वर्ष अधिक प्रज्ञप्त है ।

३९ सोहम्मे कप्पे देवाण जहण्णेण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

३९ सौधर्मकल्प देवो की जघन्यत /न्यूनत एक पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४० सोहम्मे कप्पे देवाण अत्थेगइयाण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

४० कुछेक सौधर्मकल्प देवो की एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४१ ईसाणे कप्पे देवाण जहण्णेण साइरेग एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ।

४१ ईशानकल्प देवो की जघन्यत /न्यूनत स्थिति एक पल्योपम से अधिक प्रज्ञप्त है ।

४२ ईसाणे कप्पे देवाण अत्थेगइयाण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

४२ कुछेक ईशानकल्प देवो की एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४३ जे देवा सागर सुसागर सागरकत भव मणु माणुसोत्तर लोगहिय विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण एग सागरोवम ठिई पण्णत्ता ।

४३ जो देव सागर, सुसागर, सागरकान्त, भव, मनु, मानुपोत्तर और लोकहित विमान मे देवत्व मे उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत एक सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

४४ ते ण देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

४४ वे देव एक अर्धमास/पक्ष मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

४५ तेसि ण देवाण एगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुपज्जइ ।

४५ उन देवो के एक हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

४६ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगेण भवग्गहणेण सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

४६ कुछेक भवसिद्धिक जीव हैं, जो एक भवग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

बीओ समवाओ

दूसरा समवाय

१. दो दंडा पण्णत्ता, त जहा—
अट्ठादडे चेव, अणट्ठादडे चेव।

१ दण्ड/हिंसा दो प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
अर्थदण्ड/प्रयोजनभूत हिंसा और
अनर्थदण्ड/निष्प्रयोजन हिंसा।

२. दुवे रासी पण्णत्ता, त जहा—
जीवरासी चेव, अजीवरासी
चेव।

२ राशि दो प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
जीव-राशि और अजीव-राशि।

३. दुविहे बधणे पण्णत्ते, तं जहा—
रागबधणे चेव, दोसबधणे चेव।

३ बन्धन द्विविध प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
राग-बन्धन और द्वेप-बन्धन।

४ पुव्वाफग्गुणीनक्खत्ते दुतारे
पण्णत्ते।

४ पूर्वाफाल्गुनी-नक्षत्र के दो तारे प्रज्ञप्त
है।

५. उत्तराफग्गुणीनक्खत्ते दुतारे
पण्णत्ते।

५ उत्तराफाल्गुनी-नक्षत्र के दो तारे
प्रज्ञप्त हैं।

६. पुव्वाभद्दवयानक्खत्ते दुतारे
पण्णत्ते।

६ पूर्वाभाद्रपदा-नक्षत्र के दो तारे
प्रज्ञप्त है।

७ उत्तराभद्दवयानक्खत्ते दुतारे
पण्णत्ते।

७ उत्तराभाद्रपदा-नक्षत्र के दो तारे
प्रज्ञप्त है।

८. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए
अत्थेगइयाण नेरइयाण दो
पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक
नैरयिको की दो पल्योपम स्थिति
प्रज्ञप्त हैं।

९ दुच्चाए पुढवीए अत्थेगइयाण
नेरइयाण दो सागरोवमाइ ठिई
पण्णत्ता।

९ दूसरी [शर्कराप्रभा] पृथ्वी पर
कुछेक नैरयिको की दो सागरोपम
स्थिति प्रज्ञप्त है।

१० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० कुछेक असुरकुमार देवो की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ असुरिंदवज्जियाण भोमिज्जाण देवाण उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ असुरकुमारेन्द्र को छोडकर कुछेक भौमिज्ज/भवनवासी देवो की दो पल्योपम से कुछ कम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ असखेज्जवासाउयसण्णि-पचेंदिय-तिरिक्खजोणिआण अत्थेगइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ कुछेक असख्य-वर्षायु सज्ञी/समनस्क पचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक जीवो की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३ असखेज्जवासाउयगब्भवक्कतिय-सण्णिमणुस्साण अत्थेगइयाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ कुछेक असख्य-वर्षायु गर्भोपक्रान्तिक/गर्भज सज्ञी/समनस्क मनुष्यो की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४ सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाण देवाणं दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ सौधर्मकल्प मे कुछेक देवो की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाण देवाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ ईशानकल्प मे कुछेक देवो की दो पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६ सोहम्मे कप्पे देवाण उक्कोसेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ सौधर्मकल्प मे कुछेक देवो की उत्कृष्टत दो सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७ ईसाणे कप्पे देवाण उक्कोसेण साहियाइ दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१७ ईशानकल्प मे देवो की स्थिति दो सागरोपम से अधिक प्रज्ञप्त है ।

१८ सणकुमारे कप्पे देवाण जहण्णेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ सनत्कुमार कल्प मे देवो की जघन्यत / न्यूनत दो सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१९ माहिदे कप्पे देवाण जहण्णेण साहियाइ दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१९ माहेन्द्र कल्प मे देवो की जघन्यत / न्यूनत दो सागरोपम से अधिक स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२०. जे देवा सुभ सुभकत सुभवण्ण सुभगध सुभलेस सुभफास सो-हम्मवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२० जो देव शुभ, शुभकान्त, शुभवर्ण, शुभ-गन्ध, शुभलेश्य, शुभस्पर्श, सौधर्म-वितंसक विमान मे देवत्व मे उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत दो सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२१ तेण देवा दोण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

२१ वे देव दो अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते हैं, उच्छ्-वास लेते है, निःश्वास छोडते हैं ।

२२. तेसि णं देवाण दोहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ ।

२२ उन देवो के दो हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२३. अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे दोहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण-मत करिस्सति ।

२३ कुछेक भव सिद्धिक जीव है, जो दो भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

तइओ समवाओ

१. तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा—
मणदंडे वइदंडे कायदंडे ।

२ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती ।

३ तओ सल्ला पण्णत्ता, तं जहा—
मायासल्ले णं नियाणसल्ले णं मिच्छादंसणसल्ले णं ।

४ तओ गारवा पण्णत्ता, तं जहा—
इड्ढीगारवे रसगारवे सायागारवे ।

५ तओ विराहणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा ।

६. मिगसिरनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

७ पुस्सनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

८ जेट्ठानक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

९ अभीइनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

१०. सवणनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

तीसरा समवाय

१ दण्ड तीन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
मन-दण्ड, वचन-दण्ड, काय-दण्ड ।

२ गुप्ति तीन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
मन-गुप्ति, वचन-गुप्ति, काय-गुप्ति ।

३ शल्य / चुभन तीन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
माया-शल्य, निदान-शल्य, मिथ्या-दर्शन-शल्य ।

४ गौरव / आदर्श तीन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
ऋद्धि-गौरव, रस-गौरव, साता-गौरव ।

५ विराधना / अवहेलना तीन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
ज्ञान-विराधना, दर्शन-विराधना, चारित्र-विराधना ।

६ मृगशिर नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त है।

७ पुण्य-नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं।

८ ज्येष्ठा नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त है।

९ अभिजित नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त हैं।

१० श्रवण नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त है।

११ असिणिनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

११ अश्विनी नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त है।

१२. भरणीनक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।

१२ भरणी नक्षत्र के तीन तारे प्रज्ञप्त है।

१३ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछ नैरयिको की तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. दोच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेणं तिण्णी सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ दूसरी [शर्कराप्रभा] पृथ्वी पर नैरयिको की उत्कृष्टत तीन सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. तच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ तीसरी [वालुकाप्रभा पृथ्वी पर] नैरयिको की जघन्यत /न्यूनत तीन सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ कुछेक असुरकुमार देवो की तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त हे ।

१७ असखेज्जवासाउयसण्णि पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१७ कुछेक असख्य-वर्षायु सज्ञी/समनस्क पचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक जीवो की उत्कृष्टत तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१८. असखेज्जवासाउयगब्भवक्कतियसण्णिमणुस्साण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ कुछेक असख्य-वर्षायु गर्भोपक्रान्तिक/गर्भज सज्ञी/समनस्क मनुष्यो की उत्कृष्टत तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तिण्णि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१९ सौधर्म-ईशानकल्प मे कुछेक देवो की तीन पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२०. सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२० सनत्कुमार-माहेन्द्रकल्प मे कुछेक देवो की तीन सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२१ जे देवा आभकर पभकर अभंयरपभाकर चद चदावत्त चदप्पभं चदकत चदवण्ण चद्रलेस चदज्भय चदसिग चद-सिट्ठ चदकूड चदुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२१ जो देव आभकर, प्रभकर, आभकर-प्रभकर, चन्द्र, चन्द्रावर्त, चन्द्रप्रभ, चन्द्रकान्त, चन्द्रवर्ण, चन्द्रलेश्य, चन्द्र-ध्वज, चन्द्रशृग, चन्द्रसृष्ट, चन्द्रकूट और चन्द्रोत्तरावतमक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत तीन सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२२ ते ण देवा तिण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

२२ वे देव तीन अर्धमासो/पक्षोमे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्-वास लेते है, नि श्वास छोडते हैं ।

२३ तेसि णं देवाण उक्कोसेण तिहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समु-प्पज्जइ ।

२३ उन देवो के तीन हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तिहिं भवग्गहणेहिं सिज्भि-स्सति बुज्भिस्सति मुच्चि-स्सति परिनिव्वाइस्सति सव्व दुक्खाणमत करिस्सति ।

२४ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो तीन भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

चउत्थो समवाओ

१ चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—
कोहकसाए माणकसाए माया-कसाए लोभकसाए।

२. चत्तारि झाणा पण्णत्ता, तं जहा—
अट्टे झाणे रोद्दे झाणे धम्मे झाणे सुक्के झाणे।

३. चत्तारि विगहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
जहा इत्थिकहा भत्तकहा राय-कहा देसकहा।

४. चत्तारि सण्णा पण्णत्ता, तं जहा—
आहारसण्णा भयसण्णा मेहुण-सण्णा परिग्गहसण्णा।

५ चउव्विहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—
पगडिबंधे ठिइबंधे अणुभावबंधे पएसबंधे।

६ चउगाउए जोयणे पण्णत्ते।

७. अणुराहानक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते।

चौथा समवाय

१ कषाय/अन्तर-विकार चार प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
क्रोध-कषाय, मान-कषाय, माया-कषाय, लोभ-कषाय।

२ ध्यान/एकाग्रता चार प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
आर्त-ध्यान, रौद्र-ध्यान, धर्म-ध्यान, शुक्ल-ध्यान।

३ विकथा चार प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
स्त्री-कथा, भक्त-कथा, राज-कथा, देश-कथा।

४ संज्ञा/विषय-वृत्ति चार प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
आहार-संज्ञा, भय-संज्ञा, मैथुन-संज्ञा, परिग्रह-संज्ञा।

५ बन्ध/अवस्थिति चार प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
प्रकृति-बन्ध, स्थिति-बन्ध, अनुभाव-बन्ध, प्रदेश-बन्ध।

६ योजन चार गव्यूति/कोस का प्रज्ञप्त है।

७ अनुराधा नक्षत्र के चार तारे प्रज्ञप्त है।

८ पुव्वासाढनक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते।

८ पूर्वाषाढा नक्षत्र के चार तारे प्रज्ञप्त हैं।

९ उत्तरासाढनक्खत्ते चउत्तारे पण्णत्ते।

९ उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे प्रज्ञप्त हैं।

१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१० इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की चार पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११ तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

११ तीसरी पृथिवी [वालुकाप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की चार सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ कुछेक असुरकुमार देवो की चार पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१३ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की चार पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४ सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१४ सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प मे कुछेक देवो की चार सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५ जे देवा किट्ठि सुकिट्ठि किट्ठियावत्त किट्ठिप्पभ किट्ठिकत किट्ठिवण्ण किट्ठिलेस किट्ठिज्झय किट्ठिसिंग किट्ठिसिट्ठ किट्ठिकूड किट्ठुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१५ जो देव कृष्टि, सुकृष्टि, कृष्टि-आवर्त, कृष्टिप्रभ, कृष्टियुक्त, कृष्टिवर्ण, कृष्टिलेश्य, कृष्टिध्वज, कृष्टिशृग, कृष्टिसृष्ट, कृष्टिकूट और कृष्टि-उत्तरावतसक विमान मे देवत्व मे उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत चार सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६. ते णं देवा चउण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१६ वे देव चार अर्धमासो पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्-वास लेते है, नि श्वास छोडते है ।

१७ तेसि देवाणं चउहिं वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ उन देवो के चार हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८. अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउहि भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।

१८ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो चार भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

पंचमो समवाओ

१. पच किरिया पण्णत्ता, त जहा—
काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारियावणिआ पाणाइवाय-किरिया ।

२ पच महव्वया पण्णत्ता, त जहा—
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण
सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण
सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण
सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण
सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ।

३ पच कामगुणा पण्णत्ता, त जहा—
सद्दा रूवा रसा गधा फासा ।

४. पच आसवदारा पण्णत्ता, त जहा—
मिच्छत्त अविरई पमाया कसाया जोगा ।

५. पंच संवरदारा पण्णत्ता, त जहा—
सम्मत्त विरई अप्पमाया अकसाया अजोगा ।

पाँचवां समवाय

१ क्रिया / प्रवृत्ति पाँच प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
कायिकी / शरीर-प्रवृत्ति, आधिकारणिकी / शस्त्र-प्रवृत्ति, प्राद्वेषिकी / दुर्भाव-प्रवृत्ति, पारितापनिका / सन्त्रास-प्रवृत्ति, प्राणातिपात-क्रिया / घात-प्रवृत्ति ।

२ महाव्रत पाँच प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
सर्व प्राणातिपात से विरमण/निवृत्ति, सर्व मृषावाद से विरमण, सर्व अदत्तादान से विरमण, सर्व मैथुन से विरमण, सर्व परिग्रह से विरमण ।

३ कामगुण/वासना पाँच प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श ।

४ आस्रव-द्वार/कर्म-स्रोत-माध्यम पाँच प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
मिथ्यात्व / अश्रद्धान्, अविरति / आसक्ति, प्रमाद/मूर्च्छा, कषाय/ अन्तर-विकार, योग/तादात्म्य ।

५ सवर-द्वार / कर्म-अवरोधक-साधन पाँच प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
सम्यक्त्व, विरक्ति, अप्रमत्तता, अकषायता, अयोगता ।

६. पच निज्जरट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—
पाणाइवायाश्रो वेरमण मुसावायाश्रो वेरमण श्रदिण्णादाणाश्रो वेरमण मेहुणाश्रो वेरमण परिग्गहाश्रो वेरमण ।

६ निर्जरा-स्थान / कर्म-क्षय-साधन पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
प्राणातिपात-विरमण, मृषावाद-विरमण, श्रदत्तादान-विरमण, मैथुन-विरमण, परिग्रह-विरमण ।

७. पच समिईश्रो पण्णत्ताश्रो, त जहा—
इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई श्रायाण-भड-मत्तनिक्खेवणासमिई उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिई ।

७ समिति / सयम-प्रवृत्ति पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
ईर्या-समिति / पथदृष्टि-सयम, भाषा-समिति/वाणी-सयम, एषणा-समिति/ भिक्षा-सयम, श्रादान-भाड-मात्र-निक्षेपणा समिति / स्थापन-सयम, उच्चार/मल प्रस्रवण/मूत्र श्लेष्म/ कफ सिंघाण / नासिकामल जल्ल/ शरीर-मैल प्रतिष्ठापना-समिति/ परित्याग-सयम ।

८. पच श्रत्थिकाया पण्णत्ता, त जहा—
धम्मत्थिकाए श्रधम्मत्थिकाए श्रागासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए ।

८ श्रस्तिकाय/प्रदेशवान् पाँच प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
धर्मास्तिकाय/गमन, श्रधर्मास्तिकाय/ स्थिति, श्राकाशास्तिकाय/स्थान-दान, जीवास्तिकाय/चैतन्य, पुद्गलास्तिकाय/श्रजीव ।

९. रोहिणीनक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ।

९ रोहिणी-नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त है ।

१० पुणव्वसुनक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ।

१० पुनर्वसु-नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त हैं ।

११. हत्यनक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ।

११ हस्त-नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त हैं ।

१२. विसाहानक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते ।

१२ विशाखा नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त हैं ।

१३ धणिट्ठानक्खत्ते पचतारे पण्णत्ते।

१३ घनिष्ठा-नक्षत्र के पाँच तारे प्रज्ञप्त है।

१४ इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पच पलिओवमाइ ठिई पण्णता।

१४ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरकियो की पाँच पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५ तच्चाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पच सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१५ तीसरी पृथ्वी [वालुकाप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की पाँच सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण पच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१६ कुछेक असुरकुमार देवो की पाँच पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१७ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण पच पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१७ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की पाँच पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१८ सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण पच सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१८ सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प मे कुछेक देवो की पाँच सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१९ जे देवा वाय सुवाय वातावत्त वातप्पभ वातकत वातवण्ण वातलेस वातज्झय वातसिंग वातसिट्ठ वातकूड वाउत्तरवडेंसग सूर सुसूर सूरावत्त सूरप्पभ सूरकत सूरवण्ण सूरलेस सूरज्झय सूरसिंग सूरसिट्ठ सूरकूड सूरुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण पच सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१९ जो देव वात, सुवात, वातावर्त, वातप्रभ, वातकान्त, वातवर्ण, वातलेश्य, वातध्वज, वातशृग, वातसृष्ट, वातकूट, वातोत्तरावतसक, सूर, सुसूर, सूरावर्त, सूरप्रभ, सूरकान्त, सूरवर्ण, सूरलेश्य, सूरध्वज, सूरशृग, सूरसृष्ट, सूरकूट और सूरोत्तरावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत पाँच सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

२०. ते णं देवा पचण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

२० वे देव पाँच अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्-वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

२१. तेसि ण देवाण पर्चाह वाससह-स्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२१ उन देवो के पाँच हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२२. सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पर्चाहि भवग्गहणेहि सिज्भिस्सति बुज्भिस्सति मुच्चिस्सति परि-निव्वाइसति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

२२ कुछेक भव सिद्धिक जीव हैं, जो पाँच भव ग्रहणकर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

छट्ठो समवाओ

१ छल्लेसा पण्णत्ता, त जहा—
कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा ।

२. छज्जीवनिकाया पण्णत्ता, त जहा—
पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

३ छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे पण्णत्ते, त जहा—
अणसणे ओमोदरिया वित्ति-सखेवो रसपरिच्चाओ काय-किलेसो सलीणया ।

४. छव्विहे अब्भितरे तवोकम्मे पण्णत्ते, त जहा—
पायच्छित्त विणओ वेयावच्च सज्झाओ झाण उस्सग्गो ।

५ छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—
वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणतियसमुग्घाए वेउव्विय-समुग्घाए तेयसमुग्घाए आहार-समुग्घाए ।

छठा समवाय

१ लेश्या/चित्तवृत्ति छह प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
कृष्ण-लेश्या / सक्लेश-वृत्ति, नील-लेश्या/रौद्र-वृत्ति, कापोत-लेश्या/आर्त-वृत्ति, तेजो-लेश्या/परोपकार-वृत्ति, पद्म-लेश्या/विवेक-वृत्ति, शुक्ल-लेश्या/निर्मल-वृत्ति ।

२ जीव के छह निकाय/सकाय प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
पृथिवीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय/गतिशील ।

३ बाह्य तपोकर्म छह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
अनशन/उपवास, ऊनोदरिका/अल्प-भोजन, वृत्ति-सक्षेप/शारीरिक वृत्ति-निरोध, रस-परित्याग/स्वाद-विजय, कायक्लेश / सहिष्णुता, सलीनता/इन्द्रिय-गोपन ।

४ आभ्यन्तर-तप छह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य/सेवा, स्वाध्याय, ध्यान, व्युत्सर्ग/कायोत्सर्ग ।

५ छाद्मस्थिक/सामारिक समुद्घात/प्रदेश-विस्तार छह प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
वेदना-समुद्घात, कषाय-समुद्घात, मारणान्तिक-समुद्घात, वैक्रिय-समुद्घात, तेजस्-समुद्घात, आहा-रक-समुद्घात ।

६ छव्विहे अत्थुग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—
सोइंदिय-अत्थुग्गहे चक्खिंदिय-अत्थुग्गहे घाणिंदिय-अत्थुग्गहे जिब्भिंदिय-अत्थुग्गहे फासिंदिय-अत्थुग्गहे नोइंदिय-अत्थुग्गहे।

६ अर्थावग्रह/अर्थ-बोध छह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
श्रोत्रेन्द्रिय-अर्थावग्रह, चक्षुरिन्द्रिय-अर्थावग्रह, घ्राणेन्द्रिय-अर्थावग्रह, जिह्वेन्द्रिय-अर्थावग्रह, स्पर्शनेन्द्रिय-अर्थावग्रह, नोइन्द्रिय/मन-अर्थावग्रह।

७ कत्तियानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते।

७ कृत्तिका नक्षत्र के छह तारे प्रज्ञप्त हैं।

८. असिलेसानक्खत्ते छतारे पण्णत्ते।

८ आश्लेषा नक्षत्र के छह तारे प्रज्ञप्त हैं।

९ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की छह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१० तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१० तीसरी पृथिवी [वालुकाप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की छह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११ असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११ कुछेक असुरकुमार देवों की छह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२ सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की छह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३ सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प में कुछेक देवों की छह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४ जे देवा सयभुं सयभुरमणं घोस सुघोस महाघोस किट्ठिघोस वीर सुवीर वीरगत वीरसेणिय वीरावत्त वीरप्पभ वीरकत वीरवण्ण वीरलेस वीरज्झय वीरसिंगं वीरसिट्ठ वीरकूड वीरुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसिं ण देवाण उक्कोसेण छ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ जो देव स्वयम्भू, स्वयम्भूरमण, घोप, सुघोष, महाघोष, कृष्टिघोष, वीर, सुवीर, वीरगत, वीरश्रेणिक, वीरावर्त, वीरप्रभ, वीरकात, वीरवर्ण, वीरलेश्य, वीरध्वज, वीरश्रृग, वीरसृष्ट, वीरकूट और वीरोत्तरावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत छह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५ ते णं देवा छण्हं अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१५ वे देव छह अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते है, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते है ।

१६ तेसि ण देवाण छहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई ।

१६ उन देवो के छह हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१७ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे छहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१७ कुछेक भव सिद्धिक जीव हैं, जो छह भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

सत्तमो समवाओ

१ सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—
इहलोगभए परलोगभए आदाण-भए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए।

२ सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—
वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणतियसमुग्घाए वेउव्विय-समुग्घाए तेयसमुग्घाए आहार-समुग्घाए केवलिसमुग्घाए।

३ समणे भगव महावीरे सत्त रय-णीओ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

४. सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता, त जहा—
चुल्लहिमवते महाहिमवंते निसढे नीलवते रुप्पी सिहरी मदरे।

५ सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा—
भरहे हेमवते हरिवासे महा-विदेहे रम्मए हेरण्णवते एरवए।

६ खीणमोहे ण भगवं मोहणिज्ज-वज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ वेएई।

सातवां समवाय

१ भयस्थान सात प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
इहलोक-भय परलोक-भय, आदान-भय, अकस्मात्-भय, आजीव-भय, मरण-भय, अश्लोक/निन्दा-भय।

२ समुद्घात सात प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
वेदना-समुद्घात, कषाय-समुद्घात, मारणान्तिक-समुद्घात, वैक्रिय-समुद्घात, आहारक-समुद्घात, केवलि-समुद्घात।

३ श्रमण भगवान् महावीर ऊँचाई की दृष्टि से सात रत्निक/हाथ ऊँचे थे।

४ इस जम्बुद्वीप द्वीप मे वर्षधर पर्वत सात प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
क्षुल्लक, हिमवन्त, महाहिमवन्त, निषध, नीलवन्त, रुक्मी, शिखरी, मन्दर/सुमेरु।

५ इस जम्बुद्वीप द्वीप मे वास/क्षेत्र सात प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
भरत, हैमवत, हरिवर्ष, महाविदेह, रम्यक, ऐरण्यवत, ऐरवत।

६ क्षीणमोह भगवान् मोहनीय कर्म का वर्जन कर सात कर्म-प्रकृतियो का वेदन करते है।

७ महानक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते ।

७ मघा-नक्षत्र के सात तारे प्रज्ञप्त हैं।

८ कत्तिग्राइया सत्त नक्खत्ता पुव्व-दारिश्रा पण्णत्ता ।

८ कृत्तिका आदि सात नक्षत्र पूर्वद्वारिक प्रज्ञप्त हैं।

६ महाइया सत्त नक्खत्ता दाहिण-दारिश्रा पण्णत्ता ।

६ मघा आदि सात नक्षत्र दक्षिण-द्वारिक प्रज्ञप्त हैं।

१० श्रणुराहाइया सत्त नक्खत्ता श्रवर-दारिश्रा पण्णत्ता ।

१० अनुराधा आदि सात नक्षत्र अपर/पश्चिमद्वारिक प्रज्ञप्त है।

११ धणिट्ठाइया सत्त नक्खत्ता उत्तर-दारिश्रा पण्णत्ता ।

११ धनिष्ठा आदि सात नक्षत्र उत्तर-द्वारिक प्रज्ञप्त हैं।

१२. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए श्रत्येगइयाण नेरइयाण सत्त पलिश्रोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिको की सात पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३ तच्चाए ण पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ तीसरी पृथिवी [वालुकाप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की उत्कृष्टत सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४ चउत्थीए ण पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ चौथी पृथिवी [पकप्रभा] पर नैरयिको की जघन्यत /न्यूनत सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. असुरकुमाराण देवाण श्रत्येगइयाण सत्त पलिश्रोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ कुछेक असुरकुमार देवो की सात पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु श्रत्येगइयाण देवाण सत्त पलिश्रोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की सात पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१७ सणकुमारे कप्पे श्रत्येगइयाण देवाण उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१७ सनत्कुमार कल्प मे देवो की उत्कृष्टत सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१८. माहिंदे कप्पे देवाण उक्कोसेण साइरेगाइ सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ माहेन्द्र-कल्प मे देवो की उत्कृष्टत मात मागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१९ बभलोए कप्पे देवाण जहण्णेण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१९ ब्रह्मलोक कल्प मे कुछेक देवो की सात सागरोपम से अधिक स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२० जे देवा सम समप्पभ महापभ पभास भासुर विमल कचणकूड सणकुमारवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण सत्त सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२० जो देव सम, समप्रभ, महाप्रभ, प्रभास, भासुर, विमल, काचनकूट और सनत्कुमारावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत सात सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

२१. ते ण देवा सत्तण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

२१ वे देव सात अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते हैं, उच्छ्-वास लेते है, नि श्वास छोडते हैं।

२२. तेसि णं देवाण सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२२ उन देवो के सात हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२३. सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

२३ कुछेक भव सिद्धिक जीव हैं, जो सात भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

अट्ठमो समवाओ

१ अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—
जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए।

२ अट्ठ पवयणमायाओ पण्णत्ताओ, त जहा—
इरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण-भड-मत्त-निक्खेवणासमिई उच्चारपासवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-पारिट्ठावणियासमिई मणगुत्ती वइगुत्ती कायगुत्ती।

३ वाणमतराण देवाण चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता।

४ जबू ण सुदसणा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता।

५ कूडसामली ण गरुलावासे अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते।

६. जबुद्दीवस्स ण जगई अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता।

आठवां समवाय

१ मदस्थान आठ प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
जाति-मद, बल-मद, रूप-मद, तपो-मद, श्रुत-मद, लाभ-मद, ऐश्वर्य-मद।

२ प्रवचन-माता आठ प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
ईर्या-समिति, भाषा-समिति, एषणा-समिति, आदान-भाड-मात्र निक्षेपण-समिति, उच्चार-प्रस्रवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-परिष्ठापना-समिति, मनो-गुप्ति, वचन-गुप्ति, काय-गुप्ति।

३ वान-व्यन्तर देवो के चैत्यवृक्ष ऊँचाई की दृष्टि से आठ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त है।

४ जम्बु सुदर्शन वृक्ष ऊँचाई की दृष्टि से आठ योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है।

५ गरुड-देव का आवासभूत पार्थिव कूट-शाल्मली वृक्ष ऊँचाई की दृष्टि से आठ योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है।

६ जम्बुद्वीप की जगती/पाली ऊँचाई की दृष्टि से आठ योजन ऊँची प्रज्ञप्त है।

७. अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते, त जहा— पढमे समए दड करेइ । बीए समए कवाड करेइ । तइए समए मथ करेइ । चउत्थे समए मथतराइं पूरेइ । पचमे समए मथतराइ पडिसाहराइ । छट्ठे समए मथ पडिसाहरइ । सत्तमे समए कवाड पडिसाहरइ । अट्ठमे समए दड पडिसाहरइ । तत्तो पच्छा सरीरत्थे भवइ ।	७ केवलि-समुद्घात अष्ट सामयिक प्रज्ञप्त है । जैसे कि— पहले समय मे दण्ड किया जाता है । दूसरे समय मे कपाट किया जाता है । तीसरे समय मे मन्थन किया जाता है । चौथे समय मे मन्थन के अन्तराल पूर्ण किये जाते है । पाँचवे समय मे मन्थन के अन्तराल का प्रतिसहार/सकोच किया जाता है । छठे समय मे मन्थन का प्रतिसहार किया जाताहै । सातवे समय मे कपाट का प्रतिसहार किया जाता है । आठवे समय मे दण्ड का प्रतिसहार किया जाता है । तत्पश्चात् शरीरस्थ होते हैं ।
८. पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, त जहा— सुभे य सुभघोसे य, वसिट्ठे बंभयारि य । सोमे सिरिधरे चेव, वीरभद्दे जसे इ य ॥	८ पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व के आठ गण और आठ गणधर थे । जैसे कि— शुभ, शुभघोष, वशिष्ठ, ब्रह्मचारी, सोम, श्रीधर, वीरभद्र और यश ।
९. अट्ठ नक्खत्ता चदेण सद्धि पमद्द जोग जोएंति, त जहा— कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा जेट्ठा ।	९ आठ नक्षत्र चन्द्र के साथ प्रमर्द योग करते हैं । जैसे कि— कृत्तिका, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा ।
१०. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।	१० इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की आठ पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ चौथी पृथिवी [पकप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की आठ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. असरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण अट्ठ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ कुछेक असुरकुमार देवो की आठ पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण अट्ठ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की आठ पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. बभलोए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण अट्ठ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ ब्रह्मलोक कल्प मे कुछेक देवो की आठ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५ जे देवा अच्चि अच्चिमालिं वइरोयण पभकर चदाभ सूराभं सुपइट्ठाभ अग्गिच्चाभ रिट्ठाभ अरुणाभ अरुणुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण अट्ठ सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ जो देव अर्चि, अर्चिमाली, वैरोचन, प्रभकर, चन्द्राभ, सूराभ, सुप्रतिष्टाभ, अग्नि-अर्च्याभ, रिष्टाभ, अरुणाभ और अनुत्तरावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत आठ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६ ते ण देवा अट्ठण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१६ वे देव आठ अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१७ तेसि ण देवाण अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ उन देवो के आठ हजार वर्षों मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१८ कुछेक भव सिद्धिक जीव है, जो आठ भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

नवमो समवाओ

नौवां समवाय

१. नव बभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

नो इत्थीण-पसु-पडग-संसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ ।

नो इत्थीण कह कहित्ता भवइ ।

नो इत्थीण ठाणाइं सेवित्ता भवइ ।

नो इत्थीण इदियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।

नो पणीयरसभोई भवइ ।

नो पाणभोयणस्स अइमाय आहारइत्ता भवइ ।

नो इत्थीणं पुव्वरयाइ पुव्वकोलियाइ सुमरइत्ता भवइ ।

नो सद्दाणुवाई नो रूवाणुवाई नो गधाणुवाई नो रसाणुवाई नो फासाणुवाई नो सिलोगाणुवाई ।

नो सायासोक्ख-पडिबद्धे यावि भवइ ।

१ ब्रह्मचर्य-गुप्ति नौ प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

[ब्रह्मचारी] स्त्री, पशु और नपु सक-ससक्त शय्या तथा आसन का सेवन नही करता ।

स्त्रियो की कथा नही करता ।

स्त्रियो के स्थान का सेवन नही करता ।

स्त्रियो की मनोहर-मनोरम इन्द्रियो का अवलोकन-निरीक्षण नही करता ।

प्रणीत-रस-बहुल-भोजी नही होता ।

भोजन-पान का अतिमात्रा मे आहार नही करता ।

स्त्रियो की पूर्व रति तथा पूर्व क्रीडाओ का स्मरण नही करता ।

न शब्दानुवादी, न रूपानुवादी, न गन्धानुवादी, न स्पर्शानुवादी और न ही श्लोकानुवादी होता है ।

शाता-सुख से प्रतिबद्ध भी नही होता ।

२. नव बभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ, त जहा—

इत्थी-पसु-पंडग-ससत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ ।

इत्थीण कह कहित्ता भवइ ।

इत्थीण ठाणाइ सेवित्ता भवइ ।

इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइ मणोरमाइ आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ।

२ ब्रह्मचर्य-अगुप्ति नौ प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

[ब्रह्मचारी] स्त्री, पशु और नपु सक-ससक्त शय्या तथा आसन का सेवन करता है ।

स्त्रियो की कथा करता है ।

स्त्रियो के स्थान का सेवन करता है ।

स्त्रियो की मनोहर-मनोरम इन्द्रियो का अवलोकन-निरीक्षण करता है ।

पणीयरसभोई भवइ ।
पाणभोयणस्स अइमाय आहार-
इत्ता भवइ ।
इत्थीण पुव्वरयाइ पुव्वकीलियाइ
सुमरइत्ता भवइ ।
सद्दाणुवाई रूवाणुवाई गधाणुवाई
रसाणुवाई फासाणुवाई सिलो-
गाणुवाई ।
सायासोक्ख-पडिबद्धे यावि भवइ ।

प्रणीत-रस-बहुल-भोजी होता है ।
भोजन-पान का अतिमात्रा मे आहार
करता है ।
स्त्रियो की पूर्व रति तथा पूर्व
क्रीडाओ का स्मरण करता है ।
न शब्दानुवादी, न रूपानुवादी, न
गन्धानुवादी, न स्पर्शानुवादी और न
ही श्लोकानुवादी होता है ।
शाता-सुख से प्रतिवद्ध भी रहता है ।

३. नव बभचेरा पण्णत्ता, त जहा—
सत्थपरिण्णा लोगविजओ
सीओसणिज्ज सम्मत्तं ।
आवती धुअ विमोहायण
उवहाणसुय महपरिण्णा ॥

३ ब्रह्मचर्य - आचारागसूत्र - के अध्ययन
नौ प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
शस्त्र-परिज्ञा, लोकविजय, शीतो-
ष्णीय, सम्यक्त्व, आवन्ती, धूत,
विमोह, उपधानश्रुत, महापरिज्ञा ।

४ पासे णं अरहा नव रयणीओ
उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

४ पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व ऊँचाई की
दृष्टि से नौ रत्निक/हाथ ऊँचे थे ।

५. अभीजिनक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते
चदेण सद्धि जोग जोइए ।

५ अभिजित नक्षत्र चन्द्र के साथ नौ
मुहूर्त से अधिक योग करता है ।

६ अभीजियाइया नव नक्खत्ता
चदस्स उत्तरेण जोग जोएति,
त जहा—
अभीजि सवणो धणिट्ठा सय-
भिसया पुव्वाभद्दवया उत्तरा-
पोट्ठवया रेवई अस्सिणी भरणी ।

६ अभिजित आदि नौ नक्षत्र चन्द्र का
उत्तर से योग करते हैं । जैसे कि—
अभिजित से भरणी तक ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए
बहुसमरमणिज्जाओ भूमि-
भागाओ नव जोयणसए उड्ढ
अबाहाए उवरिल्ले तारारूवे चार
चरइ ।

७ इस रत्नप्रभा पृथिवी के बहुमम/
अत्यधिक रमणीय भूमि-भाग से नौ
सौ योजन ऊपर ऊपरीतल मे तारा
रूप मे अबाधत सचरण करते हैं ।

८. जबुद्दीवे ण दीवे नवजोयणिया मच्छा पविसिसु वा पविसति वा पविसिस्सति वा ।

८ जम्बुद्वीप मे नौ योजन के मत्स्य प्रवेश करते थे, प्रवेश करते है और प्रवेश करेगे ।

९ विजयस्स ण दारस्स एगमेगाए वाहाए नव-नव भोमा पण्णत्ता ।

९ विजय-द्वार की एक-एक वाहु पर नौ-नौ भौम/भवन प्रज्ञप्त हैं ।

१० वाणमतराण देवाण सभाओ सुधम्माओ नव जोयणइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ताओ ।

१० वान-व्यन्तर देवों की सुधर्मा-सभाएँ ऊँचाई की दृष्टि से नौ योजन ऊँची प्रज्ञप्त है ।

११. दसणावरणिज्जस्स ण कम्मस्स नव उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—
निद्दा पयला निद्दानिद्दा पयला-पयला थीणगिद्धी चक्खुदसणावरणे अचक्खुदसणावरणे ओहिदसणावरणे केवलदसणावरणे ।

११ दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियाँ नौ प्रज्ञप्त है । जैसे कि— निद्रा/सामान्य नीद, प्रचला/शय्यारहित निद्रा, निद्रानिद्रा/प्रगाढ निद्रा, प्रचला-प्रचला / शय्यारहित प्रगाढ निद्रा, स्त्यानर्द्धि / कार्य-समापन्नक निद्रा, चक्षु-दर्शनावरण/नेत्र-आवरण, अचक्षु-दर्शनावरण / अन्य इन्द्रिय-आवरण, अवधि-दर्शनावरण/मूर्त-दर्शन-आवरण और केवल-दर्शनावरण/सर्व दर्शन-आवरण ।

१२ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ इस रत्नभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिको की नौ पल्योपम-स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण नव सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ चौथी पृथिवी [पकप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की नौ सागरोपम-स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ कुछेक असुरकुमार देवो की नौ पल्योपम-स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की नौ पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६ बम्भलोए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण नव सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ ब्रह्मलोक कल्प मे कुछेक देवो की नौ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७ जे देवा पम्ह सुपम्ह पम्हावत्त पम्हप्पह पम्हकत पम्हवण्ण पम्हलेस पम्हज्झय पम्हसिग पम्हसिट्ठ पम्हकूड पम्हुत्तरवडेंसग सुज्ज सुसुज्ज सुज्जावत्त सुज्जपभ सुज्जकत सुज्जवण्ण सुज्जलेस सुज्जज्झय सुज्जसिग सुज्जसिट्ठ सुज्जकूड सुज्जुत्तरवडेंसग रुइल्ल रुइल्लावत्त रुइल्लप्पभ रुइल्लकत रुइल्लवण्ण रुइल्ललेस रुइल्लज्झय रुइल्लसिग रुइल्लसिट्ठ रुइल्लकूड रुइल्लत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण नव सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१७ जो देव पक्ष्म, सुपक्ष्म, पक्ष्मावर्त, पक्ष्मप्रभ, पक्ष्मकान्त, पक्ष्मवर्ण पक्ष्मलेश्य, पक्ष्मध्वज, पक्ष्मशृग, पक्ष्मसृष्ट, पक्ष्मकूट, पक्ष्मोत्तरावतसक तथा सूर्य, सुसूर्य, सूर्यावर्त, सूर्यप्रभ सूर्यकान्त, सूर्यवर्ण, सूर्यलेश्य, सूर्यध्वज, सूर्यशृग, सूर्यसृष्ट, सूर्यकूट, सूर्योत्तरावतसक, रुचिर, रुचिरावर्त, रुचिरप्रभ, रुचिरकान्त, रुचिरवर्ण, रुचिरलेश्य, रुचिरध्वज रुचिरशृग, रुचिरसृष्ट, रुचिरकूट और रुचिरोत्तरावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की नौ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१८ ते ण देवा नवण्ह अद्धमासाण आगमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१८ वे देव नौ अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्‌वास लेते है, नि श्वास छोडते हैं ।

१९. तेसि ण देवाण नवहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१९ उन देवो के नौ हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२० सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे नवहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

२० कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो नौ भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

दसमो समवाओ

१. दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, त जहा —
खती मुत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवे सच्चे सजमे तवे चियाए बभचेरवासे ।

२ दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—
धम्मचिता वा से असमुप्पण्ण-पुव्वा समुप्पज्जिज्जा, सव्व धम्म जाणित्तए ।

सुमिणदसणे वा से असमुप्पपण्ण-पुव्वे समुप्पज्जिज्जा, अहातच्च सुमिण पासित्तए ।

सण्णिनाणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जिज्जा, पुव्वभवे सुमरित्तए ।

देवदसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, दिव्वं देविड्ढि दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव पासित्तए ।

ओहिनाणे वा से असमुप्पण्ण-पुव्वे समुप्पज्जिज्जा, ओहिणा लोग जाणित्तए ।

ओहिदसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, ओहिणा लोग पासित्तए ।

दसवां समवाय

१ श्रमण-धर्म दस प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
शान्ति/क्षमा, मुक्ति, आर्जव/ऋजुता, मार्दव/मृदुता, लाघव/लघुता, सत्य, सयम, तप, त्याग और ब्रह्मचर्य-वास।

२ चित्त-समाधि-स्थान दस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
धर्मचिन्तन वह है, जो पूर्व मे असमुत्पन्न सर्व धर्म को जानने के लिए समुत्पन्न होता है ।

स्वप्न-दर्शन वह है, जो पूर्व मे असमुत्पन्न यथातथ्य को स्वप्न मे देखने के लिए समुत्पन्न होता है ।

सज्ञी-ज्ञान वह है, जो पूर्व मे असमुत्पन्न पूर्व भव का स्मरण करने से समुत्पन्न होता है ।

देव-दर्शन वह है, जो पूर्व मे असमुत्पन्न दिव्य देवर्धि, दिव्य देव-द्युति, दिव्य देवानुभाव को देखने के लिए समुत्पन्न होता हे ।

अवधि-ज्ञान वह है, जो पूर्व मे असमुत्पन्न अवधि से लोक को जानने के लिए समुत्पन्न होता है ।

अवधिदर्शन वह है, जो अवधि से लोक को देखने के लिए समुत्पन्न होता है ।

मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, अतो मणुस्सखेत्ते अड्ढातिज्जेसु दीवसमुद्देसु सण्णीण पचेंदियाण पज्जत्तगाण मणोगए भावे जाणित्तए।

मन पर्यव-ज्ञान वह है, जो असमुत्पन्न मनोगत भाव पर्यन्त जानने के लिए समुत्पन्न होता है।

केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, केवल लोग जाणित्तए।

केवल-ज्ञान वह है, जो असमुत्पन्न केवल लोक/त्रैलोक्य को जानने के लिए समुत्पन्न होता है।

केवलदसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा, केवल लोय पासित्तए।

केवल-दर्शन वह है, जो गसमुत्पन्न केवल लोक को देखने के लिए समुत्पन्न होता है।

केवलिमरण वा मरिज्जा, सव्वदुक्खप्पहीणाए।

केवलि-मरण वह है, जो सर्व दु खो के समापन के लिए मरे।

३ मदरे ण पव्वए मूले दसजोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ते।

३ मन्दर/सुमेरु-पर्वत मूल मे दस हजार योजन विष्कम्भक / विस्तृत प्रज्ञप्त है।

४ अरहा ण अरिट्ठनेमी दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

४ अर्हत् अरिष्टनेमि ऊँचाई की दृष्टि से दम धनुष ऊँचे थे।

५ कण्हे ण वासुदेवे दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

५ वासुदेव कृष्ण ऊँचाई की दृष्टि से दस धनुष ऊँचे थे।

६ रामे ण वलदेवे दस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

६ वलदेव राम ऊँचाई की दृष्टि से दम धनुष ऊँचे थे।

७ दस नक्खत्ता नाणविड्ढिकरा पण्णत्ता, त जहा—

मिगसिरमद्दा पुस्सो,
तिण्णि अ पुव्वा मूलमस्सेसा।
हत्थो चित्ता य तहा,
दस विड्ढिकराइ नाणस्स॥

७ ज्ञान-वृद्धिकर नक्षत्र दस प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

मृगशिर, आर्द्रा, पुष्य, तीन पूर्वा [पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वा षाढा, पूर्वा भाद्रपदा] मूल, आश्लेषा, हस्त और चित्रा—ये दस [नक्षत्र] ज्ञान की वृद्धि करते हैं।

८ अकम्मभूमियाण मणुआण दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया पण्णत्ता, त जहा—
मत्तगया य भिगा,
तुडिअगा दीव जोय चित्तगा।
चित्तरसा मणिअगा,
गेहागारा अणिगणा य ॥

८ अकर्मभूमि/भोगभूमि मे जन्मे मनुष्यो के उपभोग के लिए उपस्थित वृक्ष दस प्रकार के प्रज्ञप्त है। जैसे कि— मद्याग, भृग, तूर्यांग, ज्योतिरग, चित्राग, चित्तरस, मण्यग, गेहाकार और अनग्न।

९ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता।

९ इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिको की जघन्यत दस हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. इमीसे ण रयणप्पाहए पुडवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१० इस रत्नप्रभा पृथ्वी पर कुछेक नैरयिको की दस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. चउत्थीए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

११ चौथी पृथिवी [पकप्रभा] पर दम लाख नारक-आवास है।

१२ चउत्थीए पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण दस मागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ चौथी पृथिवी की उत्कृष्टत दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३ पचमाए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण दम सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१३ पाँचवी पृथिवी [धूमप्रभा] पर नैरयिको की जघन्यत /न्यूनत दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४ असुरकुमाराण देवाण जहण्णेण्ण दस वामसहस्साइ ठिई पण्णत्ता।

१४ असुरकुमार देवो की जघन्यत /न्यूनत दम हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५ असुरिंदवज्जाण भोमेज्जाण देवाण जहण्णेण दम वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता।

१५ असुरेन्द्रो को छोडकर भौमिज्ज/भवनवासी देवो की जघन्यत दम हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण दम पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१६ कुछेक असुरकुमार देवो की दम पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१७ बायरवणप्फइकाइयाण उक्कोसेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।	१७ वादर वनस्पतिकायिक की उत्कृष्टत दस हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है ।
१८ वाणमतराण देवाणं जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिई पण्णत्ता ।	१८ वान-व्यन्तर देवो की जघन्यत दस हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है ।
१९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण दस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	१९ सौधर्म-ईशान-कल्प मे कुछेक देवो की दस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
२० बभलोए कप्पे देवाण उक्कोसेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	२० ब्रह्मलोक-कल्प मे देवो की उत्कृष्टत दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
२१ लतए कप्पे देवाण जहण्णेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	२१ लान्तक कल्प मे देवो की जघन्यत / न्यूनत दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
२२ जे देवा घोस सुघोस महाघोस नदिघोस सुसर मणोरम रम्म रम्मग रमणिज्ज मगलावत्त बभलोगवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	२२ जो देव घोष, सुघोष, महाघोष, नन्दिघोष, सुस्वर, मनोरम, रम्य, रम्यक, रमणीय, मगलावर्त और ब्रह्मलोकावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत दस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
२३ ते ण देवा दसण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।	२३ वे दस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, नि श्वास छोडते है ।
२४ तेसि ण देवाण दसहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।	२४ उन देवो के दस हजार वर्ष मे आहार का अर्थ समुत्पन्न होता है ।
२५ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे दसहि भवगहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।	२५ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो दस भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्व-दु खान्त करेंगे ।

# एक्कारसमो समवाओ	# ग्यारहवां समवाय
१ एक्कारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओ, त जहा— दसणसावए, कयव्वयकम्मे, सामाइअकडे, पोसहोववासनिरए, दिया बभयारी, रत्ति परिमाणकडे, दिआवि राओवि बभयारी, असिणाई, वियडभोई, मोलिकडे, सचित्तपरिण्णाए, आरभपरिण्णाए, पेसपरिण्णाए, उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए, समणभूए यावि भवइ समणाउसो ।	१ श्रमणायुष्मन्! उपासक की प्रतिमा/अनुष्ठान ग्यारह प्रज्ञप्त है। जैसे कि— दर्शन-श्रावक, कृतव्रतकर्मा, सामायिककृत, पौषधोपवास-निरत, दिवा-ब्रह्मचारी, रात्रि-परिमाणकृत, दिवा-ब्रह्मचारी भी, रात्रि-ब्रह्मचारी भी, अस्नायी, विकट-भोजी, मौलिकृत, सचित्त-परिज्ञात, आरम्भ-परिज्ञात, प्रेष्य-परिज्ञात, उद्दिष्ट-परिज्ञात और श्रमणभूत पर्यन्त है।
२ लोगताओ ण एक्कारस एक्कारे जोयणसए अबाहाए जोइसते पण्णत्ते ।	२ लोकान्त मे एक सौ ग्यारह योजन पर अबाधित ज्योतिष्क प्रज्ञप्त है।
३ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स एक्कारस एक्कवीसे जोयणसए अबाहाए जोइसे चार चरइ ।	३ जम्बुद्वीप-द्वीप मे मन्दर-पर्वत से ग्यारह सौ इक्कीस योजन तक ज्योतिष्क सचरण करता है।
४ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स एक्कारस गणहरा होत्था, त जहा— इदभूती अग्गिभूती वायुभूति विअत्ते सुहम्मे मडिए मोरियपुत्ते अकपिए अयलभाया मेतज्जे पभासे ।	४ श्रमण भगवान् महावीर के ग्यारह गणधर थे। जैसे कि— इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सुधर्म, मडित, मौर्यपुत्र, अकम्पित, अचलभ्राता, मेतार्य, प्रभास ।
५ मूले नक्खत्ते एक्कारसतारे पण्णत्ते ।	५ मूल नक्षत्र के ग्यारह तारे प्रज्ञप्त है।

१४ ते ण देवा एक्कारसण्हं अद्ध-मासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१४ वे देव ग्यारह अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, नि श्वास छोडते है ।

१५ तेसि ण देवाण एक्कारसण्हं वास-सहस्साण आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ उन देवो के ग्यारह हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१६ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झि-स्सति वुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण-मत करिस्सति ।

१६ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो ग्यारह भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, वुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेगे ।

बारसमो समवाओ

१ बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
मासिआ भिक्खुपडिमा, दो-मासिआ भिक्खुपडिमा, तेमासिआ भिक्खुपडिमा, चाउमासिआ भिक्खुपडिमा, पंचमासिआ भिक्खुपडिमा, छम्मासिआ भिक्खुपडिमा, सत्तमासिआ भिक्खुपडिमा, पढमा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, दोच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, तच्चा सत्तराइंदिआ भिक्खुपडिमा, अहोराइया भिक्खुपडिमा, एगराइया भिक्खुपडिमा।

२ दुवालसविहे संभोगे पण्णत्ते, तं जहा—
उवही सुअभत्तपाणे
अंजलीपग्गहेत्ति य।
दायणे य निकाए अ,
अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे॥
कितिकम्मस्स य करणे,
वेयावच्चकरणे इअ।
समोसरणं संनिसेज्जा य,
कहाए अ पबंधणे॥

बारहवां समवाय

१ भिक्षु-प्रतिमाएँ बारह प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
[एक] मासिक भिक्षु-प्रतिमा—अभि-गृहीत एक विधि से आहार, दो मासिक भिक्षु-प्रतिमा, तीन मासिक भिक्षु-प्रतिमा, चार मासिक भिक्षु-प्रतिमा, पांच मासिक भिक्षु-प्रतिमा, छह मासिक भिक्षु-प्रतिमा, सात मासिक भिक्षु-प्रतिमा, प्रथम सप्त-रात्रिदिवा भिक्षु-प्रतिमा, द्वितीय सप्तरात्रिदिवा भिक्षु-प्रतिमा, तृतीय सप्तरात्रिदिवा भिक्षु-प्रतिमा, अहो-रात्रिक भिक्षु-प्रतिमा, एकरात्रिक भिक्षु-प्रतिमा।

२ सम्भोग बारह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
उपधि/उपकरण, श्रुत/आगम, भक्त-पान/भोजन-पानी, अंजली-प्रग्रह/करबद्ध नमन, दान/आदान-प्रदान, निकाचन/आमन्त्रण, अभ्युत्थान/अभिवादन, कृतिकर्म-करण/नियत वन्दन-व्यवहार, वैयावृत्यकरण/सेवाभाव, समवसरण/धर्मसभा, संनिषद्या/संपृच्छना, कथा-प्रबन्धन/प्रवचन।

३. दुवालसावत्ते कितिकम्मे पण्णत्ते, त जहा—

दुओणय जहाजाय,
कितिकम्म बारसावय ।
चउसिर तिगुत्त च,
दुपवेस एगनिक्खमण ॥

३ कृति-कर्म / वन्दन-क्रिया-विधि के बारह आवर्त्त प्रज्ञप्त है । जैसेकि— दो अवनत, यथाजात कृतिकर्म, बारह आवर्त्त, चार शिर, तीन गुप्ति, दो प्रवेश और एक निष्क्रमण ।

४. विजया ण रायहाणी दुवालस जोयणसयसहस्साइ आयाम-विक्खभेण पण्णत्ता ।

४ विजया राजधानी बारह शत-सहस्र/बारह लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

५. रामे ण बलदेवे दुवालस वास-सयाइ सव्वाउय पालित्ता देवत्त गए ।

५ बलदेव राम ने बारह सौ वर्ष की सम्पूर्ण आयु पालकर देवत्व प्राप्त किया ।

६. मदरस्स ण पव्वयस्स चूलिआ मूले दुवालस जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता ।

६ मन्दर-पर्वत की चूलिका का मूल-भाग बारह योजन विष्कम्भक/चौडा प्रज्ञप्त है ।

७. जबूदीवस्स ण दीवस्स वेइया मूले दुवालस जोयणाइ विक्खभेण पण्णत्ता ।

७ जम्बुद्वीप-द्वीप की वेदिका मूल मे बारह योजन विष्कम्भक / चौडी प्रज्ञप्त है ।

८. सव्वजहण्णिआ राई दुवालस-मुहुत्तिआ पण्णत्ता ।

८ सर्व जघन्य/सबसे छोटी रात्रि बारह मुहूर्त की प्रज्ञप्त है ।

९. सव्वजहण्णिओ दिवसो दुवालस-मुहुत्तिओ पण्णत्तो ।

९ सर्व जघन्य/सबसे छोटा दिवस बारह मुहूर्त का प्रज्ञप्त है ।

१०. सव्वट्ठसिद्धस्स ण महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभिअग्गाओ दुवा-लस जोयणाइ उड्ढ उप्पतिता ईसिपब्भारा नाम पुढवी पण्णत्ता ।

१० सर्वार्थसिद्ध महाविमान की ऊपरीतल स्तूपिका से बारह योजन ऊपर ईषत्-प्राग्भार नामक पृथिवी प्रज्ञप्त है ।

११ ईसिपब्भाराए ण पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—
ईसित्ति वा ईसिपब्भारत्ति वा तणूइ वा तणुयतरित्ति वा सिद्धित्ति वा सिद्धालएत्ति वा मुत्तीति वा मुत्तालएत्ति वा बभेत्ति वा बभवडेंसएत्ति वा लोकपडिपूरणेत्ति वा लोगग्गचूलिआई वा।

११ ईषत्-प्राग्भार पृथिवी के बारह नाम प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
ईषत्, ईषत्-प्राग्भार, तनु, तनुतरी, सिद्धि, सिद्धालय, मुक्ति, मुक्तालय, ब्रह्म, ब्रह्मावतमक, लोक-प्रतिपूरणा और लोकाग्रचूलिका।

१२ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण बारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की बारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३ पचमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण बारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१३ पाँचवी पृथिवी [धूमप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की बारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण बारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१४ कुछेक असुरकुमार देवो की बारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण बारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१५ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की बारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६ लतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण बारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१६ लान्तक कल्प मे कुछेक देवो [illegible] बारह सागरोपम [illegible]

१७ जे देवा महिंद महिंदज्झय कबु कबुग्गीय पुख सुपुख महापुख पुड सुपुड महापुड नरिंद नरिंदकत नरिंदुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण बारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१७ जो देव माहेन्द्र [illegible]

१८. ते ण देवा बारसण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१८ वे देव बारह अर्धमासो / पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१९. तेसि ण देवाण बारसहि वास-सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१९ उन देवो के बारह हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२०. सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बारसहि भवग्गहणेहि सिज्झि-स्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण-मत करिस्सति ।

२० कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो बारह भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेगे ।

तेरसमो समवाओ

१. तेरस किरियाठाणा पण्णत्ता त जहा—
अट्ठादडे अणट्ठादडे हिंसादडे अकम्हादडे दिट्ठविप्परिआसिआ-दडे मुसावायवत्तिए अदिण्णादाण-वत्तिए अज्झत्थिए माणवत्तिए मित्तदोसत्तिए मायावत्तिए लोभ-वत्तिए ईरियावहिए नाम तेरसमे ।

२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणपत्थडा पण्णत्ता ।

३. सोहम्मवडेंसगे ण विमाणे ण अद्ध-तेरसजोयणसयसहस्साइ आयाम-विक्खभेण पण्णत्ते ।

४ एव ईसाणवडेंसगे वि ।

५ जलयर-पचिदिअ-तिरिक्खजोणि-आण अद्धतेरस जाइकुलकोडी-जोणीपमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता ।

६. पाणाउस्स ण पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ।

तेरहवां समवाय

१ क्रियास्थान/हिंसा-साधन तेरह प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
अर्थ-दण्ड, अनर्थ-दण्ड, हिंसा-दण्ड, अकस्मात्-दण्ड, दृष्टि-विपर्यास-दण्ड, मृषावादवर्तिक, अदत्तादानवर्तिक, आध्यात्मिक, मानवर्तिक, मित्र-द्वेप-वर्तिक, मायावर्तिक, लोभवर्तिक और ईर्यापथिक नामक तेरह ।

२ सौधर्म-ईशान कल्प मे तेरह विमान-प्रस्तर प्रज्ञप्त है ।

३ सौधर्मावतसक विमान अर्ध-त्रयोदश शत-सहस्र/साढे बारह लाख योजन आयाम-विष्कम्भक / विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

४ इसी प्रकार ईशानावतसक भी है ।

५ जलचर पचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक जीवो की योनि की दृष्टि से अर्द्ध-त्रयोदश शतसहस्र/साढे बारह लाख जाति और कुल की कोटियां प्रज्ञप्त हैं ।

६ प्राणायु-पूर्व के तेरह वस्तु/अधिकार प्रज्ञप्त हैं ।

७. गब्भवक्कंति-पंचेंदिअतिरिक्ख-जोणिआण तेरसविहे पओगे पण्णत्ते, त जहा— सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चा-मोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालि-असरीरकायपओगे ओरालिअ-मीससरीरकायपओगे वेउव्विअ-सरीरकायपओगे वेउव्विअमीस-सरीरकायपओगे कम्मसरीरकाय-पओगे ।	७ गर्भोपक्रान्तिक/गर्भज पचेन्द्रिय तिर्य-ग्योनिक जीवो के प्रयोग/परिस्पदन तेरह प्रकार के प्रज्ञप्त है । जैसे कि— सत्यमन प्रयोग, मृषामन प्रयोग, सत्यमृषामन प्रयोग, असत्यामृषामन प्रयोग, सत्यवचनप्रयोग, मृषावचन-प्रयोग, सत्यमृषावचनप्रयोग, असत्या-मृषावचनप्रयोग, औदारिकशरीर-कायप्रयोग, औदारिकमिश्रशरीर-कायप्रयोग, वैक्रियशरीरकायप्रयोग, वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग और कार्मणशरीरकायप्रयोग ।
८. सूरमडले जोयणेण तेरसहि एग-सट्ठिभागेहिं जोयणस्स ऊणे पण्णत्ते ।	८ सूर्यमण्डल योजन के इकसठ भागो मे से तेरह न्यून अर्थात् योजन का अडतालीसवाँ भाग प्रज्ञप्त है ।
९. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	९ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की तेरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
१०. पचमाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	१० पाँचवी पृथिवी [धूमप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की तेरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
११ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण तेरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	११ कुछेक असुरकुमार देवो की तेरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थे-गइयाण देवाण तेरस पलि-ओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	१२ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की तेरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
१३ लतए कप्पे अत्थेगइयाण देवाण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	१३ लान्तक कल्प मे कुछेक देवो की तेरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४ जे देवा वज्ज सुवज्ज वज्जावत्त वज्जप्पभ वज्जकत वज्जवण्ण वज्जलेस वज्जज्झय वज्जसिंग वज्जसिट्ठ वज्जकूड वज्जुत्तरवडेंसग वइर वइरावत्त वइरप्पभ वइरकत वइरवण्ण वइरलेस वइरज्झय वइरसिंग वइरसिट्ठ वइरकूड वइरुत्तरवडेंसग लोग लोगावत्त लोगप्पभ लोगकत लोगवण्ण लोगलेस लोगज्झय लोगसिंग लोगसिट्ठ लोगकूड लोगुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण तेरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ जो देव वज्र, सुवज्र, वज्रावर्त, वज्रप्रभ, वज्रकान्त, वज्रवर्ण, वज्रलेश्य, वज्ररूप, वज्रशृंग, वज्रसृष्ट, वज्रकूट, वज्रोत्तरावतमक, वैर, वैरावर्त, वैरप्रभ, वैरकान्त, वैरवर्ण, वैरलेश्य, वैररूप, वैरशृग, वैरसृष्ट, वैरकूट, वैरोत्तरावतमक, लोक, लोकावर्त, लोकप्रभ, लोककान्त, लोकवर्ण, लोकलेश्य, लोकरूप, लोकशृग, लोकसृष्ट, लोककूट और लोकोत्तरावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत तेरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५ ते ण देवा तेरसहि अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१५ वे देव तेरह अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१६ तेसि ण देवाण तेरसहि वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१६ उन देवो के तेरह हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१७. सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेरसहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१७ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो तेरह भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुखान्त करेंगे ।

चउद्दसमो समवाओ

चौदहवां समवाय

१. चउद्दस भूअग्गामा पण्णत्ता, त जहा—
सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तया, बादरा पज्जत्तया, बेइंदिया अपज्जत्तया, बेइंदिया पज्जत्तया, तेइंदिया अपज्जत्तया, तेइंदिया पज्जत्तया, चउरिंदिया अपज्जत्तया, चउरिंदिया पज्जत्तया, पंचिंदिया असण्णिअपज्जत्तया, पंचिंदिया असण्णिपज्जत्तया, पंचिंदिया सण्णिअपज्जत्तया, पंचिंदिया सण्णिपज्जत्तया।

१ भूतग्राम/जीव-समास चौदह प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
सूक्ष्म-अपर्याप्तक/अपूर्ण, सूक्ष्म-पर्याप्तक/पूर्ण, बादर अपर्याप्तक, बादर पर्याप्तक, द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक द्वीन्द्रिय पर्याप्तक, त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक, त्रीन्द्रिय पर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक, पचेन्द्रिय असज्ञी अपर्याप्तक, पचेन्द्रिय असज्ञी पर्याप्तक, पचेन्द्रिय सज्ञी अपर्याप्तक और पचेन्द्रिय-सज्ञी पर्याप्तक।

२. चउद्दस पुव्वा पण्णत्ता, त जहा—
उप्पायपुव्वमग्गेणिय,
च तइय च वीरिय पुव्व।
अत्थीनत्थिपवाय,
तत्तो नाणप्पवाय च॥
सच्चप्पवायपुव्व,
तत्तो आयप्पवायपुव्व च।
कम्मप्पवायपुव्व,
पच्चक्खाण भवे नवम॥
विज्जाअणुप्पवाय,
अवभ्रुपाणाउ वारस पुव्व।
तत्तो किरियविसाल,
पुव्व तह बिंदुसार च॥

२ पूर्व / दृष्टिवाद-अग-आगम-विभाग चौदह प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
उत्पाद-पूर्व, अग्रायणीय-पूर्व, वीर्य-पूर्व, अस्तिनास्ति प्रवाद-पूर्व, ज्ञान-प्रवाद-पूर्व, सत्य-प्रवाद-पूर्व, आत्म-प्रवाद-पूर्व, कर्म-प्रवाद-पूर्व, प्रत्याख्यान प्रवाद-पूर्व, विद्यानुवाद/पूर्व, अवन्ध्य पूर्व, प्राणावाय-पूर्व, क्रिया-विशाल पूर्व और लोक-बिन्दुसार-पूर्व।

३ अग्गेणीअस्स ण पुव्वस्स चउद्दस वत्थू पण्णत्ता ।

३ अग्रायणीय-पूर्व के चौदह वस्तु/अधिकार प्रज्ञप्त हैं ।

४ समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसपया होत्था ।

४ श्रमण भगवान् महावीर की चौदह हजार श्रमणो की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी ।

५ कम्मविसोहिमग्गण पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—
मिच्छदिट्ठी सासायणसम्मदिट्ठि सम्मामिच्छदिट्ठि अविरयसम्मदिट्ठि विरयाविरए पमत्तसजए अप्पमत्तसजए नियट्टिबायरे अनियट्टिबायरे सुहुमसपराए -- उवसमए वा खवए वा, उवसतमोहे सजोगी केवली अजोगी केवली ।

५ कर्म-विशुद्धि-मार्ग की अपेक्षा से जीवस्थान/गुणस्थान चौदह प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, अविरत सम्यग्दृष्टि विरताविरत, प्रमत्तसयत, अप्रमत्तसयत, निवृत्तिबादर, अनिवृत्तिबादर, सूक्ष्मसम्पराय—उपशामक या क्षपक, उपशान्तमोह, क्षीणमोह, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ।

६ भरहेरवयाओ ण जीवाओ चउद्दस-चउद्दस जोयणसहस्साइ चत्तारि य एगुत्तरे जोयणसए छच्च एगूणवीसे भागे जोयणस्स आयामेण पण्णत्ताओ ।

६ भरत और ऐरवत की जीवा/लम्बाई चौदह-चौदह हजार, चार सौ एक योजन और योजन के उन्नीस भागो मे से छह भाग कम आयाम/लम्बी प्रज्ञप्त है ।

७ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स चउद्दस रयणा पण्णत्ता, त जहा—
इत्थीरयणे सेणावइरयणे गाहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे दडरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे ।

७ प्रत्येक चातुरन्त/चतुर्दिक चक्रवर्ती राजा के चौदह रत्न प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
स्त्रीरत्न, सेनापतिरत्न, गृहपतिरत्न, पुरोहितरत्न, वर्धकीरत्न, अश्वरत्न, हस्तिरत्न, असिरत्न, दडरत्न, चक्ररत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, मणिरत्न और काकिणिरत्न ।

८ जंबुद्दीवे णं दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेण लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं जहा—
गंगा सिंधू रोहिआ रोहिअंसा हरी हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता नारिकंता सुवण्णकूला रुप्पकूला रत्ता रत्तवई।

८ जम्बुद्वीप द्वीप मे चौदह महानदियाँ पूर्व तथा पश्चिम से लवण समुद्र मे समर्पित होती हैं। जैसे कि—
गंगा-सिन्धु, रोहिता-रोहितासा, हरी-हरीकान्ता सीता-सीतोदा, नरकान्ता-नारीकान्ता, सुवर्णकूला-रुप्यकूला, रक्ता और रक्तवती।

९. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की चौदह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. पंचमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१० पाँचवी पृथिवी [धूमप्रभा] पर नैरियको की चौदह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११ कुछेक असुरकुमार देवो की चौदह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१२ सौधर्म और ईशान कल्प मे कुछेक देवो की चौदह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त हे।

१३ लंतए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ लान्तक कल्प मे कुछेक देवो की चौदह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४ महासुक्के कप्पे देवाणं जहण्णेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४ महाशुक्र कल्प मे कुछेक देवो की जघन्यत /न्यूनत चौदह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५. जे देवा सिरिकंतं सिरिमहियं सिरिसोमनसं लंतयं काविट्ठं महिंदं महिंदोकंतं महिंदुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१५ जो देव श्रीकान्त श्रीमहित, श्रीसौमनस, लान्तक, कापिष्ठ, महेन्द्र, महेन्द्रावकान्त और महेन्द्रोत्तरावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत चौदह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त हे।

१६ ते ण देवा चउद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊस-सति वा नीससति वा।

१६ वे देव चौदह अर्धमासो / पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते हैं। उच्छ्वास लेते है, नि श्वास छोडते हैं।

१७ तेसि ण देवाण चउद्दसहिं वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१७ उन देवो के चौदह हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण-मत करिस्सति।

१८ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो चौदह भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे सर्वदु खान्त करेंगे।

पण्णरसमो समवाओ

१. पण्णरस परमाहम्मिआ पण्णत्ता, त जहा—
अबे अवरिसी चेव,
सामे सबलेत्ति यावरे ।
रुद्दोवरुद्दकाले य,
महाकालेत्ति यावरे ।।
असिपत्ते धणु कुम्भे,
वालुए वेयरणीति य ।
खरस्सरे महाघोसे,
एमेते पण्णरसाहिआ ।।

२. णमी ण अरहा पण्णरस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

३ धुवराहू ण बहुलपक्खस्स पाडिवय पण्णरसइ भाग पण्णरसइ भागेण चदस्स लेस आवरेत्ता ण चिट्ठति, त जहा—
पढमाए पढमं भागं, बीआए बीय भाग, तइआए तइय भाग, चउत्थीए चउत्थ भाग, पचमीए पचम भाग, छट्ठीए छट्ठ भाग, सत्तमीए सत्तम भाग, अट्ठमीए अट्ठम भाग, नवमीए नवम भाग, दसमीए दसम भाग, एक्कारसीए एक्कारसम भाग, वारसीए वारसम भाग, तेरसीए तेरसम भाग, चउद्दसीए चउद्दसम भाग, पण्णरसेसु पण्णरसम भाग ।

पन्द्रहवां समवाय

१ परमाधार्मिक देव पन्द्रह प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
अम्ब, अम्बरिषी, श्याम, शबल, रुद्र, उपरुद, काल, महाकाल, असिपत्र, धनु, कुम्भ, वालुका, वैतरणी, खरस्वर और महाघोष ।

२ अर्हत् नमि ऊँचाई की दृष्टि से पन्द्रह धनुष ऊँचे थे ।

३ ध्रुवराहु बहुल-पक्ष/कृष्ण-पक्ष की प्रतिपदा से चन्द्र लेश्या के पन्द्रहवे-पन्द्रहवे भाग का आवरण करता है । जैसे कि—
प्रथमा/प्रतिपदा को प्रथम भाग, द्वितीया को दो भाग, तृतीया को तीन भाग, चतुर्थी को चार भाग, पचमी को पाच भाग, षष्ठी को छह भाग, सप्तमी को सात भाग, अष्टमी को आठ भाग, नवमी को नौ भाग, दशमी को दश भाग, एकादशी को ग्यारह भाग, द्वादशी को वारह भाग, त्रयोदशी को तेरह भाग, चतुर्दशी को चौदह भाग, पचदशी/अमावस्या को पन्द्रह भाग का आवरण करता है ।

४ त चेव सुक्कपक्खस्स उवदसेमाणे उवदसेमाणे चिट्ठति, त जहा—
पढमाए पढम भाग जाव पण्णरसेसु पण्णरसम भाग ।

४ वही [ध्रुव-राहु] शुक्ल-पक्ष मे उपदर्शन/प्रकाशित कराता रहता है । जैसे कि—
प्रथमा को प्रथम भाग मे लेकर पञ्चदर्शी/पूर्णमासी को पन्द्रह भाग पर्यन्त उपदर्शन कराता रहता है ।

५ छ णक्खत्ता पण्णरसमुहुत्तसजुत्ता पण्णत्ता, त जहा—
सतभिसय भरणि अद्दा,
असलेसा साइ तह य जेट्ठा य ।
एते छण्णक्खत्ता,
पण्णरसमुहुत्तसजुत्ता ॥

५ पन्द्रह मुहूर्त सयुक्त नक्षत्र छह प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
शतभिषक्, भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, स्वाति और ज्येष्ठा—ये छह नक्षत्र पन्द्रह मुहूर्त सयुक्त रहते हैं ।

६ चेत्तासोएसु मासेसु पण्णरसमुहुत्तो दिवसो भवति ।

६ चैत्र और आश्विन माह मे पन्द्रह मुहूर्त का दिवस होता है ।

७ एव चेत्तासोएसु मासेसु पण्णरसमुहुत्ता राई भवति ।

७ इसी प्रकार चैत्र और आश्विन माह मे पन्द्रह मुहूर्त की रात्रि होती है ।

८ विज्जाअणुप्पवायस्स ण पुव्वस्स पण्णरस वत्थू पण्णत्ता ।

८ विद्यानुवाद-पूर्व के वस्तु-अधिकार पन्द्रह प्रज्ञप्त हैं ।

९ मणूसाण पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, त जहा—
१ सच्चमणपओगे, २ मोसमणपओगे, ३ सच्चामोसमणपओगे, ४ असच्चामोसमणपओगे, ५ सच्चवइपओगे, ६ मोसवइपओगे, ७ सच्चामोसवइपओगे, ८ असच्चामोसवइ-पओगे, ९. ओरालियसरीरकायपओगे, १० ओरालियमीससरीरकायपओगे, ११. वेउव्वियसरीरकायपओगे, १२ वेउव्वियमीससरीर-

९ मनुष्यो के प्रयोग/परिस्पन्दन पन्द्रह प्रकार के प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
१ सत्यमन प्रयोग, २ मृषामन प्रयोग ३ सत्यमृषामन प्रयोग, ४ असत्यमृषामन प्रयोग ५ सत्यवचनप्रयोग, ६ मृषावचनप्रयोग, ७ सत्यमृषावचनप्रयोग, ८ असत्यमृषावचनप्रयोग, ९ औदारिक शरीर-कायप्रयोग, १० औदारिक मिश्र शरीरकायप्रयोग, ११ वैक्रिय शरीरकायप्रयोग, १२ वैक्रियमिश्र शरीरकाय-

कायपओगे, १३ आहारयसरीर-कायपओगे, १४. आहारयमीस-सरीरकायपओगे, १५. कम्मय-सरीरकायपओगे।

प्रयोग, १३ आहारक शरीरकाय-प्रयोग, १४ आहारकमिश्र शरीरकाय प्रयोग और १५ कार्मण शरीरकाय-प्रयोग।

१० इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१० इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की पन्द्रह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११ पचमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पण्णरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

११ पाँचवी पृथिवी [धूमप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की पन्द्रह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ कुछेक असुरकुमार देवो की पन्द्रह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण पण्णरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१३ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की पन्द्रह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४. महासुक्के कप्पे अत्थेगइयाण देवाण पण्णरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१४ महाशुक्र कल्प मे कुछेक देवो की पन्द्रह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५ जे देवा णद सुणद णदावत्त णदप्पभ णदकत णदवण्ण णदलेस णदज्झय णदसिग णदसिट्ठ णद-कूड णदुत्तरवडेंसगं विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण पण्णरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१५ जो देव नन्द, सुनन्द, नन्दावर्त, नन्द-प्रभ, नन्दकान्त, नन्दवर्ण, नन्दलेश्य, नन्दध्वज, नन्दशृग, नन्दसृष्ट, नन्द-कूट और नन्दोत्तरावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत पन्द्रह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६ ते ण देवा पण्णरसण्ह अद्धमासाण आणमंति वा पाणमति वा ऊस-सति वा नीससति वा।

१६ वे देव पन्द्रह अर्धमासो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, नि श्वास छोडते है।

१७ तेसि ण देवाण पण्णरसहिं वास-
सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ उन देवो के पन्द्रह हजार वर्ष मे
आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे
पण्णरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झि-
स्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति
परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण-
सत करिस्सति ।

१८ कुछेक भवसिद्धिक जीव हैं, जो पन्द्रह
भव ग्रहणकर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे,
परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेगे ।

सोलसमो समवाओ

१ सोलस य गाहा-सोलसगा पण्णत्ता, त जहा—
समए वेयालिए उवसग्गपरिण्णा इत्थिपरिण्णा निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे आहत्तहिए गथे जमईए गाहा।

२. सोलस कसाया पण्णत्ता, त जहा—
अणताणुबधी कोहे, अणताणुबधी माणे, अणताणुबधी माया, अणताणुबधी लोभे, अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे, अपच्चक्खाणकसाए माया, अपच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे माणे, पच्चक्खाणावरणा माया, पच्चक्खाणावरणे लोभे, सजलणे कोहे, सजलणे माणे, सजलणा माया, सजलणे लोभे।

३ मदरस्स ण पव्वयस्स सोलस नामधेया पण्णत्ता, त जहा—
मदर-मेरु-मणोरम,
सुदसण सयपभे य गिरिराया।
रयणुच्चय पियदसण,
मज्झे लोगस्स नाभी य॥

सोलहवां समवाय

१ गाथा-षोडषक/सूत्रकृताग के अध्ययन सोलह प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१ समय, २ वैतालीय, ३ उपसर्ग-परिज्ञा, ४ स्त्री-परिज्ञा, ५ नरक-विभक्ति, ६ महावीरस्तुति, ७ कुशीलपरिभाषित, ८ वीर्य, ९ धर्म, १० समाधि, ११ मार्ग, १२ समवसरण, १३ याथातथ्य, १४ ग्रन्थ, १५ यमकीय और १६ सोलहवा गाथा।

२ कषाय सोलह प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
अनन्तानुवन्धी क्रोध, अनन्तानुवन्धी मान, अनन्तानुवन्धी माया, अनन्तानुवन्धी लोभ, अप्रत्याख्यानकषाय-क्रोध, अप्रत्याख्यानकषाय मान, अप्रत्याख्यानकषाय माया, अप्रत्याख्यानकषाय लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोध, प्रत्याख्यानावरण मान, प्रत्याख्यानावरण माया, प्रत्याख्यानावरण लोभ, सज्वलन क्रोध, सज्वलन मान, सज्वलन माया और सज्वलन लोभ।

३ मन्दर-पर्वत के सोलह नाम प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१ मन्दर, २ मेरु, ३ मनोरम, ४ सुदर्शन, ५ स्वयम्प्रभ, ६ गिरिराज, ७ रत्नोच्चय, ८ प्रियदर्शन, ९

अत्थे अ सूरियावत्ते,
सूरियावरणेत्ति य।
उत्तरे य दिसाई य,
वडेंसे इअ सोलसे ॥

लोकमध्य, १० लोकनाभि, ११ अर्थ, १२ सूर्यावर्त, १३ सूर्यावरण, १४ उत्तर, १५ दिशादि और १६ अवतंस।

४. पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समण-संपदा होत्था।

४ पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व की सोलह हजार श्रमणों की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी।

५. आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता।

५ आत्म-प्रवाद पूर्व के वस्तु/अधिकार सोलह प्रज्ञप्त हैं।

६ चमरबलीणं ओवारियालेणे सोलस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते।

६ चमर-बली का अवतारिकालयन सोलह हजार योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है।

७ लवणे णं समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहपरिवुड्ढीए पण्णत्ते।

७ लवण-समुद्र में उत्सेध/उफान की वृद्धि सोलह हजार योजन प्रज्ञप्त है।

८ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

८ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की सोलह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

९ पंचमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

९ पाँचवीं पृथिवी [धूमप्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की सोलह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१० कुछेक असुरकुमार देवों की सोलह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

११ सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की सोलह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२. महासुक्के कप्पे देवाण अत्थेगइ-याण सोलस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ महाशुक्र कल्प मे कुछेक देवो की सोलह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. जे देवा आवत्त वियावत्त नदियावत्त महाणदियावत्त अकुस अकुसपलब भद्द सुभद्द महाभद्द सव्वओभद्द भद्दुत्तरवर्डेसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण सोलस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ जो देव आवर्त, व्यावर्त, नन्द्यावर्त, महानन्द्यावर्त, अकुश, अकुशप्रलम्ब, भद्र, सुभद्र, महाभद्र, सर्वतोभद्र और भद्रोत्तरावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत सोलह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. ते ण देवा सोलसण्ह अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१४ वे देव सोलह अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१५. तेसि ण देवाण सोलसवाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ उन देवो को सोलह हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१६. सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सोलसहि भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमतं करिस्सति ।

१६ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो सोलह भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

सत्तरसमो समवाओ

सतरहवां समवाय

१ सत्तरसविहे असंजमे पण्णत्ते तं जहा—
पुढवीकायअसंजमे, आउकाय-असंजमे, तेउकायअसंजमे, वाउ-कायअसंजमे, वणस्सइकायअसं-जमे, बेइंदियअसंजमे, तेइंदियअसं-जमे, चउरिंदियअसंजमे, पंचिंदि-यअसंजमे, अजीवकायअसंजमे, पेहाअसंजमे, उपेहाअसंजमे, अव-हट्टुअसंजमे, अप्पमज्जणाअसंजमे मणअसंजमे, वइअसंजमे, काय-असंजमे।

१ असंयम सतरह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१ पृथिवीकाय-असंयम, २ अप्काय-असंयम, ३ तेजस्काय-असंयम, ४ वायुकाय-असंयम, ५ वनस्पति-काय-असंयम, ६ द्वीन्द्रिय-असंयम, ७ त्रीन्द्रिय-असंयम ८ चतुरिन्द्रिय-असंयम, ९ पंचेन्द्रिय-असंयम, १० अजीवकाय-असंयम ११ प्रेक्षा-असंयम, १२ उपेक्षा-असंयम, १३ अपहृत्य-असंयम, १४ अप्रमा-र्जना-असंयम, १५ मन असंयम, १६ वचन-असंयम, १७ काय-असंयम।

२ सत्तरसविहे संजमे पण्णत्ते तं जहा—
पुढवीकायसंजमे, आउकायसंजमे, तेउकायसंजमे, वाउकायसंजमे, वणस्सइकायसंजमे, बेइंदियसंजमे, तेइंदियसंजमे, चउरिंदियसंजमे, पंचिंदियसंजमे, अजीवकायसंजमे, पेहासंजमे, उपेहासंजमे, अवहट्टु-संजमे, पमज्जणासंजमे, मणसंजमे, वइसंजमे, कायसंजमे।

२ संयम सतरह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१ पृथिवीकाय-संयम, २ अप्काय-संयम, ३ तेजस्काय-संयम, ४ वायु-काय-संयम ५ वनस्पतिकाय-संयम, ६ द्वीन्द्रिय-संयम, ७ त्रीन्द्रिय-संयम, ८ चतुरिन्द्रिय-संयम ९ पंचेन्द्रिय-संयम, १० अजीवकाय-संयम ११ प्रेक्षा-संयम १२ उपेक्षा-संयम १३ अपहृत्य-संयम १४ प्रमार्जना-संयम १५ मन संयम १६ वचन-संयम १७ काय-संयम।

३. माणुसुत्तरे ण पव्वए सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।

४. सव्वेसिपि ण वेलधर-अणुवेलधर-णागराईण आवासपव्वया सत्तरस-एक्कवीसाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

५ लवणे ण समुद्दे सत्तरस जोयण-सहस्साइ सव्वग्गेण पण्णत्ते ।

६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सारिरेगाइ सत्तरस जोयणसह-स्साइ उड्ढ उप्पतित्ता ततो पच्छा चारणाण तिरिय गती पवत्तति ।

७. चमरस्स ण असुरिंदस्स असुर रण्णो तिगिच्छिकूडे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।

८. वलिस्स ण वतिरोयणिंदस्स वति-रोयणरण्णो रुयगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।

९. सत्तरसविहे मरणे पण्णत्ते, त जहा—
आवीईमरणे ओहिमरणे आय-तियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बाल-मरणे पडितमरणे बालपडितमरणे

३ मानुषोत्तर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सतरह सौ इक्कीस योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है ।

४ सर्व वेलन्धर और अनुवेलन्धर नाग-राजाओं के आवास पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सतरह सौ इक्कीस योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

५ लवण-समुद्र का सर्वाग्र/शिखर सतरह हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

६ इस रत्नप्रभा पृथिवी के बहुसम/प्राय रमणीय भूमि भाग से सतरह हजार योजन से अधिक ऊपर उठकर तत्पश्चात् चारणों की तिर्यक् गति प्रवर्तित होती है ।

७ असुरराज असुरेन्द्र चमर का तिगि-च्छिकूट-उत्पात-पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सतरह सौ इक्कीस योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है ।

८ असुरेन्द्र बलि का रुचकेन्द्र-उत्पात-पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से सतरह सौ इक्कीस योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है ।

९ मरण सतरह प्रकार का प्रज्ञप्त है जैसे कि—
आवीचि-मरण / अविच्छेद-मरण, अवधि-मरण/मर्यादा-मरण, आत्य-न्तिक-मरण/अद्यतन-मरण, वलन्-मरण/अव्रत-मरण, अन्त शल्य-

छउमत्यमरणे केवलिमरणे वेहास-मरणे गिद्धपट्ठमरणे भत्तपच्च-क्खाणमरणे इंगिणिमरणे पाओ-वगमणमरणे ।

मरण/सकल्पपूर्वक-मरण, तद्भव-मरण/तात्कालिक-मरण, बाल-मरण-अज्ञान-मरण, पण्डित-मरण/समाधि-मरण, बाल-पण्डित-मरण/देशविरत-मरण, छद्मस्थ-मरण, केवलि-मरण, वैहायस-मरण/अकाल-मरण, गृद्ध्र-पृष्ठ-मरण/गलित-मरण, भक्त-प्रत्याख्यान-मरण/सलेखना, इगिनी-मरण/स्वावलम्बी-मरण, पादो-पगमन-मरण/ध्यानस्थ-मरण ।

१०. सुहुमसपराए ण भगव सुहुमसप-रायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्म-पगडीओ णिबधति, त जहा—आभिणिबोहियणाणावरणे, सुय-णाणावरणे, ओहिणाणावरणे, मणपज्जवणाणावरणे, केवल-णाणावरणे, चक्खुदसणावरणे, अचक्खुदसणावरणे, ओहीदसणा-वरणे, केवलदसणावरणे, साया-वेयणिज्ज, जसोकित्तिनाम, उच्चागोय, दाणतराय, लाभत-राय, भोगतराय, उवभोगतराय, वीरिअअतराय ।

१० सूक्ष्म-सम्पराय-भाव मे वर्तमान सूक्ष्म-सम्पराय भगवान् सतरह कर्म-प्रकृतियो का बन्धन करते हैं । जैसे कि—
१ आभिनिबोधिक-ज्ञानावरण, २ श्रुतज्ञानावरण, ३ अवधिज्ञाना-वरण, ४ मन पर्ययज्ञानावरण, ५ केवलज्ञानावरण, ६ चक्षुर्दर्शना-वरण, ७ अचक्षुर्दर्शनावरण, ८ अवधिदर्शनावरण, ९ केवल-दर्शनावरण, १० सातावेदनीय, ११ यशस्कीर्तिनामकर्म, १२ उच्च-गोत्र, १३ दानान्तराय, १४ लाभा-न्तराय, १५ भोगान्तराय, १६ उप-भोगान्तराय और १७ वीर्यान्तराय ।

११ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सत्तरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की सतरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ पचमाए पुढवीए नेरइयाण उक्को-सेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ पाँचवी पृथिवी [धूमप्रभा] पर कुछेक नैरयिको की जघन्यत सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३ छट्ठीए पुढवीए नेरइयाण जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ छठी पृथिवी [तम प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की जघन्यत सतरह साग-रोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण सत्तरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ कुछेक असुरकुमार देवो की सतरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याण देवाण सत्तरस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ सौधम-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की सतरह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. महासुक्के कप्पे देवाण उक्कोसेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ महाशुक्र कल्प मे देवो की उत्कृष्टत सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७ सहस्सारे कप्पे देवाण जहण्णेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१७ सहस्रार कल्प मे देवो की जघन्यत सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१८ जे देवा सामाण, सुसामाण, महा-सामाण, पउम, महापउम, कुमुद, महाकुमुद, नलिण, महानलिण, पोडरीअ, महापोडरीअ, सुक्क, महासुक्क, सीह, सीहोकत, सीह-वीअ, भाविअ, विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्को-सेण सत्तरस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१८ जो देव सामान, सुसामान, महा-सामान, पद्म, महापद्म, कुमुद, महा-कुमुद, नलिन, महानलिन, पौण्डरीक, महापौण्डरीक, शुक्र, महाशुक्र, सिह, सिहकान्त, सिहबीज और भावित विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत सतरह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१९ ते ण देवा सत्तरसहि अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा ऊस-सति वा नीससति वा ।

१९ वे देव सतरह अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है पान करते है, उच्छ्वास लेते है, नि श्वास छोडते है ।

२० तेसि ण देवाण सत्तरसहि वास-
सहस्सेहि ग्राहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

२१ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे
सत्तरसहि भवग्गहणेहि सिज्झि-
स्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति
परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण-
मत करिस्सति ।

२० उन देवो के सतरह हजार वर्ष मे
ग्राहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

२१ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो
सतरह भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे,
बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत
होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

अट्ठारसमो समवाओ

अठारहवां समवाय

१. अट्ठारसविहे बंभे पण्णत्ते, त जहा—

ओरालिए कामभोगे णेव सय मणेण सेवइ, नोवि अण्ण मणेण सेवावेइ, मणेण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ।

१ ब्रह्मचर्य अठारह प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

औदारिक/शारीरिक काम-भोगो का न तो स्वय मन मे सेवन करता है, न ही अन्य को मन से सेवन कराता है और न मन से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

ओरालिए कामभोगे णेव सय वायाए सेवइ, नोवि अण्ण वायाए सेवावेइ, वायाए सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ।

औदारिक/शारीरिक काम-भोगो का न तो स्वय वचन से सेवन करता है न ही अन्य को वचन से सेवन कराता है और न वचन से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

ओरालिए कामभोगे णेव सय काएण सेवइ, नोवि अण्ण काएण सेवावेइ, काएण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ।

औदारिक/शारीरिक काम-भोगो का न तो स्वय काया से सेवन करता है, न ही अन्य को काया से सेवन कराता है और न काया से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

दिव्वे कामभोगे णेव सय मणेण सेवइ, नोवि अण्ण मणेण सेवावेइ, मणेण सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ।

दिव्य/दैविक काम-भोगो का न तो स्वय मन से सेवन करता है, न ही अन्य को मन से सेवन कराता है और न मन से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

दिव्वे कामभोगे णेव सय वायाए सेवइ, नोवि अण्ण वायाए सेवावेइ, वायाए सेवत पि अण्ण न समणुजाणाइ।

दिव्य/दैविक काम-भोगो का न तो स्वय वचन से सेवन करता है, न ही अन्य को वचन से सेवन कराता है और न वचन से सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है।

दिव्वे कामभोगे णेव सयं काएण सेवइ, नोवि अण्णं काएणं सेवावेइ, काएण सेवत पि अण्णं न समणुजाणाइ ।

दिव्य/दैविक काम-भोगो का न तो स्वय काया मे सेवन करता है, न ही अन्य को काया मे सेवन कराता है और न काया मे सेवन करते हुए अन्य का समर्थन करता है ।

२ अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसपया होत्था ।

२ अर्हत् अरिष्टनेमि की अठारह हजार साधुओ की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी ।

३ समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गथाणं सखुड्डय-विअत्ताणं अट्ठारस ठाणा पण्णत्ता । त जहा—
वयछक्क कायछक्क,
अकप्पो गिहिभायणं ।
पलियक निसिज्जा य,
सिणाणं सोभवज्जणं ॥

३ श्रमण भगवान् महावीर द्वारा सक्षुद्र-व्यक्त श्रमण निर्ग्रन्थो के लिए अठारह स्थान प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
छह व्रत, छह काय, अकल्प, गृहि-भाजन, पर्यक, निषद्या, स्नान, शोभा-वर्जन ।

४ आयारस्स णं भगवतो सचूलि-आगस्स अट्ठारस पयसहस्साइ पयग्गेणं पण्णत्ताइ ।

४ भगवान् की आचार-चूलिका के अठारह हजार पद प्रज्ञप्त हैं ।

५ बभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, त जहा
१ बभी, २ जवणालिया, ३ दोसऊरिया, ४ खरोट्ठिया, ५ खरसाहिया, ६ पहाराइया, ७ उच्चत्तरिया, ८. अक्खरपुट्ठिया ९ भोगवइया, १० वेणइया, ११ निण्हइया, १२ अकलिवी, १३ गणियलिवी, १४ गधव्वलिवी, १५ आयसलिवी, १६ माहेसरी, १७ दामिली, १८. पोलिदी ।

५ ब्राह्मी-लिपि के लेख-विधान अठारह प्रकार के प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
१ ब्राह्मी, २ यावनी, ३ दोषउपरिका, ४ खरोष्ट्रिका, ५ खर-साविका, ६ प्रहारातिका, ७ उच्च-त्तरिका, ८ अक्षरपृष्ठिका, ९ भोग-वतिका, १० वैनतिका, ११ निह्न-विका, १२ अकलिपि, १३ गणित-लिपि, १४ गन्धर्वलिपि, १५ आदर्श-लिपि, १६ माहेश्वरी, १७ द्राविडी और १८ पोलिन्दी ।

६. अत्थिनत्थिप्पवायस्स ण पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता ।

६ अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व के वस्तु/अधिकार अठारह प्रज्ञप्त हैं ।

७ धूमप्पहा ण पुढवी अट्ठारसुत्तर जोयणसयसहस्स बाहल्लेण पण्णत्ता ।

७ धूमप्रभा पृथिवी का बाहुल्य एक शत-सहस्र/एक लाख अठारह हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

८. पोसासाढेसु ण मासेसु सइ उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ सइ उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ता राती भवइ ।

८ पौष और आषाढ माह मे दिवस उत्कृष्टत अठारह मुहूर्त का होता है और रात उत्कृष्टत अठारह मुहूर्त की होती है ।

९ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की उत्कृष्टत अठारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० छठी पृथिवी [तम प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की अठारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण अट्ठारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ कुछेक असुरकुमार देवो की अठारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण अट्ठारस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की अठारह पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३. सहस्सारे कप्पे देवाण उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ सहस्रार कल्प मे देवो की उत्कृष्टत अठारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४. आणए कप्पे देवाण जहण्णेण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ आनत कल्प मे कुछेक देवो की जघन्यत /न्यूनत अठारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५ जे देवा काल सुकाल महाकाल अजण रिट्ठ साल समाण दुम महादुम विसाल सुसाल पउम पउमगुम्म कुमुद कुमुदगुम्म नलिण नलिणगुम्म पुंडरीग्र पुंडरीयगुम्म सहस्सारवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं ग्रट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

१५ जो देव काल, सुकाल, महाकाल, अंजन, रिष्ट, साल, समान, द्रुम, महाद्रुम, विशाल, सुशाल, पद्म, पद्मगुल्म, कुमुद, कुमुदगुल्म, नलिन नलिनगुल्म, पुण्डरीक, पुण्डरीकगुल्म और सहस्रारावतंसक विमान में देवत्व से उत्पन्न है, उन देवों की उत्कृष्टतः अठारह सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१६ ते णं देवा ग्रट्ठारसहिं ग्रद्ध-मासेहिं ग्राणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१६ वे देव अठारह अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते है, उच्छ्वास लेते हैं, निश्वास छोडते हैं ।

१७ तेसि णं देवाणं ग्रट्ठारसहिं वाससहस्सेहिं ग्राहारट्ठे समु-प्पज्जइ ।

१७ उन देवों के अठारह हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे ग्रट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झि-स्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण-मंतं करिस्संति ।

१८ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो अठारह भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

एगूणवीसमो समवाओ

१ एगूणवीस णायज्झयणा पण्णत्ता,
त जहा—
उक्खित्तणाए सघाडे,
अडे कुम्मे य सेलए ।
तु बिय रोहिणी मल्ली,
मागदी चंदिमाति य ।।
दावद्दवे उदगणाए,
मडुक्के तेतलीइ य ।
नदीफले अवरकका,
आइण्णे सु सुमाइ य ।।
अवरे य पोडरीए,
णाए एगूणवीसइमे ।

२ जबुद्दीवे ण दीवे सूरिआ उक्कोसेण एगूणवीस जोयणसयाइ उड्ढमहो तवंति ।

३. सुक्केण महग्गहे अवरेण उदिए समाणे एगूणवीस णक्खत्ताइ सम चार चरित्ता अमरेण अत्यमण उयागच्छइ ।

४ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स कलाओ एगूणवीस छेयणाओ पण्णत्ताओ ।

५ एगूणवीस तित्थयरा अगारमज्झावसित्ता मु डे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिअ पव्वइआ ।

उन्नीसवां समवाय

१ ज्ञाता-सूत्र के उन्नीस अध्ययन प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
१ उत्क्षिप्तज्ञात, २ सघाट, ३ अड, ४ कूर्म, ५ शैलक, ६ तुम्ब, ७ रोहिणी, ८ मल्ली, ९ माकदी, १० चन्द्रमा, ११ दावद्रव, १२ उदकज्ञात, १३ मडूक, १४ तेतली, १५ नन्दिफल, १६ अपरकका, १७ आकीर्ण, १८ सु सुमा और उन्नीसवा/१९ पुण्डरीकज्ञात ।

२ जम्बुद्वीप द्वीप मे सूर्य उत्कृष्टत एक हजार नौ सौ योजन ऊर्ध्व और अधो तपते हैं ।

३ शुक्र महाग्रह पश्चिम मे उदित होकर उन्नीस नक्षत्रो के साथ सहगमन करता हुआ पश्चिम मे अस्त होता है ।

४ जम्बुद्वीप द्वीप की कलाएँ उन्नीस छेदक/विभाग प्रज्ञप्त हैं ।

५ उन्नीस तीर्थकरो ने अगार-वास के मध्य रहकर पश्चात् मुण्डित होकर अगार से अनगारित प्रव्रज्या ली ।

६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एगूणवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

६ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की उन्नीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

७ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एगूणवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

७ छठी पृथिवी [तम प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की उन्नीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

८ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण एगूणवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

८ कुछेक असुरकुमार देवो की उन्नीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण एगूणवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

९ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की उन्नीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१०. आणयकप्पे देवाण उक्कोसेण एगूणवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१० आनत कल्प मे कुछेक देवो की उत्कृष्टत उन्नीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

११ पाणए कप्पे देवाण जहण्णेण एगूणवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

११ प्राणत कल्प मे कुछेक देवो की जघन्यत /न्यूनत उन्नीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१२ जे देवा आणत पाणत णत विणत घण सुसिर इद इदयत इदुत्तरवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण एगूणवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ जो देव आनत, प्राणत, नत, विनत, घन, सुषिर, इन्द्र, इन्द्रकान्त और इन्द्रोत्तरावतसक विमान मे देवत्व मे उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत उन्नीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३ ते ण देवा एगूणवीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा।

१३ वे देव उन्नीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, निश्वास छोडते है।

१४ तेसि ण देवाए एगूणवीसाए वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४ उन देवो के उन्नीस हजार वर्षों मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१५ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१५ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो उन्नीस भव ग्रहणकर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदुखान्त करेगे ।

३ सव्वेवि ण धणोदही वीसं जोयण-सहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ता ।

३ समस्त घनोदधिवातवलयो का बाहुल्य वीस हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

४ पाणयस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वीस सामाणिश्रसाहस्सीश्रो पण्णत्ताश्रो ।

४ प्राणत देवराज देवेन्द्र के सामानिक देव वीस हजार प्रज्ञप्त है ।

५. णपुसयवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स वीस सागरोवमकोडाकोडीश्रो बधश्रो बधठिई पण्णत्ता ।

५ नपु सक वेदनीय कर्म का बीस कोटा-कोटि स्थिति-बन्ध प्रज्ञप्त है ।

६. पच्चक्खाणस्स ण पुव्वस्स वीस वत्थू पण्णत्ता ।

६ प्रत्याख्यान पूर्व के वस्तु/अधिकार बीस प्रज्ञप्त हैं ।

७ श्रोसप्पिणि-उस्सप्पिणिमंडले वीस सागरोवम-कोडाकोडीश्रो कालो पण्णत्ता ।

७ उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी-मडल/कालचक्र बीस कोटाकोटि सागरोपम काल परिमित प्रज्ञप्त है ।

८. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण वीस पलिश्रोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेर-इयाण वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ छठी पृथिवी [तम प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण वीस पलिश्रोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० कुछेक असुरकुमार देवो की बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याण देवाणं वीस पलिश्रोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

११ सौधर्म ईशान कल्प मे कुछेक देवो की बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. पाणतें कप्पे देवाण उक्कोसेण वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ प्राणत कल्प मे देवो की उत्कृष्टत बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३ आरणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१३ आरण कल्प में देवों की जघन्यतः बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१४ जे देवा सातं विसातं सुविसातं सिद्धत्थं उप्पलं रुइलं तिगिच्छं दिसासोवत्थियं-वद्धमाणयं पलंबं पुप्फं सुपुप्फं पुप्फावत्तं पुप्फपभं पुप्फकंतं पुप्फवण्णं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिट्ठं पुप्फकूडं पुप्फुत्तरवडेंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

१४ जो देव सात, विसात, सुविसात, सिद्धार्थ, उत्पल, रुचिर, तिगिछ, दिशासौवस्तिक, प्रलम्ब, पुष्प, सुपुष्प, पुष्पावर्त, पुष्पप्रभ, पुष्पकान्त, पुष्पवर्ण, पुष्पलेश्य, पुष्पध्वज, पुष्पशृंग, पुष्पसिद्ध, पुष्पकूट और पुष्पोत्तरावतंसक विमान में देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवों की उत्कृष्टतः बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१५ ते णं देवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा।

१५ वे देव बीस अर्धमासों/पक्षों में आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, निःश्वास छोड़ते हैं।

१६ तेसि णं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१६ उन देवों के बीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१७ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

१७ कुछेक भवसिद्धिक जीव हैं, जो बीस भव-ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्व-दुःखान्त करेंगे।

एक्कवीसइमो समवाओ

१. एक्कवीस सबला पण्णत्ता, त जहा—

१ हत्थकम्म करेमाणे सबले, २ मेहुण पडिसेवमाणे सबले, ३. राइभोयण भु जमाणे सबले, ४ आहाकम्म भु जमाणे सबले, ५ सागारियपिंड भु जमाणे सबले, ६ उद्देसिय, कीय, आहट्टु दिज्जमाण भु जमाणे सबले, ७ अभिक्खण पडियाइक्खेत्ता ण भु जमाणे सबले, ८ अतो छण्ह मासाण गणाओ गण सकममाणे सबले, ९ अतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाण सबले, १० अतो मासस्स तओ माईठाणे सेवमाणे सबले, ११ रायपिंड भु जमाणे सबले, १२ आउट्टिआए पाणाइवाय करेमाणे सबले, १३ आउट्टिआए मुसावाय वदमाणे सबले, १४ आउट्टिआए अदिण्णादाण गिण्हमाणे सबले, १५ आउट्टिआए अणतरहिआए पुढवीए ठाण वा निसीहिय वा चेतेमाणे सबले। १६ आउट्टिआए चित्तमताए पुढवीए, चित्तमताए सिलाए, चित्तमताए लेलूए, कोलावासमि वा दारुए अण्णयरे वा तहप्पगारे

इक्कीसवां समवाय

१ शबल/प्रदूषित इक्कीस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—

१ हस्त-कर्म/हस्त-मैथुन करने वाला शवल, २ मैथुन प्रतिसेवन करने वाला शवल, ३ रात्रि-भोजन करने वाला शवल, ४ आधाकर्म/अपक्व भोजन करने वाला शवल, ५ सागारिक पिंड खाने वाला शवल, ६ औद्देशिक, क्रीत, आहृत, प्रदत्त भोजन करने वाला शवल, ७ पुन पुन प्रतियाचना कर भोजन करने वाला शवल, ८ छह माह के अन्तर्गत गण से गण मे सक्रमण करने वाला शवल, ९ एक माह के अन्तर्गत तीन बार द्रगलेप/प्रक्षालन करने वाला शवल, १० एक माह के अन्तर्गत तीन बार मायी-स्थान/कपट-व्यवहार का सेवन करने वाला शवल, ११ राजपिण्ड/गरिष्ठ भोजन करने वाला शवल, १२ आवर्तिक/निरन्तर प्राणातिपात करने वाला शवल, १३ आवर्तिक/निरन्तर मृषावाद बोलने वाला शवल, १४ आवर्तिक/निरन्तर अदत्तदान ग्रहण करने वाला शवल, १५ आवर्तिक/निरन्तर अनन्तर्हित/सजीव पृथिवी पर स्थान/निवास, निषद्या/शय्या का चित्तपूर्वक उपयोग करने वाला शवल, १६ आवर्तिक/निरन्तर

चेतेमाणे सबले, १७ जीवपइ-ट्ठिए सप्राडे सपाणे सबीए सहरिए सउत्तिगे पणग-दगमट्टी-मक्कडासंताणए ठाण वा निसी-हिय वा चेतेमाणे सबले, १८ आउट्टिआए मूलभोयण वा कद-भोयण वा खधभोयण वा तया-भोयण वा पवालभोयण वा पत्त-भोयण वा पुप्फभोयण वा फल-भोयण वा बीयभोयण वा हरिय-भोयण वा भु जमाणे वा, १९ अतो सवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे सबले, २० अतो सवच्छरस्स दस माइठाणाइ सेव-माणे सबले, २१ अभिक्खण-अभिक्खण सीतोदय-वियड-वग्घा-रिय-पाणिणा असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहित्ता भु जमाणे सबले ।

सचित्त पृथिवी पर या आवर्तिक सचित्त शिला पर या कोलावास/वृक्ष-कोठरवास या उसी प्रकार की अन्यतर लकडी के स्थान, शय्या, निषद्या का चित्तपूर्वक उपयोग करने वाला शबल, १७ जीव-प्रतिष्ठित, प्राणसहित, बीज-सहित, हरित-सहित, उदक-सहित, पनक/सप्राण, द्रग/मिट्टी, मकडीजाल एव इसी प्रकार के अन्य स्थान पर निवास, शय्या, निषद्या करने वाला शबल, १८ आवर्तिक/निरन्तर मूल-भोजन, कन्द-भोजन, त्वक्-भोजन, प्रवाल-भोजन, पुष्प-भोजन, फल-भोजन और हरित-भोजन करने वाला शबल, १९ एक सवत्सर/वर्ष मे दश बार उदक-लेप करने वाला शबल, २० एक सवत्सर/वर्ष के अन्तर्गत दश बार मायावी स्थानो का सेवन करने वाला शबल, २१ पुन पुन शीतल जल से लिप्त हाथो से अशन, पान, खादिम/खाद्य और स्वादिम/स्वाद्य का परिग्रहण कर खाने वाला शबल ।

२ मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीस कम्मसा सतकम्मा पण्णत्ता, त जहा—

अपच्चक्खाणकसाए कोहे,
अपच्चक्खाणकसाए माणे,
अपच्चक्खाणकसाए माया,
अपच्चक्खाणकसाए लोभे ।
पच्चक्खाणावरणे कोहे,
पच्चक्खाणावरणे माणे,
पच्चक्खाणावरणा माया,

२ मोहनीय कर्म की सात प्रकृतियो का क्षयकर कर्म-सत्ता के कर्मांश/कर्म-प्रकृतियाँ इक्कीस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—

अप्रत्याख्यान-कषाय क्रोध, अप्रत्या-ख्यान-कषाय मान, अप्रत्याख्यान-कषाय माया, अप्रत्याख्यान-लोभ, प्रत्याख्यानावरण-कषाय क्रोध, प्रत्याख्यानावरण-कषाय मान, प्रत्या-ख्यानावरण-कषाय माया, प्रत्या-

पच्चक्खाणावरणे लोभे । संजलणे कोहे, संजलणे माणे, संजलणा माया, संजलणे लोभे, इत्थिवेदे, पुं वेदे, नपुं सयवेदे. हासे, अरति, रति, भय, सोग दुगुं छा ।	स्यानावरण-कषाय माया, सज्वलन-कषाय क्रोध, सज्वलन-कषाय मान, सज्वलन-कषाय माया, सज्वलन-कषाय लोभ, स्त्रीवेद, पुं वेद/पुरुष-वेद, नपुं वेद/नपुं सक-वेद, हास्य, अरति, रति, भय, शोक, दुगुं छा/जुगुप्सा ।
३. एकमेक्काए णं ओसप्पिणीए पञ्चमछट्ठाओ समाओ एक्कवीस-एक्कवीस वाससहस्साइं कालेण पण्णत्ताओ, तं जहा— दूसमा दूसम-दूसमा य ।	३ प्रत्येक अवसर्पिणी का पाँचवाँ-छठा आरा / कालखण्ड इक्कीस-इक्कीस हजार वर्ष काल का प्रज्ञप्त है। जैसे कि— दु षमा, दु षम-दु षमा ।
४. एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढम-बितियाओ समाओ एक्कवीस-एक्कवीस वाससहस्साइं कालेण पण्णत्ताओ, तं जहा— दूसम-दूसमा दूसमा य ।	४ प्रत्येक उत्सर्पिणी का पहला-दूसरा आरा इक्कीस-इक्कीस हजार वर्ष काल का प्रज्ञप्त है। जैसे कि— दु षमा-दु षमा, दु षमा ।
५. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।	५ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिकों की इक्कीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
६. छट्ठीय पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।	६ छठी पृथिवी [तम प्रभा] पर कुछेक नैरयिकों की इक्कीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
७. असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ-याणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।	७ कुछेक असुरकुमार देवों की इक्कीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
८. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याणं देवाणं एक्कवीसं पलिओव-माइं ठिई पण्णत्ता ।	८ सौधर्म-ईशान कल्प में कुछेक देवों की इक्कीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९ आरणे कप्पे देवाण उक्कोसेण एक्कवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ आरण कल्प मे देवो की उत्कृष्टत इक्कीस सागरोपम की स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. अच्चुते कप्पे देवाण जहण्णेण एक्कवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० अच्युत कल्प मे देवो की जघन्यत / न्यूनत इक्कीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ जे देवा सिरिवच्छ सिरिदामगड मल्ल किट्ठि चावोण्णत आरण्ण-वडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण एक्कवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ जो देव श्रीवत्स, श्रीदामकाण्ड, माल्य, कृष्ट, चापोन्नत और आरणावतमक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत इक्कीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ ते ण देवा एक्कवीसाए अद्धमासाण आगमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१२ वे देव इक्कीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१३. तेसि ण देवाण एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१३ उन देवो के इक्कीस हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१४ कुछेक भवसिद्धिक जीव हैं, जो इक्कीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

बावीसइमो समवाओ

१. बावीस परीसहा पण्णत्ता, त जहा—

दिगिंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे नाणपरीसहे दसणपरीसहे पण्णापरीसहे ।

२. बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, त जहा—

कालवण्णपरिणामे नीलवण्णपरिणामे लोहियवण्णपरिणामे हालिद्दवण्णपरिणामे सुक्किलवण्णपरिणामे सुब्भिगधपरिणामे दुब्भिगधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अबिलरसपरिणामे महुररसपरिणामे कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणामे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे

बाईसवां समवाय

१ परीषह/सहिष्णु-धर्म बाईस प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

दिगिंछा/क्षुधा-परीषह, पिपासा-परीषह, शीत-परीषह, उष्ण-परीषह, दशमशक-परीषह, अचेल-परीषह, अरति-परीषह, स्त्री-परीषह, चर्या-परीषह, निषद्या-परीषह, शय्या-परीषह, आक्रोश-परीषह, वध-परीषह, याचना-परीषह, अलाभ-परीषह, रोग-परीषह, तृण-स्पर्श-परीषह, जल्ल-परीषह, सत्कार-पुरस्कार-परीषह, प्रज्ञा-परीषह, अज्ञान-परीषह, अदर्शन-परीषह ।

२ पुद्गल-परिणाम बाईस प्रकार के प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

१ कृष्णवर्णपरिणाम, २ नीलवर्णपरिणाम, ३ लोहितवर्णपरिणाम, ४ हारिद्रवर्णपरिणाम, ५ शुक्लवर्णपरिणाम, ६ सुरभिगन्धपरिणाम, ७ दुरभिगन्धपरिणाम, ८ तिक्तरसपरिणाम, ९ कटुकरसपरिणाम, १० कषायरसपरिणाम, ११ आम्लरसपरिणाम, १२ मधुररसपरिणाम, १३ कर्कशस्पर्शपरिणाम, १४ मृदुस्पर्शपरिणाम, १५ गुरुस्पर्शपरिणाम, १६ लघुस्पर्शपरिणाम, १७ शीतस्पर्शपरि-

गरुलहुफासपरिणामे अगरुलहु-फासपरिणामे ।	णाम, १८ उष्णस्पर्शपरिणाम, १९ स्निग्धस्पर्शपरिणाम, २० रूक्षस्पर्श-परिणाम, २१ अगुरुलघुस्पर्शपरि-णाम और २२ गुरुलघुस्पर्शपरिणाम।
३ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण बावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	३ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की बाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
४. छट्ठीए पुढवीए नेरइयाण उक्कोसेण बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	४ छठी पृथिवी [तम प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
५ अहेसत्तमाए पुढवीए नेरयाण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	५ अधस्तन सातवी पृथिवी [महातम - प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की जघन्यत बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
६ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण बावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	६ कुछेक असुरकुमार देवो की बाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
७ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अण्थेगइ-याण देवाण बावीस पलिओव-माइ ठिई पण्णत्ता ।	७ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की बाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।
८ अच्चुते कप्पे देवाण उक्कोसेण बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	८ अच्युत कल्प मे देवो की बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
९. हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जगाण देवाण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	९ अधस्तन-अधोवर्ती ग्रैवेयक देवो की जघन्यत /न्यूनत बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. जे देवा महित विसुतं विमल पभास वणमाल अच्चुतवडेंसग विमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण बावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१०. जो देव महित, विश्रुत, विमल, प्रभास, और वनमाल, अच्युतावतसक विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत बाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ ते ण देवा बावीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

११ वे देव बाईस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, नि श्वास छोडते है ।

१२. ते ण देवाण बावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१२ उन देवो के बाईस हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१३. सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१३ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो बाईस भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृ त होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

तेवीसइमो समवाओ

१ तेवीस सुयगडज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—
समए वेतालिए उवसग्गपरिण्णा थीपरिण्णा नरयविभत्ती महावीर-थुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरणे आहत्तहिए गथे जमईए गाहा पुडरीए किरियठाणा आहार-परिण्णा अपच्चक्खाणकिरिया अणगारसुय अद्दइज्ज णाल-दइज्ज ।

२ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसाए जिणाण सूरुग्गमणमुहुत्तसि केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे ।

३ जबुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पि-णीए तेवीस तित्थयरा पुव्वभवे एक्कारसगिणो होत्था, त जहा—
अजिए सभवे अभिणदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चदप्पहे सुविही सीतले सेज्जसे वासुपुज्जे विमले अणते धम्मे सती कु थू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे य ।

तेईसवां समवाय

१ सूत्रकृत के तेइस अध्ययन प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
१ ममय, २ वैतालिक, ३ उपसर्ग-परिज्ञा, ४ स्त्रीपरिज्ञा, ५ नरक-विभक्ति, ६ महावीरस्तुति, ७ कुशीलपरिभाषित, ८ वीर्य, ९ धर्म, १० समाधि, ११ मार्ग, १२ समव-सरण, १३ यथातथ्य, १४ ग्रन्थ, १५ यमकीय, १६ गाथा, १७ पुण्ड-रीक, १८ क्रियास्थान, १९ आहार-परिज्ञा, २० अप्रत्याख्यानक्रिया, २१ अनगारश्रुत, २२ आर्द्रकीय, २३ नालन्दीय ।

२ जम्बुद्वीप द्वीप मे भारतवर्ष की इसी अवसर्पिणी मे तेईस जिन/तीर्थंकरो को सूर्य के उदीयमान मुहूर्त मे प्रवर केवलज्ञान और प्रवर केवल-दर्शन समुत्पन्न हुआ ।

३ जम्बुद्वीप द्वीप मे इस अवमर्पिणी के तेईस तीर्थंकर पूर्वभव मे ग्यारह अगधारी थे । जैसे कि—
अजित, सभव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयास, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्ली, मुनिसुव्रत, नमि, अरिष्टनेमि, पार्श्व और वर्धमान ।

उसभे ण अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था ।	अर्हत् कौशलिक ऋषभ चौदह पूर्वी थे ।
४ जबुद्दीवे ण दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीस तित्थगरा पुव्वभवे मडलियरायाणो होत्था, त जहा— अजिए सभवे अभिणदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चदप्पहे सुविही सीतले सेज्जसे वासुपुज्जे विमले अणते धम्मे सती कु थू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे य ।	४ जम्बुद्वीप द्वीप मे इस अवसर्पिणी के तेईस तीर्थंकर पूर्वभव मे माडलिक राजा थे । जैसे कि— अजित, सभव, अभिनदन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयास, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्ली, मुनिसुव्रत, नमि, अरिष्टनेमि, पार्श्व और वर्धमान ।
उसभे ण अरहा कोसलिए चक्कवट्टी होत्था ।	अर्हत् कौशलिक ऋषभ पूर्वभव मे चक्रवर्ती थे ।
५. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	५ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की तेईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
६. अहेसत्तमाए ण पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	६ अधोवर्ती सातवी पृथिवी [महातम प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की तेईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
७. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तेवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	७ कुछेक असुरकुमार देवो की तेईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
८. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण तेवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	८ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की तेईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
९. हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्जाण देवाण जहण्णेण तेवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	९ अधस्तन-मध्यवर्ती ग्रैवेयक देवो की जघन्यत /न्यूनत तेईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१० जे देवा हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण तेवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० जो देव अधस्तन ग्रैवेयक विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत तेईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ ते ण देवा तेवीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

११ वे देव तेईस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते हैं, उच्छ्-वास लेते है, नि श्वास छोडते है ।

१२. तेसि ण देवाण तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१२ उन देवो के तेईस हजार वर्षों मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१३ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१३ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो तेईस भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

चउव्वीसइमो समवाओ

१ चउव्वीस देवाहिदेवा पण्णत्ता, त जहा—
उसभे अजिते सभवे अभिणदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चदप्पहे सुविही सीतले सेज्जसे वासुपुज्जे विमले अणते धम्मे सती कुथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे वद्धमाणे ।

२ चुल्लहिमवतसिहरीण वासहर-पव्वयाण जीवाओ चउव्वीस-चउव्वीस जोयणसहस्साइ णव-बत्तीसे जोयणसए एग च अट्ठत्तीसइ भाग जोयणस्स किंचिविसेसाहिआओ आयामेण पण्णत्ताओ ।

३ चउवीस देवट्ठाणा सइदया पण्णत्ता, सेसा अहमिदा—अनिदा अपुरोहिआ ।

४. उत्तरायणमते ण सूरिए चउ-वीसगुलिय पोरिसियछाय णिव्वत्त-इत्ता ण णिअट्टति ।

५ गगासिधूओ ण महाणईओ पवहे सातिरेगे चउवीस कोसे वित्थारेण पण्णत्ताओ ।

चौबीसवां समवाय

१ देवाधिदेव चौबीस प्रज्ञप्त हैं जैसे कि—
ऋषभ, अजित, सभव, अभिनन्दन सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ सुविधि, शीतल, श्रेयास, वासुपूज्य विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु अर, मल्ली, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि पार्श्व और वर्धमान ।

२ क्षुल्ल/हिमवन्त और शिखरी वर्षधर पर्वतो की जीवा/परिधि चौबीस-चौबीस हजार नौ सौ बत्तीस योजन और योजन के अडतीस भागो मे से एक भाग (अर्थात् २४९३२ $\frac{1}{38}$ योजन) से कुछ अधिक लम्बी प्रज्ञप्त है ।

३ इन्द्र-सहित देवो के स्थान चौबीस प्रज्ञप्त हैं । शेष अहमिन्द्र, इन्द्र-रहित, पुरोहित-रहित है ।

४ उत्तरायणगत सूर्य चौबीस अँगुल की पौरुषी-छाया पार कर निवृत्त होता है ।

५ गगा-सिन्धु महानदियो का प्रवाह चौबीस कोश से अधिक विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

६. रत्तारत्तवतीओ ण महाणदीओ पवहे सातिरेगे चउवीस कोसे वित्थारेण पण्णत्ताओ ।

६ रक्ता-रक्तवती का प्रवाह चौबीस कोश से अधिक प्रज्ञप्त है ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चउवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की चौबीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण चउवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ अधोवर्ती सातवी पृथिवी [महातम - प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की चौबीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण चउवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ कुछेक असुरकुमार देवो की चौबीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइ-याण देवाण चउवीस पलिओव-माइ ठिई पण्णत्ता ।

१० सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की चौबीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्जाण जह-ण्णेण चउवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ अधोवर्ती एव ऊर्ध्ववर्ती ग्रैवेयक देवो की जघन्यत /न्यूनत चौबीस साग-रोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ जे देवा हेट्ठिप-मज्झिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण चउ-वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ जो देव अधस्तन-मध्यवर्ती ग्रैवेयक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत चौबीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३ ते ण देवा चउवीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊस-सति वा नीससति वा ।

१३ वे देव चौबीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१४. ते ण देवाण चउवीसाए वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४ उन देवो के चौबीस हजार वर्षों मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१५. संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्भिस्सति बुज्भिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंत करिस्सति ।

१५ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो चौवीस भव ग्रहणकर सिद्ध होंगे, वुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

पणवीसइमो समवाओ

१ पुरिमपच्छिमताण तित्थगराण पचजामस्स पणवीस भावणाओ पण्णत्ताओ, त जहा —
१ इरियासमिई, २ मणगुत्ती, ३ वयगुत्ती, ४. आलोय-भायण-भोयण, ५ आदाण-भड-मत्त-निक्खेवणासमिई, ६ अणुवीति-भासणया, ७ कोहविवेगे, ८. लोभविवेगे, ९ भयविवेगे, १० हासविवेगे, ११. उग्गह-अणुण्ण-वणता, १२. उग्गह-सीमजाण-णता, १३ सयमेव उग्गहअण-गेण्हणता, १४ साहम्मियउग्गह अणुण्णविय परिभु जणता, १५ साधारणभत्तपाण अणुण्णविय परिभु जणता, १६ इत्थी-पसु-पडग-ससत्त-सयणासणवज्जणया १७ इत्थी-कहविवज्जणया, १८ इत्थीए इदियाण आलोयण-वज्जणया, १९ पुव्वरय-पुव्व-कीलिआण अणणुसरणया, २०. पणीताहार-विवज्जणया, २१ सोइदियरागोवरई, २२ चक्खि-दियरागोवरई, २३ घाणिदिय-रागोवरई, २४. जिब्भिदियरागो-वरई, २५ फासिदियरागोवरई।

२ मल्ली ण अरहा पणवीस धणुइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्या।

पचीसवां समवाय

१ पूर्व-पश्चिम प्रथम और अन्तिम तीर्थंकरो के पचयाम की पच्चीस भावनाएँ प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
१ ईर्यासमिति, २ मनोगुप्ति, ३ वचनगुप्ति, ४ आलोकितपान-भोजन, ५ आदानभाड-मात्रनिक्षेप-णासमिति, ६ अनुवीचिभाषण, ७ क्रोध-विवेक, ८ लोभ-विवेक, ९ भय-विवेक, १० हास्य-विवेक ११ अवग्रह-अनुज्ञापनता, १२ अव-ग्रहसीम-ज्ञापनता, १३ स्वयमेव अव-ग्रहअनुग्रहणता, १४ साधर्मिक अव-ग्रहअनुज्ञापनता, १५ साधारण भक्त-पानअनुज्ञाप्य परिभु जनता, १६ स्त्री-पशुनपु सक-ससक्त शयन-आसन वर्ज, नता १७ स्त्रीकथाविवर्जनता, १८ स्त्रीइन्द्रिय-अवलोकनवर्जनता १९ पूर्वरतपूर्वक्रीडा-अननुस्मरणता, २० प्रणीत-आहार-विवर्जनता। २१ श्रोत्रेन्द्रियरागोपरति, २२ चक्षु-रिन्द्रिय-रागोपरति, २३ घ्राणेन्द्रिय-रागोपरति, २४ जिह्वेन्द्रिय-रागो-परति और २५ स्पर्शनेन्द्रिय-रागो-परति।

२ अर्हत् मल्ली ऊँचाई की दृष्टि से पच्चीस धनुष ऊँचे थे।

३ सव्वेवि णं दीहवेयड्डपव्वया पणवीस-पणवीस जोयणाणि उड्ढ उच्चत्तेण, पणवीस-पणवीस गाउयाणि उव्वेहेण पण्णत्ता।

३ समस्त दीर्घ वैताढय पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से पच्चीस धनुष ऊँचे और पच्चीस-पच्चीस गाऊ/कोष गहरे प्रज्ञप्त है।

४ दोच्चाए ण पुढवीए पणवीस णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

४ दूसरी पृथिवी [शर्करा-प्रभा] पर पच्चीस लाख नरकावास प्रज्ञप्त है।

५ आयारस्स ण भगवओ सचूलियायस्स। त जहा—
सत्थ-परिण्णा लोगविजओ
सीओ सणीअ सम्मत्त।
आवति धुअविमोह उवहाण-
सुय महापरिण्णा॥
पिंडेसण सिज्ज रिआ
भासज्झयणा य वत्थ पाएसा।
उग्गहपडिमा सत्तिक्क-
सत्तया भावण विमुत्ती॥

५ भगवान् के चूलिका सहित आचार के पच्चीस अध्ययन प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
१ स्त्री-परीज्ञा, २ लोकविजय, ३ शीतोष्णीय, ४ सम्यक्त्व, ५ आवन्ती ६ धूत, ७ विमोह, ८ उपधानश्रुत, ९ महापरिज्ञा, १० पिण्डैषणा, ११ शय्या, १२ ईर्या, १३ भाषाध्ययन, १४ वस्त्रैषणा, १५ पात्रैषणा १६ अवग्रहप्रतिमा, १७-२३ सप्तैकक [१७ स्थान, १८ निषीधिका, १९ उच्चारप्रस्रवण, २० शब्द, २१ रूप, २२ परक्रिया, २३ अन्योन्य क्रिया], २४ भावना और २५ विमुक्ति।

६ निसीहज्झयण पणवीसइम।

६ निशीथ अध्ययन पच्चीसवाँ है।

७. मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए ण अपज्जत्तए सकिलिट्ठपरिणामे नामस्स कम्मस्स पणवीस उत्तरपयडीओ णिबधति, त जहा—
तिरियगतिनाम विगलिदियजातिनाम ओरालियसरीरनाम तेअगसरीरनाम कम्मगसरीरनाम हुडसठाणनाम ओरालियसरीरगोवगनाम सेवट्ठसघयणनाम

७ अपर्याप्तक मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय जीव सक्लिष्ट परिणाम से नामकर्म की पच्चीस उत्तर प्रकृतियो का बन्धन करते है। जैसे कि—
१ तिर्यग्गतिनाम, २ विकलेन्द्रिय जातिनाम, ३ औदारिकशरीरनाम, ४ तैजसशरीरनाम, ५ कार्मणशरीरनाम, ६ हुडकसस्थान नाम, ७ औदारिकशरीराङ्गोपाङ्गनाम, ८ सेवार्त्त-

वण्णनाम गधनाम रसनाम फास-नाम तिरियाणुपुव्विनाम अगरुय-लहुयनाम उवघायनाम तसनाम बादरनाम अपज्जत्तयनाम पत्तेयसरीरनाम अथिरनाम असुभनाम दुभगनाम अणादेज्ज-नाम अजसोवित्तिनाम निम्माण-नाम ।

सहननाम, ६ वर्णनाम १० गन्ध-नाम, ११ रसनाम, १२ स्पर्शनाम, १३ तिर्यंचानुपूर्वीनाम, १४ अगुरुलघु-नाम,१५ उपघातनाम, १६ त्रसनाम, १७ बादरनाम, १८ अपर्याप्तकनाम, १९ प्रत्येकशरीरनाम, २० अस्थि-नाम, २१ अशुभनाम, २२ दुर्भग-नाम, २३ अनादेयनाम, २४ अयश-कीर्त्तिनाम और २५ निर्माणनाम ।

८. गगासिधूओ ण महाणदीओ पणवीस गाउयाणि पुहुत्तेण दुहओ घटमुह-पवित्तिएण मुत्ता-वलिहारसठिएण पवातेण पवडति ।

८ गगा और सिन्धु महानदियाँ पच्चीस गव्यूति/कोश विस्तृत दो मुँहे घट-मुख मे प्रवेश कर मुक्तावली हार के रूप मे प्रपात मे गिरती है ।

९ रत्तारत्तवतीओ ण महाणदीओ पणवीस गाउयाणि पुहुत्तेण दुहओ मकरमुह-पवित्तिएण मुत्तावलि-हार-सठिएण पवातेण पवडति ।

९ रक्ता और रक्तवती महानदिया पच्चीस गव्यूति/कोश पृथुल/विस्तृत मकर-मुख की प्रवृति कर मुक्तावली हार के रूप मे प्रपात मे गिरती हैं ।

१० लोगबिंदुसारस्स ण पुव्वस्स पणवीस वत्थू पण्णत्ता ।

१० लोक बिन्दुसार पूर्व के वस्तु/अधिकार पच्चीस प्रज्ञप्त हैं ।

११ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पणवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की पच्चीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण पणवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ अधोवर्ती सातवी पृथिवी [महातम - प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की पच्चीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण पणवीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ कुछेक असुरकुमार देवो की पच्चीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त हैं ।

१४. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण पणवीस पलिओव-माइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की पच्चीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५. मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जाण देवाण जहण्णेण पणवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ मध्यम-अधस्तन ग्रैवेयक देवो की जघन्यत /न्यूनत पच्चीम सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६. जे देवा हेट्ठिम-उवरिम-गेवेज्ज-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण पणवीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१६ जो देव अधोवर्ती एव ऊर्ध्ववर्ती ग्रैवेयक विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत पच्चीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१७. ते ण देवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१७ वे देव पच्चीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१८ तेसि ण देवाण पणवीसाए वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१८ उन देवो के पच्चीस हजार वर्षों मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१९ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे पणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झि-स्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण-मत करिस्सति ।

१९ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो पच्चीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

छव्वीसइमो समवाओ

१ छव्वीस दस-कप्प-ववहाराण उद्दे-सणकाला पण्णत्ता, त जहा—
दस दसाण, छ कप्पस्स, दस ववहारस्स।

२ अभवसिद्धियाण जीवाण मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीस कम्मसा सतकम्मा पण्णत्ता, त जहा—
मिच्छत्तमोहणिज्ज सोलस कसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपु सकवेदे हास अरति रति भय सोगो दुगु छा।

३ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण छव्वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

४. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

५ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण छव्वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

६ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण छव्वीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता।

छब्बीसवां समवाय

१ दश (दशाश्रुतस्कन्ध) बृहत्कल्प और व्यवहार के छब्बीस उद्देशनकाल प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
दशा के दश, कल्प के छह और व्यवहार के दश।

२ अभव-सिद्धिक जीवो के मोहनीय कर्म की कर्मसत्ता के कर्मांश/कर्म-प्रकृतियाँ छब्बीस प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
मिथ्यात्व मोहनीय, सोलह कषाय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपु सकवेद, हास्य, अरति, रति, भय, शोक, दुगु छा/जुगुप्सा।

३ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की छब्बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

४ अधोवर्ती सातवी पृथिवी [महातम - प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की छब्बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

५ कुछेक असुरकुमार देवो की छब्बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

६ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की छब्बीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

७. मज्झिम - मज्झिम - गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ मध्यवर्ती-मध्यम ग्रैवेयक देवो की जघन्यत /न्यूनत छब्बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. जे देवा मज्झिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण छव्वीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ जो देव मध्यवर्ती-अधस्तन ग्रैवेयक विमान मे देवत्व से उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत छब्बीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. ते ण छव्वीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

९ वे देव छब्बीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते है, नि श्वास छोडते है ।

१०. तेसि ण देवाण छव्वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१० उन देवो के छब्बीम हजार वर्षो मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

११. सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे छव्वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति करिस्सति ।

११ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो छब्बीस भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

सत्तावीसइमो समवाओ

१ सत्तावीस अणगारगुणा पण्णत्ता, त जहा—
पाणातिवायवेरमणे, मुसावाय-वेरमणे, अदिण्णादाणवेरमणे, मेहुणवेरमणे, परिग्गहवेरमणे, सोइंदियनिग्गहे, चक्खिदिय-निग्गहे, घाणिंदियनिग्गहे, जिब्भि-दियनिग्गहे, फासिंदियनिग्गहे, कोहविवेगे, माणविवेगे, माया-विवेगे, लोभविवेगे, भावसच्चे, करणसच्चे, जोगसच्चे, खमा, विरागता, मणसमाहरणता, वतिसमाहरणता, कायसमाहर-णता, णाणसपण्णया, दसण-सपण्णया, चरित्तसपण्णया, वेयणअहियासणया, मारणतिय-अहियासणया ।

२ जबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसए णक्खत्तेहिं सववहारे वट्टति ।

३ एगमेगे ण णक्खत्तमासे सत्तावीस राइदियाइ राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

सत्ताईसवां समवाय

१ अनगार के गुण सत्ताईस हैं। जैसे कि—
१ प्राणातिपात-विरमण, २ मृषा-वाद विरमण, ३ अदत्तादान-विर-मण, ४ मैथुन विरमण, ५ परिग्रह विरमण, ६ श्रोत्रेन्द्रियनिग्रह, ७ चक्षुइन्द्रियनिग्रह, ८ घ्राणेन्द्रिय-निग्रह, ९ रसनेन्द्रियनिग्रह, १० स्पर्शनेन्द्रियनिग्रह, ११ क्रोधविवेक, १२ मानविवेक, १३ मायाविवेक, १४ लोभविवेक, १५ भाव-सत्य, १६ करण-सत्य, १७ योग-सत्य, १८ क्षमा, १९ वैराग्य २० मन-समाहरण, २१ वचन-समाहरण, २२ काय-समाहरण, २३ ज्ञान-सम्पन्नता, २४ दर्शन-सम्पन्नता, २५ चरित्र-सम्पन्नता, २६ वेदना-अधिसहन और २७ मारणान्तिक अधिसहन ।

२ जम्बुद्वीप द्वीप मे अभिजित को छोड कर सत्ताईस नक्षत्रो का सव्यवहार चलता है ।

३ प्रत्येक नक्षत्र-मास रात-दिन की दृष्टि से सत्ताईस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

४ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाण-पुढवी सत्तावीस जोयणसयाइ बाहल्लेण पण्णत्ता ।	४ सौधर्म-ईशान कल्प मे विमान की पृथिवी का सत्ताईस सौ योजन बाहुल्य प्रज्ञप्त है ।
५ वेयगसम्मत्तबधोवरयस्स ण मोहणिज्जस्स कम्मस्म सत्तावीसं कम्मसा सतकम्मा पण्णत्ता ।	५ वेदक सम्यक्त्व बन्ध से उपरत जीव की मोहनीय कर्म की कर्मसत्ता की सत्ताईस उत्तर प्रकृतियाँ प्रज्ञप्त है ।
६ सावण-सुद्ध-सत्तमीए ण सूरिए सत्तावीसगुलिय पोरिसिच्छाय णिव्वत्तइत्ता ण दिवसखेत्त निवड्ढेमाणे रयणिखेत्त अभिणिवड्ढेमाणे चार चरइ ।	६ श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन सूर्य सत्ताईस अगुल की पौरुषी छाया से निवृत्त होकर दिवस-क्षेत्र की ओर निवर्तन करता हुआ रजनी-क्षेत्र की ओर प्रवर्तमान सचरण करता है ।
७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सत्तावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	७ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की सत्ताईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
८. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सत्तावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	८ अधोवर्ती सातवी पृथिवी [महातम प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की सत्ताईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
९ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण देवाण सत्तावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	९ कुछेक असुरकुमार देवो की सत्ताईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगईयाण देवाण सत्तावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	१० सौधर्म ईशान कल्प मे कुछेक देवो की सत्ताईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।
११ मज्झिम - उवरिम - गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण सत्तावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।	११ मध्यवर्ती उपरिम ग्रैवेयक देवो की जघन्यत /न्यूनत सत्ताईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२. ज देवा मज्झिम मज्झिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण सत्तावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१२ जो देव मध्यम ग्रैवेयक विमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत सत्ताईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१३ ते ण देवा सत्तावीसाए अद्धमासाण आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा।

१३ वे देव सत्ताईस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं।

१४ तेसि ण देवाण सत्तावीसाए वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

१४ उन देवो के सत्ताईस हजार वर्ष मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१५ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे सत्तावीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति।

१५ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो सत्ताईस भव ग्रहणकर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे।

अट्ठावीसइमो समवाओ

१ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते, त जहा—

१ मासिया आरोवणा, २. सपचरायमासिया आरोवणा, ३ सदमरायमासिया आरोवणा, ४ सपण्णरसरायमासिया आरोवणा, ५ सवीसइरायमासिया आरोवणा, ६ सपचवीसरायमासिया आरोवणा, ७ दोमासिया आरोवणा, ८ सपचरायदोमासिया आरोवणा, ९. सदसरायदोमासिया आरोवणा, १०. सपण्णरसरायदोमासिया आरोवणा, ११ सवीसइरायदोमासिया आरोवणा, १२ सपचवीसरायदोमासिया आरोवणा, १३. तेमासिया आरोवणा, १४ सपचरायतेमासिया आरोवणा, १५ सदसरायतेमासिया आरोवणा, १६ सपण्णरसरायतेमासिया आरोवणा, १७ सवीसइरायतेमासिया आरोवणा, १८. सपचवीसरायतेमासिया आरोवणा, १९ चउमासिया आरोवणा, २० सपचरायचउमासिया आरोवणा, २१ मदसरायचउमासिया आरोवणा, २२ सपण्णरसरायचउमासिया आरोवणा, २३ मवीस-

अठाईसवां समवाय

१ आचार-प्रकल्प अठाईस प्रकार का प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

१ एक मास की आरोपणा (आरोपणा=प्रायश्चित्त), २ एक मास पाच दिन की आरोपणा, ३ एक मास दस दिन की आरोपणा, ४ एक मास पन्द्रह दिन की आरोपणा, ५ एक मास बीस दिन की आरोपणा, ६ एक मास पचीस दिन की आरोपणा, ७ दो मास की आरोपणा, ८ दो मास पाच दिन की आरोपणा, ९ दो मास दस दिन की आरोपणा, १० दो मास पन्द्रह दिन की आरोपणा, ११ दो मास बीस दिन की आरोपणा, १२ दो मास पचीस दिन की आरोपणा, १३ तीन मास की आरोपणा, १४ तीन मास पाच दिन की आरोपणा, १५ तीन मास दस दिन की आरोपणा, १६ तीन मास पन्द्रह दिन की आरोपणा, १७ तीन मास बीस दिन की आरोपणा, १८ तीन माम पच्चीस दिन की आरोपणा, १९ चार माम की आरोपणा, २० चार मास पाच दिन की आरोपणा, २१ चार माम दम दिन की आरोपणा, २२ चार माम पन्द्रह दिन की आरोपणा, २३ चार माम

इरायचउमासिया आरोवणा, २४ सपचवीसरायचउमासिश्रा आरोवणा, २५. उग्घातिया आरोवणा, २६. अणुग्घातिया आरोवणा २७ कसिणा आरोवणा २८ अकसिरणा आरोवणा—

वीस दिन की आरोपणा, २४ च
मास पच्चीस दिन की आरोपर
२५ उद्घातिकी आरोपणा—
प्रायश्चित्त, २६ अनुद्घातिकी आ
पणा—विशेष प्रायश्चित्त, २७ कृत
आरोपणा—पूर्ण प्रायश्चित्त,
अकृत्स्ना आरोपणा अपूर्ण प्र
श्चित्त।

एत्ताव ताव आयारपकप्पे एत्ताव ताव आयरियव्वे।

इतना ही आचार-प्रकल्प है। इ
ही आचरणीय है।

२ भवसिद्धियाण जीवाण अत्थेगइयाण मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीस कम्मसा सतकम्मा पण्णत्ता, त जहा—
सम्मत्तवेअणिज्ज मिच्छत्तवेयणिज्ज सम्ममिच्छत्तवेयणिज्ज सोलस कसाया णव णोकसाया।

२ कुछेक भवसिद्धिक जीवो के मोह
कर्म के अट्ठाईस कर्मांश—प्रकृ
सत्कर्म/सत्तावस्था मे प्रज्ञप्त
जैसे कि—
सम्यक्त्व वेदनीय, मिथ्यात्व वेद
सम्यक्-मिथ्यात्व वेदनीय, सो
कषाय और नौ नो-कषाय।

३ आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसइविहे पण्णत्ते, त जहा—
सोइदियत्थोग्गहे चक्खिदियत्थोग्गहे घाणिंदियत्थोग्गहे जिब्भिदियत्थोग्गहे फासिंदियत्थोग्गहे णोइदियत्थोग्गहे।
सोइदियवजणोग्गहे घाणिंदियवजणोग्गहे जिब्भिदियवजणोग्गहे फासिंदियवजणोग्गहे।
सोइदियईहा चक्खिदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिदियईहा फासिंदियईहा णोइदियईहा।

३ आभिनिबोधिक ज्ञान अट्ठाईस प्र
का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
श्रोत्रेन्द्रिय-अर्थावग्रह, चक्षुरि
अर्थावग्रह, घ्राणेन्द्रिय-अर्था
रसनेन्द्रिय-अर्थावग्रह, स्पर्शने
अर्थावग्रह, नोइन्द्रिय-अर्थावग्रह
श्रोत्रेन्द्रिय-व्यञ्जनावग्रह, घ
न्द्रिय-व्यञ्जनावग्रह, रसने
व्यञ्जनावग्रह, स्पर्शनेन्द्रिय
ञ्जनावग्रह।
श्रोत्रेन्द्रिय-ईहा, चक्षुरिन्द्रिय-
घ्राणेन्द्रिय-ईहा, रसनेन्द्रिय-

सोइंदियावाते चक्खिदिआवाते फासिंदियावाते णोइंदिआवाते ।

श्रोत्रेन्द्रिय-अवाय, चक्षुरिन्द्रिय-अवाय, घ्राणेन्द्रिय-अवाय, रसनेन्द्रिय-अवाय स्पर्शनेन्द्रिय-अवाय, नो-इन्द्रिय-अवाय ।

सोइंदियधारणा चक्खिदिय-धारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदिय-धारणा णोइंदियधारणा ।

श्रोत्रेन्द्रिय-धारणा, चक्षुरिन्द्रिय-धारणा, घ्राणेन्द्रिय-धारणा, रसनेन्द्रिय-धारणा, स्पर्शनेन्द्रिय-धारणा, और नो-इन्द्रिय-धारणा ।

४ ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

४ ईशानकल्प मे विमानावास अट्ठाईस शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त है ।

५. जीवे णं देवगति णिबंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीस उत्तरपगडीओ णिबंधति, तं जहा—
देवगतिनाम पंचिदियजातिनाम वेउव्वियसरीरनाम तेययसरीर-नाम कम्मगसरीरनाम समचउ-रससंठाणनाम वेउव्वियसरीरगो-वंगनाम वण्णनाम गंधनाम रस-नाम फासनाम देवाणुपुव्विनामं अगरुयलहुयनाम उवघायनाम पराघायनाम ऊसासनाम पसत्थ-विहायगइनाम तसनाम बायर-नाम पज्जत्तनाम पत्तेयसरीरनाम थिराथिराणं दोण्हमण्णयरं एगं नाम णिबंधइ, सुभासुभाणं दोण्हं-मण्णयरं एगं नाम णिबंधइ, सुभगनाम सुस्सरनाम, आएज्ज-अणाएज्जाणं दोण्हं अण्णयरं एगं नाम णिबंधइ, जसोकित्तिनामं निम्माणनाम ।

५ जीव देवगति का बंध करता हुआ नाम कर्म की अट्ठाईस उत्तरप्रकृतियो को बांधता है, जैसे कि—
देवगतिनाम, पंचेन्द्रियजातिनाम, वैक्रियशरीरनाम, शरीरनाम, तैजस-शरीरनाम, कार्मणशरीरनाम, सम-चतुरस्रसंस्थाननाम, वैक्रियशरीर-अंगोपांगनाम, वर्णनाम, गंधनाम, रसनाम, स्पर्शनाम, देवानुपूर्वीनाम, अगुरुलघुनाम, उपघातनाम, पराघात-नाम, उच्छ्वासनाम, प्रशस्तविहा-योगनाम, त्रसनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, प्रत्येकशरीरनाम, स्थिर-नाम और अस्थिरनाम—दोनो मे से एक का बंध करता है शुभनाम और अशुभनाम— दोनो मे से एक बंध का करता है, सुभगनाम, सुस्वरनाम, आदेयनाम और अनादेयनाम—दोनो मे से एक का बंध करता है यश कीर्त्तिनाम और निर्माणनाम ।

६. एव चेव नेरइयेवि, नाणत्त अप्पसत्थविहायगइनाम हुडसठाणनाम अथिरनाम दुब्भगनाम असुभनाम दुस्सरनाम अणादेज्जनाम अजसोकित्तीनाम ।

६ इसी प्रकार नैरयिक भी [विविध अट्ठाईस कर्म-प्रकृतियो का वध करता है ।]
अस्थिरनाम, दुर्भगनाम, अशुभनाम, दुस्वरनाम, अनादेयनाम, अयश कीर्त्तिनाम और निर्माणनाम ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण अट्ठावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको को अट्ठाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरयाण अट्ठावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ अधोवर्ती सातवी पृथिवी [महातम प्रभा] के कुछेक नैरयिको की अट्ठाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण अट्ठावीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ कुछेक असुरकुमार देवो की अट्ठाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त हैं ।

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण अट्ठावीस पलिओमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की अट्ठाईस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जगाण देवाण जहण्णेण अट्ठावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ उपरिम-अधस्तन ग्रैवेयक देवो की जघन्यत /न्यूनत अट्ठाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ जे देवा मज्झिम-उवरिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण अट्ठावीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ जो देव मध्यम-उपरिम विमानो मे उपपन्न है, उन देवो की उत्कृष्टत अट्ठाईस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त हैं ।

१३ ते ण देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१३ वे देव अट्ठाईस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१४. तेसि ण देवाण अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१४ उन देवो के अट्ठाईस हजार वर्षो मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१५ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे अट्ठावीसाए भवग्गहरोहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१५ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो अट्ठाईस भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्व दु खान्त करेंगे ।

एगूणतीसइमो समवाओ

उनतीसवां समवाय

१ एगूणतीसइविहे पावसुयपसगे ण पण्णत्ते त जहा—
भोमे उप्पाए सुमिणे अतलिक्खे अगे सरे वजणे लक्खणे ।

भोमे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—
सुत्ते वित्ती वत्तिए, एव एक्केक्क तिविह ।

विकहाणुजोगे विज्जाणुजोगे मताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे ।

१ पाप-श्रुत के प्रसग उनतीस प्रकार के प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
१ भौम, २ उत्पात, ३ स्वप्न, ४ अन्तरिक्ष, ५ अग, ६ स्वर, ७ व्यजन, ८ लक्षण ।

भौम तीन प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
सूत्र, वृत्ति, वार्तिक ।

इस प्रकार एक-एक के तीन प्रकार [८ × ३ = २४ भेद] २५ विकथानुयोग, २६ विद्यानुयोग, २७ मत्रानुयोग, २८ योगानुयोग, २९ अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग ।

२ आसाढे ण मासे एगूणतीसराइदिआइ राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

२ आषाढ मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

३ भद्दवए ण मासे एगूणतीसराइदिआइ राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

३ भाद्रपद मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

४ कत्तिए ण मासे एगूणतीसराइदिआइ राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

४ कार्तिक मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

५. पोसे ण मासे एगूणतीसराइदिआइ राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

५ पौष मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

६ फग्गुणे ण मासे एगूणतीसराइदिआइ राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

६ फाल्गुन मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

७ वइसाहे ण मासे एगूणतीसरा-इदिआइ राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

७ वैशाख मास रात-दिन के परिमाण से उनतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है ।

८ चददिणे ण एगूणतीस मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेण पण्णत्ते ।

८ चन्द्र दिन मुहुर्त्त-परिमाण की अपेक्षा से उनतीस मुहूर्त्त मे कुछ अधिक प्रज्ञप्त है ।

९ जीवे ण पसत्थज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी तित्थयरनाम-सहियाओ नामस्स कम्मस्स णियमा एगूणतीस उत्तरपगडीओ निबधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ ।

९ प्रशस्त अध्यवसाय-युक्त भविक सम्यग्दृष्टि जीव तीर्थंकर नामसहित नामकर्म की नियमत उनतीस प्रकृतियो का बध कर वैमानिक देवो मे देवत्व मे उपपन्न होता है ।

१०. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण एगूण-तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की उनतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइ-याण नेरइयाण एगूणतीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ अधोवर्ती सातवी पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की उनतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण एगूणतीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ कुछेक असुरकुमार देवो की उनतीम पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण एगूणतीस पलिओ-माइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ सौधर्म-ईशानकल्प के कुछेक देवो की उनतीम पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४ उवरिम - मज्झिम - गेवेज्जयाण देवाण जहण्णेण एगूणतीम सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१४ उपरिम-मध्यम ग्रैवेयक देवो की जघन्यत /न्यूनत उनतीम सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१५ जे देवा उवरिम-हेट्ठिम-गेवेज्जय-विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण एगूण-तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१५ जो देव उपरिम-अधस्तन ग्रैवेयक विमानो मे देवत्व से उपपन्न होते हैं, उनदेवो की उत्कृष्टत उनतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१६ ते ण देवा एगूणतीसाए अद्धमा-सेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१६ वे देव उनतीस अर्द्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते हैं, पान करते हैं, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते हैं ।

१७ तेसि ण देवाण एगूणतीसाए वास-सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१७ उन देवो के उनतीस हजार वर्षो मे आहार करने की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१८ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे एगूणतीसाए भवग्गहणेहिं सिज्भिस्सति बुज्भिस्सति मुच्चि-स्सति परिनिव्वाइस्सति सव्व-दुक्खाणमत करिस्सति ।

१८ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो उनतीस भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्व दु खान्त करेंगे ।

तीसइमो समवाओ

१ तीस मोहणीयठाणा पण्णत्ता, त जहा—

१ जे यावि तसे पाणे,
वारिमज्झे विगाहिया ।
उदएणक्कम्म मारेइ,
महामोह पकुव्वइ ।।

२ सीसावेढेण जे केई,
आवेढेइ अभिक्खण ।
तिव्वासुभसमायारे,
महामोह पकुव्वइ ।।

३ पाणिणा सपिहित्ताण,
सोयमावरिय पाणिण ।
अतोनदत मारेई,
महामोह पकुव्वइ ।।

४ जायतेय समारब्भ,
बहु ओरुंभिया जण ।
अतोधूमेण मारेई,
महामोह पकुव्वइ ।।

५. सिस्सम्मि जे पहणइ,
उत्तमंगम्मि चेयसा ।
विभज्ज मत्थय फाले,
महामोह पकुव्वइ ।।

६ पुणो पुणो पणिहिए,
हणित्ता उवहसे जण ।
फलेण अदुव दडेण,
महामोह पकुव्वइ ।।

तीसवां समवाय

१ मोहनीय-स्थान तीस प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—

१ जो किसी त्रस प्राणी को पानी के बीच ले जाकर पानी से आक्रमण कर मारता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता हैं ।

२ जो तीव्र अशुभ समाचरणपूर्वक किसी के मस्तक को बन्धनो से निरन्तर बाधता है, वह महा-मोह का प्रवर्तन करता है ।

३ जो प्राणी को हाथ से बाधकर, वदकर अन्तर्विलाप करते हुए को मारता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता हैं ।

४ जो अनेक जीवो को अवरुद्ध कर, अग्नि जलाकर उसके धुए से मारता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

५ जो किसी प्राणि के शीर्ष उत्तम अग पर प्रहार करता है, मस्तक का विभाजन कर फोड देता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

६ जो पुन पुन मनुष्य का घात करता है, दण्ड या फरशे से हनन कर उपहास करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

७ गूढायारी निगूहेज्जा,
माय मायाए छायए ।
असच्चवाई णिण्हाई,
महामोह पकुव्वइ ।।

७ जो गूढाचारी माया से माया को छिपाकर असत्यवादी प्रलाप करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

८. धसेइ जो अभूएण,
अकम्म अत्तकम्मुणा ।
अदुवा तुम कासित्ति,
महामोह पकुव्वइ ।।

८ 'तुम कौन हो' यह कहकर जो अपने अकर्म/दुष्कर्म के कर्म का धौस/कलक दूसरो पर जमाता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

९ जाणमाणो परिसओ,
सच्चामोसाणि भासइ ।
अज्झीणझझे पुरिसे,
महामोहं पकुव्वइ ।।

९ जो कलहकारी-पुरुष परिषद को जानता हुआ सत्यमृषा/सफेद झूठ बोलता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१० अणायगस्स नयव,
दारे तस्सेव धसिया ।
विउल विक्खोभइत्ताण,
किच्चा ण पडिबाहिर ।।
उवगसतपि झपित्ता,
पडिलोमाहिं वग्गुहिं ।
भोगभोगे वियारेई,
महामोह पकुव्वइ ।।

१० जो मन्त्री नायक/नरेश की अनुपस्थिति मे धौस जमाता है, विपुल विक्षोभ/आतक और अधिकार जमाता है, विलोम वचनो से निकटवर्तियो का भी तिरस्कार कर उनके भोग-उपभोग का विदारण कर देता है, वह महामोह का प्रवर्तत करता है ।

११ अकुमारभूए जे केई,
कुमारभूएत्तह वए ।
इत्थीहिं गिद्धे वसए,
महामोह पकुव्वइ ।।

११ जो कुवारा न होते हुए भी स्वय को कुवारा कहता है, पर स्त्रियो मे गृद्ध रहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१२ अबभयारी जे केई,
बभयारीत्तह वए ।
गद्दभेव्व गवा मज्झे,
विस्सर नयई नद ।।
अप्पणो अहिए बाले,
मायामोस बहु भसे ।

१२ जो कोई ब्रह्मचारी न होते हुए भी स्वय को ब्रह्मचारी कहता है, उसका कहना साडो के बीच गधे की तरह रेंकना है, अत्यधिक मायामृषा बोलने वाला अज्ञानी अपना अहित

इत्थीविसयगेहीए,
महामोह पकुव्वइ ।।

करता है और स्त्री-विषय के प्रति गृद्ध होता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१३ ज निस्सिए उव्वहइ,
जससाअहिगमेण वा ।
तस्स लुब्मइ वित्तम्मि,
महामोह पकुव्वइ ।।

१३ जो यश का लाभ होने से आश्रित जीवन व्यतीत करता है, वह धन-लुब्ध महामोह का प्रवर्तन करता है।

१४ ईसरेण अदुवा गामेण,
अणिस्सरे ईसरीकए ।
तस्स सपग्गहीयस्स,
सिरी अतुलमागया ।।
ईसादोसेण आइट्ठे,
कलुसाविलचेयसे ।
जे अतराय चेएइ,
महामोह पकुव्वइ ।।

१४ उस सम्पदाहीन के पास अतुल श्री/धन-सम्पत्ति आती है, जो ऐश्वर्य से कम या अनैश्वर्य से ऐश्वर्य प्राप्त करता है। किन्तु जो ईर्ष्या-द्वेष से आविष्ट/आक्रान्त पुरुष कलुष-चित्त से अन्तराय उत्पन्न करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१५ सप्पी जहा अडउड,
भत्तार जो विहिसइ ।
सेणावइ पसत्थार,
महामोह पकुव्वइ ।।

१५ जिस प्रकार सर्पिणी अण्डपुट/अण्डराशि का हनन करती है, उसी प्रकार जो भर्तार, सेनापति और प्रशास्ता/प्रशासक का हनन करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१६ जे नायग व रट्ठस्स,
नेयार निगमस्स वा ।
सेट्ठि बहुरव हता,
महामोह पकुव्वइ ।।

१६ जो राष्ट्र-नायक, निगम-नेता और प्रमुख/नगरसेठ का हनन करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।

१७. बहुजणस्स णेयार,
दीव ताण च पाणिण ।
एयारिस नर हता,
महामोह पकुव्वइ ।।

१७ जो पुरुष प्राणी-बहुल के लिए द्वीप/दीप, त्राण और नेता है, उसका हनन महामोह का प्रवर्तन करता है।

१८ उवट्ठिय पडिविरय,
सजय सुतवस्सिय ।

१८ जो धर्म-उपक्रम मे उपस्थित, प्रतिविरत, सयत, सुतपस्वी का

थोकम्म धम्माम्रो भसे, महामोह पकुव्वइ ॥	भ्र श करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता हैं ।
१९ तहेवाणतणाणीण, जिणाण वरदसिरण । तेसिं अवण्णव बाले, महामोह पकुव्वइ ॥	१९ अनन्त ज्ञानी, वरदर्शी/पारदर्शी जिनेश्वरो का अवर्णक/निन्दक बाल-पुरुष महामोह का प्रवर्तन करता है ।
२० नेयाउअस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवयरई बहु । त तिप्पयतो भावेइ, महामोह पकुव्वइ ॥	२० जो दुष्ट न्याय-मार्ग का अपकार/उल्लघन करता है, उसी मे तृप्ति का भाव करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता हैं।
२१ आयरियउवज्झाएहिं, सुय विणय च गाहिए । ते चेव खिसई बाले, महामोह पकुव्वइ ॥	२१ जो श्रुत और विनय-ग्राहित/शिक्षित बाल-पुरुष आचार्य और उपाध्याय पर खीजता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है।
२२ आयरियउवज्झायाण, सम्म नो पडितप्पइ । अप्पडिपूयए थद्धे, महामोह पकुव्वइ ॥	२२ जो अप्रतिपूजक और स्तब्ध/अभिमानी व्यक्ति आचार्य उपाध्याय को सम्यक् प्रकार से परितृप्त नही करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता हैं।
२३ अवहुस्सुए य जे केई, सुएण पविकत्थइ । सज्झायवाय वयइ, महामोह पकुव्वइ ॥	२३ जो कोई अल्पज्ञ श्रुत से आत्म-प्रशसा करता हैं, स्वय को स्वाध्यायवादी कहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता हैं ।
२४ अतवस्सीए य जे केई, तवेण पविकत्थइ । सव्वलोयपरे तेणे, महामोह पकुव्वइ ॥	२४ जो कोई अतपस्वी होते हुए भी सम्पूर्ण लोक मे उत्कृष्ट तप मे आत्म-प्रशसा करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।
२५ साहारणट्ठा जे केई, गिलाणम्मि उवट्ठिए । पहू ण कुणई किच्च, मज्झपि से न कुव्वइ ॥	२५ जो कोई ग्लान/रुग्ण के उपस्थित होने पर साधारणत वहुत या थोडी— कुछ भी सेवा नही करता, आत्म-अवोधिक

इत्थीविसयगेहीए,
महामोह पकुव्वइ ।।

करता है और स्त्री-विषय के प्रति गृद्ध होता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१३. ज निस्सिए उव्वहइ,
जससाश्रहिमेण वा ।
तस्स लुब्भइ वित्तम्मि,
महामोह पकुव्वइ ।।

१३ जो यश का लाभ होने से आश्रित जीवन व्यतीत करता है, वह धन-लुब्ध महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१४ ईसरेण श्रदुवा गामेण,
श्रणिस्सरे ईसरीकए ।
तस्स सपग्गहीयस्स,
सिरी श्रतुलमागया ।।
ईसादोसेण श्राइट्ठे,
कलुसाविलचेयसे ।
जे श्रतराय चेएइ,
महामोह पकुव्वइ ।।

१४ उस सम्पदाहीन के पास अतुल श्री/धन-सम्पत्ति आती है, जो ऐश्वर्य से कम या अनैश्वर्य से ऐश्वर्य प्राप्त करता है । किन्तु जो ईर्ष्या-द्वेष से आविष्ट/आक्रान्त पुरुष कलुष-चित्त से अन्तराय उत्पन्न करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१५ सप्पी जहा श्रडउड,
भत्तार जो विहिसइ ।
सेणावइ पसत्थार,
महामोह पकुव्वइ ।।

१५ जिस प्रकार सर्पिणी अण्डपुट/अण्डराशि का हनन करती है, उसी प्रकार जो भर्तार, सेनापति और प्रशास्ता/प्रशासक का हनन करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१६ जे नायग व रट्ठस्स,
नेयार निगमस्स वा ।
सेट्ठि बहुरव हता,
महामोह पकुव्वइ ।।

१६ जो राष्ट्र-नायक, निगम-नेता और प्रमुख/नगरसेठ का हनन करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१७ वहुजणस्स णेयार,
दीव ताण च पाणिण ।
एयारिस नर हता,
महामोह पकुव्वइ ।।

१७ जो पुरुष प्राणी-बहुल के लिए द्वीप/दीप, त्राण और नेता है, उसका हनन महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१८ उवट्ठिय पडिविरय,
सजय सुतवस्सिय ।

१८ जो धर्म-उपक्रम मे उपस्थित, प्रतिविरत, सयत, सुतपस्वी का

णोकम्म धम्माओ भसे,
महामोह पकुव्वइ ॥

अंश करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

१९ तहेवाणतणाणीण,
जिणाण वरदसिण ।
तेसि अवण्णव बाले,
महामोह पकुव्वइ ॥

१९ अनन्त ज्ञानी, वरदर्शी/पारदर्शी जिनेश्वरो का अवर्णक/निन्दक बाल-पुरुष महामोह का प्रवतन करता है ।

२० नेयाउअस्स मग्गस्स,
दुट्ठे अवयरई बहु ।
त तिप्पयतो भावेइ,
महामोह पकुव्वइ ॥

२० जो दुष्ट न्याय-मार्ग का अपकार/उल्लघन करता है, उसी मे तृप्ति का भाव करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२१ आयरियउवज्झाएहिं,
सुय विणय च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले,
महामोह पकुव्वइ ॥

२१ जो श्रुत और विनय-ग्राहित/शिक्षित बाल-पुरुष आचार्य और उपाध्याय पर खीजता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२२ आयरियउवज्झायाण,
सम्म नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे,
महामोह पकुव्वइ ॥

२२ जो अप्रतिपूजक और स्तब्ध/अभिमानी व्यक्ति आचार्य उपाध्याय को सम्यक् प्रकार से परितृप्त नही करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२३ अबहुस्सुए य जे केई,
सुएण पविकत्थइ ।
सज्झायवाय वयइ,
महामोह पकुव्वइ ॥

२३ जो कोई अल्पज्ञ श्रुत से आत्म-प्रशसा करता हैं, स्वय को स्वाध्यायवादी कहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२४ अतवस्सीए य जे केई,
तवेण पविकत्थइ ।
सव्वलोयपरे तेणे,
महामोह पकुव्वइ ॥

२४ जो कोई अतपस्वी होते हुए भी सम्पूर्ण लोक मे उत्कृष्ट तप मे आत्म-प्रशसा करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२५ साहारणट्ठा जे केई,
गिलाणम्मि उवट्ठिए ।
पहू ण कुणई किच्च,
मज्झपि से न कुव्वइ ॥

२५ जो कोई ग्लान/रुग्ण के उपस्थित होने पर साधारणत बहुत या थोडी— कुछ भी सेवा नही करता, आत्म-अबोधिक

सढे नियडीपण्णाणे,
कलुसाउलचेयसे ।
अप्पणो य अबोहीए,
महामोह पकुव्वइ ॥

शठ-पुरुप कलुप-लिप्त चित्त से स्वय की नियति को प्रज्ञापूर्ण कहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२६. जे कहाहिगरणाइ,
सपउजे पुणो पुणो ।
सव्वतित्थाण भेयाय,
महामोह पकुव्वइ ॥

२६ जो समस्त तीर्थो/धर्मो के [गुप्त] भेदो/रहस्यो को कथाओ के माध्यम से सप्रयुक्त करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२७. जे य आहम्मिए जोए,
सपउजे पुणो पुणो ।
सहाहेउ सहीहेउ,
महामोह पकुव्वइ ॥

२७ जो अधार्मिक योग को श्लाघा या मित्रगण के लिए पुन पुन सम्प्रयुक्त करता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२८. जे य माणुस्सए भोए,
अदुवा पारलोइए ।
तेऽतिप्पयतो आसयइ,
महामोह पकुव्वइ ॥

२८ जो अतृप्त मानुषिक और पारलौकिक भोगो का आश्रय लेता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२९. इड्ढी जुई जसो वण्णो,
देवाण बलवीरिय ।
तेसि अवण्णव बाले,
महामोह पकुव्वइ ॥

२९ जो बाल-पुरुष देवो के बल-वीर्य, ऋद्धि, द्युति, यश और वर्ण का अवर्णक/निन्दक है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

३०. अपस्समाणो पस्सामि,
देवे जक्खे य गुज्झगे ।
अण्णाणि जिणपूयट्ठी,
महामोह पकुव्वइ ॥

३० जो अज्ञानी जिन की तरह स्वय की पूजा का इच्छुक होकर देव, यक्ष और गुह्यक को न देखता हुआ भी 'देखता हूँ' कहता है, वह महामोह का प्रवर्तन करता है ।

२ थेरे ण मडियपुत्ते तीस वासाइ सामण्णपरियाय पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२ स्थविर मडितपुत्र तीस वर्ष तक श्रामण्य-पर्याय पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत और सर्व दु ख रहित हुए ।

१०. अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० अधोवर्ती सातवी पृथिवी [महातम - प्रभा] पर कुछेक नैरयिको की तीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ कुछेक असुरकुमार देवो की तीम पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ उवरिम - उवरिम - गेविज्जयाण देवाण जहण्णेण तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१२ ऊर्ध्ववर्ती ऊपरी ग्रैवेयक देवो की जवन्यत /न्यूनत तीम सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१३ जे देवा उवरिम-मज्झिम-गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण उक्कोसेण तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१३ जो देव ऊपरी मध्यम ग्रैवेयक विमानो मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की उत्कृष्टत तीम सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१४ ते ण देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१४ वे देव तीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, नि श्वाम छोडते है ।

१५ तेसि ण देवाण तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१५ उन देवों के तीम हजार वर्षों मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है।

१६ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१६ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो तीस भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेगे ।

एक्कतीसइमो समवाओ

१ इक्कतीस सिद्धाइगुणा पण्णत्ता, तं जहा—
खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे सुयणाणावरणे, खीणे ओहिणाणावरणे, खीणे मणपज्जवणाणावरणे, खीणे केवलणाणावरणे, खीणे चक्खुदंसणावरणे, खीणे ओहिदंसणावरणे, खीणे केवलदंसणावरणे, खीणा निद्दा, खीणा णिद्दाणिद्दा, खीणा पयला, खीणा पयलापयला, खीणा थीणगिद्धी, खीणे सायावेयणिज्जे, खीणे असायावेयणिज्जे, खीणे दंसणमोहणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे, खीणे नेरइयाउए, खीणे तिरियाउए, खीणे मणुस्साउए, खीणे देवाउए, खीणे उच्चागोए, खीणे नियागोए, खीणे सुभणामे, खीणे असुभणामे, खीणे दाणंतराए, खीणे लाभंतराए, खीणे भोगंतराए, खीणे उवभोगंतराए, खीणे वीरियंतराए।

इकतीसवां समवाय

१ सिद्ध आदि के गुण इकतीस प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
१ आभिनिबोधिक ज्ञानावरण का क्षय, २ श्रुतज्ञानावरण का क्षय, ३ अवधि ज्ञानावरण का क्षय, ४ मन पर्याय ज्ञानावरण का क्षय, ५ केवल ज्ञानावरण का क्षय, ६ चक्षु दर्शनावरण का क्षय, ७ अचक्षु दर्शनावरण का क्षय, ८ अवधि दर्शनावरण का क्षय, ९ केवल दर्शनावरण का क्षय, १० निद्रा का क्षय, ११ निद्रा-निद्रा का क्षय, १२ प्रचला का क्षय, १३ प्रचला-प्रचला का क्षय, १४ स्त्यानगृद्धि का क्षय, १५ सात-वेदनीय का क्षय, १६ असात-वेदनीय का क्षय, १७ दर्शन मोहनीय का क्षय, १८ चरित्र मोहनीय का क्षय, १९ नैरयिक का क्षय, २० तिर्यञ्च आयुष्य का क्षय, २१ मनुष्य आयुष्य का क्षय, २२ देवायु का क्षय, २३ उच्चगोत्र का क्षय, २४ नीचगोत्र का क्षय, २५ शुभनाम का क्षय, २६ अशुभनाम का क्षय, २७ दानान्तराय का क्षय, २८ लाभान्तराय का क्षय, २९ भोगान्तराय का क्षय, ३० उपभोगान्तराय का क्षय, ३१ वीर्यान्तराय का क्षय।

२. मदरे णं पव्वए धरणितले एक्कतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणे परिक्खेवेण पण्णत्ते ।

२ मदर पर्वत की धरणीतल पर इकतीस हजार छ सौ तेवीस योजन से कुछ कम परिधि प्रज्ञप्त है।

३ जया ण सूरिए सव्वबाहिरिय मडल उवसकमित्ता ण चार चरइ तया ण इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि य एक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ ।

३ जव सूर्य सर्व-बाह्य-मडल मे उपसक्रमण कर विचरण करता है, तब इस पृथिवी पर मनुष्य को इकतीस हजार आठ सौ इकतीस और एक योजन के साठ भागो मे से तीस भाग (३१८३१½ योजन) दूर से आँखो से दिखाई दे जाता है।

४. अभिवड्ढिए ण मासे एक्कतीस सातिरेगाणि राइदियाणि राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

४ अभिवर्द्धित मास रात-दिन के परिमाण से इकतीस रात-दिन का प्रज्ञप्त है।

५. आइच्चे ण मासे एक्कतीस राइदियाणि किंचि विसेसूणाणि राइदियग्गेण पण्णत्ते ।

५ सूर्यमास रात-दिन के परिमाण से कुछ-विशेष-न्यून इकतीस दिन-रात का प्रज्ञप्त है।

६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण इक्कतीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

६ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की इकतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

७ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण इक्कतीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ अधोवर्ती सातवी पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की इकतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

८. असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाण इक्कतीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ कुछेक असुरकुमार देवो की इकतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

९ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण जहण्णेण इक्कतीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

९ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की इकतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

१० विजय - वेजयत - जयत - अपरा-
जियाण देवाण जहण्णेण इक्क-
तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपरा-
जित देवो की जघन्यत इकतीस
सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११ जे देवा उवरिम-उवरिम-गेवेज्जय-
विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा,
तेसि ण देवाण उक्कोसेण इक्क-
तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ जो देव ऊर्ध्ववर्ती ग्रैवेयक विमानो
मे देवत्व से उपपन्न है, उन
देवो की उत्कृष्टत इकतीस सागरो-
पम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ ते ण इक्कतीसाए अद्धमासाण
आणमति वा पाणमति वा ऊस-
सति वा नीससति वा ।

१२ वे देव इकतीस अर्धमासो/पक्षो मे
आन/आहार लेते है, पान करते है,
उच्छ्वास लेते हैं और निश्वास
छोडते हैं ।

१३ तेसि ण देवाण इक्कतीसाए वास-
सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१३ उन देवो के इकतीस हजार वर्षो मे
आहार की इच्छा समुत्पन्न होती
है ।

१४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे
इक्कतीसाए भवग्गहणेहि सिज्झि-
स्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति
परिनिव्वाइस्सति करिस्सति ।

१४ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो
इकतीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे,
बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत
होंगे, सर्व दुखान्त करेंगे ।

बत्तीसइमो समवाओ

१ बत्तीस जोगसगहा पण्णत्ता, त जहा—

१ आलोयणा निरवलावे,
आवईसु दढधम्मया ।
अणिस्सिओवहाणे य,
सिक्खा निप्पडिकम्मया ॥

२ अण्णतता अलोभे य,
तितिक्खा अज्जवे सुती ।
सम्मदिट्ठी समाही य,
आयारे विणओवए ॥

३ धिईमई य सवेगे,
पणिही सुविहि सवरे ।
अत्तदोसोवसंहारे,
सव्वकामविरत्तया ॥

४. पच्चक्खाणे विउस्सग्गे,
अप्पमादे लवालवे ।
झाणसवरजोगे य,
उदए मारणतिए ॥

५. सगाण च परिण्णा,
पायच्छित्तकरणेत्ति य ।
आराहणा य मरणते,
बत्तीस जोगसगहा ॥

२. बत्तीस देविंदा पण्णत्ता, त जहा—
चमरे बली धरणे भूयाणदे वेणुदेवे वेणुदाली हरि हरिस्सहे अग्गिसिहे अग्गिमाणवे पुण्णे

बत्तीसवां समवाय

१ योग-सग्रह बत्तीस प्रज्ञप्त है, जैसे कि—

१ आलोचना, २ निरपलाप, ३ आपत्ति मे दृढधर्मता, ४ अनिश्रितोपधान/अनाश्रित तप ५ शिक्षा, ६ निष्प्रतिकर्मता, ७ अज्ञातता, ८ अलोभ, ९ तितिक्षा, १० आर्जव, ११ शुचि, १२ सम्यग्दृष्टि, १३ समाधि, १४ आचार, १५ विनयोपग/निरहकारिता, १६ धृतिमति, १७ सवेग, १८ प्रणिधि, १९ सुविधि, २० सवर, २१ आत्मदोषोपसहार, २२ सर्वकामविरक्तता, २३ प्रत्याख्यान, २४ व्युत्सर्ग, २५ अप्रमाद, २६ लवालव—समय-प्रेक्षा, २७ ध्यान, २८ सवर योग, २९ मारणान्तिक उदय, ३० सग-परिज्ञा, ३१ प्रायश्चित्तकरण, ३२ मारणान्तिक आराधना ।
—ये बत्तीस योग-सग्रह है ।

२ देवेन्द्र बत्तीस प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
चमर, बली, धरण, भूतानन्द, वेणुदेव, वेणुदाली, हरि, हरिस्सह, अग्निशिख, अग्निमाणव, पूर्ण, विशिष्ट, जलकान्त, जलप्रभ, अमितगति,

विसिट्ठे जलकते जलप्पभे अमि-
यगती अमितवाहणे वेलबे पभ-
जणे घोसे महाघोसे चदे सूरे
सक्के ईसाणे सणकुमारे माहिंदे
बभे लतए महासुक्के सहस्सारे
पाणए अच्चुए ।

अमितवाहन, वेलव, प्रभजन, घोष,
महाघोष, चन्द्र, सूर्य, शक्र, ईशान,
सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक,
महाशुक्र, सहस्रार, प्राणत और
अच्युत ।

३ कुथुस्स ण अरहओ बत्तीसहिया बत्तीस जिणसया होत्था ।

३ अर्हत् कुन्थु के बत्तीस सौ बत्तीस जिन थे ।

४ सोहम्मे कप्पे बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

४ सौधर्मकल्प मे बत्तीस शत-सहस्र/लाख विमान प्रज्ञप्त हैं ।

५ रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे पण्णत्ते ।

५ रेवती नक्षत्र के बत्तीस तारे प्रज्ञप्त है ।

६. बत्तीसतिविहे णट्टे पण्णत्ते ।

६ नाट्य बत्तीस प्रकार का प्रज्ञप्त है ।

७ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण बत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ इस रत्नप्रभा पृथिवी पर कुछेक नैरयिको की बत्तीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८ अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण बत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ अधोवर्ती सातवी पृथिवी के कुछेक नैरयिको की बत्तीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९ असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाण बत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

९ कुछेक असुरकुमार देवो की बत्तीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाण बत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की बत्तीस पल्योपम स्थिति है ।

बत्तीसइमो समवाओ

बत्तीसवां

१ बत्तीस जोगसगहा पण्णत्ता, त जहा—

१ आलोयणा निरवलावे,
आवईसु दढधम्मया ।
अणिस्सिओवहाणे य,
सिक्खा निप्पडिकम्मया ।।

२ अण्णतता अलोभे य,
तितिक्खा अज्जवे सुती ।
सम्मदिट्ठी समाही य,
आयारे विणओवए ।।

३ धिईमई य सवेगे,
पणिही सुविहि सवरे ।
अत्तदोसोवसहारे,
सव्वकामविरत्तया ।।

४. पच्चक्खाणे विउस्सग्गे,
अप्पमादे लवालवे ।
झाणसवरजोगे य,
उदए मारणतिए ।।

५. सगाण च परिण्णा,
पायच्छित्तकरणेत्ति य ।
आराहणा य मरणते,
बत्तीस जोगसगहा ।।

२. बत्तीस देविंदा पण्णत्ता, त जहा—
चमरे बली धरणे भूयाणदे वेणु-
देवे वेणुदाली हरि हरिस्सहे
अग्गिसिहे अग्गिमाणवे पु॰

१ योग-सग्रह वर्ण
जैसे कि—
१ आलोचना,
आपत्ति मे दृढ
पधान/अनाि
निष्प्रतिकर्म
अलोभ, ६
११ शुचि
समाधि,
निरहका

११. जे देवा विजय - वेजयत - जयत अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण अत्थे-गइयाण बत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ जो देव विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित विमानो मे देवत्व से उत्पन्न है, उन देवो की बत्तीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ ते ण देवा बत्तीसाए अद्धमासेहि आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१२ वे देव बत्तीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते हैं, नि श्वास छोडते है ।

१३. ते ण देवाण बत्तीसाए वास सहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१३ उन देवो के बत्तीस हजार वर्षों से आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१४. सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे बत्तीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण-मत करिस्सति ।

१४ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो बत्तीस भव ग्रहणकर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेगे ।

तेत्तीसइमो समवाओ

१ तेत्तीस आसायणाओ पण्णत्ताओ, त जहा—

१. सेहे राइणियस्स आसन्न गता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

२ सेहे राइणियस्स पुरओ गता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

३. सेहे राइणियस्स सपक्ख गता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

४. सेहे राइणियस्स आसन्न ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स ।

५ सेहे राइणियस्स पुरओ ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स ।

६. सेहे राइणियस्स सपक्ख ठिच्चा भवइ—आसायणा सेहस्स ।

७ सेहे राइणियस्स आसन्न निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

८ सेहे राइणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

तेतीसवां समवाय

१ आशातनाए तेतीस है, जैसे कि—

१ शैक्ष (शिक्षित / नवदीक्षित) रात्निक/पर्याय-ज्येष्ठ से सट-कर चलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२ शैक्ष रात्निक से आगे चलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

३ शैक्ष रात्निक के बराबर चलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

४ शैक्ष रात्निक से सटकर खडा रहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

५ शैक्ष रात्निक के आगे खडा रहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

६ शैक्ष रात्निक के बराबर खडा रहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

७ शैक्ष रात्निक से सटकर बैठता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

८ शैक्ष रात्निक के आगे बैठता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

९. सेहे राइणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

९ शैक्ष रात्निक के बराबर बैठता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१० सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं निक्खते समाणे पुव्वामेव सेहतराए आयामेइ पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स ।

१० शैक्ष रात्निक के साथ बाहर विचार-भूमि/शौच-भूमि जाने पर शैक्ष पहले ही आचमन/शौच कर लेता है, किन्तु रात्निक उसके पश्चात्, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

११ सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति, पच्छा राइणिए—आसासणा सेहस्स ।

११ शैक्ष रात्निक के साथ बाहर विहार-भूमि (स्वाध्याय-भूमि) या विचार-भूमि जाने पर शैक्ष पहले (गमनागमन विषयक) आलोचना कर लेता है, किन्तु रात्निक उसके पश्चात्, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१२ सेहे राइणियस्स रातो वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो के सुत्ते ? के जागरे ? तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अपडिसुणेत्ता भवति—आसायणा सेहस्स ।

१२ शैक्ष को रात्निक द्वारा रात्रि या विकाल मे यह पूछे जाने पर—'आर्य ! कौन सोया है और कौन जगा है ?' शैक्ष जागृत होते हुए भी अनसुना कर देता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१३ केइ राइणियस्स पुव्वं सलवित्तए सिया, तं सेहे पुव्वतराग आलवेति, पच्छा राइणिए—आसायणा सेहस्स ।

१३ रात्निक को किसी से कुछ कहना है, किन्तु शैक्ष उससे पहले ही कह देता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

१४ सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागस्स आलोएइ, पच्छा

१४ शैक्ष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर पहले शैक्षतर के सामने [आहार-चर्या विषयक] आलोचना करता है, फिर

राइणियस्स — आसायणा सेहस्स।

रात्निक के सामने, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१५ सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता त पुव्वमेव सेहतरागस्स उवदसेति, पच्छा राइणियस्स — आसायणा सेहस्स।

१५ शैक्ष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर पहले शैक्षतर को दिखाता है, पश्चात् रात्निक को, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१६. सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता त पुव्वमेव सेहतराग उवणिमतेइ, पच्छा राइणिय आसायणा सेहस्स।

१६ शैक्ष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर पहले शैक्षतर को निमत्रित करता है, फिर रात्निक को, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१७. सेहे राइणिएण सद्धि असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता त राइणिय अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्ध-खद्ध दलयइ— आसायणा सेहस्स।

१७ शैक्ष रात्निक के साथ अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर उनसे बिना पूछे, जिस-जिस को चाहता है उस-उस को 'खाओ-खाओ' कहता हुआ देता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१८ सेहे असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा पडिगाहेत्ता राइणिएण सद्धि आहरेमाणे तत्थ सेहे खद्ध-खद्ध डाय-डाय ऊसढ-ऊसढ रसित-रसित मणुण्ण-मणुण्ण मणाम-मणाम निद्ध-निद्ध लुक्ख-लुक्ख आहरेत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

१८ शैक्ष अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य लाकर रात्निक के साथ आहार करता हुआ उच्छ्रित रसित, मनोज्ञ, मनोनुकूल, स्निग्ध और रूक्ष—उत्तम भोज्य पदार्थों को डाय-डाय/जल्द-जल्दी खद्ध-खद्ध/बडे-बडे कवलों से खाता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

१९ सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणेत्ता भवइ—आसायणा सेहस्स।

१९ शैक्ष रात्निक के वचन-व्यवहार को अनसुना कर देता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है।

२०. सेहे राइणियस्स खद्धं-खद्ध वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स ।	२० शैक्ष रात्निक को 'खाओ-खाओ' ऐसी उपेक्षणीय बात बोलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।
२१ सेहे राइणियस्स 'किं' ति वइत्ता भवति आसायणा सेहस्स ।	२१ शैक्ष रात्निक को 'क्या है' ऐसा बोलता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।
२२ सेहे राइणिय 'तुम'ति वत्ता भवति—आसायणा सेहस्स।	२२ शैक्ष रात्निक को 'तू' कहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।
२३ सेहे राइणिय तज्जाएण-तज्जाएण पडिभणित्ता भवइ- आसायणा सेहस्स।	२३ शैक्ष रात्निक को उन्ही के कहे हुए को प्रत्युत्तर मे कह देता है—चिडाता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।
२४. सेहे राइणियस्स कहं कहे-माणस्स 'इति एव'ति वत्ता न भवति—आमायणा सेहस्स ।	२४ शैक्ष रात्निक कथा को 'ऐसा ही है, नही कहता', यह शैक्ष-कृत आशातना है ।
२५. सेहे राइणियस्स कह कहे-माणस्स 'नो सुमरसी'ति वत्ता भवत्ति—आसायणा सेहस्स ।	२५ शैक्ष रात्निक को कथा कहते समय 'यह भी स्मरण नही है'—ऐसा कहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।
२६ सेहे राइणियस्स कह कहे-माणस्स कह अच्छिंदित्ता भवति—आसायणा सेहस्स।	२६ शैक्ष रात्निक द्वारा कही जा रही कथा को रोकता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।
२७ सेहे राइणियस्स कह कहे परिस माणस्स भेत्ताभवति —आसायणा सेहस्स ।	२७ शैक्ष रात्निक द्वारा कथा कहते समय परिषद् को भग करता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।
२८ सेहे राइणियस्स कह कहे-माणस्स तीसे परिसाए अणु-ट्ठिताए अभिन्नाए अवुच्छि-न्नाए अव्वोगडाए दोच्च पि तमेव कह कहित्ता भवति—आसायणा सेहस्स ।	२८ शैक्ष रात्निक द्वारा कथा कहते समय परिषद् के अनुत्थित, अभिन्न, अव्युवच्छिन्न, अव्या-कृत, अभग रहने पर दूसरी बार उमी कथा को कहता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२९ सेहे राइणियस्स सेज्जा-संथारगं पाएणं संघट्टित्ता, हत्थेण अणणुण्णवेत्ता गच्छति—आसायणा सेहस्स ।

२९ शैक्ष रात्निक के शय्या-सस्तारक (बिछौना) का पाँवो से सघट्टन कर हाथ से अनुज्ञापित किये बिना जाता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

३०. सेहे राइणियस्स सेज्जा-संथारए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवइ—आसायणा सेहस्स ।

३० शैक्ष रात्निक के शय्या-सस्तारक पर खडा होता है, बैठता है या सोता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

३१ सेहे राइणियस्स समासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति—आसायणा सेहस्स ।

३१ शैक्ष रात्निक से ऊँचे आसन पर खडा रहता है, बैठता है या सोता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

३२ सेहे राइणियस्स समासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति—आसायणा सेहस्स ।

३२ शैक रात्निक के बराबर आसन पर खडा रहता है, बैठता है या सोता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

३३. सेहे राइणियस्स आलवमाणस्स तत्थगते चिय पडिसुणित्ता भवइ—आसायणा सेहस्स ।

३३ शैक्ष रात्निक के वक्तव्य का अपने आसन पर बैठे-बैठे ही प्रतिश्रोता होता है, यह शैक्ष-कृत आशातना है ।

२ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए एक्कमेक्के वारे तेत्तीस-तेत्तीस भोमा पण्णत्ता ।

२ चमर असुरेन्द्र असुरराज की चमरचचा राजधानी के प्रत्येक द्वार पर तेतीस-तेतीस भौम/भवन हैं ।

३ महाविदेहे णं वासे तेत्तीस जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खभेणं पण्णत्ते ।

३ महाविदेह-वर्ष/क्षेत्र तेतीस हजार योजन से कुछ अधिक विष्कम्भ/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

४ जया णं सूरिए बाहिराणं अंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता णं

४ जब सूर्य बाह्य-मडल से अन्तर्वर्ती तीसरे मडल मे उपसक्रमण कर

चार चरइ, तया ण इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयण-सहस्सेहिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खु-प्फास हव्वमागच्छइ ।

विचरण करता है, तब भरतक्षेत्रगत मनुष्य को वह कुछ विशेष न्यून तेतीस हजार योजन की दूरी से चक्षु-स्पर्श होता है ।

५. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

५ इस रत्नप्रभा पृथिवी के कुछेक नैर-यिको की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त हे ।

६. अहेसत्तमाए पुढवीए काल-महा-काल - रोरुय - महारोरुएसु नेर-याण तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।

६ अधोवर्ती सातवी पृथिवी के काल, महाकाल, रोरुक और महारोरुक—नरकावासो के नैरयिको की उत्कृष्टत तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

७. अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाण अजह-ण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरो-वमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ अप्रतिष्ठान-नरक के नैरयिको की अजघन्यत -अनुत्कृष्टत / सामान्यत तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ कुछेक असुरकुमार देवो की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण तेत्तीस पलिओ-माइ ठिई पण्णत्ता ।

९ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. विजय-वेजयत जयत-अपराजि-एसु विमाणेसु उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपरा-जित विमानो मे उत्कृष्टत तेतीम सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. जे देवा सव्वट्ठसिद्ध महाविमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ जो देव सवार्थसिद्ध महाविमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की अजघन्यत अनुत्कृष्टत अर्थात् सामान्यत तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ ते ण देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा ।

१२ वे देव तेतीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, नि श्वास छोडते है ।

१३ तेसि ण देवाण तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१३ उन देवो के तेतीस हजार वर्षो मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१४ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमत करिस्सति ।

१४ कुछेक भव-सिद्धिक जीव है, जो तेतीस भव ग्रहण कर सिद्ध होगे, बुद्ध होगे, मुक्त होगे, परिनिर्वृत होगे, सर्वदु खान्त करेंगे ।

चार चरइ, तया ण इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयण-सहस्सेहिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खु-प्फास हव्वमागच्छइ ।

विचरण करता है, तब भरतक्षेत्रगत मनुष्य को वह कुछ विशेष न्यून तेतीस हजार योजन की दूरी से चक्षु-स्पर्श होता हे ।

५. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

५ इस रत्नप्रभा पृथिवी के कुछेक नैर-यिको की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

६. अहेसत्तमाए पुढवीए काल-महा-काल - रोरुय - महारोरुएसु नेर-याण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

६ अधोवर्ती सातवी पृथिवी के काल, महाकाल, रोरुक और महारोरुक— नरकावासो के नैरयिको की उत्कृष्टत तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

७. अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाण अजह-ण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरो-वमाइ ठिई पण्णत्ता ।

७ अप्रतिष्ठान-नरक के नैरयिको की अजघन्यत -अनुत्कृष्टत / सामान्यत तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

८. असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइ-याण तेत्तीस पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

८ कुछेक असुरकुमार देवो की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

९. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाण अत्थेगइयाण तेत्तीस पलिओ-माइ ठिई पण्णत्ता ।

९ सौधर्म-ईशान कल्प मे कुछेक देवो की तेतीस पल्योपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१०. विजय-वेजयत जयत-अपराजि-एसु विमाणेसु उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

१० विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपरा-जित विमानो मे उत्कृष्टत तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

११. जे देवा सव्वट्ठसिद्ध महाविमाण देवत्ताए उववण्णा, तेसि ण देवाण अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

११ जो देव सवार्थसिद्ध महाविमान मे देवत्व से उपपन्न हैं, उन देवो की अजघन्यत अनुत्कृष्टत अर्थात् सामान्यत तेतीस सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

१२ ते ण देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ।

१२ वे देव तेतीस अर्धमासो/पक्षो मे आन/आहार लेते है, पान करते है, उच्छ्वास लेते है, निश्वास छोडते हैं ।

१३ तेसि ण देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ।

१३ उन देवो के तेतीस हजार वर्षो मे आहार की इच्छा समुत्पन्न होती है ।

१४ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा, जे तेत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्भिस्संति बुज्भिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ।

१४ कुछेक भव-सिद्धिक जीव हैं, जो तेतीस भव ग्रहण कर सिद्ध होंगे, बुद्ध होंगे, मुक्त होंगे, परिनिर्वृत होंगे, सर्वदुःखान्त करेंगे ।

चोत्तीसइमो समवाओ

१. चोत्तीस बुद्धाइसेसा पण्णत्ता, त जहा—

१. अवट्ठिए केसमसुरोमनहे ।

२. निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी ।

३. गोक्खीरपडुरे ममसोणिए ।

४. पउमुप्पलगधिए उस्सासनिस्सासे ।

५. पच्छन्ने आहारनीहारे, अद्दिस्से मसचक्खुणा ।

६. आगासगय चक्क ।

७ आगासगय छत्त ।

८. आगासियाओ सेयवरचामराओ ।

९. आगासफालियामय सपायपीढ सीहासण ।

१० आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमडिआभिरामो इदज्झओ पुरओ गच्छइ ।

चौतीसवां समवाय

१ बुद्ध/तीर्थकर के अतिशेप/अतिशय चौतीस प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—

१ केश, श्मश्रु/दाढी-मूछ, रोम, नख अवस्थित रहते हैं ।

२ निरामय/रोगरहित और निरुपलेप / मल-स्वेद-रहित शरीर होता है ।

३ मास और शोणित/रक्त दूध के समान पाण्डुर/श्वेत होता है ।

४ पद्मकमल की तरह सुगन्धित उच्छ्वास-निश्वास होते हैं ।

५ आहार और नीहार प्रच्छन्न होते हैं, मास-चक्षु द्वारा अदृश्य रहते है ।

६ आकाशगत [धर्म] चक्र चलता है ।

७ आकाशगत छत्र होता है ।

८ आकाश मे श्रेष्ठ श्वेत चामर ढुलते हैं ।

९ आकाशवत्, स्फटिकमय पादपीठ सहित सिहासन होता है ।

१० आगे-आगे आकाश मे हजारो लघुपताकाओ मे अभिमण्डित सुन्दर इन्द्रध्वज चलता है ।

११ तत्थ जत्थवि य ण अरहता भगवतो चिट्ठति वा निसीयति वा तत्थ तत्थवि य ण तक्खणादेव सछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सच्छत्तो सज्झओ सघटो सपडागो असोगवरपायवो अभिसजायइ।	११ जहा-जहा अर्हन्त भगवन्त ठहरते या बैठते हैं, वहा-वहा तत्क्षण समाच्छादित पुष्प और पल्लव से व्याकुल, छत्र-सहित ध्वज-सहित, घट-सहित पताका-सहित अशोकवृक्ष उत्पन्न हो जाता है।
१२ ईसिं पिट्ठओ मउडठाणमि तेयमडल अभिसजायइ, अधकारेवि य ण दस दिसाओ पभासेइ।	१२ मुकुट-स्थान से कुछ पीछे तेज-मडल/आभामडल होता है जो अन्धकार मे भी दसो दिशाओ को प्रभासित करता है।
१३ बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे।	१३ भूमिभाग विशेष सम और रमणीय होता है।
१४ अहोसिरा कटया भवति।	१४ कण्टक अधोमुख हो जाते है।
१५. उडुविवरीया सुहफासा भवति।	१५ ऋतुएँ अविपरीत/अनुकूल और सुखस्पर्शी/सुखदायी हो जाती है।
१६ सीयलेण सुहफासेण सुरभिणा मारुएण जोयणपरिमडल सव्वओ समता सपमज्जिज्जति।	१६ शीतल, सुखदायी, सुरभित वायु द्वारा एक योजन तक परिमण्डल/पर्यावरण का सर्व ओर से सम्प्रमार्जन होता है।
१७ जुत्त-फुसिएण य मेहेण निहय-रय-रेणुय कज्जइ।	१७ विन्दु-पात युक्त मेघ द्वारा रज-रेणु को निहत/उपशान्त किया जाता है।
१८. जल-थलय-भासुर-पभूतेण बिंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेण कुसुमेण जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे कज्जइ।	१८ जलज, स्थलज, प्रभूत/प्रस्फुटित, वृन्त-स्थायी/पत्रपूरित, पच-वर्णी कुसुमो द्वारा घुटने जितने प्रमाण तक पुष्पोपचार होता है।

१९. अमणुण्णाण सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाण अवकरिसो भवइ ।

१९ अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध का अपकर्ष होता है ।

२०. मणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाण पाउब्भावो भवइ ।

२० मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गन्ध का प्रादुर्भाव होता है ।

२१ पच्चाहरओवि य ण हियय-गमणीओ जोयणनीहारी सरो ।

२१ प्रत्याहर/उपदेश के समय हृदयगम और योजनगामी स्वर होता है ।

२२ भगव च ण अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ।

२२ भगवान् अर्द्धमागधी भाषा मे धर्म का आख्यान करते हैं ।

२३ सावि य ण अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेंसि सव्वेंसि आरियमणारियाण दुप्पय-चउप्पय - मिस - पसु-पक्खि-सिरी-सिवाण अप्पणो हिय-सिव - सुहदाभासत्ताए परिणमइ ।

२३ वह भाष्यमाण अर्द्धमागधी भाषा सुनने वाले आर्य, अनार्य द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी, सरीसृप आदि की अपनी-अपनी हित, शिव और सुखद भाषा मे परिणत हो जाती है ।

२४. पुव्वबद्धवेरावि य ण देवासुर - नाग - सुवण्ण - जक्ख-रक्खस - किन्नर - किंपुरिस-गरुल-गधव्व-महोरगा अरहओ पायमूले पसतचित्त-माणसा धम्म निसामति ।

२४ पूर्वबद्ध वैर वाले भी और देव, असुर, नाग, सुपर्ण, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, गरुड, गन्धर्व और महोरग अर्हत के समीप प्रशात चित्त और प्रशान्त मन से धर्म को श्रवण करते है ।

२५. अण्णउत्थिय - पावयणियावि य ण मागया वदंति ।

२५ अन्ययूथिक/तीर्थिक प्रावचनिक भी आकर वन्दन करते है ।

२६. आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणा हवंति ।

२६ अर्हत् के सामने समागत [अन्य-तीर्थिक] निरुत्तर हो जाते है ।

२७ जओ जओवि य ण अरहतो भगवतो विहरति तओ

२७ जहा-जहा अर्हत् भगवान् विहरण करते है, वहा-वहा पचीस

तम्रोवि य ण जोयणपण-
वीसाएणं ईती न भवइ।

योजन मे ईति, भीति नही
होती।

२८ मारी न भवइ।

२८ मारी नही होती।

२९ सचक्क न भवइ।

२९ स्वचक्र, सैन्य-विद्रोह नही होता।

३० परचक्क न भवइ।

३० परचक्र/परकीय विद्रोह नही
होता।

३१ अइवुट्ठी न भवइ।

३१ अतिवृष्टि नही होती।

३२. अणावुट्ठी न भवइ।

३२ अनावृष्टि नही होती।

३३ दुब्भिक्ख न भवइ।

३३ दुर्भिक्ष नही होता।

३४ पुव्वुप्पण्णावि य ण उप्पा-
इया वाही खिप्पामेव उव-
समति।

३४ पूर्व उत्पन्न औत्पातिक व्याधिया
शीघ्र शान्त हो जाती हैं।

२ जबुद्दीवे ण दीवे चउत्तीस चक्क-
वट्टिविजया पण्णत्ता, त
जहा—बत्तीस महाविदेहे,
दो भरहेरवए।

२ जम्बुद्वीप-द्वीप मे चौतीस चक्रवर्ती-
विजय प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
महाविदेह मे बत्तीस, दो भरत
और ऐरवत एक।

३ जबुद्दीवे ण दीवे चोत्तीस
दीहवेयड्ढा पण्णत्ता।

३ जम्बूद्वीप द्वीप मे चौतीस दीर्घवैताढ्य
प्रज्ञप्त है।

४ जबुद्दीवे ण दीवे उक्कोसपए
चोत्तीस तित्थकरा समुप्प-
ज्जति।

४ जम्बूद्वीप द्वीप मे उत्कृष्टत चौंतीस
तीर्थंकर समुत्पन्न होते हैं।

५. चमरस्स ण असुरिंदस्स
असुररण्णो चोत्तीस भवणा-
वाससयसहस्सा पण्णत्ता।

५ चमर असुरेन्द्र असुरराज के भवना-
वास चौतीस शत-सहस्र / लाख
प्रज्ञप्त हैं।

६ पढमपचमछट्ठीसत्तमासु—
चउसु पुढवीसु चोत्तीस
निरयावास-सयसहस्सा पण्णत्ता।

६ पहली, पाचवी, छठी और सातवी—
इन चार पृथ्वियो मे चौतीस शत-
सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं।

पणतीसइमो समवाओ

१. पणतीस सच्चवयणाइसेसा पण्णत्ता ।

२ कुथू ण अरहा पणतीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

३. दत्ते ण वासुदेवे पणतीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

४. नदणे णं बलदेवे पणतीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

५. सोहम्मे कप्पे सुहम्माए सभाए माणवए चेइयक्खभे हेट्ठा उर्वारि च अद्धतेरस-अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीस जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिण-सकहाओ पण्णत्ताओ ।

६. बितियचउत्थीसु—दोसु पुढवीसु पणतीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

पैंतीसवां समवाय

१. सत्य-वचन के अतिशेप / अतिशय पैंतीस प्रज्ञप्त है ।

२ अर्हत् कुन्थु ऊँचाई की दृष्टि से पैंतीस धनुप ऊँचे थे ।

३ वासुदेव दत्त ऊँचाई की दृष्टि से पैंतीस धनुप ऊँचे थे ।

४ बलदेव नन्दन ऊँचाई की दृष्टि से पैंतीस धनुष ऊँचे थे ।

५ सौधर्म कल्प की सुधर्मा सभा मे माणवक चैत्यस्तम्भ के नीचे और ऊपर साढे बारह योजनो को छोड-कर मध्य के पैंतीस योजन मे वज्रमय गोलवृत्त मे जिन/अर्हत् की अस्थियाँ हैं ।

६ दूसरी और चौथी—इन दो पृथ्वियो मे पैंतीस शत-सहस्र / लाख नरकावास है ।

छत्तीसइमो समवाओ

छत्तीसवां समवाय

१. छत्तीसं उत्तरज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—
विणयसुयं परीसहो चाउरंगिज्जं असंखयं अकाममरणिज्जं पुरिसविज्जा उरब्भिज्जं काविलिज्जं नमिपव्वज्जा दुमपत्तयं बहुसुयपूया हरिएसिज्जं चित्तसंभूयं उसुकारिज्जं सभिक्खुगं समाहिठाणाइं पावसमणिज्जं संजइज्जं मिगचारिया अणाहपव्वज्जा समुद्दपालिज्जं रहणेमिज्जं गोयमकेसिज्जं समितीओ जण्णइज्जं सामायारी खलुंकिज्जं मोक्खमग्गगई अप्पमाओ तवोमग्गो चरणविही पमायठाणाइं कम्मपगडी लेसज्झयणं अणगारमग्गे जीवाजीवविभत्ती य।

१ उत्तर के अध्ययन (उत्तराध्ययन-सूत्र के अध्ययन) छत्तीस प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
विनयश्रुत, परीषह, चातुरंगीय, असंस्कृत, अकाममरणीय, पुरुषविद्या, उरभ्रीय, कापिलीय, नमिप्रव्रज्या, द्रुमपत्रक, बहुश्रुतपूजा, हरिकेशीय, चित्रसंभूत इषुकारीय, सभिक्षुक, समाधिस्थान, पापश्रमणीय, संयतीय, मृगचारिका, अनाथप्रव्रज्या, समुद्रपालीय, रथनेमीय, गौतमकेशीय, समिति, यज्ञीय, सामाचारी, क्षुल्लकीय, मोक्षमार्गगति, अप्रमाद, तपोमार्ग, चरणविधि, प्रमादस्थान, कर्मप्रकृति, लेश्याध्ययन, अनगारमार्ग तथा जीवाजीवविभक्ति।

२. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

२ असुरेन्द्र असुरराज चमर की सुधर्मा सभा ऊँचाई की दृष्टि से छत्तीस योजन ऊँची है।

३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीओ होत्था।

३ श्रमण भगवान् महावीर के छत्तीस हजार आर्याएँ थी।

४ चेत्तासोएसु णं मासेसु सइ छत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तइ।

४ चैत्र-आश्विन मास मे सूर्य एक बार छत्तीस अंगुल की पौरुषी छाया निष्पन्न करता है।

सत्ततीसइमो समवाओ

१. कुंथुस्स णं अरहओ सत्ततीसं गणा, सत्ततीसं गणहरा होत्था ।

२ हेमवय-हेरण्णवइयाओ णं जीवाओ सत्ततीसं-सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्च चोवत्तरे जोयणसए सोलसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेणं पण्णत्ताओ ।

३ सव्वासु णं विजय - वेजयंत - जयंत-अपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्ततीसं-सत्ततीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ।

४. खुड्डियाए णं विमाणप्पविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

५ कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसिंच्छायं निव्वत्तइत्ता णं चारं चरइ ।

सैंतीसवां समवाय

१ अर्हत् कुन्थु के सैंतीस गण और सैंतीस गणधर थे ।

२ हैमवत और हैरण्यवत की जीवाओ का सैंतीम हजार छह सौ चौहत्तर योजन और एक योजन के उन्नीस भागो मे से सोलह भाग विशेष न्यून (३७६७४ $\frac{१६}{१९}$) आयाम प्रज्ञप्त है ।

३ विजय, वैजयन्त, जयंत और अपराजित—इन सभी राजधानियो के प्राकार ऊँचाई की दृष्टि से सैंतीस-सैंतीस योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

४ क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग मे सैंतीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

५ कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन सूर्य सैंतीस अंगुल की पौरुषी छाया का निवर्तन कर संचरण करता है ।

अट्ठतीसइमो समवाओ

१ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासपया होत्था ।

२. हेमवत-हेरण्णवतियाण जीवाण धणुपट्ठे अट्ठतीस जोयणसहस्साइ सत्त य चत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण पण्णत्ते ।

३ अत्थस्स ण पव्वयण्णो बितिए कडे अट्ठतीस जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।

४ खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे अट्ठतीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

अड़तीसवां समवाय

१ पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व की साध्वी-सम्पदा अडतीस हजार साध्वियों की थी ।

२ हैमवत और हैरण्यवत की जीवा के धनु पृष्ठ का अडतीस हजार सात सौ चालीस योजन और योजन के उन्नीस भागो मे से दस भाग (३८७४० $\frac{10}{19}$ योजन) से कुछ विशेष न्यून प्रज्ञप्त है ।

३ पर्वतराज अस्त/मेरु का द्वितीय काण्ड ऊँचाई की दृष्टि से अडतीस हजार योजन ऊँचा है ।

४ क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग मे अडतीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

एगूणचत्तालीसइमो समवाओ

१ नमिस्स ण अरहओ एगूणचत्तालीस आहोहियसया होत्था ।

२. समयखेत्ते ण एगूणचत्तालीस कुलपव्वया पण्णत्ता, त जहा—
तीस वासहरा, पच मदरा, चत्तारि उसुकारा ।

३. दोच्चचउत्थपचमछट्ठसत्तमासु ण पचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

४. नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउस्स—एयासि ण चउण्ह कम्मपगडीण एगूणचत्तालीस उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।

उनतालीसवां समवाय

१ अर्हत् नमि के उनतालीस सौ अवधि-ज्ञानी थे ।

२ समय-क्षेत्र मे उनतालीस कुल-पर्वत प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
तीस वर्षधर, पाच मद
इपुकार ।

३ दूसरी, चौथी, पा
सातवी—इन पा
उनतालीस शत
नरकावास प्रज्ञप्त

४ ज्ञानावरणीय,
आयुष्य—इन
की उनताली
प्रज्ञप्त हैं ।

चत्तालीसइमो समवाओ	चालीसवां समवाय
१ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीस अज्जियासाहस्सीओ होत्था।	१ अर्हत् अरिष्टनेमि के चालीस हजार आर्यिकाएँ/साध्वियाँ थी।
२ मंदरचूलिया ण चत्तालीस जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता।	२ मन्दरपर्वत की चूलिका ऊँचाई की दृष्टि से चालीस योजन ऊँची है।
३ संती अरहा चत्तालीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।	३ अर्हत् शान्ति ऊँचाई की दृष्टि से चालीस धनुष ऊँचे थे।
४ भूयाणदस्स ण नागरण्णो चत्तालीस भवणावास-सयसहस्सा पण्णत्ता।	४ नागराज भूतानद के चालीस शत-सहस्र/एक लाख भवनावास प्रज्ञप्त हैं।
५ खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे चत्तालीस उद्देसण-काला पण्णत्ता।	५ क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के तीसरे वर्ग में चालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं।
६ फग्गुणपुण्णिमासिणीए ण सूरिए चत्तालीसगुलिय पोरिसिच्छाय निव्वट्टइत्ता ण चार चरइ।	६ फाल्गुन-पूर्णिमा को सूर्य चालीस अंगुल की पौरुषी छाया निष्पन्न कर सचरण करता है।
७ एव कत्तियाएवि पुण्णिमाए।	७ इसी प्रकार कार्तिक-पूर्णिमा को।
८ महासुक्के कप्पे चत्तालीस विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता।	८ महाशुक्रकल्प में चालीस हजार विमानावास प्रज्ञप्त हैं।

एगूणचत्तालीसइमो समवाओ

उनतालीसवां समवाय

१ नमिस्स ण अरहओ एगूणचत्तालीस आहोहियसया होत्था।

१ अर्हत् नमि के उनतालीस सौ अवधि-ज्ञानी थे।

२. समयखेत्ते ण एगूणचत्तालीस कुलपव्वया पण्णत्ता, त जहा—
तीस वासहरा, पच मदरा, चत्तारि उसुकारा।

२ समय-क्षेत्र मे उनतालीस कुल-पर्वत प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
तीस वर्षधर, पाच मदर और चार इपुकार।

३ दोच्चचउत्थपचमछट्ठसत्तमासु ण पचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

३ दूसरी, चौथी, पाचवी, छठी और सातवी—इन पाच पृथ्वियो मे उनतालीस शत-सहस्र / लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं।

४. नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउस्स—एयासि ण चउण्ह कम्मपगडीण एगूणचत्तालीस उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

४ ज्ञानावरणीय, मोहनीय, गोत्र और आयुष्य—इन चार कर्म-प्रकृतियो की उनतालीस उत्तर-प्रकृतिया प्रज्ञप्त है।

चत्तालीसइमो समवाओ

चालीसवां समवाय

१ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीस अज्जियासाहस्सीओ होत्था।

१ अर्हत् अरिष्टनेमि के चालीस हजार आर्यिकाएँ/साध्वियां थी।

२ मदरचूलिया ण चत्तालीस जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता।

२ मन्दरपर्वत की चूलिका ऊँचाई की दृष्टि से चालीस योजन ऊँची है।

३ सती अरहा चत्तालीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

३ अर्हत् शान्ति ऊँचाई की दृष्टि से चालीस धनुष ऊँचे थे।

४ भूयाणदस्स ण नागरण्णो चत्तालीस भवणावास-सयसहस्सा पण्णत्ता।

४ नागराज भूतानद के चालीस शत-सहस्र/एक लाख भवनावास प्रज्ञप्त हैं।

५ खुड्डियाए ण विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे चत्तालीस उद्देसण-काला पण्णत्ता।

५ क्षुद्रिका-विमान-प्रविभक्ति के तीसरे वर्ग मे चालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं।

६. फग्गुणपुण्णिमासिणीए ण सूरिए चत्तालीसगुलिय पोरिसिच्छाय निव्वट्टइत्ता ण चार चरइ।

६ फाल्गुन-पूर्णिमा को सूर्य चालीस अगुल की पौरुषी छाया निष्पन्न कर सचरण करता है।

७ एव कत्तियाएवि पुण्णिमाए।

७ इसी प्रकार कार्तिक-पूर्णिमा को।

८. महासुक्के कप्पे चत्तालीस विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता।

८ महाशुक्रकल्प मे चालीस हजार विमानावास प्रज्ञप्त हैं।

एक्कचत्तालीसइमो समवाओ

१ नमिस्स ण अरहओ एक्कचत्तालीस अज्जियासाहस्सीओ होत्था।

२ चउसु पुढवीसु एक्कचत्तालीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, त जहा—
रयणप्पहाए पकप्पहाए तमाए तमतमाए ।

३ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे एक्कचत्तालीस उद्देसण काला पण्णत्ता ।

इकतालीसवां समवाय

१ अर्हत् नमि के इकतालीस हजार आर्यिकाएँ/साध्विया थी ।

२ चार पृथिवियो मे इकतालीस शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
रत्नप्रभा, पकप्रभा, तमा और तमतमा ।

३ महती-विमान-प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग मे इकतालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त है ।

बायालीसइमो समवाओ

१ समणे भगवं महावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं बायालीसं जोयणसहस्साइं अबाहए अंतरे पण्णत्ते ।

३ एवं चउद्दिसिं पि दओभासे संखे दयसीमे य ।

४ कालोए णं समुद्दे बायालीसं चंदा जोइंसु वा जोइंति वा जोइस्संति वा बायालीसं सूरिया पभासिंसु वा पभासिंति वा पभासिस्संति वा ।

५ संमुच्छिमभुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।

६ नामे णं कम्मे बायालीसविहे पण्णत्ते, तं जहा—
गइनामे जाइनामे सरीरनामे

बयालीसवां समवाय

१ श्रमण भगवान् महावीर बयालीस वर्षों से कुछ अधिक वर्षों तक श्रामण्य-पर्याय पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख रहित हुए ।

२ जम्बूद्वीप-द्वीप के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अन्तर अबाधित बयालीस हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

३ इसी प्रकार चारों दिशाओं में भी उदकभास-शंख और उदकसीम का [अन्तर ज्ञातव्य है ।]

४ कालोद समुद्र में बयालीस चन्द्रमाओं ने उद्योत किया था, करते हैं और करेंगे । इसी प्रकार बयालीस सूर्यों ने प्रकाश किया था, प्रकाश करते हैं और प्रकाश करेंगे ।

५ सम्मूच्छिम भुजपरिसर्प की उत्कृष्टतः बयालीस हजार वर्ष की स्थिति प्रज्ञप्त है ।

६ नाम कर्म बयालीस प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
गतिनाम, जातिनाम, शरीरनाम,

सरीरगोवगनामे सरीरबधण-नामे सरीरसघायणनामे सघयण-नामे सठाणनामे वण्णनामे गध-नामे रसनामे फासनामे अगरुय-लहुयनामे उवघायनामे पराघाय-नामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आतवनामे उज्जोयनामे विहग-गइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साधारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिर-नामे सुभनामे असुभनामे सुभग-नामे दूभगनामे सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणा-एज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसो-कित्तिनामे निम्माणनामे तित्थ-करनामे ।

शरीरांगोपांगनाम, शरीरबंधननाम, शरीरसंघातनाम, संहनननाम, संस्थाननाम, वर्णनाम, गंधनाम, रसनाम, स्पर्शनाम, अगुरुलघुनाम, उपघातनाम, पराघातनाम, आनुपूर्वीनाम, उच्छ्वासनाम, आतपनाम, उद्योतनाम, विहगगतिनाम, त्रसनाम, स्थावरनाम, सूक्ष्मनाम, बादरनाम, पर्याप्तनाम, अपर्याप्तनाम, साधारणशरीरनाम, प्रत्येकशरीरनाम, स्थिरनाम, अस्थिरनाम, शुभनाम, अशुभनाम, सुभगनाम, दुर्भगनाम, सुस्वरनाम, दुःस्वरनाम, आदेयनाम, अनादेयनाम, यशःकीर्तिनाम, अयशःकीर्तिनाम, निर्माणनाम, तीर्थङ्करनाम ।

७ लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भिंतरियं वेलं धारेंति ।

७ लवणसमुद्र की आभ्यन्तर वेला के बयालीस हजार नाग धारण करते हैं ।

८. महालियाए णं विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे बायालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

८ महती-विमान-प्रविभक्ति के दूसरे वर्ग में बयालीस हजार उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

९ एगमेगाए ओसप्पिणीए पंचम-छट्ठीओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ ।

९ प्रत्येक अवसर्पिणी का पाँचवा और छठा आरा बयालीस हजार वर्ष के कालमान का प्रज्ञप्त है ।

१० एगमेगाए उस्सप्पिणीए पढम-बीयाओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ ।

१० प्रत्येक उत्सर्पिणी का पहला और दूसरा आरा बयालीस हजार वर्ष के कालमान का प्रज्ञप्त है ।

तेयालीसइमो समवाओ

१ तेयालीस कम्मविवागज्झयणा पण्णत्ता ।

२ पढमचउत्थपचमासु—तीसु पुढवीसु तेयालीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

३. जबुद्दीवस्स ण दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथूभस्स ण आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण तेयालीस जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

४ एव चउद्दिसिपि दओभासे सखे दयसीमे ।

५ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए ततिये वग्गे तेयालीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

तेयालीसवां समवाय

१ कर्मविपाक के तेयालीस अध्ययन प्रज्ञप्त हैं।

२ पहली चौथी और पाचवीं—इन तीन पृथिवियो मे तेयालीस शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त है ।

३ जम्बूद्वीप द्वीप के पूर्वी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अन्तर अबाधत तेयालीस हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

४ इसी प्रकार चारो दिशाओ मे भी उदकावभास, शख और उदकसीम का [अन्तर ज्ञातव्य है ।]

५ महती-विमान-प्रविभक्ति के तीसरे वर्ग मे तेयालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं।

चोयालीसइमो समवाओ

१. चोयालीस अज्झयणा इसि-भासिया दियलोगचुयाभासिया पण्णत्ता ।

२ विमलस्स ण अरहतो चोयालीस पुरिसजुगाइ अणुपाँट्ठ सिद्धाइ बुद्धाइ मुत्ताइ अंतगडाइ परि-णिव्वुयाइ सव्वदुक्खप्पहीणाइ ।

३. धरणस्स ण नागिंदस्स नागरण्णो चोयालीस भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

४ महालियाए ण विमाणपविभत्तीए चउत्थे वग्गे चोयालीस उद्देसण-काला पण्णत्ते ।

चौवालीसवां समवाय

१ देवलोक से च्युत / अवतरित [ऋषियो] द्वारा भाषित 'ऋषि-भाषित' के चवालीस अध्ययन प्रज्ञप्त हैं ।

२ अर्हत् विमल के चौवालीस पुरुषयुग अनुक्रमश सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दु ख-रहित हुए ।

३ नागराज नागेन्द्र धरण के चौवालीस शत-सहस्र/लाख भवनावास प्रज्ञप्त हैं ।

४ महती-विमान-प्रविभक्ति के चौथे वर्ग मे चौवालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त है ।

पणयालीसइमो समवाओ

१. समयखेत्ते ण पणयालीस जोयण-सयसहस्साइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।

२ सीमतए ण नरए पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयामविक्ख-भेण पण्णत्ते ।

३. एव उडुविमाणे पण्णत्ते ।

४. ईसिपब्भारा ण पुढवी पण्णत्ता एव चेव ।

५ धम्मे ण अरहा पणयालीस धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

६ मदरस्स ण पव्वयस्स चउदिसिपि पणयालीस-पणयालीस जोयण-सहस्साइ अबाहाते अतरे पण्णत्ते ।

७ सव्वेवि ण दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीस मुहुत्ते चदेण सद्धि जोग जोइसु वा जोइति वा जोइस्सति वा ।

तिन्नेव उत्तराइ,
पुणव्वसू रोहिणी विसाहा य ।
एए छ नक्खत्ता,
पणयाल-मुहुत्त-सजोगा ॥

पैंतालीसवां समवाय

१ समयक्षेत्र/ढाई द्वीप पैंतालीस शत-सहस्र/लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२ सीमतक नरक पैंतालीस शत-सहस्र/लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

३ इसी प्रकार उडुविमान प्रज्ञप्त है ।

४ और इसी प्रकार ईषत् प्राग्भारा पृथिवी प्रज्ञप्त है ।

५ अर्हत् धर्म ऊचाई की दृष्टि से पैंतालीस धनुष ऊचे थे ।

६ मन्दर पर्वत का चारो दिशाओ मे पैंतालीस-पैंतालीस हजार योजन का अबाधत अन्तर प्रज्ञप्त है ।

७ द्व्यर्धक्षेत्र (डेढ समक्षेत्र) के सर्व नक्षत्र पैंतालीस मुहूर्त्त तक चन्द्र के साथ योग करते थे, योग करते हैं और योग करेंगे ।

तीनो उत्तरा, पुनर्वसु, रोहिणी, और विशाखा—ये छह नक्षत्र चन्द्र के साथ पैंतालीस मुहूर्त्त तक सयोग करते हैं ।

८. महालियाए ण विमाणपविभत्तीए पचमे वग्गे पणयालीस उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

८ महती-विमान-प्रविभक्ति के पाचवे वर्ग मे पैतालीस उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

सत्तचालीसइमो समवाओ

१. जया ण सूरिए सव्वब्भंतरमडल उवसकमित्ता णं चार चरइ तया ण इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीस जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ ।

२ थेरे णं अग्गिभूई सत्तालीस वासाइ अगारमज्झा वसित्ता मु डे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ।

सैंतालीसवां समवाय

१ जब सूर्य सर्व-आभ्यन्तर मण्डल का उपसक्रमण कर सचरण करता है तब भरतक्षेत्रगत मनुष्य को वह सैंतालीस हजार दो सौ तिरेसठ योजन और एक योजन के साठ भागो मे से इक्कीस भाग (४७२६३ २१/६० योजन) की दूरी से दिखाई देता है ।

२ स्थविर अग्निभूति सैंतालीस वर्ष तक अगार-मध्य रहकर मु ड हुए और अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

अडयालीसइमो समवाओ

१ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरत-चक्क वट्टिस्स अडयालीस पट्टणस-हस्सा पण्णत्ता ।

२ धम्मस्स ण अरहओ अडयालीस गणा अडयालीस गणहरा होत्था ।

३ सूरमडले ण अडयालीस एकसट्ठि-भागे जोयणस्स विक्खभेण पण्णत्ते ।

अड़तालीसवां समवाय

१ प्रत्येक चातुरत चक्रवर्त्ती के अडतालीस हजार पत्तन प्रज्ञप्त हैं ।

२ अर्हत् धर्म के अडतालीस गण और अडतालीस गणधर थे ।

३ सूर्यमण्डल का एक योजन के इकसठ भागो मे से अडतालीस भाग-परिमित ($\frac{४८}{६१}$ योजन) विष्कम्भ/विस्तार प्रज्ञप्त है ।

सत्तचालीसइमो समवाओ

१. जया ण सूरिए सव्वब्भतरमडल उवसकमित्ता ण चार चरइ तया ण इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीस जोयणसहस्सेहि दोहि य तेवट्ठेहि जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहि जोयणस्स सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ।

२. थेरे णं अग्गिभूई सत्तालीस वासाइ अगारमज्झा वसित्ता मु डे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए।

सैंतालीसवां समवाय

१ जब सूर्य सर्व-आभ्यन्तर मण्डल का उपसक्रमण कर संचरण करता है तब भरतक्षेत्रगत मनुष्य को वह सैंतालीस हजार दो सौ तिरेसठ योजन और एक योजन के साठ भागो मे से इक्कीस भाग (४७२६३ $\frac{21}{60}$ योजन) की दूरी से दिखाई देता है।

२ स्थविर अग्निभूति सैंतालीस वर्ष तक अगार-मध्य रहकर मु ड हुए और अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

अडयालीसइमो समवाओ

१ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरंत-चक्क वट्टिस्स अडयालीस पट्टणस-हस्सा पण्णत्ता ।

२ धम्मस्स ण अरहओ अडयालीस गणा अडयालीस गणहरा होत्था ।

३ सूरमडले ण अडयालीस एकसट्ठि-भागे जोयणस्स विक्खभेण पण्णत्ते ।

अड़तालीसवां समवाय

१ प्रत्येक चातुरंत चक्रवर्ती के अड़तालीस हजार पत्तन प्रज्ञप्त है ।

२ अर्हत् धर्म के अड़तालीस गण और अड़तालीस गणधर थे ।

३ सूर्यमण्डल का एक योजन के इकसठ भागो में से अड़तालीस भाग-परिमित ($\frac{48}{61}$ योजन) विष्कम्भ/विस्तार प्रज्ञप्त है ।

एगूरणपण्णासइमो समवाश्रो

उनचासवां समवाय

१. मत्तसत्तमिया ण भिक्खुपडिमा एगूरणपण्णाए राइदिएहिं छन्न-उएरण भिक्खासएण श्रहासुत्त श्रहाकप्प श्रहामग्ग श्रहातच्च सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया श्राणाए श्राराहिया यावि भवइ ।

१ सप्तसप्तमिका भिक्षुप्रतिमा उनचास रात-दिन मे एक सौ छियानवे भिक्षा-[-दत्तियो] से सूत्र के श्रनुरूप, कल्प के श्रनुरूप, मार्ग के श्रनुरूप तथा तथ्य के श्रनुरूप काया से सम्यक् स्पृष्ट, पालित, शोधित, पारित, कीर्तित श्रौर श्राज्ञा से श्राराधित होती है ।

२. देवकुरु-उत्तरकरासु ण मणुया एगूणपण्णाए राइदिएहिं सपत्त-जोव्वरणा भवति ।

२ देवकुरु श्रौर उत्तरकुरु के मनुज उनचास रात-दिन मे यौवन-सम्पन्न हो जाते है ।

३. तेइदियाण उक्कोसेण एगूरणपण्ण राइदिया ठिई पण्णत्ता ।

३ त्रीन्द्रिय जीवो की उत्कृष्ट स्थिति उनचास रात-दिन की प्रज्ञप्त है ।

एगपण्णासइमो समवाओ

इक्यावनवां समवाय

१. नवण्ह बंभचेराणं एकावण्णं उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

१ नौ ब्रह्मचर्य [अध्ययनों] के इक्यावन उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

२. चमरस्स णं असुरिंदस्स असुर-रण्णो सभा सुधम्मा एकावण्ण-खंभसयसंनिविट्ठा पण्णत्ता ।

२ असुरराज असुरेन्द्र चमर की सुधर्मा सभा इक्यावन सौ स्तम्भों पर सन्निविष्ट है ।

३. एवं चेव बलिस्सवि ।

३ इसी प्रकार बली की [सभा भी ।]

४ सुप्पभे णं बलदेवे एकावण्णं वाससयसहस्साइं परमाउं पाल-इत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४ बलदेव सुप्रभ इक्यावन शत-सहस्र/लाख वर्ष की परम आयु पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परि-निर्वृत और सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

५. दंसणावरणनामाणं—दोण्हं कम्माणं एकावण्णं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।

५ दर्शनावरण और नाम—इन दो कर्मों की इक्यावन उत्तर-प्रकृतियाँ प्रज्ञप्त हैं ।

४. नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंत-
रातियस्स—एतासि ण तिण्ह
कम्मपगडीण बावन्न उत्तरपय-
डीओ पण्णत्ताओ ।

४ ज्ञानावरणीय, नाम एव अंतराय—
इन तीन कर्म-प्रकृतियो की बावन
उत्तर-प्रकृतिया प्रज्ञप्त हैं ।

५. सोहम्म-सणकुमार-माहिंदेसु—
तिसु कप्पेसु बावन्न विमाणावास
सयसहस्सा पण्णत्ता ।

५ सौधर्म, सनत्कुमार और माहेन्द्र—
इन तीन कल्पो मे बावन शत-सहस्र/
लाख विमानावास प्रज्ञप्त हैं ।

तेवण्णइमो समवाओ

तिरपनवां समवाय

१ देवकुरुउत्तरकुरियाओ णं जीवाओ तेवण्णं-तेवण्णं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं पण्णत्ताओ।

१ देवकुरु और उत्तरकुरु की जीवा तिरपन-तिरपन हजार योजन से कुछ अधिक आयाम की—लम्बी प्रज्ञप्त है।

२ महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवण्णं-तेवण्णं जोयणसहस्साइं नव य एगतीसे जोयणसए छच्च एगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ।

२ महाहिमवान और रुक्मी वर्षधर पर्वतों की जीवाएं तिरपन तिरपन हजार नौ सौ इकतीस योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से छह भाग कम (५३९३१ $\frac{६}{१९}$ योजन) आयाम की—लम्बी प्रज्ञप्त है।

३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवण्णं अणगारा संवच्छरपरियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना।

३ श्रमण भगवान महावीर के एक संवत्सर/एक वर्षीय श्रमण-पर्याय वाले तिरपन अनगार अति विशिष्ट पांच अनुत्तर महाविमानों में देवत्व में उपपन्न हुए।

४ संमुच्छिम-उरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्सा ठिई पण्णत्ता।

४ सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्प जीवों की उत्कृष्टतः तिरपन हजार वर्ष की स्थिति प्रज्ञप्त है।

चउवण्णइमो समवाश्रो

१ भरहेरवएसु ण वासेसु एगमेगाए श्रोसप्पिणीए एगमेगाए उस्सप्पिणीए चउप्पण्ण-चउप्पण्ण उत्तमपुरिसा उप्पज्जिसु वा उप्पज्जति वा उप्पज्जिस्सति वा, त जहा—
चउवीस तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा ।

२. श्ररहा ण श्ररिट्ठनेमी चउप्पण्ण राइदियाइ छउमत्थपरियाग पाउणित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी ।

३ समणे भगव महावीरे एगदिवसेण एगनिसेज्जाए चउप्पण्णाइ वागरणाइ वागरित्था ।

४. श्रणतस्स ण श्ररहश्रो चउप्पण्ण गणा चउप्पण्ण गणहरा होत्था ।

चौपनवां समवाय

१. भरत-ऐरवत वर्षो/क्षेत्रो मे प्रत्येक श्रवसर्पिणी श्रौर उत्सर्पिणी मे चौपन-चौपन उत्तम पुरुप उत्पन्न हुए थे उत्पन्न होते है श्रौर उत्पन्न होगे । जैसे कि—
चौवीस तीर्थङ्कर, वारह चक्रवर्ती, नौ वलदेव श्रौर नौ वासुदेव ।

२ श्रर्हत् श्ररिष्टनेमि चौपन रात-दिन तक छद्मस्थ-पर्याय पालकर जिन, केवली, सर्वज्ञ, सर्वभावदर्शी हुए ।

३ श्रमण भगवान् महावीर ने एक दिन मे एक ही श्रासन पर बैठे हुए चौपन व्याकरण कहे ।

४ श्रर्हत् श्रनन्त के चौपन गण श्रौर चौपन गणधर थे ।

छप्पण्णइमो समवाओ

१ जंबुद्दीवे णं दीवे छप्पण्णं नक्खत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोएंसु वा जोएंति वा जोइस्संति वा ।

२ विमलस्स णं अरहओ छप्पण्णं गणा छप्पण्णं गणहरा होत्था ।

छप्पनवां समवाय

१ जम्बूद्वीप द्वीप मे छप्पन नक्षत्रो ने चन्द्रमा के साथ योग किया था, योग करते है और योग करेंगे । (जम्बूद्वीप मे दो चन्द्रमा; प्रत्येक चन्दमा के साथ अट्ठाईस नक्षत्रो का योग २८ × २ = ५६)

२ अर्हत् विमल के छप्पन गण और छप्पन गणधर थे ।

अट्ठाण्णइमो समवाओ

१ पढमदोच्चपचमासु — तिसु पुढवीसु अट्ठावण्ण निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

२. नाणावरणिज्जस्स वेयणिज्जस्स आउयनामअतराइयस्स य— एयासि ण पचण्ह कम्मपगडीण अट्ठावण्ण उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।

३. गोथूभस्स ण आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ वलयामुहस्स महापायालस्स वहुमज्भदेसमाए, एस ण अट्ठावण्ण जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ।

४ एव दओभासस्स ण केउकस्स सखस्स जूयकस्स दयसीमस्स ईसरस्स ।

अट्ठावनवां समवाय

१ पहली, दूसरी एव पाचवी—इन तीनो पृथिवियो मे अट्ठावन शत-सहस्र/लाख नरकावास प्रज्ञप्त हैं ।

२ ज्ञानावरणीय, वेदनीय, आयुष्य, नाम और अन्तराय—इन पाच कर्म-प्रकृतियो की अट्ठावन उत्तर-प्रकृतिया प्रज्ञप्त है ।

३ गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से वडवामुख महापाताल के वहुमध्यदेशभाग का अवाधत अन्तर अट्ठावन हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

४ इसी प्रकार दकावभास केतुक का, शख यूप का और दकसीम का भी [अन्तर ज्ञातव्य है ।]

सट्ठिमो समवाओ

१. एगमेगे ण मंडले सूरिए सट्ठिए-सट्ठिए मुहुत्तेहिं सघाएइ ।

२. लवणस्स ण समुद्दस्स सट्ठि नाग-साहस्सीओ अग्गोदयं धारेंति ।

३. विमले ण अरहा सट्ठि धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

४. बलिस्स ण वइरोयणिंदस्स सट्ठि सामाणियसाहस्सीओ पण्ण-त्ताओ ।

५. बभस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सट्ठि सामाणियसाहस्सीओ पण्ण-त्ताओ ।

६. सोहम्मीसाणेसु—दोसु कप्पेसु सट्ठि विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

साठवां समवाय

१ सूर्य एक-एक मडल को साठ-साठ मुहूर्तों से सघात/पूर्ण करता है ।

२ लवण-समुद्र के अग्रोदक/जलशिखा को साठ हजार नाग धारण करते हैं ।

३ अर्हत् विमल ऊँचाई की दृष्टि से साठ धनुष ऊँचे थे ।

४ वैरोचनेन्द्र बली के साठ हजार सामानिक देव प्रज्ञप्त है ।

५ देवराज देवेन्द्र ब्रह्म के साठ हजार सामानिक देव प्रज्ञप्त हैं ।

६ सौधर्म व ईशान—दो कल्पो मे साठ शत-सहस्र/लाख विमानावास प्रज्ञप्त हैं ।

एगसट्ठिमो समवाओ

१ पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स एगसट्ठि उउमासा पण्णत्ता।

२ मंदरस्स णं पव्वयस्स पढमे कंडे एगसट्ठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

३ चंदमंडले णं एगसट्ठिविभाग-विभाइए समंसे पण्णत्ते।

४ एवं सूरस्सवि।

इकसठवां समवाय

१ ऋतुमास के परिमाण से पंच-सांवत्सरिक युग के इकसठ ऋतुमास प्रज्ञप्त हैं।

२ मन्दर पर्वत का प्रथम काण्ड ऊंचाई की दृष्टि से इकसठ हजार योजन ऊंचा प्रज्ञप्त है।

३ चन्द्रमण्डल योजन के इकसठवें भाग से विभाजित होने पर समांश प्रज्ञप्त है।

४ इसी प्रकार सूर्य भी [समांश प्रज्ञप्त है।]

बावट्ठिमो समवाओ

१ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावट्ठि पुण्णिमाओ बावट्ठि अमावसाओ पण्णत्ताओ।

२ वासुपुज्जस्स णं अरहओ बावट्ठि गणा बावट्ठि गणहरा होत्था।

३. सुक्कपक्खस्स णं चंदे बावट्ठि भागे दिवसे-दिवसे परिवड्ढइ, ते चेव बहुलपक्खे दिवसे - दिवसे परि-हायइ ।

४. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बावट्ठि-बावट्ठि विमाणा पण्णत्ता ।

५. सव्वे वेमाणियाणं बावट्ठि विमाणपत्थडा पत्थडग्गेण पण्णत्ता ।

बासठवां समवाय

१ पंच सांवत्सरिक युग में बासठ पूर्णिमाएँ और बासठ अमावस्याएँ प्रज्ञप्त हैं ।

२ अर्हत वासुपूज्य के बासठ गण और बासठ गणधर प्रज्ञप्त थे ।

३ शुक्लपक्ष का चन्द्र दिन-प्रतिदिन बासठ भाग बढता है और बहुलपक्ष/ कृष्णपक्ष मे चन्द्र दिन-प्रतिदिन बासठ भाग घटता है ।

४ सौधर्म-ईशान कल्प के प्रथम प्रस्तर की प्रथम आवलिका की एक-एक दिशा मे बासठ-बासठ विमान प्रज्ञप्त है ।

५ सर्व वैमानिको के प्रस्तर की दृष्टि से विमान-प्रस्तर बासठ प्रज्ञप्त है ।

तेवट्ठिमो समवाओ

१ उसभे णं अरहा कोसलिए तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायवास-मज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

२ हरिवासरम्मयवासेसु मणुस्सा तेवट्ठिए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति।

३ निसढे णं पव्वए तेवट्ठिं सूरोदया पण्णत्ता।

४ एवं नीलवंते वि।

चउसट्ठिमो समवाश्रो

१. श्रट्ठट्ठमिया ण भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइदिएहिं दोहि य श्रट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं श्रहासुत्त श्रहाकप्प श्रहामग्ग श्रहातच्च सम्म काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया श्राणाए श्राराहिया यावि भवइ ।

२. चउसट्ठि श्रसुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

३. चमरस्स ण रण्णो चउसट्ठि सामाणियसाहस्सीश्रो पण्णत्ताश्रो।

४. सव्वेवि ण दधिमुहा पव्वया पल्ला-सठाण-सठिया सव्वत्थ समा दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण, उस्सेहेणं, चउसट्ठि-चउसट्ठि जोयणसहस्साइं पण्णत्ता ।

५. सोहम्मीसाणेसु वंभलोए य— तिसु कप्पेसु चउसट्ठि विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

६. सव्वस्सवि य ण रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्धे मुत्तामणिमए हारे पण्णत्ते ।

चौसठवां समवाय

१ श्रष्टश्रष्टमिका भिक्षु-प्रतिमा चौसठ रात-दिन मे दो सौ श्रठासी भिक्षा [-दत्तियो] से सूत्र के श्रनुरूप, कल्प के श्रनुरूप, मार्ग के श्रनुरूप श्रौर तथ्य के श्रनुरूप काया से सम्यक् स्पृष्ट, पालित, शोधित, पारित, कीर्तित श्रौर श्राज्ञा से श्राराधित होती है ।

२. श्रसुरकुमारावास चौसठ शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त हैं ।

३. राजा चमर के चौसठ हजार सामानिक प्रज्ञप्त हैं ।

४ समस्त दधिमुख पर्वत पल्य-सस्थान से सस्थित है, सर्वत्र सम हैं, दस हजार योजन विष्कम्भक/चौडे है, उनका उत्सेध (ऊँचाई) चौसठ-चौसठ हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

५ सौधर्म, ईशान श्रौर ब्रह्मलोक—इन तीनो कल्पो मे चौसठ शत-सहस्र/एक लाख विमानावास प्रज्ञप्त है ।

६ समस्त चातुरन्त चक्रवर्ती राजाश्रों के चौसठ लडियो वाला महार्घ्य/बहुमूल्य मुक्तामणियो का हार प्रज्ञप्त हैं ।

छावट्ठिमो समवाओ

१. दाहिणड्ढमणुस्सखेत्ता ण छावट्ठि चदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्सति वा, छावट्ठि सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्सति वा ।

२. उत्तरड्ढमणुस्सखेत्ता ण छावट्ठि चदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्सति वा, छावट्ठि सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्सति वा ।

३ सेज्जसस्स ण अरहओ छावट्ठि गणा छावट्ठि गणहरा होत्था ।

४ आभिणिबोहियनाणस्स ण उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

छासठवां समवाय

१ दक्षिणार्द्ध मनुष्य-क्षेत्र को छासठ चन्द्र प्रकाशित करते थे, प्रकाशित करते है और प्रकाशित करेगे । इसी प्रकार छासठ सूर्य तपते थे, तपते है और तपेगे ।

२ उत्तरार्द्ध मनुष्य-क्षेत्र को छासठ चन्द्र प्रकाशित करते थे, करते हैं और प्रकाशित करेगे । इसी प्रकार छासठ सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपेगे ।

३ अर्हत् श्रेयास के छासठ गण और छासठ गणधर थे ।

४ आभिनिबोधिक ज्ञान की उत्कृष्टत छासठ सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है ।

# अट्ठसट्ठिमो समवाओ	# अड़सठवां समवाय
१ धायइसडे ण दीवे अट्ठसट्ठि चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठि रायहाणीओ पण्णत्ताओ।	१ धातकीखड द्वीप मे अडसठ चक्रवर्त्ती-विजय और अडसठ राजधानिया प्रज्ञप्त हैं।
२. धायइसडे ण दीवे उक्कोसपए अट्ठसट्ठि अरहता समुप्पज्जिसु वा समुप्पज्जेंति वा समुप्पज्जिस्सति वा।	२ धातकीखड द्वीप मे उत्कृष्टत अडसठ अर्हत् उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे।
३. एव चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा।	३ इसी प्रकार चक्रवर्त्ती, बलदेव और वासुदेव भी [ज्ञातव्य है।]
४. पुक्खरवरदीवड्ढे ण अट्ठसट्ठि चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठि रायहाणीओ पण्णत्ताओ।	४ अर्द्धपुष्करवरद्वीप मे अडसठ चक्रवर्त्ती-विजय और अडसठ राजधानिया प्रज्ञप्त है।
५ पुक्खरवरदीवड्ढे ण उक्कोसपए अट्ठसट्ठि अरहता समुप्पज्जिसु वा समुप्पज्जेंति वा समुप्पज्जिस्सति वा।	५ अर्द्धपुष्करवरद्वीप मे उत्कृष्टत अडसठ अर्हत् उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते है और उत्पन्न होगे।
६ एव चक्कवट्टी वलदेवा वासुदेवा।	६ इसी प्रकार चक्रवर्ती, वलदेव और वासुदेव भी [ज्ञातव्य हैं।]
७ विमलस्स ण अरहओ अट्ठसट्ठि समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसपया होत्या।	७ अर्हत् विमल के अडसठ हजार श्रमणो की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी।

अट्ठसट्ठिमो समवाओ	अड़सठवां समवाय
१. धायइसडे ण दीवे अट्ठसट्ठि चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठि रायहाणीओ पण्णत्ताओ।	१ धातकीखड द्वीप मे अडसठ चक्रवर्त्ती-विजय और अडसठ राजधानिया प्रज्ञप्त हैं।
२. धायइसडे ण दीवे उक्कोसपए अट्ठसट्ठि अरहता समुप्पज्जिसु वा समुप्पज्जेति वा समुप्पज्जिस्सति वा।	२ धातकीखड द्वीप मे उत्कृष्टत अडसठ अर्हत् उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होगे।
३. एव चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा।	३ इसी प्रकार चक्रवर्त्ती, बलदेव और वासुदेव भी [ज्ञातव्य है।]
४. पुक्खरवरदीवड्ढे ण अट्ठसट्ठि चक्कवट्टिविजया अट्ठसट्ठि रायहाणीओ पण्णत्ताओ।	४ अर्द्धपुष्करवरद्वीप मे अडसठ चक्रवर्त्ती-विजय और अडसठ राजधानिया प्रज्ञप्त है।
५ पुक्खरवरदीवड्ढे ण उक्कोसपए अट्ठसट्ठि अरहता समुप्पज्जिसु वा समुप्पज्जेति वा समुप्पज्जिस्सति वा।	५ अर्द्धपुष्करवरद्वीप मे उत्कृष्टत अडसठ अर्हत् उत्पन्न हुए थे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होगे।
६. एव चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा।	६ इसी प्रकार चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव भी [ज्ञातव्य हैं।]
७ विमलस्स ण अरहओ अट्ठसट्ठि समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसपया होत्था।	७ अर्हत् विमल के अडसठ हजार श्रमणों की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी।

एगूणसत्तरिमो समवाओ

उनहत्तरवां समवाय

१ समयखेत्ते णं मंदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासा वासधरपव्वया पण्णत्ता, तं जहा—
पणतीसं वासा, तीसं वासहरा, चत्तारि उसुयारा।

१ समयक्षेत्र/अढाई द्वीप में उनहत्तर वर्ष/क्षेत्र और मेरुवर्जित उनहत्तर वर्षधर पर्वत प्रज्ञप्त हैं, जैसे कि—
पैंतीस वर्ष, तीस वर्षधर और चार इषुकार।

२ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोयमदीवस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

२ मन्दर-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गौतम द्वीप के पश्चिमी चरमान्त का अबाधत अन्तर उनहत्तर हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

३ मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्माणं एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

३ मोहनीय-वर्जित शेष सात कर्मों की उनहत्तर उत्तर-प्रकृतियां प्रज्ञप्त हैं।

सत्तरिमो समवाओ

१ समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराए मासे वीतिक्कंते सत्तरिए राइदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ ।

२ पासे णं अरहा पुरिसादाणीए सत्तरिं वासाइं बहुपडिपुण्णाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३ वासुपुज्जे णं अरहा सत्तरिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ।

४ मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मणिसेगे पण्णत्ते ।

५ माहिंदस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्तरिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

सत्तरवां समवाय

१ श्रमण भगवान् महावीर ने वर्षा ऋतु के पचास रात-दिन बीत जाने तथा सत्तर रात-दिन शेष रहने पर वर्षावास के लिए परिवास किया ।

२ पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व सम्पूर्ण सत्तर वर्षों तक श्रामण्य-पर्याय पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

३ अर्हत् वासुपूज्य ऊँचाई की दृष्टि से सत्तर धनुष ऊँचे थे ।

४ मोहनीय कर्म की सत्तर कोडाकोडी सागरोपम की अबाधत कर्मस्थिति एवं कर्म-निषेक/कर्म-उदयकाल प्रज्ञप्त है ।

५ देवेन्द्र देवराज माहेन्द्र के सत्तर हजार सामानिक प्रज्ञप्त है ।

एक्कसत्तरिमो समवाओ

इकहत्तरवां समवाय

१. चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्कसत्तरीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं सव्वबाहिराओ मंडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ।

१ चतुर्थ चन्द्र-संवत्सर की हेमन्त-ऋतु के इकहत्तर रात-दिन व्यतीत होने पर सूर्य सर्व-बाह्यमण्डल से आवृत्ति (दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर गमन) करता है।

२ वीरियप्पवायस्स णं एक्कसत्तरिं पाहुडा पण्णत्ता।

२ वीर्यप्रवाद के प्राभृत/अधिकार इकहत्तर प्रज्ञप्त हैं।

३ अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए।

३ अर्हत् अजित ने इकहत्तर शत-सहस्र/लाख पूर्वों तक अगार-मध्य रहकर मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

४ सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइए।

४ चातुरन्त चक्रवर्ती राजा सगर ने इकहत्तर शत-सहस्र/लाख पूर्वों तक अगार-मध्य रहकर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

बावत्तरिमो समवाओ

१ बावत्तरिं सुवण्णकुमारावाससय-सहस्सा पण्णत्ता ।

२. लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरिय वेल धारंति ।

३. समणे भगव महावीरे बावत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

४. थेरे णं अयलभाया बावत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५. अब्भतरपुक्खरद्धे णं बावत्तरिं चदा पभासिसु वा पभासेंति वा पभासिस्सति वा, बावत्तरिं सूरिया तविसु वा तवेंति वा तविस्सति वा ।

६ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरत-चक्कवट्टिस्स बावत्तरिं पुरवर-साहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

७ बावत्तरिं कलाओ पण्णत्ताओ, त जहा—
१ लेह, २ गणिय, ३ रुवं, ४ नट्टं, ५ गीय, ६. वाइय,

बहत्तरवां समवाय

१ सुपर्णकुमार देवो के बहत्तर शत-सहस्र/लाख आवास प्रज्ञप्त हैं ।

२ लवण-समुद्र की बाहरी वेला को बहत्तर हजार नाग धारण करते है ।

३ श्रमण भगवान् महावीर बहत्तर वर्ष की सर्वायु पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दु खरहित हुए ।

४ स्थविर अचलभ्राता बहत्तर वर्ष की सर्वायु पाल कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दु ख-रहित हुए ।

५ आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध मे बहत्तर चन्द्र प्रभामित हुए थे, प्रभासित होते है, प्रभासित होगे । आभ्यन्तर पुष्करार्द्ध मे बहत्तर सूर्य तपे थे, तपते है, तपेंगे ।

६ प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के बहत्तर हजार उत्तम पुर/नगर प्रज्ञप्त है ।

७ कलाएँ बहत्तर प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१ लेख, २ गणित, ३ रूप, ४ नाट्य ५ गीत, ६ वाद्य, ७ स्वरगत/स्वर, ८ पुष्करगत/वाद्य-

७. सरगय, ८ पुक्खरगय, ९ समताल, १० जूय, ११ जणवाय, १२. पोरेकव्व, १३ अट्ठावय, १४ दगमट्टिय, १५ अण्णविहि १६ पाणविहि, १७ लेणविहि, १८ सयणविहि, १९ अज्ज, २०. पहेलिय, २१. मागहिय, २२ गाह, २३ सिलोग, २४. गधजुत्ति, २५ मधुसित्थ, २६ आभरणविहि, २७ तरुणीपडिकम्म, २८ इत्थीलक्खण, २९ पुरिसलक्खण, ३० हयलक्खण, ३१ गयलक्खण, ३२ गोलक्खण, ३३ कुक्कुडलक्खण, ३४ मिढयलक्खण, ३५. चक्कलक्खण, ३६ छत्तलक्खण, ३७ दडलक्खण, ३८ असिलक्खण, ३९ मणिलक्खण, ४० काकणिलक्खण, ४१ चम्मलक्खण, ४२ चदचरिय, ४३ सूरचरिय, ४४ राहुचरिय, ४५ गहचरिय, ४६ सोभाकर, ४७ दोभाकर, ४८ विज्जागय, ४९ मतगय, ५० रहस्सगय, ५१ सभास, ५२ चार, ५३ पडिचार, ५४ वूह, ५५ पडिवूह, ५६ खधावारमाण, ५७ नगरमाण, ५८ वत्थुमाण, ५९ खधावारनिवेस, ६०. नगरनिवेस, ६१ वत्थुनिवेस, ६२ ईसत्थ, ६३ छरुप्प-

विशेष, ९ समताल, १० द्यूत, ११ जनवाद/जनश्रुति, १२ पुर काव्य/आशु,-कवित्व १३ अष्टापद/शतरज, १४ दकमृत्तिका/सयोग, १५ अन्नविधि, १६ पानविधि, १७ लयनविधि/गृह-निर्माण, १८ शयनविधि, १९ आर्या/छन्द-विशेष, २० प्रहेलिका/पहेली-रचना, २१ मागधिका/छन्द-विशेष, २२ गाथा, २३ श्लोक, २४ गधयुक्ति, २५ मधुसिक्थ, २६ आभरणविधि, २७ तरुणीप्रतिकर्म/सौन्दर्य-प्रसाधन, २८ स्त्रीलक्षण, २९ पुरुषलक्षण, ३० हयलक्षण/अश्व-विद्या, ३१ गजलक्षण, ३२ गोलक्षण, ३३ कुक्कुटलक्षण, ३४ मेषलक्षण, ३५ चक्रलक्षण, ३६ छत्रलक्षण, ३७ दडलक्षण, ३८ असिलक्षण/शस्त्रकला, ३९ मणिलक्षण, ४० काकिणी (रत्न-विशेष) लक्षण, ४१ चर्मलक्षण, ४२ चन्द्रचर्या, ४३ सूर्यचर्या, ४४ राहुचर्या, ४५ गृहचर्या, ४६ सौभाग्यकर, ४७ दौर्भाग्यकर, ४८ विद्यागत/कला-विद्या ४९ मत्रगत, ५० रहस्यगत, ५१ सभास/वस्तु-वृत्त, ५२ चार/यात्राकला ५३ प्रतिचार/सेवा/ग्रहगति, ५४ व्यूह, ५५ प्रतिव्यूह, ५६ स्कन्धावामान/सैन्य प्रमाण ज्ञान, ५७ नगरमान, ५८ वस्तुमान, ५९ स्कन्धावारनिवेश / सैन्यसस्थानरचना, ६० नगरनिवेश, ६१ वास्तुनिवेश, ६२ इष्वस्त्र/दिव्यास्त्र, ६३

गय, ६४. अस्ससिक्ख, ६५. हत्थिसिक्ख, ६६ धणुव्वेय, ६७. हिरण्णपाग सुवण्णपाग मणिपाग धातुपाग, ६८ बाहुजुद्ध दण्डजुद्ध मुट्ठिजुद्ध अट्ठिजुद्ध जुद्ध निजुद्ध जुद्धातिजुद्ध, ६९. सुत्त-खेड्ड, नालियाखेड्ड वट्टखेड्ड ७०. पत्तच्छेज्ज कडगच्छेज्ज पत्तगच्छेज्ज ७१. सज्जीव निज्जीव ७२. सउणरुय

त्सरुप्रगत/खड्गशास्त्र, ६४ अश्व-शिक्षा, ६५ हस्तिशिक्षा, ६६ धनु-र्वेद, ६७ हिरण्यपाक/रजत-सिद्धि, सुवर्णपाक/स्वर्ण-सिद्धि, मणिपाक धातुपाक, ६८ बाहुयुद्ध, दण्डयुद्ध, मुष्टियुद्ध, अस्थियुद्ध, युद्ध, नियुद्ध, युद्धातियुद्ध, ६९ सूत्रखेल/क्रीडा, नालिकाखेल, वृत्तखेल ७० पत्र-छेद्य, कटक-छेद्य, पत्रक-छेद्य, ७१ सजीव, निर्जीव, ७२ शकुनरुत/शकुनशास्त्र।

८. सम्मुच्छिमखयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण उक्कोसेण बावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

८ सम्मूर्च्छिम-खेचर-पञ्चेन्द्रिय-तिर्यञ्च-योनिक जीवों की उत्कृष्टत बहत्तर हजार वर्ष स्थिति प्रज्ञप्त है।

तेवत्तरिमो समवाओ

१. हरिवासरम्मयवासियाओ ण जीवाओ तेवर्त्तार-तेवर्त्तार जोयणसहस्साइ नव य एक्कुत्तरे जोयणसए सत्तरस य एगूण-वीसइभागे जोयणस्स अद्धभाग च आयामेण पण्णत्ताओ।

२. विजए ण बलदेवे तेवर्त्तार वास-सयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणि-व्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

तिहत्तरवां समवाय

१ हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की जीवा/परिधि तेहत्तर-तेहत्तर हजार नौ सौ एक योजन और एक योजन के उन्नीस भागो मे से साढे सतरह भाग प्रमाण $\left(७३९०१\frac{१७\frac{१}{२}}{१९}\text{ योजन}\right)$ आयाम की — लम्बी प्रज्ञप्त है।

२ बलदेव विजय तिहत्तर शत-सहस्र/लाख वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दु ख-रहित हुए।

चोवत्तरिमो समवाओ

१ थेरे ण अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२ निसहाओ ण पासहरपव्वयाओ तिगिंछिद्दहाओ सीतोतामहानदी चोवत्तरिं जोयणसयाइ साहियाइ उत्तराहुत्ति पवहित्ता वतिरामतियाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पण्णासजोयणविक्खमाए वइरतले कु डे महया घडमुहपवत्तिएण मुत्तावलिहार सठाणसठिएण पवाएण महया सद्देण पवडइ ।

३. एव सीतावि दक्खिणहुत्ति भणियव्वा ।

४. चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

चौहत्तरवां समवाय

१ स्थविर गणधर अग्निभूति चौहत्तर वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दु खरहित हुए ।

२ निषध वर्षधर पर्वत के तिगिंछिद्रह से शीतोदा महानदी कुछ अधिक चौहत्तर सौ योजन उत्तरमुखी बह कर चार योजन लम्बी और पचास योजन चौडी वज्रमय जिह्वा से महान् घटमुख से प्रवर्तित,मुक्तावलिहार के सस्थान से सस्थित प्रपात से महान् शब्द करती हुई वज्रतल कुण्ड मे गिरती है ।

३ इसी प्रकार शीता भी दक्षिणमुखी कथित है ।

४ चौथी पृथिवी को छोडकर शेप छह पृथिवियो मे चौहत्तर शत-सहस्र लाख नरकावास प्रज्ञप्त है ।

पण्णतरिमो समवाओ

१ सुविहिस्स ण पुप्फदतस्स अरहओ पण्णत्तरिं जिणसया होत्था।

२. सीतले ण अरहा पण्णत्तरिं पुव्वसहस्साइ अगारमज्झावसित्ता मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिअ पव्वइए।

३ सती ण अरहा पण्णत्तरिं वाससहस्साइ अगारवासमज्झावसित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए।

पचहत्तरवां समवाय

१ अर्हत् सुविधि पुष्पदन्त के पचहत्तर सौ केवली थे।

२ अर्हत् शीतल ने पचहत्तर हजार पूर्वो तक अगार-मध्य रहकर, मुड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

३ अर्हत् शान्ति ने पचहत्तर हजार वर्षों तक अगार-मध्य रह कर, मुड हो कर, अगार मे अनगार प्रव्रज्या ली।

छावत्तरिमो समवाओ

१ छावत्तरि विज्जुकुमारावाससय-सहस्सा पण्णत्ता।

२ एवं—

दीवदिसाउदहीणं,
विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं।
छण्हंपि जुगलयाणं,
छावत्तरिमो सयसहस्सा॥

छिहत्तरवां समवाय

१ विद्युत्कुमार देवों के छिहत्तर शत-सहस्र/लाख आवास प्रज्ञप्त हैं।

२ इसी प्रकार—

द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार विद्युत्कुमार, स्तनितकुमार और अग्निकुमार—इन छह देव-युगल के छिहत्तर-छिहत्तर शत-सहस्र/लाख आवास प्रज्ञप्त हैं।

सत्तत्तरिमो समवाओ

१ भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्तत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झावसित्ता महा-रायाभिसेयं संपत्ते।

२. अंगवंसाओ णं सत्तत्तरिं रायाणो मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइया।

३ गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्तत्तरिं देवसहस्सा परिवारा पण्णत्ता।

४. एगमेगे णं मुहुत्ते सत्तत्तरिं लवे लवग्गेणं पण्णत्ते।

सतहत्तरवां समवाय

१ चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत सत-हत्तर शत-सहस्र/लाख पूर्वों तक कुमार-वास में रहने के बाद महा-राजाभिषेक को सम्प्राप्त किया।

२ अंग वंश के सतहत्तर राजाओं ने मुंड होकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

३ गर्दतोय और तुषित—दो देवों का परिवार सतहत्तर हजार देवों का प्रज्ञप्त है।

४ प्रत्येक मुहूर्त्त लव की दृष्टि से सतहत्तर लव का प्रज्ञप्त है।

अट्ठसत्तरिमो समवाओ

१ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणे महाराया अट्ठसत्तरीए सुवण्णकुमारदीवकुमारावाससय-सहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं भट्टित्तं सामित्तं महारायत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ।

२ थेरे णं अकंपिए अट्ठसत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

३ उत्तरायणनियट्टे णं सूरिए पढमाओ मंडलाओ एगूणचत्ता-लीसइमे मंडले अट्ठहत्तरिं एग-सट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवु-ड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवु-ड्ढेत्ता णं चारं चरइ।

४ एवं दक्खिणायणनियट्टेवि।

अठत्तरवां समवाय

१ देवेन्द्र देवराज शक्र के महाराज वैश्रमण सुपर्णकुमार और द्वीपकुमार के अठत्तर शत-सहस्र/लाख आवासो का आधिपत्य, पौरपत्य, भर्तृत्व, स्वामित्व, महाराजत्व तथा आज्ञा, ऐश्वर्य और सेनापतित्व करते हुए, उनका पालन करते हुए विचरण करता है।

२ स्थविर अकपित अठत्तर वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए।

३ उत्तरायण से निवृत सूर्य प्रथम मंडल से उनतालीसवे मंडल मे दिवस-क्षेत्र को एक मुहुर्त्त के इकसठवें अठत्तर भाग ($\frac{७८}{६१}$ मुहूर्त्त) प्रमाण न्यून और रजनी-क्षेत्र को इसी प्रमाण मे अधिक करता हुआ सचरण करता है।

४ इसी प्रकार दक्षिणायन से निवृत्त सूर्य भी।

एगूणासीइमो समवाश्रो

१ वलयामुहस्स णं पायालस्स हेट्ठिल्लाश्रो चरिमंताश्रो इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए हेठिल्ले चरिमंते, एस णं गगूणासीइ जोयणसहस्साइं श्रबाहाए श्रंतरे पण्णत्ते।

२ एवं केउस्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि।

३ छट्ठीए पुढवीए बहुमज्भदेसभायाश्रो छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं एगूणासीतिं जोयणसहस्साइं श्रबाहाए श्रंतरे पण्णत्ते।

४ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बारस्स य बारस्स य एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं श्रबाहाए श्रंतरे पण्णत्ते।

उन्यासिवां समवाय

१ वडवामुख पाताल के अधस्तन चरमान्त से इस रत्नप्रभा पृथ्वी का अधस्तन चरमान्त का अबाधत अन्तर उन्यासी हजार योजन प्रज्ञप्त है।

२ इसी प्रकार केतु, यूप और ईश्वर का भी।

३ छठी पृथ्वी के बहुमध्यदेशभाग से छठे घनोदधि के अधस्तन चरमान्त का अबाधत अन्तर उन्यासी हजार योजन प्रज्ञप्त हैं।

४ जम्बूद्वीप-द्वीप के प्रत्येक द्वार का अबाधत अन्तर उन्यासी हजार योजन से कुछ अधिक प्रज्ञप्त हैं।

असीइइमो समवाओ

१. सेज्जंसे ण अरहा असीइ धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

२. तिविट्ठू ण वासुदेवे असीइ धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

३ अयले ण बलदेवे असीइ धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था।

४. तिविट्ठू ण वासुदेवे असीइ वाससयसहस्साइ महाराया होत्था।

५. आउबहुले ण कडे असीइ जोयणसहस्साइ वाहल्लेण पण्णत्ते।

६ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो असीइ सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

७ जबुद्दीवे ण दीवे असीउत्तर जोयण-सय ओगाहेत्ता सूरिए उत्तर-कट्ठोवगए पढम उदय करेई।

अस्सिवां समवाय

१ अर्हत् श्रेयास ऊँचाई की दृष्टि से अस्सी धनुष ऊँचे थे।

२ वासुदेव त्रिपृष्ठ ऊँचाई की दृष्टि से अस्सी धनुष ऊँचे थे।

३ बलदेव अचल ऊँचाई की दृष्टि से अस्सी धनुष ऊँचे थे।

४ वासुदेव त्रिपृष्ठ ऊँचाई की दृष्टि से अस्सी शत-सहस्र/लाख वर्ष तक महा-राज रहे थे।

५ [रत्नप्रभा का] अप्कायबहुल-काण्ड अस्सी हजार योजन वाहल्य/मोटा प्रज्ञप्त है।

६ देवेन्द्र देवराज ईशान के अस्सी हजार सामानिक प्रज्ञप्त है।

७ जम्बूद्वीप-द्वीप मे एक सौ अस्सी हजार योजन का अवगाहन कर सूर्य उत्तर दिशा को प्राप्त हो, प्रथम मण्डल मे उदय करता है।

एक्कासीइइमो समवाओ

१ नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा एक्कासीइ राइदिएहिं चउहि य पचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आणाए आराहिया यावि भवइ।

२ कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था।

३. विआहपण्णत्तीए एक्कासीतिं महाजुम्मसया पण्णत्ता।

इक्यासिवां समवाय

१ नव-नवमिका भिक्षु-प्रतिमा इक्यासी रात-दिन मे चार सौ पांच भिक्षा [-दत्तियो] से सूत्र के अनुरूप, कल्प के अनुरूप, मार्ग के अनुरूप और तथ्य के अनुरूप, काया से सम्यक् स्पृष्ट, पालित, शोधित, पारित, कीर्तित और आज्ञा से आराधित होती है।

२ अर्हत् कुन्थु के इक्यासी सौ मन-पर्यवज्ञानी थे।

३ व्याख्याप्रज्ञप्ति मे इक्यासी महा-युग्मशत प्रज्ञप्त हैं।

बासीतिइमो समवाओ

१. जबुद्दीवे दीवे बासीय मडलसय ज सूरिए दुक्खुत्तो सकमित्ता ण चार चरइ, त जहा—
निक्खममाणे य पविसमाणे य ।

२ समणे भगव महावीरे बासीए राइदिएहिं वीइक्कतेहिं गब्भाओ गब्भ साहरिए ।

३ महाहिमवतस्स ण वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ चरिमताओ सोगधियस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण बासीइ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

४ एव रुप्पिस्सवि ।

बयासिवां समवाय

१ जम्बूद्वीप-द्वीप मे एक सौ बयासी मण्डल है । सूर्य उनमे दो बार सक्रमण कर सचार करता है । जैसे कि—
निष्क्रमण करता हुआ और प्रवेश करता हुआ ।

२ श्रमण भगवान् महावीर बयासी रात-दिन व्यतीत हो जाने पर [एक] गर्भ से [दूसरे] गर्भ मे सहृत हुए ।

३ महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के ऊपरी चरमान्त से सौगन्धिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधत अन्तर बयासी सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

४ इसी प्रकार रुक्मी का भी ।

तेयासिइइमो समवाओ

१ समणे भगवं महावीरे बासीइ-राइदिएहिं वीइक्कतेहिं तेयासी-इमे राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए।

२. सीयलस्स णं अरहओ तेसीति गणा तेसीति गणहरा होत्था।

३ थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिणिव्वुडे सव्व-दुक्खप्पहीणे।

४ उसभे णं अरहा कोसलिए तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारवास-मज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

५. भरहे णं राया चाउरंतचक्क-वट्टी तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झावसित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी।

तिरासिवां समवाय

१ श्रमण भगवान् महावीर बयासी रात-दिन व्यतीत होने पर तिरासिवें रात-दिन के वर्तने पर [एक] गर्भ से [दूसरे] गर्भ मे सहृत हुए।

२ अर्हत् शीतल के तिरासी गण और तिरासी गणधर थे।

३ स्थविर मंडितपुत्र तिरासी वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए।

४ कौशलिक अर्हत् ऋषभ ने तिरासी शत-सहस्र/लाख पूर्वों तक अगार-वास मध्य रहकर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

५ चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत तिरासी शत-सहस्र/लाख पूर्वों तक अगार-मध्य रहकर जिन, केवली, सर्वज्ञ और सर्वभावदर्शी हुए।

बासीतिइमो समवाओ

१. जंबुद्दीवे दीवे बासीयं मंडलसयं जं सूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ता णं चारं चरइ, तं जहा—
निक्खममाणे य पविसमाणे य।

२. समणे भगवं महावीरे बासीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए।

३. महाहिमवंतस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ चरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते, एस णं बासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४. एवं रुप्पिस्सवि।

बयासिवां समवाय

१ जम्बूद्वीप-द्वीप में एक सौ बयासी मण्डल हैं। सूर्य उनमें दो बार संक्रमण कर संचार करता है। जैसे कि—
निष्क्रमण करता हुआ और प्रवेश करता हुआ।

२ श्रमण भगवान् महावीर बयासी रात-दिन व्यतीत हो जाने पर [एक] गर्भ से [दूसरे] गर्भ में संहृत हुए।

३ महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के ऊपरी चरमान्त से सौगन्धिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधित अन्तर बयासी सौ योजन प्रज्ञप्त है।

४ इसी प्रकार रुक्मी का भी।

तेयासिइइमो समवाश्रो

१ समणे भगव महावीरे बासीइ-राइदिएहिं वीइक्कतेहिं तेयासी-इमे राइदिए वट्टमाणे गब्भाश्रो गब्भ साहरिए ।

२ सीयलस्स ण श्ररहश्रो तेसीति गणा तेसीति गणहरा होत्था ।

३ थेरे ण मडियपुत्ते तेसीइ वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते श्रतगडे परिणिव्वुडे सव्व-दुक्खप्पहीणे ।

४ उसभे ण श्ररहा कोसलिए तेसीइ पुव्वसयसहस्साइ श्रगारवास-मज्झावसित्ता मुडे भवित्ता ण श्रगाराश्रो श्रणगारिश्र पव्वइए ।

५ भरहे ण राया चाउरतचक्क-वट्टी तेसीइ पुव्वसयसहस्साइ श्रगारमज्झावसित्ता जिणे जाए केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी ।

तिरासिवां समवाय

१ श्रमण भगवान् महावीर बयासी रात-दिन व्यतीत होने पर तिरासिवें रात-दिन के वर्तने पर [एक] गर्भ से [दूसरे] गर्भ मे सहृत हुए ।

२ अर्हत् शीतल के तिरासी गण और तिरासी गणधर थे ।

३ स्थविर मडितपुत्र तिरासी वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए ।

४ कौशलिक अर्हत् ऋषभ ने तिरासी शत-सहस्र/लाख पूर्वो तक अगार-वास मध्य रहकर, मुड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

५ चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत तिरासी शत-सहस्र/लाख पूर्वो तक अगार-मध्य रहकर जिन, केवली, सर्वज्ञ और सर्वभावदर्शी हुए ।

चउरासिइइमो समवाओ

१ चउरासीइ निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

२. उसभे ण अरहा कोसलिए चउरासीइ पुव्वसयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३ एव भरहो बाहुबली बभी सुन्दरी ।

४. सेज्जसे ण अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५. तिविट्ठू ण वासुदेवे चउरासीइ वाससयसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववण्णे ।

६ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो चउरासीई सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ।

७ सव्वेवि ण बाहिरया मदरा चउरासीइ-चउरासीइ जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

चौरासिवां समवाय

१ नरकावास चौरासी शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त है ।

२ कौशलिक अर्हत् ऋषभ चौरासी शत-सहस्र/लाख पूर्वो की पूर्ण आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-रहित हुए।

३ इसी प्रकार भरत, बाहुबली, ब्राह्मी और सुन्दरी [हुए] ।

४ अर्हत् श्रेयास चौरासी शत-सहस्र/लाख वर्षो की पूर्ण आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत और सर्व दुःख-रहित हुए ।

५ वासुदेव त्रिपृष्ठ चौरासी शत-सहस्र/लाख वर्षो की पूर्ण आयु पालकर अप्रतिष्ठान नरक मे नैरयिकत्व से उपपन्न हुए ।

६ देवेन्द्र देवराज शक्र के चौरासी हजार सामानिक प्रज्ञप्त हैं ।

७ सभी बाह्य मन्दरपर्वत ऊँचाई की दृष्टि से चौरासी हजार योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

८. सव्वेवि ण अजणगपव्वया चउ-रासीइ-चउरासीइ जोयणसह-स्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

८ समस्त अञ्जनक पर्वत ऊँचाइ की दृष्टि से चौरासी-चौरासी हजार योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

९ हरिवासरम्मयवासियाण जीवाणं धणुपट्ठा चउरासीइ-चउरासीइ जोयणसहस्साइ सोलस जोयणाइ चत्तारि य भागा जोयणस्स परि-क्खेवेण पण्णत्ता ।

९ हरिवर्ष और रम्यकवर्ष की जीवा के धनु पृष्ठ का परिक्षेप (परिधि) चौरासी हजार सोलह योजन और एक योजन के उन्नीस भागो मे से चार भाग प्रमाण ८४०१६$\frac{४}{१९}$ योजन प्रज्ञप्त हैं ।

१० पकबहुलस्स ण कडस्स उवरि-ल्लाओ चरिमताओ हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण चोरासीइं जोयणसयसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ।

१० पकबहुलकाड के उपरितन चरमान्त से अधस्तन चरमान्त का अवाधत अन्तर चौरासी शत-सहस्र/लाख योजन प्रज्ञप्त है ।

११. वियाहपण्णत्तीए ण भगवतीए चउरासीइ पयसहस्सा पदग्गेण पण्णत्ता ।

११ भगवती व्याख्याप्रज्ञप्ति के पद-परिमाण की दृष्टि से चौरासी हजार पद प्रज्ञप्त है ।

१२. चोरासीइ नागकुमारवाससय-सहस्सा पण्णत्ता ।

१२ नागकुमार के आवास चौरासी शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त है ।

१३. चोरासीइ पइण्णगसहस्सा पण्णत्ता ।

१३ प्रकीर्णक चौरासी हजार प्रज्ञप्त हैं ।

१४ चोरासीइ जोणिप्पमुहसय-सहस्सा पण्णत्ता ।

१४ योनि-प्रमुख/योनि-द्वार चौरासी शत-सहस्र/लाख प्रज्ञप्त हैं ।

१५. पुव्वाइयाण सीसपहेलियापज्जव-साणाण सट्ठाणट्ठाणतराण चोरासीए गुणकारे पण्णत्ता ।

१५ पूर्व (सख्यावाची) से लेकर शीर्ष-प्रहेलिका—अन्तिम महासख्या पर्यन्त स्वस्थान और स्थानान्तर चौरासी लाख गुणाकार वाले प्रज्ञप्त हैं ।

पंचासीइइमो समवाओ

१. आयारस्स ण भगवओ सचूलियागस्स पचासीइ उद्देसणकाला पण्णत्ता ।

२ धायइसडस्स ण मदरा पचासीइ जोयणसहस्साइ सव्वग्गेण पण्णत्ता ।

३. रुयए ण मडलियपव्वए पचासीई जोयणसहस्साइ सव्वग्गेण पण्णत्ते ।

४. नदणवणस्स णं हेट्ठिल्लाओ चरिमताओ सोगधियस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस णं पचासीइ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

पचासिवां समवाय

१ चूलिका-सहित भगवद् आचार/आचारांग-सूत्र के पचासी उद्देशन-काल प्रज्ञप्त हैं ।

२ धातकीखड के [दोनो] मेरु पर्वतो का सर्व परिमाण पचासी हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

३ रुचक माडलिक पर्वत का सर्व परिमाण पचासी हजार योजन प्रज्ञप्त है।

४ नन्दनवन के अधस्तन चरमान्त से सौगन्धिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधत अन्तर पचासी सौ योजन का प्रज्ञप्त है ।

छलसीइइमो समवाश्रो

१. सुविहिस्स ण पुप्फदतस्स अरहओ छलसीइ गणा छलसीइ गणहरा होत्था ।

२. सुपासस्स ण अरहओ छलसीइ वाइसया होत्था ।

३. दोच्चाए ण पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण छलसीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

छियासिवां समवाय

१ अर्हत् सुविधि पुष्पदन्त के छियासी गण और छियासी गणधर थे ।

२ अर्हत् सुपार्श्व के छियासी सौ वादी थे ।

३ दूसरी पृथ्वी के बहुमध्यदेशभाग से दूसरे घनोदधि के अधस्तन चरमान्त का अवाधत अन्तर छियासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

सत्तासीइइमो समवाओ

१. मदरस्स ण पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण सत्तासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

२. मदरस्स ण पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमताओ दओभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरिमते, एस ण सत्तासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

३ मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ सखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण सत्तासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

४ मदरस्स ण पव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरिमते एस ण, सत्तासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

सत्तासिवां समवाय

१ मन्दर पर्वत के पूर्वी [illegible] गोस्तूप आवास-पर्वत के [illegible] चरमान्त का [illegible] हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

२ मन्दर पर्वत के दक्षिणी [illegible] दकावभास आवास-पर्वत के [illegible] चरमान्त का अबाधित [illegible] हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

३ मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से शख आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अबाधित अन्तर सत्तासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

४ मन्दर पर्वत के उत्तरी चरमान्त से दकसीम आवास-पर्वत के दक्षिणी चरमान्त का अबाधित अन्तर सत्तासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

५. छण्ह कम्मपगडीण आइमउवरिल्लवज्जाण सत्तासीइ उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।

५ आदि [ज्ञानावरण] और अन्तिम [अन्तराय] की कर्म-प्रकृतियो को छोडकर शेष छह कर्म-प्रकृतियो की सत्तासी उत्तर-प्रकृतियाँ प्रज्ञप्त है ।

६. महाहिमवतकूडस्स ण उवरिल्लाओ चरिमताओ सोगधियस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण सत्तासीइ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

६ महाहिमवत कूट के उपरितन चरमान्त मे सौगधिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधत अन्तर सत्तासी सौ योजन का प्रज्ञप्त है ।

७. एव रुप्पिकूडस्सवि ।

७ इसी प्रकार रुक्मीकूट का भी ।

अट्ठासीइइमो समवाओ

१ एगमेगस्स ण चदिमसूरियस्स अट्ठासीइ-अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो पण्णत्तो ।

२. दिट्ठिवायस्स ण अट्ठासीइ सुत्ताइ पण्णत्ताइ, त जहा—

उज्जुसुय परिणयापरिणय बहुभगिय विजयचरिय अणतर परपर सामाण सजूह सभिण्ण आहच्चाय सोवत्थिय घट नदावत्त बहुल पुट्ठापुट्ठ वियावत्त एवभूय दुयावत्त वत्तमाणप्पय समभिरूढ सव्वओभद्द पण्णास दुप्पडिग्गह ।

इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ छिण्णच्छेयनइयाणि ससमयसुत्त परिवाडीए ।

इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ अच्छिण्णच्छेयनइयाणि आजीवियसुत्तपरिवाडीए ।

इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ तिगनइयाणि तेरासियसुत्त परिवाडीए ।

इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ चउक्कनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीए ।

अठासिवां समवाय

१ [illegible]

२ [illegible]

[illegible]

ये बाईस सूत्र [illegible] के अनुसार छिन्नछेद-नयिक होते है ।

ये बाईस सूत्र आजीवक-परिपाटी के अनुसार अछिन्नछेद-नयिक होते है ।

ये बाईस सूत्र त्रैराशिक-परिपाटी के अनुसार त्रिक-नयिक होते है ।

ये बाईस सूत्र स्व-समय-परिपाटी के अनुसार चतुष्क-नयिक होते है ।

ासी भाग
म-क्षेत्र का
नी-क्षेत्र को
रता है ।

गति करते
र्य चवा-
ने पर
ो भाग
-क्षेत्र का
-क्षेत्र को
रता है ।

एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीइ सुत्ताइ भवति त्ति मक्खाय।

इस प्रकार इन सबका योग करने पर अठासी सूत्र होते है।

३ मदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

३ मन्दर पर्वत के पूर्वीय चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वीय चरमान्त का अबाधत अन्तर अठासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

४ मदरस्स ण पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरिमताओ दओभासस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

४ मन्दर पर्वत के दक्षिणी चरमान्त से दकावभास आवास-पर्वत के दक्षिणी चरमान्त का अबाधत अन्तर अठासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

५. मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ सखस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

५ मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से शख आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अबाधत अन्तर अठासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

६. मदरस्स ण पव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरिमताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठासीइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते।

६ मन्दर पर्वत के उत्तरी चरमान्त से दकसीम आवास-पर्वत के उत्तरी चरमान्त का अबाधत अन्तर अठासी हजार योजन का प्रज्ञप्त है।

७ वाहिराओ ण उत्तराओ कट्ठाओ सूरिए पढम छम्मास अयमीणे चोयालीसइममडलगते अट्ठासीइ

७ वाह्य उत्तर से दक्षिण की ओर गति करते हुए प्रथम छह माह मे सूर्य चवालीसवे मण्डल मे पहुचने पर

इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवस-खेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चार चरइ।

मुहुर्त्त के इकसट्ठवें अठासी भाग (८८/६१ मुहूर्त्त) प्रमाण दिवस-क्षेत्र का परिह्रास कर एव रजनी-क्षेत्र को अभिवर्धित कर सचरण करता है।

८ दक्खिणकट्ठाओ ण सूरिए दोच्च छम्मास अयमीणे चोयालीस-तिममडलगते अट्ठासीई इगसट्ठि-भागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण सूरिए चार चरइ।

८ दक्षिण से उत्तर की ओर गति करते हुए दूसरे छह माह मे सूर्य चवालीसवें मण्डल मे पहुचने पर मुहुर्त्त के इकसट्ठवें अठासी भाग (८८/६१ मुहूर्त्त) प्रमाण रजनी-क्षेत्र का परिह्रास कर एव दिवस-क्षेत्र को अभिवर्धित कर सचरण करता है।

एगूणणउइइमो समवाओ

१. उसभे ण अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए सुसम-दुसमाए पच्छिमे भागे एगूण-णउइए अद्धमासेहि सेसेहिं काल-गए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२. समणे भगव महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थीए सुसम-दुसमाए पच्छिमे भागे एगूणणउइए अद्धमासेहि सेसहिं कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३ हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्क-वट्टी एगूणणउइ वाससयाइ महा-राया होत्था ।

४. सतिस्स ण अरहओ एगूणणउई अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जासपया होत्था ।

नवासिवां समवाय

१ कौशलिक अर्हत् ऋषभ इस अव-सर्पिणी के तीसरे सुषम-दुषमा आरे के पश्चिम भाग मे, नवासी अर्द्ध-मास शेष रहने पर कालगत होकर मुक्त हुए ।

२ श्रमण भगवान् महावीर इस अव-सर्पिणी के चौथे—सुषमा-दुषमा आरे के पश्चिम-भाग मे, नवासी अर्द्धमास शेष रहने पर कालगत होकर सर्व दु ख-मुक्त हुए ।

३ चातुरन्त चक्रवर्ती राजा हरिषेण नवासी सौ वर्षों तक महाराज रहे थे ।

४ अर्हत् शान्ति की नवासी हजार आर्याओ की उत्कृष्ट आर्या सम्पदा थी ।

णउइइमो समवाओ

१ सीयले ण अरहा नउइ धणूइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

२. अजियस्स ण अरहओ नउइ धणूइ गणा नउइ गणहरा होत्था ।

३ सतिस्स ण अरहओ नउइ गणा नउइ गणहरा होत्था ।

४. सयभुस्स ण वासुदेवस्स णउइवासाइ विजए होत्था ।

५ सव्वेसि ण वट्टवेयड्ढपव्वयाण उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगधियकडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण नउइ जोयणसयाइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ।

नब्बेवां समवाय

१ अर्हत् शीतल ऊँचाई की दृष्टि [illegible] नब्बे धनुष ऊँचे थे ।

२ अर्हत् अजित के नब्बे गण और नब्बे गणधर थे ।

३ अर्हत् शान्ति के नब्बे गण और नब्बे गणधर थे ।

४ वासुदेव स्वयम्भू नब्बे वर्षों तक विजयशील रहे ।

५ समस्त वृत्तवैताढ्य पर्वतो के उपरितन शिखरतल से सौगधिक काण्ड के अधस्तन चरमान्त का अबाधित अन्तर नौ हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

एगूणणउइइमो समवाओ

नवासिवां

१. उसभे ण अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए सुसम-दुसमाए पच्छिमे भागे एगूण-णउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं काल-गए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

२. समणे भगव महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थीए सुसम-दुसमाए पच्छिमे भागे एगूणणउइए अद्धमासेहिं सेसहिं कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

३ हरिसेणे ण राया चाउरंतचक्क-वट्टी एगूणणउइ वाससयाइ महा-राया होत्था ।

४. सतिस्स ण अरहओ एगूणणउई अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जासपया होत्था ।

१ कौशलिक
सर्पिणी के
के पश्चिम
मास शेष
मुक्त हुए

२ श्रमण भ
सर्पिणी
आरे के
अर्द्धमास
होकर म

३ चातुर
नवार्स
रहे थे

४ अर्हत
आर
थी

बाणउइइमो समवाओ

१ बाणउइ पडिमाओ पण्णत्ताओ ।

२ थेरे ण इदभूई बाणउइ वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्व-दुक्खप्पहीणे ।

३ मदरस्स ण पव्वयस्स बहुमज्झ-देसभागाओ गोथुभस्स आवास-पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरि-मते, एस ण बाणउइ जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

४. एव चउण्हपि आवासपव्वयाण ।

बानवेवां समवाय

१ प्रतिमाएँ बानवें प्रज्ञप्त है ।

२ स्थविर इन्द्रभूति बानवे वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

३ मन्दर पर्वत के बहुमध्यदेशभाग से गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अबाधत अन्तर बानवें हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

४ इसी प्रकार चार आवास-पर्वतो का भी [प्रज्ञप्त है ।]

एक्काणउइइमो समवाओ

१. एक्काणउई परवेयावच्चकम्म-पडिमाओ पण्णत्ताओ।

२. कालोए णं समुद्दे एक्काणउई जोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

३. कुंथुस्स णं अरहओ एक्काणउई आहोहियसया होत्था।

४. आउय-गोय-वज्जाणं छण्हं कम्म-पगडीणं एक्काणउई उत्तर-पगडीओ पण्णत्ताओ।

इक्यानबेवां समवाय

१ पर-वैयावृत्यकर्म की प्रतिमाएँ इक्यानवे प्रज्ञप्त है।

२ कालोद समुद्र का परिक्षेप इक्यानवे शत-सहस्र/लाख योजन से कुछ अधिक प्रज्ञप्त है।

३ अर्हत् कुन्थु के इक्यानवे सौ आधो-वधिक ज्ञानी थे।

४ आयुष्य और गोत्रकर्म को छोडकर शेष छह कर्म-प्रकृतियो की उत्तर-प्रकृतियां इक्यानवे प्रज्ञप्त है।

बाणउइइमो समवाओ

बानवेवां समवाय

१ बाणउइ पडिमाओ पण्णत्ताओ ।

१ प्रतिमाएँ बानवें प्रज्ञप्त है ।

२ थेरे ण इदभूई बाणउइ वासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्व-दुक्खप्पहीणे ।

२ स्थविर इन्द्रभूति बानवें वर्ष की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

३ मदरस्स ण पव्वयस्स बहुमज्झ-देसभागाओ गोथुभस्स आवास-पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरि-मते, एस ण बाणउइ जोयण-सहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

३ मन्दर पर्वत के बहुमध्यदेशभाग मे गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अवाधत अन्तर बानवें हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

४. एव चउण्हपि आवासपव्वयाण ।

४ इसी प्रकार चार आवास-पर्वतों का भी [प्रज्ञप्त है ।]

तेणउइइमो समवाय

१. चदप्पहस्स ण अरहओ तेणउइ गणा तेणउइ गणहरा होत्था ।

२. सतिस्स ण अरहओ तेणउइ चउद्दसपुव्विसया होत्था ।

३. तेणउइमडलगते ण सूरिए अत्ति-वट्टमाणे निवट्टमाणे वा सम अहोरत्तं विसम करेइ ।

तिरानवेवां समवाय

१ अर्हत् चन्द्रप्रभ के तिरानवे गण और तिरानवे गणधर थे ।

२ अर्हत् शाति के तिरानवे सौ चौदह पूर्वी थे ।

३ तिरानवे मण्डलगत सूर्य अतिवर्तन एव निवर्तन करते हुए सम अहोरात्र को विषम कर देता है ।

चउणउइइमो समवाओ

१ निसहनीलवतियाओ ण जीवाओ चउणउइ-चउणउइ जोयण-सहस्साइ एक्क छप्पण्ण जोयण-सय दोण्णि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ।

२ अजियस्स ण अरहओ चउणउइ ओहिनाणिसया होत्था।

चौरानवेवां समवाय

१. निषध और नीलवान् पर्वत की प्रत्येक जीवा का आयाम चौरानवे हजार एक सौ छप्पन योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों में से दो भाग प्रमाण (९४१५६ $\frac{२}{१९}$ योजन) प्रज्ञप्त है।

२ अर्हत् अजित के चौरानवे सौ अवधिज्ञानी थे।

पंचाणउइइमो समवाओ

१. सुपासस्स ण अरहओ पंचाणउइ गणा पचाणउइ गणहरा होत्था ।

२ जबुद्दीवस्स ण दीवस्स चरिमताओ चउद्दिसि लवणसमुद्द पचाणउइ पचाणउइ जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता चत्तारि महापायाला पण्णत्ता, त जहा—
वलयामुहे केउए जूवते ईसरे ।

३ लवणसमुद्दस्स उभओ पासपि पचाणउइ-पचाणउइ पदेसाओ उव्वेहुस्सेहपरिहाणीए पण्णत्ताओ।

४ कुथू ण अरहा पचाणउइ वाससहस्साइ परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

५ थेरे ण मोरियपुत्ते पचाणउइवासाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे ।

पंचानवेवां समवाय

१ अर्हत् सुपार्श्व के पचानवे गण और पचानवे गणधर थे ।

२ जम्बूद्वीप-द्वीप के चरमान्त मे चारो दिशाओ मे लवण-समुद्र मे पचानवे-पचानवे हजार योजन अवगाहन करने पर चार महापाताल प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
वडवामुख, केतुक, यूपक और ईश्वर ।

३ लवण-समुद्र के उभय पार्श्व पचानवे-पचानवे प्रदेशो पर उद्वेध/गहराई व उत्सेध/ऊँचाई की परिहानि प्रज्ञप्त है ।

४ अर्हत् कुन्थु पचानवे हजार वर्षों की पूर्ण आयु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

५ स्थविर मौर्यपुत्र पचानवे हजार वर्षों की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

छण्णउइइमो समवाओ

१ एगमेगस्स ण रण्णो चाउरत-चक्कवट्टिस्स छण्णउइ-छण्णउइ गामकोडीओ होत्या ।

२ वाउकुमाराण छण्णउइ भवणा वाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

३. ववहारिए ण दडे छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।

४. ववहारिए ण धणू छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।

५ ववहारिया ण नालिया छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।

६ ववहारिए ण जुगे छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।

७ ववहारिए ण अक्खे छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।

८ ववहारिए ण मुसले छण्णउइ अगुलाइ अगुलपमाणेण ।

९. अब्भतराओ आइमुहुत्ते छण्णउइ अगुलछाए पण्णत्ते ।

छियानवेवां समवाय

१ प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती [illegible] छियानवे [illegible] करोड़ [illegible] ।

२ वायुकुमार [illegible] भवनावास [illegible] हैं ।

३ व्यावहारिक [illegible], [illegible] छियानवे अगुल [illegible] है ।

४ व्यावहारिक धनुष, [illegible] छियानवे अगुल [illegible] है ।

५ व्यावहारिक नालिका, [illegible] मे छियानवे अगुल प्रज्ञप्त है ।

६ व्यावहारिक युग, अगुल-प्रमाण से छियानवे अगुल प्रज्ञप्त है ।

७ व्यावहारिक अक्ष, अगुल-प्रमाण से छियानवे अगुल प्रज्ञप्त है ।

८ व्यावहारिक मुसल, अगुल-प्रमाण से छियानवे अगुल प्रज्ञप्त है ।

९ आभ्यन्तर मण्डल मे प्रथम मुहूर्त छियानवे अगुल की छाया वाला प्रज्ञप्त है ।

सत्ताणउइइमो समवाओ

सत्तानवेवां समवाय

१. मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस णं सत्ताणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

१ मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अबाधित अन्तर सत्तानवे हजार योजन प्रज्ञप्त है।

२. एवं चउद्दिसिंपि।

२ इसी प्रकार चारों दिशाओं में भी [ज्ञातव्य/प्रज्ञप्त है।]

३. अट्ठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

३ आठों कर्म-प्रकृतियों की उत्तर-प्रकृतियां सत्तानवे प्रज्ञप्त हैं।

४. हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइं वाससयाइं अगारमज्झावसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

४ चातुरन्त चक्रवर्ती ने राजा हरिषेण कुछ कम सत्तानवे सौ वर्षों तक अगार-मध्य रहकर, मुंड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली।

अट्ठाणउइइमो समवाओ

१ नदणवणस्स ण उवरिल्लाओ चरिमताओ पडयवणस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ।

२ मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

३ एव चउदिसिपि ।

४ दाहिणभरहद्धस्स ण धणुपट्ठे अट्ठाणउइ जोयणसयाइ किंचूणाइ आयामेण पण्णत्ते ।

५ उत्तराओ ण कट्ठाओ सूरिए पढम छम्मास अयमीणे एगूणपचासइसमडलगए अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण सूरिए चार चरइ ।

अठानवेवां समवाय

१ नदनवन के उपरितन चरमान्त से पण्डकवन के अधस्तन चरमान्त का अबाधत अन्तर अठानवे हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

२ मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अबाधत अन्तर अठानवे हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

३ इसी प्रकार चारो दिशाओ मे भी [ज्ञातव्य/प्रज्ञप्त] है ।

४ दक्षिण भरत का धनु पृष्ठ कुछ न्यून अठानवे सौ योजन आयाम का—लम्बा प्रज्ञप्त है ।

५ सूर्य उत्तर दिशा मे प्रथम छह मास तक उनचासवें मण्डल मे दिवस-क्षेत्र का मुहूर्त्त के इकसठवे अट्ठावनवें भाग ($\frac{98}{61}$ मुहूर्त्त) प्रमाण ह्रास और रजनी-क्षेत्र का इसी प्रमाण में अभिवर्धन करते हुए सचरण करता है ।

सत्ताणउइइमो समवाओ

सत्तानवेवां समवाय

१. मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ गोथुभस्स ण आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते, एस ण सत्ताणउइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

१ मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पश्चिमी चरमान्त का अबाधत अन्तर सत्तानवे हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

२. एव चउद्दिसिपि ।

२ इसी प्रकार चारो दिशाओ मे भी [ज्ञातव्य/प्रज्ञप्त है ।]

३. अट्ठण्ह कम्मपगडीण सत्ताणउइ उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ ।

३ आठो कर्म-प्रकृतियो की उत्तर-प्रकृतिया सत्तानवे प्रज्ञप्त है ।

४. हरिसेणे ण राया चाउरत-चक्कवट्टी देसूणाइ सत्ताणउइ वास-सयाइ अगारमज्झावसित्ता मुडे भवित्ता ण अगाराओ अणगारिअ पव्वइए ।

४ चातुरन्त चक्रवर्ती ने राजा हरिषेण कुछ कम सत्तानवे सौ वर्षों तक अगार-मध्य रहकर, मुड होकर, अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

अट्ठाणउइइमो समवाओ

१ नदणवणस्स ण उवरिल्लाओ चरिमताओ पडयवणस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

२ मदरस्स ण पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

३ एव चउदिसिपि ।

४ दाहिणभरहद्धस्स ण धणुपट्ठे अट्ठाणउइ जोयणसयाइ किचूणाइ आयामेण पण्णत्ते ।

५. उत्तराओ ण कट्ठाओ सूरिए पढम छम्मास अयमीणे एगूणपचासइसमडलगए अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता ण सूरिए चार चरइ ।

अठानवेवां समवाय

१ नदनवन के उपरितन चरमान्त मे पण्डकवन के अधस्तन चरमान्त का अवाधत अन्तर अठानवे हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

२ मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गोस्तूप आवास-पर्वत के पूर्वी चरमान्त का अवाधत अन्तर अठानवे हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

३ इसी प्रकार चारो दिशाओ मे भी [ज्ञातव्य/प्रज्ञप्त] है ।

४ दक्षिण भरत का धनु पृष्ठ कुछ न्यून अठानवे सौ योजन आयाम का—लम्बा प्रज्ञप्त है ।

५ सूर्य उत्तर दिशा से प्रथम छह मास तक उनचासवे मण्डल मे दिवस-क्षेत्र का मुहूर्त्त के इकसठवें अट्ठावनवे भाग ($\frac{98}{61}$ मुहूर्त्त) प्रमाण ह्रास और रजनी-क्षेत्र का इसी प्रमाण में अभिवर्धन करते हुए सचरण करता है ।

६. दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमीणे एगूणपण्णासइममंडलगए अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ ।

६ सूर्य दक्षिण दिशा से दूसरे छह मास तक उनचासवे मण्डल मे रजनी-क्षेत्र का मुहूर्त्त के इकसठवे अट्ठानवे भाग ($\frac{९८}{६१}$ मुहूर्त्त) प्रमाण ह्रास और दिवस-क्षेत्र का इसी प्रमाण मे अभिवर्धन करते हुए सचरण करता है ।

७. रेवईपढमजेट्ठपज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइ ताराओ तारग्गेणं पण्णत्ताओ ।

७ रेवती नक्षत्र से ज्येष्ठा नक्षत्र तक के उन्नीस नक्षत्रो के, तारा-प्रमाण से, अठानवे तारे प्रज्ञप्त है ।

णवणउइइमो समवाओ

निन्यानवेवां समवाय

१ मदरे ण पव्वए णवणउइ जोयणसहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ते ।

१ मन्दर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से निन्यानवे हजार योजन ऊँचा प्रज्ञप्त है ।

२ नदणवणस्स ण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमते, एस ण णवणउइ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

२ नन्दनवन के पूर्वी चरमान्त से पश्चिमी चरमान्त का अबाधत अन्तर निन्यानवे सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

३. नदणवणस्स ण दक्खिणिल्लाओ चरिमताओ उत्तरिल्ले चरिमते, एस ण णवणउइ जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

३ नन्दनवन के दक्षिणी चरमान्त से उत्तरी चरमान्त का अबाधत अन्तर निन्यानवे सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

४ पढमे सूरियमडले णवणउइ जोयणसहस्साइ साइरेगाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।

४ प्रथम सूर्य-मण्डल निन्यानवे हजार योजन से कुछ अधिक आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

५. दोच्चे सूरियमंडले णवणउइ जोयणसहस्साइ साहियाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।

५ दूसरा सूर्य-मण्डल निन्यानवे हजार योजन से कुछ अधिक आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

६ तइए सूरियमडले णवणउइ जोयणसहस्साइ साहियाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ते ।

६ तीसरा सूर्य-मण्डल निन्यानवे हजार योजन से कुछ अधिक आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

७ सव्वेवि रण चुल्लहिमवंतसिहरी-वासहरपव्वया एगमेग जोयण-सय उड्ढ उच्चत्तेणं, एगमेग गाउयसय उव्वेहेण पण्णत्ता ।

७ सभी क्षुल्लहिमवत और शिखरी वर्षधर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से एक-एक सौ योजन ऊचे और एक-एक सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त है ।

८. सव्वेवि रण कंचरणगपव्वया एग-मेग जोयणसय उड्ढ उच्चत्तेण, एगमेग गायउसय उव्वेहेरण एगमेग जोयणसयं मूले विक्ख-भेण पण्णत्ता ।

८ समस्त काचनक पर्वत सौ-सौ योजन ऊँचे, सौ-सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे और सौ-सौ योजन मूल मे विष्कम्भक/चौडे प्रज्ञप्त है ।

सतोत्तर-समवाश्रो

१ चदप्पभे ण अरहा दिवड्ढ धणुसय उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

२ आरणे कप्पे दिवड्ढ विमाणावाससय पण्णत्ते ।

३ एव अच्चुएवि ।

४. सुपासे ण अरहा दो धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

५ सव्वेवि ण महाहिमवतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दो दो गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।

६ जवुद्दीवे ण दीवे दो कचणपव्वयसया पण्णत्ता ।

७ पउमप्पभे ण अरहा अड्ढाइज्जाइ धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

८ असुरकुमाराण देवाण पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

९ सुमई ण अरहा तिण्णि धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

शतोत्तर-समवाय

१ अर्हत् चन्द्रप्रभ ऊँचाई की दृष्टि से डेढ सौ धनुष ऊँचे थे ।

२ आरण कल्प मे डेढ सौ विमानावास प्रज्ञप्त हैं ।

३ इसी प्रकार अच्युत कल्प मे भी ।

४ अर्हत् सुपार्श्व ऊँचाई की दृष्टि से दो सौ धनुप ऊचे थे ।

५ सर्व महाहिमवत और रुक्मी वर्षधर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से दो-दो सौ योजन ऊचे और दो-दो सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त हैं ।

६ जम्बूद्वीप द्वीप मे दो सौ कचन पर्वत प्रज्ञप्त हैं ।

७ अर्हत् पद्मप्रभ ऊँचाई की दृष्टि मे ढाई सौ धनुप ऊचे थे ।

८ असुरकुमार देवो के प्रासादावतसक ऊँचाई की दृष्टि से ढाई सौ योजन ऊचे प्रज्ञप्त हैं ।

९ अर्हत् सुमति ऊँचाई की दृष्टि मे तीन सौ धनुप ऊचे थे ।

१०. अरिट्ठनेमी ण अरहा तिण्णि वाससयाइ कुमारवास मज्झावसित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिअ पव्वइए ।

१० अर्हत् अरिष्टनेमि ने तीन सौ वर्षों तक कुमारवास मध्य रहकर, मुड होकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

११ वेमाणियाण देवाण विमाणपागारा तिण्णि तिण्णि जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेग पण्णत्ता ।

११ वैमानिक देवो के विमानो के प्राकार ऊँचाई की दृष्टि से तीन-तीन सौ योजन ऊचे प्रज्ञप्त है ।

१२ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिण्णि सयाणि चोद्दसपुव्वीण होत्था ।

१२ श्रमण भगवान् महावीर के तीन सौ चौदहपूर्वी थे ।

१३ पचधणुसइयस्स ण अतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णि धणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पण्णत्ता ।

१३ पाच सौ धनुष के अन्तिम शरीरी, सिद्धिगत जीवो के जीवप्रदेशो की अवगाहना तीन सौ धनुष से कुछ अधिक प्रज्ञप्त है ।

१४ पासस्स ण अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धट्ठसयाइ चोद्दसपुव्वीण सपया होत्था ।

१४ पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्व के साढे तीन सौ चौदहपूर्वी साधुओ की सम्पदा थी ।

१५ अभिनदणे ण अरहा अद्धट्ठाइ धणुसयाइं उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

१५ अर्हत् अभिनन्दन ऊँचाई की दृष्टि से साढे तीन सौ धनुष ऊँचे थे ।

१६ सभवे ण अरहा चत्तारि धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

१६ अर्हत् सभव ऊँचाई की दृष्टि से चार सौ धनुष ऊचे थे ।

१७ सव्वेवि ण णिसढ-नीलवता वासहरपव्वया चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, चत्तारि-चत्तारि गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।

१७ सभी निषध और नीलवान् वर्षधर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से चार सौ योजन ऊचे और चार-चार सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त है ।

१८ सव्वेवि ण वक्खारपव्वया णिसढनीलवतवासहरपव्वयतेण चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, चत्तारि-चत्तारि गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।

१८ समस्त वक्षस्कार पर्वत निपध और नीलवान् वर्षवर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से चार-चार सौ योजन ऊँचे तथा चार-चार सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त हैं ।

१६ आणय-पाणएसु—दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाणसया पण्णत्ता ।

१६ आनत और प्राणत—इन दो कल्पो मे चार सौ विमान प्रज्ञप्त हैं ।

२० समणस्स ण भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईण सदेवमणयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाइसपया होत्या ।

२० श्रमण भगवान् महावीर के देव, मनुष्य और असुरलोक मे होने वाले वाद मे अपराजित चार सौ वादियो की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा थी ।

२१ अजिते ण अरहा अद्धपचमाइ धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्या ।

२१ अर्हत् अजित ऊँचाई की दृष्टि से साढ़े चार सौ धनुष ऊँचे थे ।

२२ सगरे ण राया चाउरतचक्कवट्टी अद्धपचमाइ धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

२२ चातुरन्त चक्रवर्ती राजा सगर ऊँचाई की दृष्टि से साढे चार सौ धनुप ऊँचे थे ।

२३ सव्वेवि ण वक्खारपव्वया सीयासीतोयाओ महानईओ मदर वा पव्वय पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, पच-पच गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।

२३ शीता और शीतोदा महानदियो के समी वक्षस्कार और मन्दर पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से पाच-पाच सौ योजन ऊँचे तथा पाच-पाच सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त हैं ।

२४ सव्वेवि ण वासहरकूडा पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, मूले पच-पच जोयणसयाइ विक्खम्भेण पण्णत्ता ।

२४ समस्त वर्पधर-कूट ऊँचाई की दृष्टि से पाच-पाच सौ योजन ऊँचे तथा मूल मे पाच-पाच सौ योजन विष्कम्भवाले/चौडे प्रज्ञप्त हैं ।

२५. उसभे ण अरहा कोसलिए पच धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

२५ कौशलिक अर्हत् ऋषभ ऊँचाई की दृष्टि से पाच सौ धनुष ऊँचे थे ।

२६. भरहे ण राया चाउरतचक्कवट्टी पच धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

२६ चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत ऊँचाई की दृष्टि से पाच सौ धनुष ऊँचे थे ।

२७. सोमणस-गधमायण-विज्जुप्पह-मालवता ण वक्खारपव्वया ण मदरपव्वयतेण पच-पच जोयण-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, पच-पच गाउयसयाइ उव्वेहेण पण्णत्ता ।

२७ सौमनस, गधमादन, विद्युत्प्रभ और माल्यवत् वक्षस्कार पर्वत मन्दर पर्वत के समीप ऊँचाई की दृष्टि से पाच-पाच सौ योजन ऊँचे तथा पाच-पाच सौ गाउ उद्वेधवाले/गहरे प्रज्ञप्त है ।

२८. सव्वेवि ण वक्खारपव्वयकूडा हरि-हरिस्सहकूडवज्जा पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, मूले पच-पच जोयणसयाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ता ।

२८ हरि और हरिस्सह कूटो को छोडकर सभी वक्षस्कार-पर्वत-कूट ऊँचाई की दृष्टि से पाच-पाच सौ योजन ऊँचे तथा मूल मे पाच-पाच सौ योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

२९ सव्वेवि ण नदणकूडा बलकूडवज्जा पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, मूले पच-पच जोयणसयाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ता ।

२९ बलकूट को छोडकर सभी नन्दनवन-कूट ऊँचाई की दृष्टि से पाच-पाच सौ योजन ऊँचे तथा मूल मे पाच-पाच सौ योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त हैं ।

३०. सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पच-पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

३० सौधर्म और ईशान कल्पो मे विमान ऊँचाई की दृष्टि से पाच-पाच सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त है ।

३१. सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छ-छ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

३१ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पो मे विमान ऊँचाई की दृष्टि से छह सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त है ।

३२ चुल्लहिमवतकूडस्स ण उवार-ल्लाओ चरिमताओ चुल्लहिम-वतस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले, एस ण छ जोयण-सयाइ अवाहाए अतरे पण्णत्ते ।

३२ क्षुल्लहिमवत्कूट के उपरितन चर-मान्त से क्षुल्लहिमवत् वर्षधर पर्वत के समभूतल का अवाधत अन्तर छह सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

३३ एव सिहरीकूडस्सवि ।

३३ इसी प्रकार शिखरीकूट का भी ।

३४ पासस्स ण अरहओ छ सया वाईण सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजिआण उक्को-सिया वाइसपया होत्था ।

३४ अर्हत् पार्श्व के देव, मनुष्य और असुरलोक मे होने वाले वाद मे अपराजित छह सौ वादियो की उत्कृष्ट वादी-सम्पदा थी ।

३५ अभिचदे ण कुलगरे छ धणु-सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

३५ कुलकर अभिचन्द्र ऊँचाई की दृष्टि से छह सौ धनुष ऊँचे थे ।

३६ वासुपुज्जे ण अरहा छहि पुरिस-सएहि सद्धि मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ।

३६ अर्हत् वासुपूज्य ने छह सौ पुरुषो के साथ मुड होकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ली ।

३७ बभ-लतएसु कप्पेसु विमाणा सत्त-सत्त जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

३७ ब्रह्म और लान्तक कल्पो मे विमान ऊँचाई की दृष्टि से सात-सात सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त है ।

३८ समणस्स ण भगवओ महावीर-स्स सत्त जिणसया होत्था ।

३८ श्रमण भगवान् महावीर के सात सौ केवली थे ।

३९ समणस्स भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया होत्था ।

३९ श्रमण भगवान् महावीर के सात सौ साधु वैक्रिय [लब्धिसम्पन्न] थे ।

४० अरिट्ठनेमी ण अरहा सत्त वास-सयाइ देसूणाइ केवलपरियाग पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परिणिव्वुडे सव्वदुक्ख-प्पहीणे ।

४० अर्हत् अरिष्टनेमि सात सौ से कुछ न्यून वर्षो तक केवल-पर्याय पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परि-निर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

४१. महाहिमवतकूडस्स ण उवरि-ल्लाओ चरिमताओ महाहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले, एस ण सत्त जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

४१ महाहिमवत् कूट के उपरितन चरमान्त मे महाहिमवत् वर्षधर पर्वत के समभूतल का अबाधत अन्तर सात सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

४२. एव रुप्पिकूडस्सवि ।

४२ इसी प्रकार रुक्मीकूट का भी ।

४३. महासुक्क - सहस्सारेसु — दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठ-अट्ठ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

४३ महाशुक्र और सहस्रार—इन दो कल्पो मे विमान ऊँचाई की दृष्टि से आठ-आठ सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त है ।

४४. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए पढमे कडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमतर - भोमेज्ज - विहारा पण्णत्ता ।

४४ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड मे आठ सौ योजन तक वानव्यन्तर देवो के भौमेय विहार प्रज्ञप्त हैं ।

४५. समणस्स ण भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाण देवाण गइकल्लाणाण ठिइकल्लाणाण आगमेसिभद्दाण उक्कोसिया अणुत्तरोववाइसपया होत्था ।

४५ श्रमण भगवान् महावीर के अनुत्तरोपपातिक देवो मे कल्याणकारी गति करने वाले, कल्याणकारी स्थिति वाले, भविष्य मे मोक्ष प्राप्त करने वाले आठ सौ साधुओ की उत्कृष्ट अनुत्तरोपपातिक सम्पदा थी ।

४६ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए वहुसमरणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठहि जोयणसएहि सूरिए चार चरति ।

४६ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के वहुसमरमणीय भूमि-भाग से आठ सौ योजन पर सूर्य सचार करता है ।

४७ अरहओ ण अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सयाइ वाईण सदेवमणुयासुरम्मि लोगम्मि वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाइसपया होत्था ।

४७ अर्हत् अरिष्टनेमि के देव, मनुष्य और असुरलोक मे होने वाले वाद मे अपराजित आठ सौ साधुओ की उत्कृष्ट वादी-सम्पदा थी ।

४८ आणय-पाणय-आरणच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव-नव जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

४८ आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्पो मे विमान ऊँचाई की दृष्टि से नौ-नौ सौ योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

४६ निसहकूडस्स ण उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले, एस ण नव जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

४६ निषधकूट के उपरितन चरमान्त से निषध वर्षधर पर्वत के सम-धरणीतल का अबाधत अन्तर नौ सौ योजन का प्रज्ञप्त है ।

५०. एव नीलवतकूडस्सवि ।

५० इसी प्रकार नीलवत्कूट का भी ।

५१ विमलवाहणे ण कुलगरे ण नव धणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण होत्था ।

५१ कुलकर विमलवाहन ऊँचाई की दृष्टि से नौ सौ धनुष ऊँचे थे ।

५२ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं जोयणसएहिं सव्वुपरिमे ताराख्वे चार चरइ ।

५२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसमरमणीय भूमिभाग से नौ सौ योजन पर सबसे ऊपर के तारे सचरण करते हैं ।

५३ निसढस्स ण वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए पढमस्स कडस्स बहुमज्झदेसभागे, एस ण नव जोयणसयाइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

५३ निषध वर्षधर पर्वत के उपरितन शिखरतल से इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड मे बहुमध्यदेशभाग का अबाधत अन्तर नौ सौ योजन प्रज्ञप्त है ।

५४ एव नीलवंतस्सवि ।

५४ इसी प्रकार नीलवान् का भी [प्रज्ञप्त है ।]

५५ सव्वेवि ण गेवेज्जविमाणा दस-दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

५५ सभी ग्रैवेयक विमान ऊँचाई की दृष्टि से दस-दस सौ/हजार-हजार योजन ऊँचे प्रज्ञप्त हैं ।

५६ सव्वेवि णं जमगपव्वया दस-दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्च-त्तेण, दस-दस गाययउसयाइ उव्वेहेण, मूले दस-दस जोयण-सयाइ आयामविक्खभेण पण्णत्ता।

५६ सभी यमक पर्वत ऊँचाई की दृष्टि से दस-दस सौ/हजार-हजार योजन ऊँचे, हजार-हजार गाउ उद्वेधवाले/गहरे और मूल मे हजार-हजार योजन आयाम-विष्कम्भक/लम्बे-चौडे प्रज्ञप्त है।

५७ एव चित्त-विचित्तकूडा वि भणियव्वा।

५७ इसी प्रकार चित्र और विचित्रकूट भी कथित है।

५८ सव्वेवि ण वट्टवेयड्ढपव्वया दस-दस जोयणसयाइ उड्ढं उच्च-त्तेण, दस-दस गाउयसयाइ उव्वेहेण, सव्वत्थ समा पल्लग-सठाणसठिया, मूले दस-दस जोयणसयाइ विक्खभेण पण्णत्ता।

५८ सभी वृत्तवैताढ्य-पर्वत हजार-हजार योजन ऊँचे, हजार-हजार गाउ उद्वेधवाले/गहरे, सर्वत्र सम, पल्य-सस्थान से सस्थित और मूल मे हजार-हजार योजन आयाम-विष्कम्भक/लम्बे-चौडे प्रज्ञप्त है।

५९ सव्वेवि ण हरिहरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा दस-दस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, मूले दम जोयणसयाइ विक्ख-भेण पण्णत्ता।

५९ वक्षस्कारकूट को छोडकर सर्व हरिकूट और हरिस्सहकूट ऊँचाई को दृष्टि से हजार-हजार योजन ऊँचे और मूल मे हजार-हजार योजन विष्कम्भक/चौडे प्रज्ञप्त है।

६० एव वलकूडावि नदणकूड-वज्जा।

६० इसी प्रकार नन्दनकूट को छोडकर वलकूट भी [प्रज्ञप्त है।]

६१ अरहा वि अरिट्ठनेमी दस वाससयाइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे मुत्ते अतगडे परि-णिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

६१ अर्हत अरिष्टनेमि हजार वर्षो की सर्वायु पालकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत, परिनिर्वृत तथा सर्व दुःख-मुक्त हुए।

६२ पासस्स ण अरहओ दस सयाइ जिणाण होत्था।

६२ अर्हत पार्श्व के हजार जिन/केवली थे।

६३ पासस्स ण अरहओ दस अते-वासिसयाइ कालगयाइ जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइ ।

६३ अर्हत् पार्श्व के दश सौ/एक हजार अन्तेवासी कालगत हो, सर्व दुःख-मुक्त हुए ।

६४ पउमद्दह-पुडरीयद्दहा य दस-दस जोयणसयाइ आयामेरा पण्णत्ता ।

६४ पद्मद्रह और पुण्डरीकद्रह दश-दश सौ/हजार-हजार योजन आयाम-वाले/लम्बे प्रज्ञप्त हैं ।

६५ अणुत्तरोववाइयाण देवाण विमाणा एक्कारस जोयण-सयाइ उड्ड उच्चत्तेण पण्णत्ता ।

६५ अनुत्तरोपपातिक देवो के विमान ऊँचाई की दृष्टि से ग्यारह सौ योजन ऊचे प्रज्ञप्त है ।

६६ पासस्स ण अरहओ इक्कारस-सयाइ वेउव्वियाण होत्था ।

६६ अर्हत् पार्श्व के वैक्रिय [लब्धि-सम्पन्न] साधु ग्यारह सौ थे ।

६७ महापउम-महापुडरीयदहाण दो-दो जोयणसहस्साइ आया-मेण पण्णत्ता ।

६७ महापद्मद्रह और महापुण्डरीद्रह दो-दो हजार योजन आयामवाले/लम्बे प्रज्ञप्त हैं ।

६८ इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए वइरकडस्स उवरिल्लाओ चरि-मताओ लोहियक्खस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस ण तिण्णि जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

६८ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के वज्रकाड के उपरितन चरमान्त से लोहिताक्ष-काड के अधस्तन चरमान्त का अबाधित अन्तर तीन हजार योजन का प्रज्ञप्त है ।

६९. तिगिच्छ-केसरिदहा ण चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइ आया-मेण पण्णत्ता ।

६९ तिगिच्छद्रह और केसरीद्रह चार-चार हजार योजन आयामवाले/लम्बे प्रज्ञप्त हैं ।

७० धरणितले मदरस्स ण पव्व-यस्स बहुमज्झदेसभागे रुयग-नाभीओ चउदिसि पच पच जोयणसहस्साइ अबाहाए मदर-पव्वए पण्णत्ते ।

७० धरणीतल मे मन्दर-पर्वत के बहुमध्यदेशभाग मे नाभिरुचक प्रदेशो से चारो दिशाओ मे अबाधित अन्तर पाच-पाच हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

७१. सहस्सारे ण कप्पे छ विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता ।

७१ सहस्रार कल्प मे छह हजार विमान प्रज्ञप्त है ।

७२. इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए रयणस्स कडस्स उवरिल्लाश्रो चरिमताश्रो पुलगस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते, एस णं सत्त जोयणसहस्साइ श्रबाहाए श्रतरे पण्णत्ते ।

७२ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्नकाड के उपरितन चरमान्त से पुलककाड के अधस्तन चरमान्त का अबाधत अन्तर सात हजार योजन प्रज्ञप्त है ।

७३ हरिवास-रम्मया णं वासा श्रट्ठ-श्रट्ठ जोयणसहस्साइ साइरेगाइ वित्थरेण पण्णत्ता ।

७३ हरिवर्ष और रम्यकवर्ष साधिक आठ-आठ हजार योजन विस्तार से प्रज्ञप्त है ।

७४. दाहिणड्ढभरहस्स ण जीवा पाईणपडीणायया दुहश्रो समुद्द पुट्ठा नव जोयणसहस्साइ श्रायामेण पण्णत्ता ।

७४ दक्षिणार्ध भरत की जीवा पूर्व-पश्चिम दिशा की दोनो ओर से समुद्र का स्पर्श करती हुई नौ हजार योजन आयामवाली/लम्बी प्रज्ञप्त हैं ।

७५. मदरे ण पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइ विक्खभेण पण्णत्ते ।

७५ मन्दर-पर्वत धरणीतल पर दस हजार योजन विष्कम्भक/चौडा प्रज्ञप्त है ।

७६ जवूदीवेण दीवे एग जोयणसय-सहस्स श्रायामविक्खभेण पण्णत्ता ।

७६ जम्बूद्वीप द्वीप एक शत-सहस्र/लाख योजन आयाम-विष्कम्भक/विस्तृत प्रज्ञप्त है ।

७७ लवणे ण समुद्दे दो जोयणसय-सहस्साइ चक्कवालविक्खभेण पण्णत्ते ।

७७ लवण समुद्र का दो शत-सहस्र/लाख योजन चक्रवाल-विष्कम्भ प्रज्ञप्त है ।

७८ पासस्स ण श्ररहश्रो तिण्णि सयसाहस्सीश्रो सत्तावीस य सहस्साइ उक्कोसिया सावियासपया होत्था ।

७८ अर्हत् पार्श्व की तीन शत-सहस्र/लाख सत्ताईस हजार श्राविकाओं की उत्कृष्ट श्राविकासम्पदा थी ।

अलोगे सूइज्जति लोगालोगे सूइज्जति ।	की सूचना दी गई है, जीव-अजीव की सूचना दी गई है, लोक की सूचना दी गई है, अलोक की सूचना दी गई है, लोक-अलोक की सूचना दी गई है ।
सूयगडे ण जीवाजीव - पुण्ण-पावासव - सवर - निज्जर - वध-मोक्खावसाणा पयत्था सूइज्जति ।	सूत्रकृत मे जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, सवर, निर्जरा, बन्ध और मोक्ष तक पदार्थो की सूचना दी गई है ।
समणाण अचिरकालपव्वइयाण कुसमयमोह - मोहमइमोहियाण सदेहजाय - सहजबुद्धि-परिणाम-ससाइयाण पावकर - मइलमइ-गुणविसोहणत्थ आसीतस्स किरियावादिसतस्स चउरासीए अकिरियवाईण सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईण, बत्तीसाए वेणइयवाईण—तिण्ह तेसट्ठाण अण्णदिट्ठियसयाण वूह किच्चा ससमए ठाविज्जति ।	इसमे नवदीक्षित श्रमणो के कु-समय/अन्यतीर्थिक मोह की मोह-मति से मोहित, सन्देहजात, सहजबुद्धि के परिणाम के सशयित, पापकारी मलिन मतिगुण के विशो-धन के लिए एक सौ अस्सी क्रिया-वादियो, चौरासी अक्रियावादियो, सडसठ अज्ञानवादियो तथा बत्तीस वैनयिकवादियो—इस प्रकार तीन सौ तिरसठ अन्य दृष्टियो का व्यूह कर स्व-समय की स्थापना की गई है ।
णाणादिट्ठतवयण - णिस्सार-मुट्ठु दरिसयता ।	विविध दृष्टान्तो एव वचनो की निस्सारता को सम्यक् प्रकार से दर्शाया गया है ।
विविहवित्थराणुगम - परमसब्-भाव-गुण - विसिट्ठा मोक्खपहो-यारगा उदारा अण्णाणतमध-कारदुग्गेसु दीवभूता सोवाणा चेव ।	विविध विस्तारानुगम एव परम सद्भाव-गुण मे विशिष्ट, मोक्ष-पथ के अवतारक, उदार, अज्ञान-अन्धकार के दुर्ग मे दीपभूत और सोपान है ।
सिद्धिसुगइ घरुत्तमस्स णिक्खोभ-निप्पकपा सुत्तत्था ।	इसके सूत्रार्थ सिद्धिगति के उत्तम गृह के लिए क्षोभरहित एव निष्प्रकम्प है ।

सूयगडस्स णं परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

सूत्रकृत की वाचनाएँ परिमित है, अनुयोगद्वार सख्येय हैं, प्रतिपत्तिया सख्येय हैं, वेष्टन सख्येय है, श्लोक सख्येय हैं, निर्युक्तिया सख्येय है।

से ण अगट्ठयाए दोच्चे अगे दो सुयक्खधा तेवीस अज्झयणा तेत्तीस उद्देसणकाला तेत्तीस समुद्देसणकाला छत्तीस पदसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा अणता गमा अणता पज्जवा परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति।

यह अग की अपेक्षा से दूसरा अग है। [इसके] दो श्रुतस्कन्ध, तेईस अध्ययन, तेतीस उद्देशन-काल, तेतीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से छत्तीस हजार पद, सख्येय अक्षर, अनन्त गम/अर्थ/धर्म और अनन्त पर्याय है। इस मे परिमित त्रस जीवो, अनन्त स्थावर जीवो तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावो का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

से एवं आया एव णाया एव विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति उवदसिज्जति।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमे चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपर्शन किया गया है।

सेत्त सूयगडे।

यह है वह सूत्रकृत।

४. से किं त ठाणे ?

ठाणे ण ससमया ठाविज्जति परसमया ठाविज्जति ससमय-परसमया ठाविज्जति जीवा

४ वह स्थान क्या है ?

स्थान मे स्व-समय की स्थापना की गई है, पर-समय की स्थापना की गई है, स्व-समय पर-समय की

ठाविज्जति अजीवा ठाविज्जति जीवाजीवा ठाविज्जति लोगे ठाविज्जति अलोगे ठाविज्जति लोगालोगे ठाविज्जति।

स्थापना की गई है। जीवों की स्थापना की गई है, अजीवों की स्थापना की गई है, जीव-अजीव की स्थापना की गई है। लोक की स्थापना की गई है, अलोक की स्थापना की गई है लोक-अलोक की स्थापना की गई है।

ठाणे णं दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव पयत्थाण—
सेला सलिला य समुद्दसूर-
भवणविमाण आगर णदीओ।
णिहिओ पुरिसज्जाया,
सरा य गोत्ता य जोइसचाला।।

'स्थान' में पदार्थों के द्रव्य, गुण, क्षेत्र, काल और पर्याय की, पर्वत, सरिता, समुद्र, सूर्य, भवन, विमान, आकर नदी, निधि, पुरुष-जाति, स्वर, गोत्र, ज्योतिष्-चक्र का संचार—इन सबका आकलन है।

एगविहवत्तव्वयं दुविहवत्तव्वयं जाव दसविहवत्तव्वयं जीवाण पोग्गलाण य लोगट्ठाइणं च परूवणया आघविज्जति।

इसमें एक विध वक्तव्यता, द्विविध वक्तव्यता यावत् दशविध वक्तव्यता है। इसमें जीव, पुद्गल और लोकस्थायी [द्रव्यों] की प्ररूपणा आख्यात है।

ठाणस्स णं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ।

स्थान की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार संख्येय हैं, प्रतिपत्तियाँ संख्येय हैं, वेष्टक संख्येय हैं, श्लोक संख्येय हैं, निर्युक्तियाँ संख्येय हैं, संग्रहणियाँ संख्येय हैं।

से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा एक्कवीसं उद्देसणकाला एक्कवीसं समुद्देसणकाला बावत्तरिं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा अणंता गमा अणंता पज्जवा।

यह अंग की दृष्टि से तीसरा अंग है। [इसमें] एक श्रुतस्कन्ध, दस अध्ययन, इक्कीस उद्देशन-काल, इक्कीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से बहत्तर हजार पद, संख्येय अक्षर, अनन्त गम, अनन्त पर्यव हैं।

परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

इसमे परिमित त्रस जीवो, अनन्त स्थावर जीवो तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावो का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एवं आया एव णाया एवं विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्त ठाणे ।

यह है वह स्थान ।

५ से किं त समवाए ?
समवाए ण ससमया सूइज्जति परसमया सूइज्जति ससमय-परसमया सूइज्जति जीवा सूइज्जति अजीवा सूइज्जति जीवाजीव सूइज्जति लोगे सूइज्जति अलोगे सूइज्जति लोगालोगे सूइज्जति ।

५ समवाय क्या है ?
समवाय मे स्वसमय की सूचना दी गई है, परसमय की सूचना दी गई है, स्वसमय और परसमय की सूचना दी गई है । जीवो की सूचना दी गई है, अजीवो की सूचना दी गई है, जीव-अजीव की सूचना दी गई है, लोक की सूचना दी गई है । अलोक की सूचना दी गई है, लोक-अलोक की सूचना दी गई है ।

समवाए ण एकादियाण एगट्ठाण एगुत्तरियपरिवुड्ढीय, दुवालसगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ ।

समवाय मे एकादिक अर्थों/पदार्थो की एकोत्तरिका की परिवृद्धि और द्वादशाग गणिपिटक का पल्लवाग्र मात्र ज्ञापित है ।

८६ समणे भगव महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ 'छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एग वासकोडिं सामण्णपरियाग पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठे विमाणे देवत्ताए उववण्णे ।

८६ श्रमण भगवान् महावीर तीर्थकर भवग्रहण से [पूर्व] छठे पोटिल-भव-ग्रहण मे एक करोड वर्ष तक श्रामण्यपर्याय पालकर सहस्रार देवलोक मे सर्वार्थ विमान मे देवत्व से उपपन्न हुए ।

८७. उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अतरे पण्णत्ते ।

८७ भगवान् श्री ऋषभ से चरम [तीर्थंकर] महावीर वर्द्धमान का अबाधत अन्तर एक कोडाकोडी सागरोपम प्रज्ञप्त है ।

ठाणगसयस्स बारसविहवित्थ-
रस्स सुयणाणस्स जगजीव-
हियस्स भगवओ समासेण
समायारे आहिज्जति ।

इसमे सौ स्थानो तक बारह
प्रकार के विस्तार वाले श्रुतज्ञान
का भगवान् द्वारा जगत् के जीवो
के हित के लिए सक्षेप मे समाचार
आख्यात है ।

तत्थ य णाणाविहप्पगारा
जीवाजीवा य वण्णिया वित्थ-
रेण अवरे वि य बहुविहा
विसेसा नरग - तिरिय - मणुय-
सुरगणाण आहारुस्सास - लेस-
आवाससख - आययप्पमाण
उववाय - चयण - ओगाहणोहि-
वेयण - विहाण - उवओग - जोग-
इंदिय-कसाय ।

इसमे नानाविध जीव-अजीव
विस्तारपूर्वक वर्णित है । इसके
अतिरिक्त विशेष रूप से बहुविध-
नरक, तिर्यच, मनुष्य और देवो
के आहार, उच्छ्वास लेश्या,
आवास-सख्या, आयत-प्रमाण,
उपपात, च्यवन, अवगाहना,
अवधि वेदन, विधान, उपयोग,
योग, इन्द्रिय और कषाय वर्णित
है ।

विविहा य जीवजोणी विक्ख-
भुस्सेह परिरयप्पमाण विधि-
विसेसा य मदरादीण मही-
धराण ।

विविध जीवयोनि विष्कम्भ/
विस्तार, उत्सेध/ऊँचाई और
परिधि का प्रमाण महीधर,
मन्दर आदि के विधि-विशेष
वर्णित है ।

कुलगर - तित्थगर - गणहराण
समत्तभरहाहिवाण चक्कीण
चेव चक्कहरहलहराण य
वासाण य निग्गमा य समाए ।

इसमे कुलकर, तीर्थकर, गणधर
समग्र भरत के अधिपति चक्रवर्ती,
चक्रधर, हलधर और वर्षों सेवा
का निगम निर्दिष्ट है ।

एए अन्ने य एवमाइत्थ वित्थ-
रेण अत्था समासिज्जति ।

ये और इसी प्रकार के दूसरे
अर्थ यहाँ विस्तार से समासित
है ।

समवायस्स ण परित्ता वायणा
सखेज्जा अणुओगदारा सखे
ज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा
वेढा सखेज्जा सिलोगा सखे-

ज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ ।

मग्रहणिया मस्येय हैं ।

से ण अगट्ठयाए चउत्थे अगे एगे अज्झयणे एगे सुयक्खधे उद्देसणकाले एगे समुद्देसणकाले एगे चोयाले पदसयसहस्से पदग्गेण, सखेज्जाणि अक्खराणि अणता गमा अणता पज्जवा ।

यह अग की अपेक्षा मे चौथा अग है । [इसके] एक अध्ययन, एक श्रुतस्कन्ध, एक उद्देशन-काल एक ममुद्देशन-काल, पदप्रमाण से एक शत-सहस्र/लाख चौवालिस हजार पद, मस्येय अक्षर, अनन्त गम/अर्थ/धर्म और अनन्त पर्याय है ।

परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

इसमे परिमित त्रस जीवो, अनन्त स्थावर जीवो तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावो का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एा आया एव णाया एव विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमे चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्त समवाए ।

यह है वह समवाय ।

६ से कि त वियाहे ?

६ व्याख्या/व्याख्याप्रज्ञप्ति क्या है ?

वियाहे ण ससमया वियाहिज्जति परसमया वियाहिज्जति ससमयपरसमया वियाहिज्जति जीवा वियाहिज्जति अजीवा वियाहिज्जति जीवाजीवा

व्याख्या मे स्वसमय की व्याख्या की गई है, परसमय की व्याख्या की गई है, स्वसमय-परसमय की व्याख्या की गई है। जीवो की व्याख्या की गई है, अजीवो की व्याख्या की

यणसए दस उद्देसगसहस्साइ दस समुद्देसगसहस्साइ छत्तीस वागरणसहस्साइ चउरासीई पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जाइ अक्खराइं अणता गमा अणता पज्जवा ।

कुछ अधिक सौ अध्ययन, दस हजार उद्देशक, दस हजार समुद्देशक, छत्तीस हजार व्याकरण, पद-प्रमाण से चौरासी हजार पद, सख्येय अक्षर, अनन्त गम/अर्थ/धर्म अनन्त पर्याय है ।

परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पणविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

इसमे परिमित त्रस जीवो, अनन्त स्थावर जीवो तथा शाश्वत, कृत, निवद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावो का आख्यान किया गया हे, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया हे निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया हे ।

से एव आया एव णाया एव विण्णाया एव चरण-करण-परूवयणा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमे चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

सेत्त वियाहे ।

यह है वह व्याख्या ।

७. से किं त नायाधम्मकहाओ ?

नाया-धम्मकहासु ण नायाण नगराइ उज्जाणाइ चेइआइ वणसडाइ रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागा सलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइ पाओ-

७ वह ज्ञात-धर्मकथा क्या है ?

ज्ञात-धर्मकथा मे ज्ञातो/पात्रो के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिक-पारलौकिक-ऋद्धि-विशेष, भोग-परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुत-परिग्रहण, तप-उपधान, पर्याय/दीक्षा-काल, सलेखना, भक्त-प्रत्याख्यान, प्रायोपगमन, देवलोकगमन, सुकुल मे

लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया।

को भोग कर तथा कालक्रम से वहा से च्युत होकर, जिस प्रकार वे पुन सिद्धिमार्ग को पुनर्लब्ध कर अतंक्रिया करते है—उनकी प्ररूपणा की गई है ।

चलियाण य सदेव-माणुस्स-धीरकरण-कारणाणि बोधण-अणुसासणाणि गुण-दोस-दरिसणाणि।

विचलितो मे धैर्य उत्पन्न करने-कराने वाले, बोध और अनुशासन भरने वाले एव गुण-दोषो को दर्शाने वाले देव तथा मनुष्यो का निदर्शन है।

दिट्ठते पच्चए य सोउण लोगमुणिणो जह य ठिया सासणम्मि जर-मरण-नासण-करे।
आराहिय-सजमा य सुरलोग-पडिनियत्ता ओवेंति जह सासय सिव सव्वदुक्खमोक्ख।

इसमे दृष्टान्तो और प्रत्ययो/वाक्यो को सुन कर लौकिक मुनि जिस प्रकार से जरा-मरण का विनाश करने वाले जिनशासन मे स्थित हुए, सयम की आराधना कर देव-लोक से प्रतिनिवृत्त होकर जिस प्रकार शाश्वत, शिव और सर्व दुखो से मोक्ष पाते हैं—उसका आकलन किया गया है ।

एए अण्णे य एवमादित्थ वित्थरेण य।

ये तथा इसी प्रकार के अन्य अर्थ इसमे विस्तार से आख्यात है।

नाया-धम्मकहासु णं परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ।

ज्ञात-धर्मकथा की वाचनाएँ परि-मित हैं, अनुयोगद्वार सख्येय है, प्रतिपत्तियाँ सख्येय है, वेष्टन सख्येय है, श्लोक सख्येय है, निर्युक्तिया सख्येय है, सग्रहणिया सख्येय है।

से ण अगट्ठयाए छट्ठे अगे दो सुअक्खधा एगूणतीस अज्झयणा, ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, त जहा—
चरिता य कप्पिया य।

यह अग की अपेक्षा से छठा अग है । इसके दो श्रुतस्कध और उनतीस अध्ययन है। सक्षेप मे वे दो प्रकार के है— चरित और कल्पित।

उवासगदसासु ण उवासयाण नगराइ उज्जाणाइं चेइआइ वणसडाइ रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा, उवासयाण य सीलव्वय-वेरमण-गुण-पच्चक्खाण -पोसहोववास-पडिवज्जणयाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ पडिमाओ उवसग्गा सलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ देवलोगगमणाइ सुकुलपच्चायाई पुण बोहिलाभो अतकिरियाओ य आघविज्जति ।

उपासकदशा मे उपासको के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्म-कथा, ऐहलौकिक-पारलौकिक-ऋद्धि-विशेष, शीलव्रत, विरमण, गुणव्रत, प्रत्याख्यान पौषधोपवास, श्रुत-परिग्रहण, तप-उपधान, प्रतिमा, उपसर्ग, सलेखना, भक्त-प्रत्याख्यान, प्रायोपगमन, देवलोक-गमन, सुकुल मे पुनर्जन्म, पुन बोधिलाभ और अन्तक्रिया का आख्यान किया गया है ।

उवासगदसासु ण उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसा वित्थर-धम्मसवणाणि बोहिलाभ-अभिगमसम्मत्तविसुद्धया थिरत्त मूल-गुण-उत्तरगुणाइयारा ठिइ-विसेसा य बहुविसेसा पडिमा-भिग्गहग्गहण-पालणा उवसग्गा-हियासणा णिरुवसग्गा य, तवा य विचित्ता, सीलव्वयवेरमण-गुण-पच्चक्खाण-पोसहोववासा, अ-पच्छिममारणतियऽयसलेहणा-झोसणाहि-अप्पाण जह य भाव-इत्ता, बहूणि भत्ताणि अण-सणाए य छेयइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणु-भवतिसुरवरविमाण-वरपोडरी-एसु सोक्खाइ अणोवमाइ कमेण भोत्तूण उत्तमाइ, तओ

उपासकदशा मे उपासको के ऋद्धि-विशेष, परिषद्, विस्तृत धर्म-श्रवण, बोधि-लाभ, अभिगम, सम्यक्त्व-विशुद्धि, स्थिरता, मूलगुणो और उत्तरगुणो के अतिचार, स्थिति-विशेष, विविध विशिष्ट प्रतिमाओ तथा अभिग्रहो का ग्रहण और पालन, उपसर्ग-सहन, निरुपसर्गता, विचित्र तप, शीलव्रत, विरमण, गुणव्रत, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास, अपश्चिम-मारणान्तिक आत्म-सलेखना के सेवन से आत्मा को जिस प्रकार भावित करते है तथा अनेक भक्तो/भोजन-समयो का अनशन के रूप मे छेदन कर उत्तम कल्प देवलोक के विमानो मे उपपन्न होकर जिस प्रकार वर-पु डरिक तुल्य सुरवर-विमानो मे

विज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्त अतगडदसाओ ।

यह है वह अन्तकृतदशा ।

१०. से कि त अणुत्तरोववाइयदसाओ ?
अणुत्तरोववाइयदसासु ण अणुत्तरोववाइयाण नगराइ उज्जाणाइ चेइयाइ वणसडाइ रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्डिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागा सलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइ पाओवगमणाइ अणुत्तरोववत्ति सुकुलपच्चायाती पुणबोहिलाभो अतकिरियाओ य आघविज्जति ।

१० अनुत्तरोपपातिकदशा क्या है ?
अनुत्तरोपपातिकदशा मे अनुत्तरोपपातिको के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता-पिता, समवसरण धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिक-पारलौकिक-ऋद्धि-विशेष, भोग-परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुत-परिग्रहण, तप-उपधान, पर्याय, सलेखना, भक्त - प्रत्याख्यान प्रायोपगमन अनशन, अनुत्तर, विमान मे जन्म, सुकुल मे पुनर्जन्म, पुन बोधिलाभ और अन्तक्रिया का आख्यान किया गया है ।

अणुत्तरोववाइयदसासु ण तित्थकर समोसरणाइ परममगल्लजगहियाणि जिणातिसेसा य वहुविसेसा जिणसीसाण चेव समणगणपवरगधहत्थीण । थिरजसाण परिसहसेण्ण-रिउवलपमद्दणाण तव-दित्त-चरित्त-णाण-सम्मत्तसार-विविहप्पगार-वित्थर - पसत्थगुण - सजुयाण अणगारमहरिसीण अणगार-

अनुत्तरोपपातिकदशा मे परम मगल और जग-हितकर तीर्थङ्कर के समवसरण जिनेश्वर के वहुविशिष्ट अतिशय तथा जिनशिष्य एव श्रमण-गण मे श्रेष्ठ गन्धहस्ती के समान, स्थिर यश वाले, परीषह सैन्य रूपी रिपु-वल का प्रमर्दन करने वाले, तपोदीप्त चारित्र, ज्ञान एव सम्यक्त्व-सार, विविध प्रकार के विस्तार वाले प्रशस्त गुणो से सयुक्त,

एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण ।

ये तथा इसी प्रकार से अन्य अर्थ इसमे विस्तार मे है ।

अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ ।

अनुत्तरोपपातिक दशा की वाचनाएँ परिमित हैं, अनुयोगद्वार सख्येय है, प्रतिपत्तिया सख्येय हैं, वेष्टन सख्येय है, श्लोक सख्येय हैं, निर्युक्तिया सँख्येय है, सग्रहणिया सख्येय है ।

से ण अगट्ठयाए नवमे अगे सुयक्खधा दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा दस उद्देमणकाला दस समुद्देसणकाला सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जाणि, अक्खराणि अणता गमा, अणता पज्जवा ।

यह अग की अपेक्षा से नौवा अग है। इसके एक श्रुतस्कन्ध, दस अध्ययन, तीन वर्ग, दस उद्देशन-काल, दस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से सख्येय शत-सहस्र/लाख पद, सख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय है ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिवद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

इसमे परिमित त्रस जीवो, अनन्त स्थावर जीवो तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावो का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एव आया एव णाया एव विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार चरण-करण-प्ररूपणा का इसमे आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्त अणुत्तरोववाइयदसाओ ।

यह है वह अनुत्तरोपपातिकदशा ।

११ से किं तं पण्हावागरणाणि ?

पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तर पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति।

पण्हावागरणदसासु णं ससमय-परसमय-पण्णवय-पत्तेयबुद्ध-विविहत्थ-भासा-भासियाणं अतिसय-गुण-उवसम-णाणप्पगार-आयरिय-भासियाणं वित्थरेणं वीरमहेसीहिं विविहवित्थर-भासियाणं च जगहियाणं अद्दागंगुट्ठ-बाहु-असि-मणि-खोम-आतिच्चमाइयाणं विविहमहापसिणविज्जा-मणपसिणविज्जा-देवयपओगपहाण-गुणप्पगासियाणं सब्भूयविगुणप्पभाव-नरगणमइ-विम्हयकारीणं अतिसयमतीय-कालसमए दमतित्थकरुत्तमस्स ठितिकरण-कारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वण्णुसम्मयस्स अबुहजणविबोहकरस्स पच्चक्खय-पच्चयकराणं पण्हाणं विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जंति।

११ वह प्रश्नव्याकरण क्या है ?

प्रश्नव्याकरण मे एक सौ आठ प्रश्न, एक सौ आठ अप्रश्न, एक सौ आठ प्रश्न-अप्रश्न, विद्यातिशय तथा नाग और सुपर्ण देवो के साथ हुए दिव्य सवादो का आख्यान है।

प्रश्नव्याकरण मे स्वसमय-परसमय के प्रज्ञापक प्रत्येकबुद्धो द्वारा विविध अर्थवाली भाषा मे भाषित, विविध प्रकार के अतिशय, गुण और उपशम वाले आचार्यो द्वारा विस्तार मे कथित तथा वीर महर्षियो द्वारा विविध विस्तार मे भाषित जगत् के लिए हितकर, आदर्श, अगुष्ठ, बाहु, असि, मणि, वस्त्र और आदित्य आदि से सम्बन्धित विविध प्रकार की महाप्रश्नविद्याओ और मन प्रश्नविद्याओ के देवो के प्रयोग-प्राधान्य से गुणो को प्रकाशित करने वाली सद्भूत द्विगुण प्रभाव से मनुष्यगण की बुद्धि को विस्मित करने वाले, सुदूर अतीत काल मे दमन/प्रशान्ति प्रधान उत्तम तीर्थंकर के स्थितिकरण मे कारणभूत, दुर्बोध, दुरवगाह तथा बुधजन को बोध देने वाले, सब सर्वज्ञ-सम्मत प्रत्यक्ष प्रत्यय कराने वाली प्रश्न-विद्याओ से, जिनवर-प्रणीत विविध गुण वाले महान् अर्थो का आख्यान किया गया है।

पण्हावागरणसु णं परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा सखेज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ ।

प्रश्नव्याकरण की वाचनाएँ परिमित है, अनुयोगद्वार सख्येय है, प्रतिप्रतिया सख्येय है, वेष्टन सख्येय है, श्लोक सख्येय है, निर्युक्तिया सख्येय हैं, सग्रहणिया सख्येय हैं ।

से ण अगट्ठयाए दसमे अगे एगे सुयक्खधे पयणालीस अज्झयणा पणयालीस उद्देसणकाला पणयालीस समुद्देसणकाला सखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा ।

यह अग की दृष्टि से दसवा अग है। इसके एक श्रुतस्कन्ध, पैंतालीस अध्ययन, पैंतालीस उद्देशन-काल, पैंतालीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण से सख्येय शत-सहस्र/लाख पद, सख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय है ।

परित्ता तसा अणता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

इसमे परिमित त्रस जीवो, अनन्त स्थावर जीवो तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावो का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एव आया एव णाया एवं विण्णाया एव चरण-करण-परूवणया आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार इसमे चरण-करण-प्ररूपणा का आख्यान किया गया है प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया हे, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्त पण्हावागरणाइ ।

यह है वह प्रश्नव्याकरण ।

१२ से किं त विवागसुए ?

१२ वह विपाकश्रुत क्या है ?

विवागसुए णं सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जंति ।

से समासओ दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—
दुहविवागे चेव, सुहविवागे चेव । तत्थ णं दह दुहविवागाणि दह सुहविवागाणि ।

से किं तं दुहविवागाणि ?

दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ नगरगमणाइं संसारपबंधे दुहपरंपराओ य आघविज्जंति ।

सेत्तं दुहविवागाणि ।

से किं तं सुहविवागाणि ?

सुहविवागेसु सुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइया इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुण बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

विपाकश्रुत मे सुकृत व दुष्कृत कर्मों के फल-विपाक का आख्यान किया गया है ।

वह सक्षेप मे दो प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
दु खविपाक और सुखविपाक । उनमे दस दु खविपाक हैं और दस सुखविपाक ।

वह दु खविपाक क्या है ?

वह दु खविपाक मे दु खविपाक वाले जीवो के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, नगर-गमन, ससार-प्रवन्ध और दु ख-परम्परा का आख्यान किया गया है ।

यह है वह दु खविपाक ।

वह सुखविपाक क्या है ?

सुखविपाक मे सुखविपाक वाले जीवो के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिक-पारलौकिक ऋद्धि-विशेप, भोग-परित्याग प्रव्रज्या, श्रुतग्रहण, तप-उपधान, पर्याय, सलेखना, भक्त-प्रत्याख्यान, प्रायोपगमन, देवलोक-गमन, सुकुल मे पुनर्जन्म, पुन वोधिलाभ और अन्तक्रिया का आख्यान किया गया है ।

दुहविवागेसु ण पाणाइवाय-अलियवयण - चोरिक्ककरण-परदारमेहुणससगयाए महतिव्व-कसाय - इदियप्पमाय-पावप्पओय - असुहज्झवसाण-सचियाण कम्माण पावगाण पावअणुभाग - फलविवागा णिरयगइ - तिरिक्खजोणि - बहुविहवसणसय - परपरायबद्धाण, मणुयत्तेवि आगयाण जहा पावकम्मसेसेण पावगा होति फलविवागा ।

दु खविपाक मे प्राणातिपात, अलीकवचन/मृषावाद, चौर्यकरण, परदार-मैथुन, सग के द्वारा महातीव्र कषाय, इन्द्रिय प्रमाद, पाप-प्रयोग और अशुभ अध्यवसाय से सचित पापकर्मों के पाप-अनुभाग वाले फलविपाक हैं । नरकगति और तिर्यञ्च-योनि मे बहुविध सैकडो व्यसनो की परम्परा से प्रबद्ध जीवो के मनुष्य-जन्म मे आ जाने पर भी जिस प्रकार अवशिष्ट कर्मों के फलविपाक पापक/अशुभ होते है—उनका आख्यान किया गया है ।

वहवसणविणास - नासकण्णोट्ठ-गुट्ठकरचरणनहच्छेयणजिब्भ-छेयण-अजण-कडग्गिदाहण-गय-चलण - मलणफालणउल्लबण-सूललया - लउडलट्ठिभजण-तउ-सीसगतत्त - तेल्लकलकल-अभि-सिचणकु भिपाग - कपण - वेह-वज्झकत्तण - पतिभयकर - कर-पलीवणादि-दारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि ।

इसमे वध, वृषण-विनाश / नपु - सकता, नासिका, कान, ओष्ठ, अगुष्ठ, हाथ, चरण और नखो का छेदन, जिह्वा-छेदन, अजनदाह, कटाग्नि से दाहन, हाथी के पावो से कुचलना, फाडना, लटकाना, शूल, लता, लकडी और लाठी से शरीर-भग करना, उबलते हुए त्रपु/रागा और गरम तेल से अभिसिचन, कु भी/भट्टी मे पकाना, कांपत करना, दृढता से वाधना, वेधना, वर्धकर्तन/खाल उवेडना, प्रतिभय पैदा करने वाली मशाल जलाना आदि अनुपम दारुण दु खो का आख्यान किया गया है ।

वहुविविहपरपराणु - वद्धा ण मुच्चति पावकम्मवल्लीए । अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो

वहुविध भव-परम्परानुवद्ध जीव पाप-कर्मरूपी वल्ली से मुक्त नही होते । वेदन किये विना मोक्ष नही

नवेण विइ-पलिय-बद्ध-कच्छेण सोहण तस्स वावि होज्जा ।

है, धृतिबल से कटिबद्ध तप द्वारा उसका शोधन भी हो सकता है ।

एत्तो य सुहविवागेसु सील-संजम णिय-गुण-तवोवहाणेसु साहुसु सुविहिएसु अणुकंपाऽऽसयप्प-ओगतिकाल-मइविसुद्ध-भत्त-पाणाइं पयतमणसा हिय-सुह-नीसेस-तिव्वपरिणाम-निच्छिय-मई-पयच्छिऊण पओगसुद्धाइं जह य निव्वत्तेंति उ बोहिलाभं ।

इधर सुखविपाक में शील, संयम, नियम, तप-उपधान से निरत सुविहित साधुओं के प्रति अनुकम्पा के आशय-प्रयोग एवं त्रैकालिक मतिविशुद्धि से भक्तपान/भोजन-पानी मनोप्रयत्न हित, सुख, निःश्रेयस्, तीव्र भाव-परिणाम एवं निश्चितमति से प्रयोगशुद्धि-पूर्वक देते हैं तथा जिस प्रकार भव-परिनिर्वृत एवं बोधिलाभ प्राप्त करते है, उनका परिकीर्तन है ।

जह य परित्तीकरेंति नर-निरय तिरिय-सुरगतिगमण-विपुल-परियट्ट-अरति-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्त-सेलसंकड-अण्णाणतमंधकार-चिक्खिल्ल-सुदुत्तारं जर-मरण-जोणि-संखु-भियचक्कवालं सोलसकसाय-सावय-पयंड-चंड-अणाइय-अणवदग्गं संसारसागरमिणं ।

इसमें नर, नारक, तिर्यञ्च और देवगति-गमन के लिए विपुल परि-वर्त वाले, अरति, भय, विषाद, शोक और मिथ्यात्वरूपी शैलों से संकुल, अज्ञानरूपी अंधकार से परिपूर्ण, अत्यधिक सुदुस्तर, जरा-मरण और योनि से संक्षुब्ध चक्रवाल वाले, सोलह कषायरूपी अत्यन्त चण्ड/भयंकर श्वापदों/खूंखार प्राणियों से युक्त अनादि-अनन्त संसार-सागर को जिस प्रकार सीमित करते है— उसका आख्यान है ।

जह य निबंधंति आउगं सुर-गणेसु जह य अणुभवंति सुरगणविमाण-सोक्खाणि अणोवमाणि ततो य कालंतर-चुयाणं इहेव नरलोगमागयाणं

जिस प्रकार देवलोक के लिए वे आयुष्य का बन्ध करते हैं, जिस प्रकार देवगण के विमानों के अनु-पम सुखों का अनुभव करते हैं वहां से कालान्तर में च्युत हो इसी

आउ-वउ-वण्ण-रूव -जाइ-कुल जम्म - आरोग्ग - बुद्धि - मेहा-विसेसा - मित्तजण - सयण-घण-धण्ण-विभव - समिद्धिसार-समुदयमिसेसा बहुविहकाम-भोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवा-गोत्तमेसु ।

मनुष्य-लोक मे आकर आयु, शरीर, वर्ण, रूप, जाति, कुल, जन्म, आरोग्य, बुद्धि और मेधा विशेष, मित्रजन, स्वजन, धनधान्य, वैभव, समृद्धि, सार-समुदय-विशेष तथा बहुविध कामभोगो से उद्‌भूत सुखो को उत्तम शुभ विपाक वाले जीव प्राप्त करते है—उनका आख्यान है ।

अणुवरयपरपराणुबद्धा असुभाण सुभाण चेव कम्माण भासिआ बहुविहा विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण सवेगकार-णत्था ।

सवेग/वैराग्य उत्पन्न करने के लिए भगवान् जिनवर द्वारा परम्परा से अनुबद्ध एव अनुपरत अशुभ और शुभ कर्मों के बहुविध विपाक विपाकश्रुत मे भापित है ।

अण्णेवि य एवमाइया, बहुविहा वित्थरेण अत्थपरूवणया आघ-विज्जति ।

ये तथा इसी प्रकार के अन्य बहुविध अर्थ इसमे विस्तार से आख्यान किये गये हैं ।

विवागसुअस्स ण परित्ता वायणा सखेज्जा अणुओगदारा सखे-ज्जाओ पडिवत्तीओ सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखे-ज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ ।

विपाकश्रुत की वाचनाएँ परिमित है, अनुयोगद्वार सख्येय है, प्रति-पत्तिया सख्येय है, वेष्टन सख्येय है, श्लोक सख्येय है, निर्युक्तिया सख्येय है, सग्रहणिया सख्येय है ।

से ण अगट्ठयाए एक्कारसमे अगे वीस अज्झयणा वीस उद्देसण-काला वीस समुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पय-ग्गेण, सखेज्जाइ अक्खराइ अणता गमा, अणता पज्जवा।

यह अङ्ग की अपेक्षा से ग्यारहवा अग है । इसके वीस अध्ययन, बीस उद्देशन-काल, वीस समुद्देशन-काल, पद-प्रमाण मे सख्येय शत-सहस्र/लाख पद, सख्येय अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय है ।

परित्ता तसा अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

इसमें परिमित त्रस जीवों, अनन्त स्थावर जीवों तथा शाश्वत, कृत निबद्ध और निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावों का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

से एवं आया एवं णाया एवं विण्णाया एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञाता है, इस प्रकार चरण-करण-प्ररूपणा का इसमें आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्तं विवागसुए ।

यह है वह विपाकश्रुत ।

१३ से किं तं दिट्ठिवाए ?

दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणया आघविज्जति । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—
परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया ।

१३ वह दृष्टिवाद क्या है ?

दृष्टिवाद में सर्व भाव प्ररूपणा का आख्यान है । वह संक्षेप में पांच प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि —
१ परिकर्म, २ सूत्र, ३ पूर्वगत, ४ अनुयोग, ५ चूलिका ।

१४ से किं तं परिकम्मे ?

परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—
सिद्धसेणिया-परिकम्मे
मणुस्ससेणिया-परिकम्मे
पुट्ठसेणिया-परिकम्मे
ओगाहणसेणिया-परिकम्मे
उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे

१४ वह परिकर्म क्या है ?

परिकर्म सात प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१ सिद्धश्रेणिका परिकर्म
२ मनुष्यश्रेणिका परिकर्म
३ स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म
४ अवगाहनश्रेणिका परिकर्म
५ उपसंपादनश्रेणिका परिकर्म

विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे
चुयाचुयसेणिया-परिकम्ममे ।

६ विप्रहाणश्रेणिका परिकर्म
७ च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म

१५ से किं त सिद्धसेणियापरि-कम्मे ?

सिद्धसेणिया-परिकम्मे चोद्दस-विहे पण्णत्ते, त जहा—
माउयापयाणि, एगट्ठियपयाणि, अट्ठपयाणि, पाढो, आगास-पयाणि, केउभूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउ-भूयपडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्त, सिद्धावत्त ।

सेत्त सिद्धसेणियापरिकम्मे ?

१५ वह सिद्धश्रेणिका परिकर्म क्या है ?

सिद्धश्रेणिका परिकर्म चौदह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
१ मातृकापद, २ एकार्थिकपद, ३ अर्थपद, ४ पाठ, ५ आकाशपद, ६ केतुभूत, ७ राशिबद्ध, ८ एक-गुण, ९ द्विगुण, १० त्रिगुण, ११ केतुभूतप्रतिग्रह, १२ ससारप्रतिग्रह, १३ नन्द्यावर्त, १४ सिद्धावर्त ।

यह है वह सिद्धश्रेणिका परिकर्म ।

१६ से किं त मणुस्ससेणिया-परिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, त जहा—
माउयापयाणि, एगट्ठियपयाणि, अट्ठपयाणि, पाढो, आगास-पयाणि, केउभूय, रासिवद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूय-पडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्तं, मणुस्सावत्त ।

सेत्त मणुस्ससेणियापरिकम्मे ।

१६ मनुष्यश्रेणिका परिकर्म क्या है ?
मनुष्यश्रेणिका परिकर्म चौदह प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१ मातृकापद, २ एकार्थिकपद, ३ अर्थपद, ४ पाठ, ५ आकाश-पद, ६ केतुभूत, ७ राशिपद, ८ एकगुण, ९ द्विगुण, १० त्रि-गुण, ११ केतुभूतप्रतिग्रह, १२ ससार-प्रतिग्रह, १३ नन्द्यावर्त, १४ मनुष्यावर्त ।

यह है वह मनुष्यश्रेणिका परिकर्म ।

१७ से किं त पुट्ठसेणिया-परिकम्मे ?
पुट्ठसेणिया-परिकम्मे एक्कारस-विहे पण्णत्ते, त जहा—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूय, रासिवद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूयपडिग्गहो, ससारपडि-

१७ वह स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म क्या है ?
स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
१ पाठ, २ आकाशपद, ३ केतु-भूत, ४ राशिवद्ध, ५ एकगुण, ६ द्विगुण, ७ त्रिगुण, ८ केतु-

ग्गहो, नदावत्त, पुट्ठावत्त ।

भूतप्रतिग्रह, ९ ससारप्रतिग्रह, १० नन्द्यावर्त, ११ स्पृष्टावर्त ।

सेत्त पुट्ठसेणिया परिकम्मे ।

यह है वह स्पृष्टश्रेणिका परिकर्म ।

१८ से किं त ओगाहणसेणिया-परिकम्मे ?

ओगाहणसेणिया-परिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूयपडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्त, ओगाहणावत्त ।

सेत्त ओगाहणसेणियापरिकम्मे ।

१८ वह अवगाहनश्रेणिका परिकर्म क्या है ?

अवगाहनश्रेणिका-परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

१ पाठ, २ आकाशपद, ३ केतु-भूत, ४ राशिबद्ध, ५ एकगुण, ६ द्विगुण, ७ त्रिगुण, ८ केतु-भूतप्रतिग्रह, १० ससारप्रतिग्रह, ११ नन्द्यावर्त ।

यह है वह अवगाहनश्रेणिका परिकर्म ।

१९ से किं त उवसपज्जणसेणिया-परिकम्मे ?

उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूयपडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्त, उवसपज्जणावत्त ।

सेत्त उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ।

१९ वह उपसपादनश्रेणिका-परिकर्म क्या है ?

उपसपादनश्रेणिका-परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

१ पाठ, २ आकाशपद, ३ केतु-भूत, ४ राशिबद्ध, ५ एकगुण, ६ द्विगुण, ७ त्रिगुण, ८ केतु-भूतप्रतिग्रह, ९ ससारप्रतिग्रह १० नन्द्यावर्त, ११ उपसपादनावर्त ।

यह है वह उपसपादनश्रेणिका परिकर्म ।

२० से किं त विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे ?

विप्पजहणसेणिया-परिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—

२० वह विप्रजहत्श्रेणिका परिकर्म क्या है ?

विप्रजहत्श्रेणिका परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूयपडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्त, विप्पजहणावत्त ।

सेत्त विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ।

१ पाठ, २ आकाशपद, ३ केतुभूत, ४ राशिबद्ध, ५ एकगुण, ६ द्विगुण, ७ त्रिगुण, ८ केतुभूतप्रतिग्रह, ९ ससारप्रतिग्रह, १० नन्द्यावर्त, ११ विप्रहाणावर्त ।

यह है वह विप्रहाणश्रेणिका परिकर्म ।

२१. से किं त चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ?

चुयाचुयसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा—

पाढो, आगासपयाणि, केउभूय, रासिबद्ध, एगगुण, दुगुण, तिगुण, केउभूयपडिग्गहो, ससारपडिग्गहो, नदावत्त, चुयाचुयावत्त ।

सेत्त चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ।

२१ च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म क्या है ?

च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म ग्यारह प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

१ पाठ २ आकाशपद ३ केतुभूत ४ राशिबद्ध ५ एकगुण ६ द्विगुण ७ त्रिगुण ८ केतुभूत-प्रतिग्रह ९ ससारप्रतिग्रह १० नद्यावर्त ११ च्युताच्युतावर्त ।

यह है वह च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म ।

२२ इच्चेयाइ सत्त परिकम्माइ छ ससमइयाणि सत्त आजीवियाणि, छ चउक्कणइयाणि सत्त तेरासियाणि । एवामेव सपुव्वावरेण सत्त परिकम्माइ तेसीति भवतीतिमक्खायाइ ।

सेत्त परिकम्मे ।

२२ ये सात परिकर्म हैं—छह स्वसमय से और सातवा आजीवक मत से सम्बद्ध है । छह परिकर्म चार नय वाले है और सातवा तीन राशि/तीन नय वाला है । इस प्रकार कुल मिलाकर इन सात परिकर्मों के तिरासी भेद होते है ।

यह है वह परिकर्म ।

२३ से किं त सुत्ताइ ?

सुत्ताइं अट्ठासीतिभवतीतिमक्खायाइ त जहा—

२३ वह सूत्र क्या है ?

सूत्र अट्ठासी होते है, ऐसा आख्यात है । जैसे कि—

उप्पायपुव्व, अग्गेणीय, वीरिय, अत्थिणत्थिप्पवाय, नाणप्पवाय, सच्चप्पवाय, आयप्पवाय, कम्मप्पवाय, पच्चक्खाण, विज्जाणुप्पवाय, अवझ, पाणाउ, किरियाविसाल, लोगबिंदुसारं ।

१ उत्पादपूर्व, २ अग्रेणीय, ३ वीर्य, ४ अस्ति-नास्तिप्रवाद, ५ ज्ञानप्रवाद, ६ सत्यप्रवाद, ७ आत्मप्रवाद, ८ कर्मप्रवाद, ९ प्रत्याख्यान, १० विद्यानुप्रवाद, ११ अवध्य, १२ प्राणायु, १३ क्रियाविशाल, १४ लोकबिन्दुसार ।

२६. उप्पायपुव्वस्स ण दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२६ उत्पाद-पूर्व के दस वस्तु एव चार चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त है ।

२७ अग्गेणियस्स ण पुव्वस्स चोद्दस वत्थू, बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२७ अग्रेणीय-पूर्व के चौदह वस्तु एव बारह चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त है ।

२८. वीरियस्स ण पुव्वस्स अट्ठ वत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२८ वीर्य-पूर्व के आठ वस्तु एव आठ चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२९. अत्थिणत्थिप्पवायस्स ण पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२९ अस्ति-नास्तिप्रवाद पूर्व के अट्ठारह वस्तु एव दस चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३०. नाणप्पवायस्स ण पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ।

३० ज्ञानप्रवाद-पूर्व के बारह वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३१ सच्चप्पवायस्स ण पुव्वस दो वत्थू पण्णत्ता ।

३१ सत्यप्रवाद-पूर्व के दो वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३२ आयप्पवायस्स ण पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ।

३२ आत्मप्रवाद-पूर्व के सोलह वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३३. कम्मप्पवायस्स ण पुव्वस्स तीस वत्थू पण्णत्ता ।

३३ कर्मप्रवाद-पूर्व के तीस वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३४ पच्चक्खाणस्स ण पुव्वस्स वीस वत्थू पण्णत्ता ।

३४ प्रत्याख्यान-पूर्व के वीस वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

उप्पायपुव्वं, अग्गेणीय, वीरियं, अत्थिणत्थिप्पवाय, नाणप्प-वाय, सच्चप्पवाय, आयप्पवाय, कम्मप्पवाय, पच्चक्खाण, विज्जाणुप्पवाय, अवंझ, पाणाउ, किरियाविसाल, लोग-बिंदुसार ।

१ उत्पादपूर्व, २ अग्रेणीय, ३ वीर्य, ४ अस्ति-नास्तिप्रवाद, ५ ज्ञानप्रवाद, ६ सत्यप्रवाद, ७ आत्मप्रवाद, ८ कर्मप्रवाद, ९ प्रत्याख्यान, १० विद्यानुप्रवाद, ११ अवध्य, १२ प्राणायु, १३ क्रियाविशाल, १४ लोकबिन्दुसार ।

२६. उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२६ उत्पाद-पूर्व के दस वस्तु एव चार चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२७. अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू, बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२७ अग्रेणीय-पूर्व के चौदह वस्तु एव बारह चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२८. वीरियस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२८ वीर्य-पूर्व के आठ वस्तु एव आठ चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त है ।

२९. अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२९ अस्ति-नास्तिप्रवाद पूर्व के अट्ठारह वस्तु एव दस चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३० नाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ।

३० ज्ञानप्रवाद-पूर्व के बारह वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३१ सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस दो वत्थू पण्णत्ता ।

३१ सत्यप्रवाद-पूर्व के दो वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३२ आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ।

३२ आत्मप्रवाद-पूर्व के सोलह वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३३ कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीस वत्थू पण्णत्ता ।

३३ कर्मप्रवाद-पूर्व के तीस वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३४ पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीस वत्थू पण्णत्ता ।

३४ प्रत्याख्यान-पूर्व के बीस वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३५. विज्जाणुप्पवायस्स ण पुव्वस्स पनरस वत्थू पण्णत्ता ।

३५ विद्यानुप्रवाद-पूर्व के पन्द्रह वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३६ अवझस्स ण पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ।

३६ अवन्ध्य-पूर्व के बारह वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३७ पाणाउस्स ण पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता ।

३७ प्राणायु-पूर्व के तेरह वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३८ किरियाविसालस्स ण पुव्वस्स तीस वत्थू पण्णत्ता ।

३८ क्रियाविशाल-पूर्व के तीस वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३९ लोयबिंदुसारस्स ण पुव्वस्स पणुवीस वत्थू पण्णत्ता ।

सेत्त पुव्वगए ।

३९ लोकबिन्दुसार-पूर्व के पच्चीस वस्तु प्रज्ञप्त है ।

यह है वह पूर्वगत ।

४० से किं त अणुओगे ?

अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—

मूलपढमाणुओगे य गडियाणुओगे य ।

४० वह अनुयोग क्या है ?

अनुयोग दो प्रकार का प्रज्ञप्त है । जैसे कि—

मूलप्रथमानुयोग और कडिकानुयोग ।

४१ से किं त मूलपढमाणुओगे ?

मूलपढमाणुओगे—एत्थ ण अरहताण भगवताण पुव्वभवा, देवलोगगमणाणि, आउ, चवणाणि, जम्मणाणि य अभिसेया रायवरसिरीओ, सीयाओ पव्वज्जाओ, तवा य भत्ता, केवलणाणुप्पाया, तित्थपवत्तणाणि य, सघयण, सठाण, उच्चत्त, आउय, वण्णविभागो, सीसा, गणा, गणहरा य, अज्जा, पवत्तिणीओ, सघस्स चउव्विहस्स ज वावि परिमाण,

४१ वह मूलप्रथमानुयोग क्या है ?

मूलप्रथमानुयोग मे अर्हत् भगवान् के पूर्वभव, देवलोकगमन, आयुष्य, च्यवन, जन्म, अभिषेक, राज्य लक्ष्मी, शिविका, प्रव्रज्या, तप और भक्त, केवल-ज्ञानोत्पत्ति, तीर्थ-प्रवर्तन, सहनन, सस्थान, ऊँचाई, आयुष्य, उच्चत्व, आयुष्य, वर्ण-विभाग, शिष्य, गण, गणधर, आर्या, प्रवर्तिनी, चतुर्विध सघ का परिमाण, जिन, मन पर्यव, अवधिज्ञान, सम्यक्त्व, श्रुतज्ञानी, वादी, जिन्होंने अनुत्तर गति पाई

उप्पायपुव्वं, अग्गेणीयं, वीरियं, अत्थिणत्थिप्पवाय, नाणप्पवाय, सच्चप्पवाय, आयप्पवाय, कम्मप्पवाय, पच्चक्खाण, विज्जाणुप्पवाय, अवझ, पाणाउ, किरियाविसाल, लोगबिंदुसार ।

१ उत्पादपूर्व, २ अग्रेणीय, ३ वीर्य, ४ अस्ति-नास्तिप्रवाद, ५ ज्ञानप्रवाद, ६ सत्यप्रवाद, ७ आत्मप्रवाद, ८ कर्मप्रवाद, ९ प्रत्याख्यान, १० विद्यानुप्रवाद, ११ अवध्य, १२ प्राणायु, १३ क्रियाविशाल, १४ लोकबिन्दुसार।

२६. उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२६ उत्पाद-पूर्व के दस वस्तु एव चार चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२७. अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू, बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२७ अग्रेणीय-पूर्व के चौदह वस्तु एव वारह चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२८ वीरियस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू, अट्ठ चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२८ वीर्य-पूर्व के आठ वस्तु एव आठ चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

२९. अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू, दस चूलियावत्थू पण्णत्ता ।

२९ अस्ति-नास्तिप्रवाद पूर्व के अट्ठारह वस्तु एव दस चूलिका-वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३०. नाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ।

३० ज्ञानप्रवाद-पूर्व के वारह वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३१ सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस दो वत्थू पण्णत्ता ।

३१ सत्यप्रवाद-पूर्व के दो वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३२. आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ।

३२ आत्मप्रवाद-पूर्व के सोलह वस्तु प्रज्ञप्त है ।

३३. कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीस वत्थू पण्णत्ता ।

३३ कर्मप्रवाद-पूर्व के तीस वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

३४ पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ।

३४ प्रत्याख्यान-पूर्व के वीस वस्तु प्रज्ञप्त हैं ।

पण्णविज्जति दंसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति ।

है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

सेत्त गडियाणुश्रोगे ?

यह है वह कण्डिकानुयोग ।

४३ से किं त चूलियाश्रो ?

चूलियाश्रो—श्राइल्लाण चउण्ह पुव्वाण चूलियाश्रो, सेसाइ पुव्वाइ श्रचूलियाइ ।

सेत्त चूलियाश्रो ।

४३ वह चूलिका क्या है ?

प्रथम चार पूर्वों मे चूलिकाएँ हैं, शेष पूर्वो मे चूलिकाएँ नही हैं ।

यह है वह चूलिका ।

४४ दिट्ठिवायस्स ण परित्ता वायणा सखेज्जा श्रणुश्रोगदारा सखेज्जाश्रो पडिवत्तीश्रो सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाश्रो निज्जुत्तीश्रो सखेज्जाश्रो सगहणीश्रो ।

४४ दृष्टिवाद की वाचनाएँ परिमित हैं, श्रनुयोगद्वार सख्येय है, प्रतिपत्तिया सख्येय हैं, वेष्टन सख्येय है, श्लोक सख्येय हैं, निर्युक्तिया सख्येय हैं, सग्रहणियाँ सख्येय है ।

से ण श्रगट्ठयाए बारसमे श्रगे एगे सुयक्खधे चोद्दस पुव्वाइ सखेज्जा वत्थू सखेज्जा चूलवत्थू सखेज्जा पाहुडा सखेज्जा पाहुडपाहुडा सखेज्जाश्रो पाहुडियाश्रो सखेज्जाश्रो पाहुडपाहुडियाश्रो सखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेण, सखेज्जा श्रक्खरा श्रणता गमा श्रणता पज्जवा ।

यह श्रग की श्रपेक्षा से बारहवा श्रग है । इसके एक श्रुतस्कन्ध, चौदह पूर्व, सख्येय वस्तु, सख्येय चूलिका वस्तु, सख्येय प्राभृत, सख्येय प्राभृत-प्राभृत, सख्येय प्राभृतिका, सख्येय प्राभृत-प्राभृतिका, पद-प्रमाण से सख्येय शत-सहस्र/लाख पद, सख्येय श्रक्षर, श्रनन्त गम श्रौर श्रनन्त पर्याय हैं ।

परित्ता तसा श्रणता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण [illegible] श्राघ-
[illegible] ने प [illegible]
[illegible] द

इसमे परिमित त्रस जीवो, श्रनन्त स्थावर जीवो तथा शाश्वत, कृत, निबद्ध श्रौर निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भावो का श्राख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है,

जिण-मणपज्जव-ओहिनाणी, समत्तसुयनाणिणो य, वाई, अणुत्तरगई य जत्तिआ, जत्तिया सिद्धा, पाओवगया य जे जहिं जत्तियाइ भत्ताइ छेयइत्ता अतगडा मुणिवरुत्तमा तम-रओघविप्पमुक्का सिद्धिपहमणु-त्तर य पत्ता।

है, जितने सिद्ध हुए हैं, जिन्होने प्रायोपगमन अनशन किया है तथा जितने भक्तो/भोजन-समयो का छेदन कर जो उत्तम मुनिवर अन्तकृत / मोक्षगामी हुए हैं, तम और रज से विप्रमुक्त होकर अनुत्तर सिद्धि-पथ को प्राप्त हुए हैं उनका आख्यान है।

एए अण्णे य एवमादी भावा मूलपढमाणुओगे कहिया आघ-विज्जति पण्णविज्जति परू-विज्जति दसिज्जति निद-सिज्जति उवदसिज्जति।

ये तथा इस प्रकार के अन्य भावो का मूलप्रथमानुयोग मे कथित आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है।

सेत्त मूलपढमाणुओगे।

यह है वह मूलप्रथमानुयोग।

४२ से किं त गडियाणुओगे ?

गडियाणुओगे अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—

कुलगरगडियाओ, तित्थगर-गडियाओ, गणधरगडियाओ, चक्कवट्टिगडियाओ, दसार-गडियाओ, बलदेवगडियाओ, वासुदेवगडियाओ, हरिवस-गडियाओ, भद्दबाहुगडियाओ, तवोकम्मगडियाओ, चित्ततर-गडियाओ, उस्सप्पिणीगडि-याओ, अमर-नर-तिरिय-निरय गइ-गमण-विविह-परियट्टणाणु-ओगे, एवमाइयाओ गडियाओ आघविज्जति पण्णविज्जति

४२ वह कण्डिकानुयोग क्या है ?

कण्डिकानुयोग अनेकविध प्रज्ञप्त है। जैसे कि—

कुलकरकण्डिका, तीर्थंकरकण्डिका, गणधरकण्डिका, चक्रवर्तीकण्डिका, दशारकण्डिका, बलदेवकण्डिका, वासुदेवकण्डिका, हरिवशकण्डिका, भद्रबाहुकण्डिका, तप कर्मकण्डिका, चित्रान्तरकण्डिका, उत्सर्पिणी-कण्डिका, अवसर्पिणीकण्डिका, देव, मनुष्य, तिर्यञ्च और नरक गति मे गमन तथा विविध परिवर्तन का अनुयोग आदि कडिकाओ का आख्यान किया गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया

इच्चेय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरत ससारकतार विइवयति ।

वर्तमान काल मे परिमित जीव इस द्वादशाग गणिपिटक की आज्ञा की आराधना कर चातुरत ससार-कातार को पार करते हैं ।

इच्चेय दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरत ससारकतार विइवइस्सति ।

भविष्य काल मे अनन्त जीव इस द्वादशाग गणिपिटक की आज्ञा की आराधना कर चातुरत ससार-कातार को पार करेंगे ।

४७ दुवालसगे ण गणिपिडगे ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ । भुविं च, भवइ य, भविस्सति य—धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।

४७ यह द्वादशाग गणिपिटक न कभी था—ऐसा नही है, न कभी है—ऐसा नही है, न कभी होगा—ऐसा भी नही है । वह था, है और होगा—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य ।

४८ से जहाणामए पच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सति । भुविं च, भवइ य, भविस्सति य । धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा ।

४८ जैसे पाच अस्तिकाय कभी नही थे—ऐसा नही है, कभी नही है—ऐसा नही है, कभी नही होगे—ऐसा भी नही है । वे थे, हैं और होगे—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य ।

एवामेव दुवालसगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ । भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य । धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।

इसी प्रकार द्वादशाग गणिपिटक कभी नही था—ऐसा नही है, कभी नही है—ऐसा नही है, कभी नही होगा—ऐसा भी नही है । वह था, है और होगा—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य ।

४९ एत्थ ण दुवालसगे गणिपिडगे अणता भावा अणता अभावा

४९ इस द्वादशाग गणिपिटक मे अनन्त भावो, अनन्त अभावो, अनन्त

ज्जति उवदसिज्जति ।

से एवं आया एव णाया एव विण्णाया एवं चरण-करण-परूवयणा आघविज्जति पण्ण-विज्जति परूविज्जति दसि-ज्जति निदसिज्जति उवदसि-ज्जति ।

सेत्त दिट्ठिवाए ।

सेत्त दुवालसगे गणिपिडगे ।

४५ इच्चेय दुवालसग गणिपिडगं अतीते काले अणता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टिसु ।

इच्चेय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टति ।

इच्चेय दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टि-स्सति ।

४६ इच्चेय दुवालसग गणिपिडग अतीते काले अणता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरत ससारकतार विइवइसु ।

प्ररूपण किया गया है, किया गया है, निदर्शन किया है, उपदर्शन किया गया है ।

यह आत्मा है, ज्ञाता है, विज्ञा इस प्रकार चरण-करण-प्ररू का इसमे आख्यान किया ग प्रज्ञापन किया गया है, प्र किया गया है, दर्शन किया ग निदर्शन किया गया है, उप किया गया है ।

यह है वह दृष्टिवाद ।

यह है वह द्वादशाग गणिपि

४५ अतीत काल मे अनन्त जीवो द्वादशाग गणिपिटिक की की विराधना कर चातुरत स कातार मे अनुपर्यटन किया ।

वर्तमान काल मे परिमित जी द्वादशाग गणिपिटक की आ विराधना कर चातुरत स कातार मे अनुपर्यटन करते

भविष्य काल मे अनन्त जी द्वादशाग गणिपिटिक की आ विराधना कर चातुरत स कातार मे अनुपर्यटन करेंगे

४६ अतीत काल मे अनन्त जीवो द्वादशाग गणिपिटक की आ आराधना कर चातुरत कातार को पार किया था ।

इच्चेय दुवालसग गणिपिडग पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरत ससारकतार विइवयति ।

वर्तमान काल मे परिमित जीव इस द्वादशाग गणिपिटक की आज्ञा की आराधना कर चातुरत समार-कातार को पार करते है ।

इच्चेय दुवालसग गणिपिडग अणागए काले अणता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरत ससारकतार विइवइस्सति ।

भविष्य काल मे अनन्त जीव इस द्वादशाग गणिपिटक की आज्ञा की आराधना कर चातुरत समार-कातार को पार करेंगे ।

४७. दुवालसगे ण गणिपिडगे ण कयाइ णासी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ । भुविं च, भवइ य, भविस्सति य— धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।

४७ यह द्वादशाग गणिपिटक न कभी था—ऐसा नही है, न कभी है—ऐसा नही है, न कभी होगा—ऐसा भी नही है । वह था, है और होगा—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य ।

४८ से जहाणामए पच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सति । भुविं च, भवइ य, भविस्सति य । धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा ।

४८ जैसे पाच अस्तिकाय कभी नही थे —ऐसा नही है, कभी नही है—ऐसा नही है, कभी नही होगे—ऐसा भी नही है । वे थे, हैं और होगे—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य ।

एवामेव दुवालसगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसी, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ । भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य । धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।

इसी प्रकार द्वादशाग गणिपिटक कभी नही था—ऐसा नही है, कभी नही है—ऐसा नही है, कभी नही होगा—ऐसा भी नही है । वह था, है और होगा—ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य ।

४९ एत्थ ण दुवालसगे गणिपिडगे अणता भावा अणता अभावा

४९ इस द्वादशाग गणिपिटक मे अनन्त भावो, अनन्त अभावो, अनन्त

अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणता कारणा अणता जीवा अणता अजीवा अणता भवसिद्धिया अणता अभव-सिद्धिया अणता सिद्धा अणता असिद्धा आघविज्जति पण्ण-विज्जति परूविज्जति दसि-ज्जति निदसिज्जति उव-दसिज्जति ।

हेतुओ, अनन्त अहेतुओ, अनन्त कारणो, अनन्त अकारणो, अनन्त जीवो, अनन्त अजीवो, अन्नत भव-सिद्धिको, अनन्त अभवसिद्धिको, अनन्त सिद्धो, अनन्त असिद्धो का आख्यान गया है, प्रज्ञापन किया गया है, प्ररूपण किया गया है, दर्शन किया गया है, निदर्शन किया गया है, उपदर्शन किया गया है ।

पण्णइ-समवाय

१. दुवे रासी पण्णत्ता, त जहा—
जीवरासी अजीवरासी य ।

२ जीवरासी दुविहा पण्णत्ता । त जहा—
ससारसमावन्नगा य असंसार-समावन्नगा य ।

३. अजीवरासी दुविहे पण्णत्ते, त जहा—
रूविअजीवरासी अरूविअजीव-रासि य ।

४ से किं त अरूविअजीवरासी ?
अरूविअजीवरासी दसविहे पण्णत्ते, त जहा—
१ धम्मत्थिकाए,
२ धम्मत्थिकायस्स देसे,
३ धम्मत्थिकायस्स पदेसा,
४ अधम्मत्थिकाए,
५ अधम्मत्थिकायस्स देसे,
६ अधम्मत्थिकायस्स पदेसा,
७ आगासत्थिकाए,
८ आगासत्थिकायस्स देसे,
९ आगासत्थिकायस्स पदेसा,
१० अद्धासमए ।

५ से किं त अणुत्तरोववाइआ ?

प्रकीर्ण-समवाय

१ राशि दो प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
जीव राशि और अजीव राशि ।

२ जीव-राशि द्विविध प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
ससार-समापन्नक/सासारिक जीव और असंसार-समापन्नक / मुक्त जीव ।

३ अजीव-राशि द्विविध प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
रूपी-अजीव-राशि और अरूपी-अजीव-राशि ।

४ वह अरूपी अजीव-राशि क्या है ?
अरूपी अजीव-राशि दस प्रकार की प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
१ धर्मास्तिकाय,
२ धर्मास्तिकाय-देश,
३ धर्मास्तिकाय-प्रदेश,
४ अधर्मास्तिकाय,
५ अधर्मास्तिकाय-देश,
६ अधर्मास्तिकाय-प्रदेश,
७ आकाशास्तिकाय,
८ आकाशास्तिकाय-देश,
९ आकाशास्तिकाय-प्रदेश,
१० अध्वा समय ।

५ अनुत्तरोपपातिक देव कितने है ?

अणुत्तरोववाइआ पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—	अनुत्तरोपपातिक देवो के पाच प्रकार प्रज्ञप्त हैं। जैसे कि—
विजय-वेजयत-जयत-अपराजिय-सव्वट्ठसिद्धिया।	विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धिक।
सेत्त अणुत्तरोववाइआ।	ये अनुत्तरोपपातिक देव हैं।
सेत्तं पंचिदियससारसमावण्ण-जीवरासी।	यह पचेन्द्रिय-ससार-समापन्न-जीव-राशि है।
६ दुविहा णेरइया पण्णत्ता, त जहा—	६ नैरयिक दो प्रकार के प्रज्ञप्त है। जैसे कि—
पज्जत्ता य अपज्जत्ता य।	पर्याप्त और अपर्याप्त।
एव दडओ भणियव्वो जाव वेमाणियत्ति।	इसी प्रकार वैमानिक तक के दण्डको के लिए यही पतिपाद्य है।
७ इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए केवइय ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता।	७ इस रत्नप्रभा पृथ्वी मे कितने नरक और कितना अवगाहन प्रज्ञप्त है?
गोयमा! इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए असीउत्तरजोयण-सयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स ओगाहेत्ता हेट्ठा चेग जोअणसहस्स वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ ण रयणप्पहाए पुढवीए णेरइयाण तीस णिरयावाससय-सहस्सा भवंतीति मक्खाय।	गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के एक शत-सहस्र/लाख अस्सी हजार योजन प्रमाण बाहल्य से ऊपर एक हजार योजन का अवगाहन कर एव नीचे से एक हजार योजन का वर्जन कर, मध्य के एक शत-सहस्र/लाख अठत्तर हजार योजन प्रमाण रत्नप्रभा पृथ्वी मे नैरयिको के तीस शत-सहस्र/लाख नरकावास होते हैं, ऐसा व्याख्यात करता हूँ।
ते ण णरया अतो वट्टा बाहिं चउरसा अहे खुरप्प-सठाण-सठिया णिच्चधयारतमसा-वव-गयगह-चद-सूर-णक्खत्त-जोइस-	वे नरक अन्तर् मे वृत्त, बाहर मे चतुरस्र / चतुष्कोण और नीचे क्षुरप्र-सस्थानो से सस्थित, अन्धकार से नित्य तमोमय, ग्रह, चन्द्र,

पहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मस-चिक्खिल्ललित्ताणु - लेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगधा काऊअगणि-वण्णाभा कक्खड-फासा दुरहियासा असुहा णिरया असुहाओ णरएसु वेयणाओ ।

सूर्य, नक्षत्र और ज्योतिष् की प्रभा से शून्य, मेद, चर्बी, मवाद, रुधिर और मास के कीचड से अनुलिप्त तल वाले, अशुचि, विष्टा-युक्त, अत्यन्त दुर्गन्ध वाले, कापोत-अग्निवर्ण की आभा वाले, कर्कश-स्पर्श वाले और अत्यधिक असह्य है। वे नरक अशुभ हैं और उन नरको मे अशुभ वेदनाएँ हैं ।

८ एव सत्तवि भणियव्वाओ ज जासु जुज्जइ ।

८ इसी प्रकार सातो नरको के बारे मे जहा जो उपयुक्त हो, कहना चाहिए ।

आसीय वत्तीस,
अट्ठावीस तहेव वीस च ।
अट्ठारस सोलसग,
अट्ठुत्तरमेव वाहल्ल ॥

[सप्त] नरकावासो का वाहल्य क्रमश [एक लाख] अस्सी [हजार], [एक लाख] वत्तीस [हजार], [एक लाख] अट्ठाईस [हजार], [एक लाख] वीस [हजार], [एक लाख] अठारह [हजार], [एक लाख] सोलह [हजार] और [एक लाख] आठ [हजार योजन है] ।

तीसा य पण्णवीसा,
पण्णरस दसेव सयसहस्साइ ।
तिण्णेग पचूण,
पचेव अणुत्तरा णरगा ॥

[नरकावासो की सख्या क्रमश इस प्रकार है—]
तीस शत-सहस्र/लाख, पच्चीस शत-सहस्र/लाख, पन्द्रह शत-सहस्र/लाख, दस शत-सहस्र/लाख, तीन शत-सहस्र/लाख, निन्यानवे हजार नौ सौ पचानवे और पाच अनुत्तर नरकावास ।

९ सत्तमाए ण पुढवीए केवइय ओगाहेत्ता केवइया णिरया पण्णत्ता ?

९ सातवीं पृथ्वी मे कितने नरक और कितना अवगाहन प्रज्ञप्त है ?

गोयमा ! सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवण्ण जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता हेट्ठा वि अद्धतेवण्ण जोयणसहस्साइ वज्जेता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु, एत्थ ण सत्तमाए पुढवीए नेरइयाण पच अणुत्तरा महइमहालया महाणिरया पण्णत्ता, तं जहा—

काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे नाम पचमए।

ते ण नरया वट्टे य तसा य अहे खुरप्प-सठाण-सठिया णिच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूर-णक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मस-चिक्खिल्ल-लित्ताणु-लेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुहा नरगा असुहाओ नरएसु वेयणाओ।

गौतम! सातवी पृथ्वी के शत-सहस्र/एक लाख आठ हजार योजन प्रमाण बाहल्य से ऊपर साढे बावन हजार योजन का अवगाहन कर तथा नीचे से साढे बावन हजार योजन का वर्जन कर तथा मध्य के तीन हजार योजन मे सातवी पृथ्वी के नैरयिको के अनुत्तर तथा बहुत विशाल पाच महानरकावास हैं। जैसे कि—

काल, महाकाल, रौरव, महारौरव और अप्रतिष्ठान।

वे नरक वृत्त, त्रिकोण एव नीचे क्षुरप्र-सस्थानो मे सस्थित हैं। वे अन्धकार से नित्य तमोमय, ग्रह, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र और ज्योतिष् की प्रभा से शून्य, मेद, चर्बी, मवाद, रुधिर मास के कीचड से अनुलिप्त तल वाले, अशुचि, विष्टा-युक्त, अत्यन्त दुर्गन्ध वाले, कापोत अग्निवर्ण की आभा वाले, कर्कश-स्पर्श वाले और अत्यधिक असह्य हैं। वे नरक अशुभ है और उन नरको मे अशुभ वेदनाएँ हैं।

१०. केवइया ण भते ! असुरकुमारावासा पण्णत्ता ?

गोयमा! इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेग जोयणसहस्स वज्जेत्ता मज्झे

१० भते! असुरकुमारो के आवास कितने प्रज्ञप्त हैं?

गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के एक शत-सहस्र/लाख अस्सी हजार योजन प्रमाण बाहल्य से ऊपर एक हजार योजन का अवगाहन कर तथा नीचे से एक हजार योजन

गोयमा ! सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवण्ण जोयणसहस्साइ ओगाहेत्ता हेट्ठा वि अद्धतेवण्ण जोयणसहस्साइ वज्जेता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु, एत्थ ण सत्तमाए पुढवीए नेरइयाण पच अणुत्तरा महइमहालया महाणिरया पण्णत्ता, त जहा—

गौतम ! सातवी पृथ्वी के शत-सहस्र/एक लाख आठ हजार योजन प्रमाण बाहल्य से ऊपर साढे बावन हजार योजन का अवगाहन कर तथा नीचे से साढे बावन हजार योजन का वर्जन कर तथा मध्य के तीन हजार योजन मे सातवी पृथ्वी के नैरयिको के अनुत्तर तथा बहुत विशाल पाच महानरकावास हैं। जैसे कि—

काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे नाम पचमए ।

काल, महाकाल, रौरव, महारौरव और अप्रतिष्ठान ।

ते ण नरया वट्टे य तसा य अहे खुरप्प-सठाण-सठिया णिच्चधयारतमसा ववगयगह-चदसूर-णक्खत्त-जोइसपहा मेद-वसा-पूय-रुहिर-मस-चिक्खिल्ल-लित्ताणु-लेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगधा काऊअगणि-वण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुहा नरगा असुहाओ नरएसु वेयणाओ ।

वे नरक वृत्त, त्रिकोण एव नीचे क्षुरप्र-सस्थानो मे सस्थित हैं। वे अन्धकार से नित्य तमोमय, ग्रह, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र और ज्योतिष् की प्रभा से शून्य, मेद, चर्बी, मवाद, रुधिर मास के कीचड से अनुलिप्त तल वाले, अशुचि, विष्टा-युक्त, अत्यन्त दुर्गन्ध वाले, कापोत अग्निवर्ण की आभा वाले, कर्कश-स्पर्श वाले और अत्यधिक असह्य है। वे नरक अशुभ हैं और उन नरको मे अशुभ वेदनाएँ हैं।

१०. केवइया ण भते ! असुरकुमारावासा पण्णत्ता ?

१० भते ! असुरकुमारो के आवास कितने प्रज्ञप्त है ?

गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एग जोयणसहस्स ओगाहेत्ता हेट्ठा चेग जोयणसहस्स वज्जेत्ता मज्झे

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के एक शत-सहस्र/लाख अस्सी हजार योजन प्रमाण बाहल्य से ऊपर एक हजार योजन का अवगाहन कर तथा नीचे से एक हजार योजन

अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से, एत्थ ण रयणप्पहाए पुढवीए चउसट्ठि असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

का वर्जन कर मध्य के एक शत-सहस्र/लाख अठत्तर हजार योजन रत्नप्रभा पृथ्वी मे असुर-कुमारो के चौसठ शत-सहस्र/लाख आवास हैं ।

ते ण भवणा बाहिं वट्टा अतो चउरसा अहे पोक्खर-कण्णिया-सठाण-सठिया उक्किण्णतर-विपुल - गभीर - खात - फलिया अट्टालय - चरिय - दारगोउर-कवाड - तोरण - पडिदुवार-देस-भागा जतमुसल-मुसु ढि-सतग्घि-परिवारिया अउज्झा अडयाल-कोट्ठय - रइया अडयाल - कय-वणमाला लाउल्लोइय-महिमा गोसीस - सरसरत्तचदण - दद्दर-दिण्णपचगुलितला कालागुरु-पवरकु दुरुक्क - तुरुक्क-डज्झत-धूव-मघमघेंत-गधुद्धुयाभिरामा सुगधि-वरगध-गधिया गधवट्टि-भूया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला विति-मिरा विसुद्धा सप्पहा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिस-णिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

वे भवन बाहर से वृत्त, भीतर से चतुरस्र/चतुष्कोण, नीचे से पुष्कर-कर्णिका सस्थानो मे सस्थित है । वे खोद कर बनाई हुई विपुल और गम्भीर खाई तथा परिखा-युक्त, देश-भाग मे अट्टालक, चरिका, गोपुर-द्वार, कपाट, तोरण और प्रतिद्वार वाले, यत्र, मुशल, मुसु ढी और शतघ्नी से परिपाटित, अयोध्य / अपराजित, अडतालीस कोठो से रचित, अडतालीस प्रकार की वनमालाओ से युक्त, रग-उपले-पित, गोशीर्ष और सरस-रक्तचन्दन के पाच अगुली-युक्त हस्ततल के सघन छापे लगे हुए, कालागुरु, प्रवर कुन्दुरुष्क (धूप) तथा तुरुष्क (दशाग धूप) के जलने से निकले हुए धु ए के महकते गन्ध मे अभिराम, सुगन्धो चूर्णों मे सुगन्धित गन्धगुटिका जैसे, स्वच्छ, चिकने, घुटे हुए, घिसे हुए, प्रमार्जित, नीरज, निर्मल, तिमिर-रहित, विशुद्ध, प्रभासहित, मरिचि-युक्त, उद्योतयुक्त, आनन्द-कर, दर्शनीय, अभिरूप और प्रति-रूप हैं ।

११ एव जस्स ज कमए त तस्स,

११ इसी प्रकार जिसके बारे में जहा

जं जं गाहाहिं भणिय तह चेव वण्णओ—

जो कथ्य हो, उनका वहा-वहा गाथाओं से कहना चाहिए और उनका वैसा ही वर्णन करना चाहिए।

चउसट्ठी असुराण,
चउरासीइ च होइ नागाणं।
बावत्तरिं सुवन्नाण,
वायुकुमाराण छण्णउति ॥

असुरकुमारो के चौसठ [लाख], नागकुमारो के चौरासी [लाख], सुपर्णकुमारो के बहत्तर [लाख] और वायुकुमार के छानवे [लाख] आवास है।

दीवदिसाउदहीण,
विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीण।
छण्हंपि जुवलयाण,
छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥

दीप, दिशा, उदधि विद्युत, स्तनित और अग्नि—इन छह युगलो के छिहत्तर-छिहत्तर शत-सहस्र/लाख आवास हैं।

१२. केवइया ण भते ! पुढवी-काइयावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा पुढवी-काइया वासा पण्णत्ता।

१२ भते ! पृथ्वीकाय के आवास कितने प्रज्ञप्त है ?
गौतम ! पृथ्वीकाय के आवास असख्य प्रज्ञप्त है।

१३ एव जाव मणुस्सत्ति।

१३ इसी प्रकार मनुष्य तक के आवास प्रज्ञप्त है ?

१४. केवइया ण भते ! वाणमतरा-वासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे ण रयणप्प-हाए पुढवीए रयणामयस्स कडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एग जोयणसय ओगा-हेत्ता हेट्ठा चेगं जोयण-सय वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणएसु, एत्थ णं वाण-मतराण देवाण तिरियमसखेज्जा

१४ भते ! वानमन्तर देवो के आवास कितने प्रज्ञप्त है ?
गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्नमय काण्ड के एक हजार योजन प्रमाण बाहल्य (मोटाई) से ऊपर एक सौ योजन का अवगाहन कर तथा नीचे से सौ योजन का वर्जन कर मध्य के शेष आठ सौ योजन मे वानमतर देवो के असख्य शत-सहस्र/लाख तिरछे भौमेय नगरा-

भोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

ते ण भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा अतो चउरसा, एव जहा भवणवासीण तहेव नेयव्वा, नवर—पडागमालाउला सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

१५ केवइया ण भते ! जोइसियाण विमाणावासा पण्णत्ता ?

गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउयाइ जोयणसयाइ उड्ढ उप्पइत्ता, एत्थ ण दसुत्तरजोयणसयबाहल्ले तिरिय जोइसविसए जोइसियाण देवाण असखेज्जा जोइसियविमाणावासा पण्णत्ता ।

ते ण जोइसियविमाणावासा अब्भुग्गयमूसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजय-वेजयती-पडाग- छत्तातिछत्तकलिया, तु गा गगणतलमणुलिहतसिहरा जालतररयणपजरुम्मिलितव्व मणि-कणगथूभियागा विगसिय-सयपत्त-पु डरीय - तिलय - रयणद्धचदचित्ता अतो बहिं च सण्हा तवणिज्ज-वालुगा-पत्थडा सुहफासा

वास प्रज्ञप्त हैं ।

वे भौमेय नगर बाहर से वृत्त, भीतर से चतुरस्र/चतुष्कोण और जैसा भवनवासियो का है, वैसा ही ज्ञातव्य है। वे पताका की माला से आकुल, सुरम्य, प्रासादीय/आनन्दकर, दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप हैं ।

१५ भते ! ज्योतिष्क देवो के विमानावास कितने प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसम रमणीय भूमिभाग से सात सौ नब्बे योजन ऊपर जाने पर वहा एक सौ दस योजन के बाहल्य मे तिरछे ज्योतिष्क क्षेत्र मे ज्योतिष्क देवो के असख्य ज्योतिष्क विमानावास प्रज्ञप्त हैं ।

वे ज्योतिष्क विमानावास अभ्युद्गत, नि सृत, प्रभासित विविध मणि और रत्नो के भीत्तिचित्रो वाले, वातप्रकम्पित विजय-वैजयन्ती पताका तथा छत्रातिछत्रो से शोभित और उत्तु ग हैं। गगनतल स्पर्शी शिखर वाले, खिडकियो के अन्तराल मे, पिंजरे से निकाल कर रखी हुई वस्तु की भाति, मणि और स्वर्ण की स्तूपिका वाले, विकसित शतपत्र पु डरीक

सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

कमल, तिलक और रत्नमय अर्द्ध-चन्द्रो से चित्रित, अन्तर और वाहर से कोमल, स्वर्णमय वालुकाओ के प्रस्तट वाले, सुख-स्पर्श वाले, सुन्दर रूप वाले, प्रासादीय/आनन्दकर, दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप हैं ।

१६ केवइया ण भंते ! वेमाणियावासा पण्णत्ता ?

गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढ चदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण वीइवइत्ता बहूणि जोयणाणि बहूणि जोयणसयाणि बहूणि जोयणसहस्साणि बहूणि जोयणसयसहस्साणि बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूरं वीइवइत्ता, एत्थ ण वेमाणियाण देवाण सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिंद-बम-लतग-सुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय आरणच्चुएसु गेवेज्जमणुत्तरेसु य चउरासीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइ सहस्सा तेवीस च विमाणा भवतीतिमक्खाया ।

१६ भते ! वैमानिक देवो के आवास कितने प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के वहु समतल भूमिभाग से ऊपर चन्द्र, सूर्य, ग्रहगण, नक्षत्र और तारारूपो का उल्लघन कर अनेक योजन, अनेक सौ योजन, अनेक लाख योजन, अनेक कोटि योजन, अनेक कोटा-कोटि योजन ऊपर दूर जाने पर वैमानिक देवो के सौधर्म ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत और अच्युत देवलोक के तथा नौ ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर विमानो के चौरासी लाख सतानवे हजार तेईस विमान है, ऐसा आख्यात है ।

ते ण विमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा

ये अर्चिर्माली/सूर्य प्रभा वाले, प्रकाशपुज आभा वाले, अरज, नीरज, निर्मल, तिमिर-रहित,

विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णिप्पंका णिक्ककडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

विशुद्ध, सर्वरत्नमय, स्वच्छ चिकने, घुटे हुये, घिसे हुए, प्रमार्जित, निष्पङ्क, निष्कटक छाया वाले, प्रभा-सहित, मरीचि-युक्त, उद्योतयुक्त, प्रासादीय/आनन्दकर, दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप है।

१७. सोहम्मे ण भंते ! कप्पे केवइया विमाणावासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

१७ भंते ! सौधर्म-देवलोक में कितने विमानावास प्रज्ञप्त है ?
गौतम ! बत्तीस शत-सहस्र/लाख विमानावास प्रज्ञप्त है।

१८ एव ईसाणाइसु अट्ठावीस बारस अट्ठ चत्तारि—एयाइ सयसहस्साइ, पण्णास चत्तालीस छ—एयाइ सहस्साइ, आणए पाणए चत्तारि, आरणच्चुए तिण्णि—एयाणि सयाणि ।
एव गाहाहिं भणियव्व—

१८ इसी प्रकार ईशान-देवलोक आदि मे क्रमश अट्ठाईस शत-सहस्र/लाख, बारह शत-सहस्र/लाख, आठ शत-सहस्र/लाख, चार शत-सहस्र/लाख, पचास हजार, चालीस हजार, छह हजार, आनत और प्राणत मे चार सौ, आरण और अच्युत मे तीन सौ [विमानावास] हैं।

बत्तीसट्ठावीसा,
बारस अट्ठ चउरो सयसहस्सा ।
पण्णा चत्तालीसा,
छच्चसहस्सा सहस्सारे ॥

आणयपाणयकप्पे,
चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि ।
सत्त विमाणसयाइ,
चउसुवि एएसु कप्पेसु ॥

एक्कारसुत्तर हेट्ठिमेसु,
सत्तुत्तर च मज्झिमए ।

इसी प्रकार गाथाओ मे कहा गया है—
१ बत्तीस लाख, २ अट्ठाईस लाख, ३ बारह लाख, ४ आठ लाख, ५ चार लाख, ६ पचास हजार, ७ चालीस हजार, ८ छह हजार, ९-१० चार सौ, ११-१२ तीन सौ ।
[९-१२]—इन चार कल्पो मे सात सौ विमान है।
अधस्तन [ग्रैवेयको] मे नौ सौ

सयमेग उवरिमए,
पचेव अणुत्तरविमाणा ।।

निन्यान्वे, मध्यम मे एक सौ सात, उपरीतन मे सौ विमानावास है। अनुत्तर देवलोक के पाच विमानावास है।

१६. नेरइयाणं भते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइं उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता।

१६ भते ! नैरयिको की कितने काल की स्थिति प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत दस हजार वर्ष और उत्कृष्टत तैंतीम सागरोपम स्थिति प्रज्ञप्त है।

२०. अपज्जत्तगाण भते ! नेरइयाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त।

२० भते ! अपर्याप्तक नैरयिको की कितने काल की स्थिति प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्टत भी अन्तर्मुहूर्त है।

२१. पज्जत्तगाण भते ! नेरइयाण केवइयं काल ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तूणाइ।

२१ भते ! पर्याप्तक नैरयिको की कितने काल की स्थिति प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत दम हजार वर्ष मे अन्तर्मुहूर्त्त न्यून और उत्कृष्टत तैंतीस सागरोपम मे अन्तर्मुहूर्त्त न्यून।

२२. इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए, एव जाव विजय-वेजयत-जयत-अपराजियाण भते ! देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण बत्तीस सागरोवमाइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ।

२२ भन्ते ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की यावत् विजय, वैजयन्त, जयत, और अपराजित देवो की कितने काल की स्थिति प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत बत्तीस सागरोपम और उत्कृष्टत तैंतीस सागरोपम।

२३ सव्वट्ठे जहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

२४ कति ण भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—

ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए ।

२५ ओरालियसरीरे ण भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—

एगिंदियओरालियसरीरे जाव गब्भवक्कंतियमणुस्स-पंचिंदिय-ओरालियसरीरे य ।

२६ ओरालियसरीरस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं ।

२७ एवं जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियपमाणं तहा निरवसेसं । एवं जाव मणुस्सेत्ति उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं ।

२८ कइविहे णं भंते ! वेउव्वियसरीरे पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते—एगिंदिय-वेउव्वियसरीरे य पंचिंदियवेउव्वियसरीरे य ।

गौतम ! दो प्रकार का प्रज्ञप्त है—एकेन्द्रिय-वैक्रिय-शरीर और पञ्चेन्द्रिय-वैक्रिय-शरीर ।

२९. एवं जाव सणकुमारे आढत्तं जाव अणुत्तरा भवधारणिज्जा तेसिं रयणी रयणी परिहायइ ।

२९ इस प्रकार सनत्कुमार कल्प से लेकर अनुत्तर विमानो तक भवधारणीय शरीर है, जिनकी अवगाहना एक-एक रत्नि कम होती है ।

३०. आहारयसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ?

३० भते ! आहारक शरीर कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ।

गौतम ! एक आकार वाला प्रज्ञप्त है ।

जइ एगागारे पण्णत्ते, किं मणुस्सआहारयसरीरे ? अमणुस्सआहारयसरीरे ?

[भते !] यदि एक आकार वाला प्रज्ञप्त है, तो क्या वह मनुष्य-आहारक-शरीर है या अमनुष्य-आहारक-शरीर ?

गोयमा ! मणुस्सआहारयसरीरे, णो अमणुस्सआहारगसरीरे ।

गौतम ! वह मनुष्य-आहारक-शरीर है, अमनुष्य-आहारक-शरीर नही ।

जइ मणुस्सआहारयसरीरे, किं गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे ? समुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे ?

[भते !] यदि मनुष्य-आहारक-शरीर है, तो क्या वह गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है या सम्मूर्च्छिम-मनुष्य-आहारक-शरीर है ?

गोयमा ! गब्भवक्कंतियमणुस्सआहारयसरीरे नो समुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे ।

गौतम ! वह गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है, सम्मूर्च्छिम - मनुष्य - आहारक शरीर नही ।

जइ गब्भवक्कतियमणुस्सआहारगसरीरे, किं कम्मभूमगगब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे? अकम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे ?

[भंते !] यदि गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है या अकर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर ?

गोयमा ! कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे, नो अकम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे ।

गौतम ! वह कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है, अकर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर नहीं ।

जइ कम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्सआहारयसरीरे, किं सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे? असखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे ?

[भंते !] यदि कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर है या असख्येय-वर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक-शरीर ?

गोयमा! सखेज्जवासाउयकम्मभूमग - गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे, नो असखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्सआहारयसरीरे ।

गौतम ! वह सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारक-शरीर है, असख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर नहीं ।

जइ सखेज्जवासाउय - कम्मभूमग - गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे, किं पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे? अपज्जत्त य- सखेज्जावासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारयसरीरे ?

[भंते !] यदि सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह पर्याप्तक - सख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर है या अपर्याप्तक-सख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य - आहारकशरीर है ?

गोयमा! पज्जत्तयसंखेज्जवासा-उय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे, नो अपज्जत्तय - संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्कतिय-मणुस्स आहारयसरीरे ?

गौतम ! यह पर्याप्तक-सख्येयवर्षा-युष्क - कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारक-शरीर है, अपर्या-प्तक-सख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारक शरीर नही है।

जइ पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्कतिय-मणुस्स आहारयसरीरे, कि सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - सखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्क-तियमणुस्स आहारयसरीरे ? मिच्छदिट्ठि- पज्जत्तय - सखेज्ज-वासाउय-कम्मभूमग - गब्भवक्क-कतियमणुस्स-आहारयसरीरे ? सम्ममिच्छदिट्ठि - पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारय-सरीरे ?

[भते !] यदि पर्याप्तक-सख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोप-क्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह सम्यग्दृष्टि-पर्याप्तक-सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोप-क्रान्तिकमनुष्य-आहारक-शरीर है या मिथ्यादृष्टि-पर्याप्तक-सख्येय-वर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य - आहारक-शरीर है या सम्यक् मिथ्यादृष्टि-पर्याप्तक-सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोप-क्रान्तिक-मनुष्य - आहारक - शरीर है ?

गोयमा ! सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय - कम्भूमग-गब्भवक्कतियमणुस्स आहारय-सरीरे, नो सम्म - मिच्छदिट्ठि-पज्जत्तय - सखेज्जवासाउय-कम्मभूमग गब्भवक्कतिय-मणुस्स-आहारय-सरीरे !

गौतम ! वह सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोप-क्रान्तिक - मनुष्य - आहारक-शरीर है, मिथ्यादृष्टि-पर्याप्तक-सख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोप-क्रान्तिकमनुष्य - आहारक - शरीर नही है तथा सम्यक्मिथ्यादृष्टि-पर्याप्तक - सख्येयवर्षायुष्क - कर्म-भूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारक-शरीर नही है।

जइ सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखे-ज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भ-

[भते !] यदि सम्यग्दृष्टि-पर्या-प्तक-सख्येयवर्षायुष्क - कर्मभूमिज-

वक्कतियमणुस्स - आहारय-
सरीरे, किं संजय-सम्मद्दिट्ठि-
पज्जत्तय - संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमग - गब्भवक्कंतिय-
मणुस्स - आहारयसरीरे ?
असंजय - सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय-
संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-
गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारय-
सरीरे? संजयासंजय-सम्मद्दिट्ठि-
पज्जयत्त - संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमग - गब्भवक्कंतिय-
मणुस्स आहारयसरीरे ?

गोयमा ! संजय - सम्मद्दिट्ठि-
पज्जत्तय - संखेज्जवासाउय-
कम्मभूमग - गब्भवक्कंतियमणु-
स्स-आहारयसरीरे नो असंजय-
द्दिट्ठि - पज्जत्तय - संखेज्जवासा-
उय-कम्मभूमग - गब्भवक्कंतिय-
मणुस्स आहारयसरीरे नो
संजयासंजय - सम्मद्दिट्ठि - पज्ज-
त्तय - संखेज्जवासाउय - कम्म-
भूमग - गब्भवक्कंतिय - मणुस्स-
आहारयसरीरे ।

जइ संजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-
संखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-
गब्भवक्कतियमणुस्स-आहारय-
सरीरे, किं पमत्तसंजय-
सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - संखेज्ज-
वासाउय-कम्मभूमग-गब्भवक्क-
तियमणुस्स - आहारयसरीरे ?
अपमत्तसंजय-सम्मद्दिट्ठि - पज्ज-
त्तय-संखेज्जवासाउय-कम्मभूमग

गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारय-सरीरे ?

गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारशरीर है ?

गोयमा ! पत्तमसंजय - सम्म-द्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय कम्मभूमग - गब्भवक्कंतियमणु-स्स-आहारयसरीरे, नो अपमत्त-सजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय -सखे-ज्जवासाउय-कम्मभूमग - गब्भ-वक्कंतियमणुस्स आहारयसरीरे।

गौतम ! वह प्रमत्तसयत-सम्यक्-दृष्टि - पर्याप्तक - सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है, अप्रमत्तसयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक-सख्येयवर्षा-युष्क-कर्मभूमिज - गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर नही ।

जइ पमत्तसजय - सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय-कम्म-भूमग - गब्भवक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे, किं इड्ढिपत्त-पमत्तसजय-सम्मद्दिट्ठि-पज्जत्तय-सखेज्जवासाउय - कम्मभूमग-गब्भवक्कंतियमणुस्स- आहारय-सरीरे ?

[भंते !] यदि प्रमत्तसयत-सम्यक्-दृष्टि - पर्याप्तक - सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है तो क्या वह ऋद्धिप्राप्त-प्रमत्तसयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक - सख्येयवर्षायुष्क - कर्म-भूमिज - गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर है या अऋद्धिप्राप्त-प्रमत्त-सयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक-सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोप-क्रान्तिक-मनुष्य - आहारकशरीर है ?

गोयमा ! इड्ढिपत्त-पमत्तसजय-सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - सखेज्ज-वासाउय - कम्मभूमग - गब्भ-वक्कंतियमणुस्स-आहारयसरीरे, नो अणिड्ढिपत्त - पमत्तसजय-सम्मद्दिट्ठि - पज्जत्तय - सखेज्ज-वासाउय - कम्मभूमग - गब्भ-वक्कंतियमणुस्स - आहारय-सरीरे ।

गौतम ! वह ऋद्धिप्राप्त-प्रमत्त-सयत-सम्यक्दृष्टि-पर्याप्तक-सख्येय-वर्षायुष्क - कर्मभूमिज - गर्भोप-क्रान्तिक-मनुष्य-आहारकशरीर है, अऋद्धिप्राप्त - प्रमत्तसयत - सम्यक्-दृष्टि - पर्याप्तक - सख्येयवर्षायुष्क-कर्मभूमिज-गर्भोपक्रान्तिक - मनुष्य-आहारकशरीर नही ।

३१ आहारयसरीरे सं भते ! कि सठिए पण्णत्ते ?

गोयमा ! समचउरस-सठाण-सठिए पण्णत्ते ।

३२. आहारयसरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण देसूणा रयणी उक्कोसेण पडिपुण्णा रयणी ।

३३. तेयासरीरे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते—एगिंदियतेयासरीरे य बेंदिय तेयासरीरे य तेंदियतेयासरीरे य चउरिंदियतेयासरीरे य पचेंदियतेयासरीरे य ।

३४ गेवेज्जस्स ण भंते ! देवस्स मारणतिय-समुग्घाएण समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खभ-बाहल्लेण, आयामेण जहण्णेण अहे जाव विज्जाहर सेढीओ, उक्कोसेण अहे जाव अहोलोइया गामा, तिरिय जाव मणुस्सखेत्त, उड्ढं जाव सयाइ विमाणाइ ।

३९ भते ! लेश्याएँ कितनी प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! लेश्याएँ छह प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोत-लेश्या, तैजस्लेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या । इस प्रकार लेश्या-पद ज्ञातव्य है ।

४० भते ! क्या नैरयिक अनन्तर आहार करते है तदन्तर निर्वर्तन, पर्यादान, परिणमन, परिचारण, और विक्रिया करते है ?

हाँ, गौतम ! नैरयिक अनन्तर आहार, तदनन्तर निर्वर्तन, पर्यादान, परिणमन, परिचारण और विक्रिया करते हैं ।
इस प्रकार आहार-पद ज्ञातव्य है ।

३५. एवं अणुत्तरोववाइया वि ।

३५ इसी प्रकार अनुत्तरोपपातिक देवो की भी है ।

३६ एव कम्मयसरीर पि भणियव्व ।

३६ इसी प्रकार कार्मण-शरीर भी ज्ञातव्य है ।

३७ कइविहे ण भंते ! ओही पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते—भवपच्चइए य खओवसमिए य । एव सव्व ओहिपद भणियव्व ।

भेदे विसय सठाणे,
अब्भतर बाहिरे य देसोही ।
ओहिस्स वड्ढि-हाणी,
पडिवाती चेव अपडिवाती ॥

३७ भंते ! अवधिज्ञान कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! दो प्रकार का प्रज्ञप्त है—भवप्रत्ययिक और क्षायोपशमिक । इस प्रकार सम्पूर्ण अवधि-पद ज्ञातव्य है ।

[अवधिज्ञान के द्वार—]
भेद, विषय, सस्थान, आभ्यन्तर, बाह्य, देश, सर्व, वृद्धि, हानि, प्रतिपाती और अप्रतिपाती ।

३८. नरइया ण भंते ! किं सीत-वेयण वेदंति ? उसिणवेयण वेदंति ? सीतोसिणवेयण वेदंति ?

गोयमा ! नेरइया सीत वि वेदण वेदेंति, उसिण पि वेदण वेदेंति, णो सीतोसिण वेदण वेदेंति । एव चेव वेयणापद भणियव्व ।

सीता य दव्व सारीरी,
साय तह वेयणा भवे दुक्खा ।
अब्भुवगमुवक्कमिया,
णिदाए चेव अणिदाए ॥

३८ भंते ! नैरयिक क्या शीत वेदना का वेदन करते है ? क्या उष्ण वेदना का वेदन करते है ? क्या शीतोष्ण वेदना का वेदना करते हैं ?

गौतम ! नैरयिक शीत वेदना का भी वेदन करते है, उष्ण वेदना का भी वेदन करते है, उष्ण वेदना का भी वेदन करते है, किन्तु शीतोष्ण वेदना का वेदन नही करते । इस प्रकार सम्पूर्ण वेदना-पद ज्ञातव्य है ।

[वेदना के द्वार—]
शीत, उष्ण, द्रव्य, शारीरिकी, साता, असाता, वेदना, दुःख, आभ्युपगमिकी और अनिदा वेदना ।

३९ कइ ण भंते ! लेसाओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! छ लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—
किण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा ।
एव लेसापय भणियव्व ।

३९ भते ! लेश्याएँ कितनी प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! लेश्याएँ छह प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तैजस्लेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या । इस प्रकार लेश्या-पद ज्ञातव्य है ।

४० नेरइया ण भते ! अणतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा-विकुव्वणया ?

हता गोयमा ! नेरइया ण अणतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया । एव आहारपद भणियव्व ।

अणतरा य आहारे,
आहाराभोगणाऽवि य ।
पोग्गला नेव जाणति,
अज्झवसाणा य सम्मत्ते ॥

४० भते ! क्या नैरयिक अनन्तर आहार करते हैं तदन्तर निर्वर्तन, पर्यादान, परिणमन, परिचारण, और विक्रिया करते है ?

हाँ, गौतम ! नैरयिक अनन्तर आहार, तदनन्तर निर्वर्तन, पर्यादान, परिणमन, परिचारण और विक्रिया करते हैं ।
इस प्रकार आहार-पद ज्ञातव्य है ।

[आहार के द्वार—]
अनन्तर आहार, आभोग आहार, अनाभोग आहार, पुद्‌गलो को नही जानना, अध्यवसान और सम्यक्त्व ।

४१ कइविहे ण भते ! आउगबधे पण्णत्ते ?

गोयमा ! छव्विहे आउगबधे पण्णत्ते, त जहा—
जाइनामनिधत्ताउके गतिनामनिधत्ताउके ठिइनामनिधत्ताउके पएसनामनिधत्ताउके अणुभाग-

४१ भते ! आयुष्क-बध कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! आयुष्क-बध छह प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१ जातिनामनिधत्त/व्याप्त आयुष्क
२ गतिनामनिधत्त आयुष्क, ३ स्थितिनामनिधत्त आयुष्क, ४

नामनिधत्ताउके ओगाहणा-नामनिधत्ताउके ।

प्रदेशनामनिधत्त-आयुष्क, ५ अनु-भागनामनिधत्त-आयुष्क, ६ अव-गाहनानामनिधत्त-आयुष्क ।

४२ नेरइयाण भते ! कइविहे आउगबधे पण्णत्ते ?

गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते, त जहा—

जातिनामनिधत्ताउके गइनाम-निधत्ताउके ठिइनामनिधत्ताउके पएसनामनिधत्ताउके ओगा-हणाणामनिधत्ताउके ।

एव जाव वेमाणियत्ति ।

४२ भते ! नैरयिको के कितने प्रकार का आयुष्क-बध प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! छह प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—

१ जातिनाम-निधत्त-धारी आयुष्क, २ गतिनामनिधत्त-आयुष्क, ३ स्थितिनामनिधत्त-आयुष्क, ४ प्रदेशनामनिधत्त-आयुष्क, ५ अनु-भागनामनिधत्त-आयुष्क, ६ अव-गाहनानामनिधत्त-आयुष्क ।

इसी प्रकार वैमानिक तक है ।

४३ निरयगई ण भते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण बारसमुहुत्ते ।

एव तिरियगई मणुस्सगई देवगई ।

४३ भते ! नरकगति मे उपपात का विरहकाल कितना प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत एक समय और उत्कृष्टत बारह मुहूर्त ।

इसी प्रकार तिर्यञ्चगति, मनुष्य-गति और देवगति है ।

४४ सिद्धिगई ण भते ! केवइय काल विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ।

गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासे ।

एव सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा ।

४४ भते ! सिद्धिगति मे सिद्ध होने का विरहकाल कितना प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! जघन्यत एक समय और उत्कृष्टत छह मास ।

इसी प्रकार सिद्धिगति को छोडकर उद्वर्तना का विरहकाल ज्ञातव्य है ।

४५ इमीसे ण भते ! रयणप्पहाए

४५ भते ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी मे

पुढवीए नेरइया केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ?

नैरयिको के उपपात का विरहकाल कितना प्रज्ञप्त है ?

गोयमा ! जहण्णेण एगं समय, उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता ।

गौतम ! जघन्यत एक समय और उत्कृष्टत चौबीस मुहूर्त्त ।

एव उववायदडओ भणियव्वो, उव्वट्टणादडओ वि ।

इसी प्रकार उपपात-दण्डक और उद्वर्तन-दण्डक प्रज्ञप्त है ।

४६. नेरइया ण भते ! जातिनाम-निहत्ताउग कतिहि आगरिसेहिं पगरेंति ?

४६ भते ! नैरयिक जातिनाम-निधत्त-धारी आयुष्क कितने आकर्षो से प्रवर्तित होता है ?

गोयमा ! सिय एक्केण सिय दोहिं सिय तीहिं सिय चउहिं सिय पचहिं सिय छहिं सीय सत्तहि सिय अट्ठहिं, नो चेव ण नवहिं ।

गौतम ! कभी एक [आकर्ष] से कभी दो से, कभी तीन से, कभी चार से, कभी पाच से, कभी छह से, कभी सात से और कभी आठ से, किन्तु नौ से कभी नही ।

४७ एव सेसाणि वि आउगाणि जाव वेमाणियत्ति ।

४७ इसी प्रकार शेष-आयुष्क के वैमानिक तक ज्ञातव्य हैं ।

४८ कइविहे ण भते ! सघयणे पण्णत्ते ?

४८ भते ! सहनन कितने प्रकार का प्रज्ञप्त है ?

गोयमा ! छव्विहे सघयणे पण्णत्ते, त जहा—
वइरोसभनारायसघयणे रिसभ-नारायसघयणे नारायसघणे अद्धनारायसघयणे खीलिया सघयणे छेवट्टसघणणे ।

गौतम ! सहनन छह प्रकार का प्रज्ञप्त है, जैसे कि—
१ वज्रऋषभनाराच सहनन, २ ऋषभनाराच सहनन, ३ नाराच सहनन, ४ अर्द्धनाराच सहनन, ५ कीलिका सहनन, ६ सेवार्त्त सहनन ।

४९ नेरइया ण भते! किसघयणी ?

४९ भते ! नैरयिक किस सहनन वाले होते हैं ?

गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी—णेवट्ठी णेव

गौतम ! छहो सहननो से वे अ-सहननी हैं । उनके न अस्थि होता

छिरा णेव ण्हारू, जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा अमणूण्णा अमणामा ते तेसिं असघयणत्ताए परिणमंति ।

है, न शिरा और न स्नायु । जो पुद्गल अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ और मन के प्रतिकूल होते है, वे उनके असहनन के रूप मे परिणत होते हैं ।

५०. असुरकुमारा ण भते ! किसघयणी पण्णत्ता ?

गोयमा ! छण्हं सघयणाणं असघयणी—णेवट्ठी णेव छिरा णेव ण्हारू, जे पोग्गला इट्ठा कता पिया सुभा मणुण्णा मणामा ते तेसिं असघयणत्ताए परिणमति ।

५० भते ! असुरकुमार किस सहनन वाले प्रज्ञप्त है ?

गौतम ! इन छहो सहननो से वे असहननी है । उनके न अस्थि होता है, न शिरा और न स्नायु । जो पुद्गल इष्ट, कान्त, प्रिय, शुभ, मनोज्ञ और मनोनुकूल होते है वे उनके असहनन के रूप मे परिणत होते हैं ।

५१. एव जाव थणियकुमारत्ति ।

५१ इसी प्रकार स्तनितकुमार तक ज्ञातव्य है ।

५२. पुढवीकाइया ण भते ! किं सघयणी पण्णत्ता ?

गोयमा ! छेवट्टसघयणी पण्णत्ता ।

५२ भते ! पृथ्वीकायिक जीव किस सहनन वाले प्रज्ञप्त हैं ?

गौतम ! सेवार्त सहनन वाले प्रज्ञप्त है ।

५३ एव जाव समुच्छिमपचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति ।

५३ इसी प्रकार सम्मूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक जीवो तक ज्ञातव्य है ।

५४ गब्भवक्कतिया छव्विहसघयणी ।

५४ गर्भोपक्रान्तिक जीवो के छह प्रकार के सहनन होते हैं ।

५५. समुच्छिममणुस्सा ण छेवट्टसघयणी ।

५५ सम्मूर्च्छिम मनुष्यो के सेवार्त सहनन होता है ।

५६ गब्भवक्कंतियमणुस्सा छव्विह-सघयणी पण्णत्ता ।

५६ गर्भोपक्रान्तिक मनुष्यों के छह प्रकार के सहनन होते हैं ।

५७ जहा असुरकुमारा तहा वाण-मतरा जोइसिया वेमाणिया य ।

५७ जैसे असुरकुमार हैं, वैसे ही वान-मतर, ज्योतिष्क और वैमानिक ज्ञातव्य हैं ।

५८. कइविहे ण भते ! सठाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे सठाणे पण्णत्ते, त जहा—
समचउरसे णग्गोहपरिमडले साती खुज्जे वामणे हुडे ।

५८ भते ! सस्थान कितने प्रकार के प्रज्ञप्त हैं ?
गौतम ! सस्थान छह प्रकार के प्रज्ञप्त हैं । जैसे कि—
१ समचतुरस्र, २ न्यग्रोधपरि-मण्डल, ३ सादि, ४ कुब्ज, ५ वामन, ६ हुण्ड ।

५९ णेरइया ण भते ! किं सठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! हुडसठाणा पण्णत्ता ।

५९ भते ! नैरयिक किस सस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ?
गौतम ! हुण्ड सस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६० असुरकुमारा किं सठाणसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! समचउरस-सठाण-सठिया पण्णत्ता जाव थणियत्ति ।

६० भते ! असुरकुमार किस सस्थान मे सस्थित प्रज्ञप्त हैं ?
गौतम ! समचतुरस्र सस्थान मे सस्थित प्रज्ञप्त हैं । स्तनितकुमार तक ऐसा ही है ।

६१ पुढवी मसूरयसठाणा पण्णत्ता ।

६१ पृथ्वी के जीव मसूरक-सस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६२ आऊ थिवुयसठाणा पण्णत्ता ।

६२ अपकायिक जीव स्तिबुक/जल-बूंद सस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

६३ तेऊ सूइकलावसठाणा पण्णत्ता ।

६३ तेजस्कायिक जीव सूचीकलाप (सूइयो के पुजवत्) के सस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

समवाय—प्र

६४. वाऊ पडागसंठाणा पण्णत्ता ।

६४ वायुकायिक जीव पताका-सस्थान वाले प्रज्ञप्त है ।

६५. वणप्फई नाणासंठाणसंठिया पण्णत्ता ।

६५ वनस्पतिकायिक जीव नाना प्रकार के सस्थान वाले प्रज्ञप्त है ।

६६. बेइंदिय - तेइदिय - चउरिंदिय-सम्मुच्छियपचेंदिय - तिरिक्खा हुडसठाणा पण्णत्ता ।

६६ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और सम्मूर्च्छिम - पञ्चेन्द्रिय - तिर्यञ्च हुण्ड-सस्थान वाले प्रज्ञप्त है ।

६७. गब्भवक्कतिया छव्विहसठाणा पण्णत्ता ।

६७ गर्भोपक्रान्तिक तिर्यञ्च छह प्रकार के सस्थान वाले प्रज्ञप्त है ।

६८. सम्मुच्छिममणुस्सा हुडसठाण-सठिया पण्णत्ता ।

६८ सम्मूर्च्छिम मनुष्य हुण्ड-सस्थान वाले प्रज्ञप्त है ।

६९. गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा सठाणा पण्णत्ता ।

६९ गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य छह प्रकार के सस्थान वाले प्रज्ञप्त हैं ।

७०. जहा असुरकुमारा तहा वाण-मतरा जोइसिया वेमाणिया ।

७० जैसे असुरकुमार है, वैसे ही वान-मतर, ज्योतिष्क और वैमानिक है ।

७१ कइविहे ण भते ! वेए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वेए पण्णत्ते, त जहा—
इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसगवेए ।

७१ भते ! वेद कितने प्रकार के प्रज्ञप्त है ?
गौतम ! वेद तीन प्रकार के प्रज्ञप्त है । जैसे कि—
स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुसकवेद ।

७२ नेरइया ण भते ! कि इत्थी-वेया पुरिसवेया णपुसगवेया पण्णत्ता ?
गोयमा ! णो इत्थिवेया णो पु वेया, णपुसगवेया पण्णत्ता ।

७२ भते ! क्या नैरयिक स्त्रीवेद, पुरुष-वेद या नपुसकवेद होते है ?
गौतम ! न तो स्त्रीवेद, न ही पुरुपवेद, नपुसकवेद प्रज्ञप्त है ।

[illegible] असुरकुमाराण भते ! किं इत्थि-वेया पुरिसवेया नपुंसगवेया ?

७३ भते ! क्या असुरकुमार स्त्रीवेद, पुरुपवेद या नपुसकवेद होते है ?

गोयमा ! इत्थिवेया पुरिसवेया, णो णपु सगवेया जाव थणिय त्ति ।

गौतम ! स्तनितकुमार तक स्त्रीवेद होते हैं, पुरुषवेद होते हैं, किन्तु नपु सकवेद नही होते ।

७४ पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-वणप्फइ-बि-ति-चउरिंदिय-समुच्छिम-पंचिंदियतिरिक्ख-समुच्छिम-मणुस्सा णपु सगवेया ।

७४ पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सम्मूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, सम्मूर्च्छिम मनुष्य—ये नपु सकवेद होते हैं।

७५. गब्भवक्कतियमणुस्सा पचेंदिय-तिरिया य तिवेया ।

७५ गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य और पचेन्द्रिय तिर्यच तीनो वेद वाले होते है।

७६ जहा असुरकुमारा तहा वाण-मतरा जोइसिया वेमाणियावि ।

७६ जैसे असुरकुमार हैं, वैसे ही वान-मतर, ज्योतिष्क और वैमानिक भी हैं।

७७ ते ण काले ण ते ण समए ण कप्पस्स समोसरण णेयव्व जाव गणहरा सावच्चा निर-वच्चा वोच्छिण्णा ।

७७ उस काल और उस समय मे 'कल्प' के अनुसार समवसरण, गणधर, सापत्यो (शिष्य-सन्तान-युक्त) एव निरपत्यो (शिष्य-सन्तान-रहित शेष सभी) की व्युच्छिन्नता ज्ञातव्य है।

७८ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे तीयाए ओसप्पिणीए सत्त कुल-गरा होत्या, त जहा—
मित्तदामे सुदामे य,
सुपासे य सयपभे ।
विमलघोसे सुघोसे य,
महाघोसे य सत्तमे ॥

७८ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे अतीत अवसर्पिणी मे सात कुलकर हुए थे, जैसे कि—
१ मित्रदाम, २ सुदाम, ३ सुपार्श्व, ४ स्वयप्रभ, ५ विमल-घोष, ६ सुघोष ७ महाघोष ।

७९ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए दस कुल-गरा होत्या, त जहा—

७९ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे अतीत उत्सर्पिणी मे दस कुलकर हुए थे, जैसे कि—

सयजले सयाऊ य,
अजियसेणे अणतसेणे य ।
कक्कसेणे भीमसेणे,
महाभीमसेणे य सत्तमे ।
दढरहे दसरहे सतरहे ।।

१ स्वयजल, २ शतायु, ३ अजित-सेन, ४ अनन्तसेन, ५ कर्कसेन, भीमसेन, ६ महाभीमसेन, ८ दृढरथ, ९ दशरथ, १० शतरथ ।

८० जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था, त जहा—
पढमेत्थ विमलवाहण,
चक्खु न जसम चउत्थमभिचदे ।
तत्तो य पसेणइए,
मरुदेवे चेव नाभी य ।।

८० जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे एक अवसर्पिणी मे सात कुलकर हुए थे, जैसे कि—
१ विमलवाहन, २ चक्षुष्मान्, ३ यशस्वी, ४ अभिचन्द्र, ५ प्रसेनजित, ६ मरुदेव, ७ नाभि ।

८१. एतेसि ण सत्तण्ह कुलगराण सत्त भारिआ होत्था, त जहा—
चदजसा चदकता,
सुरूव-पडिरूव चक्खुकता य ।
सिरिकता मरुदेवी,
कुलगरपत्तीण णामाइ ।।

८१ इन सात कुलकरो के सात पत्निया हुई थी, जैसे कि—
१ चन्द्रयशा, २ चन्द्रकान्ता, ३ सुरूपा, ४ प्रतिरूपा, ५ चक्षुप्-कान्ता, ६ श्रीकान्ता, ७ मरु-देवी ।

८२. जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीस तित्थगराण पियरो होत्था, त जहा—
१ णाभी ण जियसत्तू य,
जियारी सवरे इ य ।
मेहे धरे पइट्ठे य,
महसेणे य खत्तिए ।।
२ सुग्गीवे दढरहे विण्हू,
वसुपुज्जे य खत्तिए ।
कयवम्मा सीहसेणे य,
भाणू विस्ससेणे इ य ।।

८२ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी के चौवीस तीर्थ-ङ्करो के चौवीस पिता हुए थे, जैसे कि—
१ नाभि, २ जितशत्रु, ३ जितारी ४ सवर, ५ मेघ, ६ धर, ७ प्रतिष्ठ, ८ क्षत्रिय महसेन, ९ सुग्रीव, १० दृढरथ, ११ विष्णु, १२ क्षत्रिय वसुपूज्य, १३ कृत-वर्मा, १४ सिंहसेन, १५ भानु, १६ विश्वसेन, १७ सूर, १८ सुदर्शन, १९ कुभ, २० सुमित्र,

३ सूरे सुदसणे कुभे,
सुमित्तविजये समुद्दविजये य।
राया य ग्राससेणे,
सिद्धत्येच्चिय खत्तिए ॥

४ उदितोदितकुलवसा,
विसुद्धवसा गुर्णेहि उववेया।
तित्यप्पवत्तयाण,
एए पियरो जिणवराण ॥

२१ विजय, २२ समुद्रविजय, २३ राजा अश्वसेन, २४ क्षत्रिय सिद्धार्थ।

तीर्थ-प्रवर्तक जिनवरो के पिता उदितोदित कुल-वश वाले, विशुद्ध वश वाले और गुणो से उपेत थे।

८३ जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमोसे श्रोसप्पिणीए चउवीस तित्यगराण मायरो होत्था, त जहा—

१ मरुदेवी विजया सेणा,
सिद्धत्था मगला सुसीमा य।
पुहवी लक्खण रामा,
नदा विण्हू जया सामा ॥

२ सुजसा सुव्वय अइरा,
सिरिया देवी पभावई।
पउमा वप्पा सिवा य,
वामा तिसला देवी य
जिणमाया ॥

८३ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्करो की चौबीस माताएँ हुई थी। जैसे कि—

१ मरुदेवी, २ विजया, ३ सेना, ४ सिद्धार्था, ५ मगला, ६ सुसीमा, ७ पृथ्वी, ८ लक्ष्मणा, ९ रामा, १० नदा, ११ विष्णु, १२ जया, १३ श्यामा, १४ सुयशा, १५ सुव्रता, १६ अचिरा, १७ श्री, १८ देवी, १९ प्रभावती, २० पद्मा, २१ वप्रा, २२ शिवा, २३ वामा, २४ त्रिशला।

८४ जबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमीसे श्रोसप्पिणीए चउवीस तित्यगरा होत्या, त जहा—

उसभे अजिते सभवे अभिणदणे सुमती पउमप्पहे सुपासे चदप्पहे सुविही सीतले सेज्जसे वासुपुज्जे विमले अणते धम्मे सती कुथू अरे मल्ली मुणिसुव्वए णमी अरिट्ठणेमी पासे

८४ जाम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी मे चौबीस तीर्थङ्कर हुए थे। जैसे कि—

१ ऋषभ, २ अजित, ३ सम्भव, ४ अभिनन्दन, ५ सुमति, ६ पद्मप्रभ, ७ सुपार्श्व, ८ चन्द्रप्रभ, ९ सुविधि, १० शीतल, ११ श्रेयास, १२ वासुपूज्य, १३ विमल, १४ अनन्त, १५ धर्म, १६ शान्ति

वद्धमाणे य ।

१७ कुन्थु, १८ अर, १९ मल्ली, २० मुनिसुव्रत, २१ नमि, २२ अरिष्टनेमि, २३ पार्श्व, २४ वर्द्धमान ।

८५. एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पुव्वभविया णामधेज्जा होत्था, त जहा—

१ पढमेत्थ वइरणाभे,
विमले तह विमलवाहणे चेव ।
तत्तो य धम्मसीहे,
सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ।।

२ सुंदरवाहू तह दीहवाहू,
जुगवाहू लट्ठवाहू य ।
दिण्णे य इददत्ते,
सुंदर माहिंदरे चेव ।।

३ सीहरहे मेहरहे,
रुप्पी य सुदसणे य वोद्धव्वे ।
तत्तो य नदणे खलु,
सीहगिरी चेव वीसइमे ।।

४ अदणीसत्त सखे,
सुदसणे नदणे य वोद्धव्वे ।
ओसप्पिणीए एए,
तित्यकराण तु पुव्वभवा ।।

८५ इन चौबीस तीर्थङ्करो के पूर्वभव मे चौबीस नाम थे । जैसे कि—

१ वज्रनाभ, २ विमल, ३ विमलवाहन, ४ धर्मसिंह, ५ सुमित्र, ६ धर्ममित्र, ७ सुदरबाहु, ८ दीर्घबाहु, ९ युगबाहु, १० लष्टबाहु, ११ दत्त, १२ इन्द्रदत्त, १३ सुन्दर, १४ माहेन्द्र, १५ सिंहरथ, १६ मेघरथ, १७ रुक्मी, १८ सुदर्शन, १९ नदन, २० सिंहगिरि, २१ अदीनसत्त्व, २२ शख, २३ सुदर्शन, २४ नन्दन ।

८६ एएसि ण चउवीसाए तित्थकराण चउवीस सीया होत्था, त जहा—

१ सीया सुदसणा सुप्पभा य,
सिद्धत्थ सुप्पसिद्धा य ।
विजया य वेजयंती,
जयंती अपराजिया चेव ।।

८६ इन चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस शिविकाएँ थी । जैसे कि—

१ सुदर्शना, २ सुप्रभा, ३ सिद्धार्था, ४ सुप्रसिद्धा, ५ विजया, ६ वैजयन्ती, ७ जयन्ती, ८ अपराजिता, ९ अरुणप्रभा, १० चन्द्रप्रभा, ११

२. अरुणप्पह चंदप्पह,
सूरप्पह अग्गिसप्पहा चेव ।
विमला य पचवण्णा,
सागरदत्ता तह णागदत्ता य ॥

३. अभयकरी णिव्वुतिकरी,
मणोरमा तह मणोहरा चेव ।
देवकुरु उत्तरकुरु,
विसाल चंदप्पहा सीया ॥

सूरप्रभा, १२ अग्निप्रभा, १३ विमला, १४ पचवर्णा, १५ सागरदत्ता, १६ नागदत्ता, १७ अभयकरी, १८ निर्वृतिकरी, १९ मनोरमा, २० मनोहरा, २१ देवकुरु, २२ उत्तरकुरु, २३ विशाला, २४ चन्दप्रभा ।

४ एयातो सीयाओ सव्वेसिं,
चेव जिणवरिंदाण ।
सव्वजगवच्छलाण,
सव्वोतुयसुभाए छायाए ॥

सर्वजीववत्सल समस्त जिनवरो को ये शिविकाएँ सब ऋतुओ मे शुभ छाया वाली होती हैं ।

५ पुव्विं उक्खित्ता,
माणुसेहिं साहट्ठरोमकूवेहिं ।
पच्छा वहंति सीयं,
असुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥

शिविका को पहले सहृष्ट रोम कूपवाले मनुष्य उठाते है पश्चात् असुरेन्द्र, सुरेन्द्र और नागेन्द्र वहन करते हैं ।

६ चलचवलकुंडलधरा,
सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।
सुरअसुरवंदियाण,
वहंति सीयं जिणिंदाण ॥

वे चल-चपल कुंडलधारी, अपनी इच्छा से विनिर्मित आभरणो के धारी, सुरासुर से वंदित जिनेन्द्रो की शिविका को वहन करते है ।

७ पुरओ वहंति देवा,
नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि ।
पच्चत्थिमेण असुरा,
गरुला पुण उत्तरे पासे ॥

उसे पूर्व मे देव, दक्षिण पार्श्व मे नागकुमार, पश्चिम मे असुरकुमार और उत्तर पार्श्व मे गरुड वहन करते है ।

८७ उसभो य विणीयाए,
बारवईए अरिट्ठवरणेमि ।
अवसेसा तित्थयरा,
निक्खत्ता जम्मभूमीसु ॥

८७ भगवान् ऋषभ विनीता मे, अरिष्टनेमि द्वारवती से और शेष तीर्थङ्कर अपनी-अपनी जन्मभूमि से निष्क्रान्त हुए थे ।

८८ सव्वेवि एगदूसेण,
णिग्गया जिणवरा चउवीस ।

८८ सभी चौवीस तीर्थङ्कर एक दूष्य से निर्गत हुए थे, अन्यलिंग, गृहलिंग

ण य णाम अण्णलिगे,
ण य गिहिलिगे कुलिगे वा ।।

या कुलिग से नही ।

८९. १. एक्को भगव वीरो,
पासो मल्ली य तिहिं-तिहिं-
सएहिं ।
भयवपि वासुपुज्जो,
छहिं पुरिससएहिं निक्खत्तो।।

८९ भगवान् वीर अकेले, पार्श्व और मल्ली तीन-तीन सौ पुरुषो के साथ और भगवान् वासुपूज्य छह सौ पुरुषो के साथ निष्क्रान्त/प्रव्रजित हुए थे ।

२. उग्गाण भोगाण राइण्णाण,
च खत्तियाण च ।
चउहिं सहस्सेहिं उसभो,
सेसा उ सहस्सपरिवारा ।।

भगवान् ऋषभ चार हजार उग्र, भोग, राजन्य और क्षत्रियो के साथ निष्क्रान्त हुए थे और शेष तीर्थङ्कर हजार-हजार परिवारो के साथ ।

९०. १. सुमइत्थ णिच्चभत्तेण,
णिग्गओ वासुपुज्जो जिणो
चउत्थेण ।
पासो मल्ली वि य,
अट्ठमेण सेसा उ छट्ठेण ।।

९० भगवान् सुमति नित्यभक्त/उपवास-रहित, वासुपूज्य चतुर्थ भक्त/एक उपवास, पार्श्व और मल्ली अष्टम भक्त/तीन उपवास और शेष बीस तीर्थङ्कर छट्ठ भक्त/दो उपवास पूर्वक निर्गत हुए ।

९१ एएसि ण चउवीसाए तित्थ-गराण चउवीस पढमभिक्खादया होत्था, त जहा—

१ सेज्जसे बभदत्ते,
सुरिददत्ते य इददत्ते य ।
तत्तो य धम्मसीहे,
सुमित्ते तह धम्ममित्ते य ।।

२ पुस्से पुणव्वसू पुण्णणद,
सुणदे जये य विजये य ।
पउमे य सोमदेवे,
महिंददत्ते य सोमदत्ते य ।।

९१ इन चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस प्रथम भिक्षादाता हुए, जैसे कि—

१ श्रेयास, २ ब्रह्मदत्त, ३ सुरेन्द्रदत्त, ४ इन्द्रदत्त, ५ धर्म-सिंह, ६ सुमित्र, ७ धर्ममित्र, ८ पुष्य, ९ पुनर्वसु, १० पुष्यनन्द, ११ सुनन्द, १२ जय, १३ विजय, १४ पद्म, १५ सोमदेव, १६ महेन्द्रदत्त, १७ सोमदत्त, १८ अपराजित, १९ विश्वसेन, २०

३ अपराजिय वीससेणे,
वीसतिमे होइ उसभसेणे य ।
दिण्णे वरदत्ते,
धन्ने बहुले य आणुपुव्वीए ॥

ऋषभसेन, २१ दत्त, २२ वरदत्त, २३ धन्य, २४ बहुल ।

४ एते विसुद्धलेसा,
जिणवरभत्तीए पंजलिउडा य ।
त काल त समय,
पडिलाभेई जिणवरिंदे ॥

उस काल और उस काल मे इन विशुद्ध लेश्या वाले लोगो ने जिनवर-भक्ति मे प्राञ्जलिपुट होकर, जिनवरो को प्रतिलाभित किया—आहार दिया ।

६२. १. सवच्छरेण भिक्खा,
लद्धा उसभेण लोगणाहेण ।
सेसेहि बीयदिवसे,
लद्धाओ पढमभिक्खाओ ॥

६२ लोकनाथ ऋषभ ने प्रथम भिक्षा एक सवत्सर/वर्ष पश्चात् उपलब्ध की थी । शेष तीर्थङ्करो ने प्रथम भिक्षा दूसरे दिन उपलब्ध की थी ।

२ उसभस्स पढमभिक्खा,
खोयरसो आसि लोगणाहस्स।
सेसाण परमण्ण,
अमयरसरसोवम आसि ॥

लोकनाथ ऋषभ की प्रथम भिक्षा इक्षुरस थी और शेष तीर्थङ्करो की अमृतरसतुल्य परमान्न खीर थी ।

३. सव्वेसिपि जिणाण,
जहिय लद्धाओ पढमभिक्खाओ।
तहिय वसुधाराओ,
सरीरमेत्तीओ वुट्ठाओ ॥

सभी जिनवरो को जहा प्रथम भिक्षा प्राप्त हुई, वहा शरीर-प्रमाण सुवर्ण-वृष्टि हुई ।

६३ एतेसि ण चउवीसाए तित्थगराण चउवीस चेइयरुक्खा होत्था, त जहा—

१ णग्गोह - सत्तिवण्णे,
साले पियए पियगु छत्ताहे ।
सिरिसे य णागरुक्खे,
माली य पिलखुरुक्खे य ॥
२. तेंदुग पाडल जबू,
आसोत्थे खलु तहेव दधिवण्णे।

६३ चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस चैत्यवृक्ष थे, जैसे कि—

१ न्यग्रोध, २ सप्तपर्ण, ३ शाल, ४ प्रियाल, ५ प्रियगु, ६ छत्राभ, ७ शिरीष, ८ नागवृक्ष, ९ साली, १० प्लक्ष, ११ तिदुक, १२ पाटल १३ जबु १४ अश्वत्थ, १५ दधिपर्ण, १६ नदि, १७ तिलक, १८

णंदीरुक्खे तिलए य,
अबयरुक्खे असोगे य ।।

आम्र, १९ अशोक, २० चम्पक, २१ वकुल, २२ वेतस, २३ घातकी, २४ शाल ।

३. चंपय वउले य तहा,
वेडसिरुक्खे धायईरुक्खे ।
साले य वड्ढमाणस्स,
चेइयरुक्खा जिणवराण ।।

४. बत्तीसइ धणूइ,
चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स ।
णिच्चोउगो असोगो,
ओच्छण्णो सालरुक्खेण ।।

वर्द्धमान का अशोक चैत्यवृक्ष बत्तीस धनुष ऊँचा, नित्य-ऋतुक/सदा हरामरा और शालरुक्ष से अवच्छन्न था ।

५. तिण्णे व गाउयाइ,
चेइयरुक्खो जिणस्स
उसभस्स ।
सेसाण पुण रुक्खा,
सरीरतो बारसगुणा उ ।।

जिनवर ऋषभ का चैत्यवृक्ष तीन गाउ ऊँचा था । शेष तीर्थङ्करो के चैत्यवृक्ष उनके शरीर से बारह गुने ऊँचे थे ।

६. सच्छत्ता सपडागा,
सवेइया तोरणेंहि उववेया ।
सुरअसुरगरुलमहिया,
चेइयरुक्खा जिणवराण ।।

जिनवरो के चैत्यवृक्ष छत्र, पताका, वेदिका और तोरण-उपेत तथा सुर, असुर और गरुड देवो द्वारा पूजित थे ।

६४ एतेसि ण चउवीसाए तित्थगराणं चउवीस पढमसीसा होत्था, त जहा—

६४ चौबीस तीर्थङ्करो के प्रथम शिष्य चौबीस थे । जैसे कि—

१ पढमेत्थ उसभसेणे,
बीए पुण होइ सीहसेणे उ ।
चारू य वज्जणाभे,
चमरे तह सुव्वते विदब्भे ।।
२ दिण्णे वाराहे पुण,
आणदे गोथुभे सुहम्मे य ।
मदर जसे अरिट्ठे,
चक्काउह सयमु कु भे य ।।
३. भिसए य इदे कु भे,
वरदत्ते दिण्ण इदभूती य ।

१ ऋषभसेन, २ सिंहसेन, ३ चारु, ४ वज्रनाभ, ५ चमर, ६ सुव्रत, ७ विदर्भ, ८ दत्त, ९ वाराह, १० गानन्द, ११ कौस्तुभ, १२ सुधर्मा, १३ मन्दर, १४ यश, १५ अरिष्ट, १६ चक्रायुध, १७ स्वयभू, १८ कुम्भ, १९ भिषक्, २० इन्द्र, २१ कुम्भ, २२ वरदत्त, २३ दत्त, २४ इन्द्रभूति ।

उदितोदितकुलवंसा,
विसुद्धवसा गुणेहि उववेया ।।
तित्यप्पवत्तयाण,
पढमा सिस्सा जिणवराण ।।

तीर्थ-प्रवर्तक जिनवरो के प्रथम शिष्य उदितोदित कुल - वश वाले, विशुद्ध वश वाले और गुणो से उपेत थे ।

९५. एएसि णं चउवीसाए तित्थ-गराण चउवीस पढमसिस्सि-णीओ होत्था, त जहा—

१ बंभी फग्गू सम्मा,
अतिराणी कासवी रई
सोमा ।
सुमणा वारुणि सुलसा,
धारिणि धरणी य
धरणिधरा ।।
२ पउमा सिवा सुइ अजू,
भावियप्पा य रक्खिया ।
बधू पुप्फवती चेव,
अज्जा धणिला य आहिया ।।
३ जक्खिणी पुप्फचूला य,
चदणऽज्जा य आहिया ।
उदितोदितकुलवसा,
विसुद्धवसा गुणेहि उववेया ।
तित्यप्पवत्तयाण,
पढमा सिस्सी जिणवराण ।।

९५ चौवीस तीर्थङ्करो की प्रथम शिष्याए चौवीस थी, जैसे कि—

१ ब्राह्मी, २ फल्गु, ३ शर्मा, ४ अतिराज्ञी, ५ काश्यपी, ६ रति, ७. सोमा, ८ सुमना, ९ वारुणी, १० सुलसा, ११ धारणी, १२ धरणी, १३ धरणिधरा, १४ पद्मा, १५ शिवा, १६ शुचि १७ अजू, १८ भावितात्मा रक्षिता १९ बन्धू, २० पुष्पवती, २१ आर्या धनिला, २२ यक्षिणी २३ पुष्पचूला और २४ आर्या चन्दना ।

तीर्थ-प्रवर्तक जिनवरो की प्रथम शिष्याएँ उदितोदित कुलवशवाली, विशुद्ध वश वाली और गुणो से उपेत थी ।

९६ जबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टि-पियरो होत्था, त जहा—

१ उसभे सुमित्तविजए,
समुद्दविजए य अस्ससेणे य ।
विस्ससेणे य सूरे,
सुदसणे कत्तवीरिए य ।।

९६ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष में इस अवसर्पिणी मे बारह चक्रवर्ती के बारह पिता थे । जैसे कि—

१ ऋषभ, २ सुमित्रविजय, ३ समुद्रविजय, ४ अश्वसेन ५ विश्वसेन, ६ शूर, ७ सुदर्शन ८ कार्तवीर्य, ९ पद्मोत्तर, १० महाहरि,

२. पउमुत्तरे महाहरी,
विजय राया तहेव य।
बम्हे बारसमे वुत्ते,
पिउनामा चक्कवट्टीण ॥

११ विजयराजा, १२ ब्रह्मा।

९७. जबुद्दीवे णं भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टि-मायरो होत्था, त जहा—

१. सुमंगला जसवती,
भद्दा सहदेवी अइर सिरि देवी।
तारा जाला मेरा,
वप्पा चुलणी अपच्छिमा ॥

९७ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी मे वारह चक्रवर्तियो की वारह माताएँ थी। जैसे कि—

१ सुमगला, २ यशस्वती, ३ भद्रा, ४ सहदेवी, ५ अचिरा, ६ श्री, ७ देवी, ८ तारा, ९ ज्वाला, १० मेरा, ११ वप्रा, १२ चुलनी।

९८. जबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी-होत्था, त जहा-—

१. भरहो सगरो मघव,
सणकुमारो य रायसद्दूलो।
सती कुथू य अरो,
हवइ सुभूमो य कोरव्वो ॥

२. नवमो य महापउमो,
हरिसेणो चेव रायसद्दूलो।
जयनामो य नरवई,
बारसमो बभदत्तो य ॥

९८ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी मे बारह चक्रवर्ती हुए थे। जैसे कि—-

१ भरत, २ सगर, ३ मघव, ४ राजशार्दूल सनत्कुमार, ५ शान्ति, ६ कुन्थु, ७ अर, ८. कुरुवशज सुभूम, ९ महापद्म, १०. राजशार्दूल हरिषेण, ११. नरपति जय, १२ ब्रह्मदत्त।

९९. एएसि ण बारसण्ह चक्कवट्टीण बारस इत्थिरयणा होत्था, त जहा—

१. पढमा होइ सुभद्दा,
भद्दा सुणंदा जया य
विजया य।

९९ इन बारह चक्रवर्तियो के बारह स्त्री-रत्न थे, जैसे कि—-

१ सुभद्रा, २. भद्रा, ३ सुनन्दा, ४ जया, ५ विजया, ६ कृष्ण-श्री, ७ सूर्यश्री, ८ पद्मश्री, ९

कण्हसिरि सूरसिरि,
पउमसिरि वसु धरा देवी ॥
लच्छिमई कुरुमई,
इत्थिरयणाण नामाइ ॥

वसुन्धरा, १० देवी, ११ लक्ष्मी-मती, १२ कुरुमती ।

१०० जंबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नव बल-देव - वासुदेव-पितरो होत्या, त जहा—

१ पयावई य बंभे,
रोद्दे सोमे सिवेति य ।
महसिहे अग्गिसिहे,
दसरहे नवमे य वसुदेवे ॥

१०० जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी मे नौ बलदेवो और नौ वासुदेवो के नौ पिता थे। जैसे कि—

१ प्रजापति, २ ब्रह्मा, ३ रुद्र, ४ सोम, ५ शिव, ६ महासिंह, ७ अग्निसिंह, ८ दशरथ, ९ वसुदेव ।

१०१ जंबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव वासु-देव-मायरो होत्था, त जहा—

१ मियावई उमा चेव,
पुहवी सीया य अम्मा य।
लच्छिमती सेसवती,
केकई देवई इय ॥

१०१ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी मे नौ वासुदेवो की नौ माताएँ थी, जैसे कि—

१ मृगावती, २ उमा, ३ पृथ्वी, ४ सीता, ५ अम्बिका, ६ लक्ष्मी-मती, ७ शेषवती, ८ कैकयी, ९ देवकी ।

१०२ जंबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए णव बलदेव मायरो होत्था, त जहा—

१ भद्दा तह सुभद्दा य,
सुप्पभा य सुदसणा ।
विजया य वेजयती,
जयती अपराइया ॥
णवमिया रोहिणी,
बलदेवाण मायरो ॥

१०२ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी मे नौ बलदेवो की नौ माताएँ थी, जैसे कि—

१ भद्रा २ सुभद्रा ३ सुप्रभा, ४ सुदर्शना, ५ विजया, ६ वैजयन्ती, ७ जयन्ती, ८ अपरा-जिता, ९ रोहिणी ।

१०३ जंबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे इमाए ओसप्पिणीए नव दसार-मडला होत्था, त जहा—

१०३ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे इस अवसर्पिणी मे नौ [illegible] वासुदेव/बलदेव हुए थे, जैसे कि—

उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयसी तेयसी वच्चसी जससी छायसी कता सोमा सुभगा पियदसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगमा सव्व-जणणयण-कंता ओहबला अइबला महाबला अणिहया अपराइया सत्तुमद्दणा रिपुसहस्स-माण-महणा साणुक्कोसा अमच्छरा अचवला अचडा मिय - मजुल - पलाव - हसिया गभीर - मधुर - पडिपुण्ण - सच्च-वयणा अब्भुवगय - वच्छला सरण्णा लक्खणवजण - गुणोव-वेया माणुम्माण - पमाणपडि-पुण्ण - सुजात - सव्वग - सु दरगा ससिमोमागार-कतपिय - दसणा अमसणा पयडदडप्पयार-गभीर-दरिसणिज्जा तालद्ध-ओव्विद्ध-गरुल-केऊ महाधणुविकड्ढगा महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्ध - कित्तिपुरिसा विउलकुल-समुब्भवा महारयण-विहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुल - वस - तिलया अजिया अजियरहा हल - मुसलकणग-पाणी सख-चक्क-गय-सत्तिनद-गधरा पवरुज्जल-सुक्कतविमल-गोयुभ - तिरीडधारी कु डल-उज्जोइयाणणा पु डरीय-णयणा एकावलि-कठलइयवच्छा सिरि-वच्छ-सुलछणा-वरजसा सव्वो-उय-सुरभि-कुसुम-सुरइत-पलव-

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रधान पुरुष, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी, छायावन्त, कान्त, सोम, सुभग, प्रियदर्शन, सुरूप, सुख, शील, सुखाभिगम, सर्वजन-नयन-कान्त, ओघ बल वाले, अति वल वाले, महाबल वाले, अनिहत, अपराजित, शत्रु का मर्दन करने वाले, हजारो शत्रुओ के मान को मथने वाले, सानुक्रोश/दयालु, अमत्सर, अचपल, अचड/मृदु, मित-मजुल वार्तालाप करने वाले, हसने वाले, गम्भीर, मधुर, प्रतिपूर्ण सत्य-वचन बोलने वाले, अतिथि-वत्सल, शरण्य, लक्षण-व्यञ्जन और गुणो मे उपेत, मान-उन्मान और प्रमाण से प्रतिपूर्ण सुजात सर्वाङ्ग सुन्दर अग वाले, चन्द्रवत् सौम्याकार, कान्त और प्रियदर्शन वाले, अमर्पण, प्रकाड दडनीति वाले, गम्भीर दर्शनीय, तालध्वज वाले तथा उच्छ्रित-गरुडध्वज वाले, वडे-वडे धनुप चढाने वाले, महासत्वसागर, दुर्धर, धनुर्धर, धीरपुरुप और युद्ध मे कीर्तिपुरुप, विपुलकुल मे समुत्पन्न, महारत्न/वज्र के विघटक, अर्ध भरत के स्वामी, सोम, राज-कुलवश-तिलक, अजित, अजेय रथ वाले, हल-मूशल तथा कणक/वाण, शख, चक्र, गदा, शक्ति और नदक धारी, प्रवर-उज्ज्वल-शुक्लात और निर्मल कौस्तुभ किरीटधारी कु डलो मे उद्योतित, पु डरीक,

सोमतकत-विक्सत- चित्त - वर-मालरइय - वच्छा अट्ठसय-विभत्त-लक्खण - पसत्थ - सुन्दर-विरइयगमगा मत्तगयवरिंद-ललिय - विक्कम - विलसियगई सारय - नवथणियमधुर - गभीर-कोंच-निग्घोस-दु दुभिसरा कडि-सुत्तग-नीलपीय - कोसेयवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुयवसभ-कप्पा अब्भहिय राय - तेय-लच्छीए दिप्पमाणा नीलग-पीतग - वसणा दुवे - दुवे राम-केसवा भायरो होत्था, त जहा—

कमल-नयन वाले, एकावली हार कण्ठ शोभित वक्ष वाले, श्रीवत्स चिह्न वाले, यशस्वी, सब ऋतुओ के सुरभि-कुसुमो से सुरचित, प्रलम्ब, शोभायमान, कमनीय, विकम्वर, विचित्र वर्ण वाली उत्तम माला से शोभित वक्ष वाले, पृथक्-पृथक् एक सौ आठ लक्षणो से प्रशस्त और सुन्दर अगोपाग वाले, मत्त गजवरेन्द्र की ललित विक्रम-विलसित जैसी गति वाले शरद ऋतु के नव स्तनित, मधुर, गम्भीर क्रौंचपक्षी के निर्घोष तथा दु दुभि स्वरवाले, कटिसूत्र तथा नील और पीत कौशेय वस्त्रो से प्रवर-दीप्त तेज वाले, नरसिंह, नरपति, नरेन्द्र, नरवृषभ, मरुदेश के वृषभ तुल्य, अत्यधिक राज्य-तेज की लक्ष्मी से देदीप्यमान नील और पीत वस्त्र वाले दो-दो राम (बलराम) और केशव (वासुदेव) भाई थे, जैसे कि—

१ तिविट्ठू य दुविट्ठू य,
सयभू पुरिसुत्तमे ।
पुरिससीहे तह पुरिस-
पु डरीए,
दत्ते नारायणे कण्हे ॥

त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ठ, स्वयभू, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुरुषपु डरीक, दत्त नारायण और कृष्ण [—ये नौ वासुदेव थे ।]

२ अयले विजए भद्दे,
सुप्पहे य सुदसणे ।
आणदे णदणे पउमे,
रामे यावि अपच्छिमे ॥

अचल, विजय, भद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, आनन्द, नन्दन, पद्म और राम [—ये नौ बलदेव थे ।]

१०४ एतेसि ण नवण्ह बलदेव-वासु-

१०४ इन नौ बलदेवो और ... [illegible]

देवाण पुव्वभविया नव-नव नामधेज्जा होत्था, त जहा—

के पूर्वभव के नौ-नौ नाम थे, जैसे कि—

१. विस्सभूई पव्वयए,
धणरत्त समुद्ददत्त सेवाले।
पियमित्त ललियमित्ते,
पुणव्वसू गगदत्ते य ॥

१ विश्वभूति, २ पर्वतक, ३ धनदत्त, ४ समुद्रदत्त, ५ शैवाल, ६ प्रियमित्र, ७ ललितमित्र, ८ पुनर्वसु, ९ गगदत्त।

२. एयाइ नामाइ,
पुव्वभवे ग्रासि वासुदेवाण।
एत्तो बलदेवाण,
जहक्कम कित्तइस्सामि ॥

ये नाम वासुदेवो के पूर्वभव के थे। बलदेवो के नाम यथाक्रम कहूँगा—

३ विसनदी सुबधू य,
सागरदत्ते ग्रसोगललिए य।
वाराह धम्मसेणे,
ग्रपराइय रायललिए य ॥

१ विपनन्दी, २ सुबन्धु, ३ सागरदत्त, ४ ग्रशोक, ५ ललित, ६ वाराह, ७ धर्मसेन, ८ ग्रपराजित, ९ राजललित।

१०५. एतेसि ण नवण्ह वासुदेवाण पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था, त जहा—

१०५ इन नौ वासुदेवो के पूर्वभविक नौ धर्माचार्य थे, जैसे कि—

१. सभूत सुभद्दे सुदसणे,
य सेयसे कण्हं गगदत्ते य।
सागरसमुद्दनामे,
दुमसेणे य णवमए ॥

१ सभूत, २ सुभद्र, ३ सुदर्शन, ४ श्रेयास, ५ कृष्ण, ६ गगदत्त, ७ सागर, ८ समुद्र, ९ द्रुमसेन।

२. एते धम्मायरिया,
कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण।
पुव्वभवे ग्रासिण्ह,
जत्थ निदाणाइ कासीय ॥

ये नौ धर्माचार्य कीर्तिपुरुष वासुदेवो के थे।
इन [वासुदेवो] ने पूर्वभव मे निदान किया।

१०६. एतेसि ण नवण्ह वासुदेवाण पुव्वभवे नव निदाणभूमिग्रो होत्था, त जहा—

१०६ इन नौ वासुदेवो के पूर्वभव मे नौ निदान-भूमियाँ थी, जैसे कि—

१. महुरा य कणगवत्थू,
सावत्थी पोयण च
रायगिह।

१ मथुरा, २ कनकवस्तु, ३ श्रावस्ती, ४ पोतनपुर, ५ राजगृह, ६ काकन्दी, ७ कौशाबी,

कायदी कोसबी,
मिहिलपुरी हत्यिणपुर च ॥

८ मिथिलापुरी और ९ हस्तिनापुर ।

१०७ एतेसि ण नवण्हं वासुदेवाण नव नियाणकारणा होत्या, त जहा—

१०७ इन नौ वासुदेवो के निदान करने के नौ कारण थे, जैसे कि—

१ गावो जुवे य सगामे,
इत्यी पराइयो रगे ।
भज्जाणुराग गोट्ठी,
परइड्ढी माउया इय ॥

१ गाय, २ द्यूत, ३ सग्राम, ४ स्त्री, ५ रण मे पराजय, ६ भार्यानुराग, ७ गोष्ठी, ८ पर-ऋद्धि, ९ माता ।

१०८. एएसि ण नवण्हं वासुदेवाण नव पडिसत्तू होत्या, त जहा—

१०८ इन नौ वासुदेवो के नौ प्रतिशत्रु थे । जैसे कि—

१ अस्सग्गीवे तारए,
मेरए महुकेढवे निसु भे य ।
बलि पहराए तह,
रावणे य नवमे जरासधे ॥

१ अश्वग्रीव, २ तारक, ३ मेरक, ४ मधुकैटभ, ५ निशु भ, ६ बलि, ७ प्रभराज, ८ रावण, ९ जरासघ ।

२. एए खलु पडिसत्तू,
कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वे वि चक्कजोही,
सव्वे वि हया सचक्केहिं ॥

ये कीर्तिपुरुष वासुदेवो के प्रतिशत्रु थे, सभी चक्र-योधी थे और सभी अपने ही चक्र से मारे गए ।

१०९ १ एक्को य सत्तमाए,
पच य छट्ठीए पचमा एक्को ।
एक्को य चउत्थीए,
कण्हो पुण तच्चपुढवीए ॥

१०९ मरणोपरान्त एक [वासुदेव] सातवी पृथ्वी मे, पाच छट्ठी पृथ्वी मे, एक पाचवी पृथ्वी मे, एक चौथी पृथ्वी मे और कृष्ण तीसरी पृथ्वी मे गए ।

२ अनिदाणकडा रामा,
सव्वेवि य केसवा
नियाणकडा ।
उड्ढगामी रामा,
केसव सव्वे अहोगामी ॥

सभी राम/बलदेव अनिदानकृत होते है, सभी केशव/वासुदेव निदानकृत होते है, सभी राम ऊर्ध्वगामी होते है और सभी केशव अधोगामी होते है ।

३. अट्ठंतकडा रामा,
एगो पुण बम्भलोयकप्पंमि ।
एक्का से गब्भवसही,
सिज्झिस्सइ आगमेस्साण ।।

आठ राम/बलदेव अन्तकृत हुए और एक [बलभद्र] ब्रह्मलोक कल्प मे उत्पन्न हुआ । वह भविष्य मे एक गर्भवास करेगा और सिद्ध होगा ।

११० जबुद्दीवे ण दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीस तित्थगरा होत्था, त जहा—

१. चदाणण सुचद च,
अग्गिसेण च नदिसेण च ।
इसिदिण्ण वयहारिं,
वदिमो सामचद च ।।
२. वदामि जुत्तिसेण,
अजियसेण तहेव सिवसेण ।
बुद्ध च देवसम्म,
सयय निक्खित्तसत्थ च ।।
३ असजल जिणवसह,
वदे य अणतय अमियणाणि ।
उवसत च धुयरय,
वदे खलु गुत्तिसेणं च ।।
४ अइपास च सुपासं,
देवसरवदिय च मरुदेव ।
णिव्वाणगय च धर,
खीणदुह सामकोट्ठ च ।।
५. जियरागमग्गिसेणं,
वदे खीणरयमग्गिउत्त च ।
वोक्कसियपेज्जदोसं च,
वारिसेण गय सिद्धि ।।

११० जम्बूद्वीप द्वीप के ऐरवत-वर्ष मे इस अवसर्पिणी मे चौबीस तीर्थंकर हुए थे । जैसे कि—

१ चन्द्रानन, २ सुचन्द्र, ३ अग्निषेण, ४ नदिषेण, ५ ऋषिदत्त, ६ व्रतधारी, ७ श्यामचन्द्र, ८ युक्तिषेण, ९ अजितसेन, १० शिवसेन ११ देवशर्मा, १२ निक्षिप्तशस्त्र, १३ असज्वल, १४ अनन्तक, १५ उपशान्त, १६ गुप्तिषेण, १७ अतिपार्श्व, १८ सुपार्श्व, १९ मरुदेव, २० धर, २१ श्यामकोष्ठ, २२ अग्निषेण, २३ अग्निपुत्र, २४ वारिषेण ।

१११ जंबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा भविस्सति, त जहा—

१११ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे आगामी उत्सर्पिणी मे सात कुलकर होगे । जैसे कि—

१ मित्तवाहणे सुभूमे य,
सुप्पहे य सयपहे ।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य,
आगमेस्साण होक्खति ॥

१ मित्रवाहन, २ सुभूम, ३ सुप्रभ, ४ स्वयप्रभ, ५ दत्त, ६ सूक्ष्म, ७ सुबन्धु ।

११२ जबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे आगमिस्साए ओसप्पिणीए दस कुलगरा भविस्सति, त जहा—

१ विमलवाहणे सीमकरे,
सीमधरे खेमकरे खेमधरे ।
दढधणू दसधणू,
सयधणू पडिसूई समूइत्ति ॥

११२ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे आगामी अवसर्पिणी मे दस कुलकर होंगे । जैसे कि—

१ विमलवाहन, २ सीमकर, ३ सीमधर, ४ क्षेमकर, ५ क्षेमधर, ६ दृढधनु, ७ दशधनु, ८ शतधनु, ९ प्रतिश्रुति, १० सन्मति ।

११३ जबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीस तित्थगरा भविस्सति, त जहा—

१ महापउमे सूरदेवे,
सुपासे य सयपहे ।
सव्वाणुभूई अरहा,
देवउत्ते य होक्खति ॥
२ उदए पेढालपुत्ते य,
पोट्टिले सतए ति य ।
मुणिसुव्वए य अरहा,
सव्वभावविउ जिणे ॥
३ अममे णिक्कसाए य,
निप्पुलाए य निम्ममे ।
चित्तउत्ते समाही य,
आगमिस्साए होक्खइ ॥
४ सवरे अणियट्टी य,
विजए विमलेति य ।
देवोववाए अरहा,
अणतविजए ति य ॥

११३ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे आगामी उत्सर्पिणी मे चौवीस तीर्थङ्कर होंगे । जैसे कि—

१ महापद्म, २ सूरदेव ३ सुपार्श्व, ४ स्वयप्रभ, ५ अर्हन् सर्वानुभूति, ६ देवपुत्र, ७ उदय, ८ पेढालपुत्र, ९ पोट्टिल, १० शतक, ११ अर्हन् मुनिसुव्रत १२ सर्वभावविद्, १३ अमम, १४ निष्कषाय, १५ निष्पुलाक, १६ निर्मम, १७ चित्रगुप्त, १८ समाधि, १९ संवर, २० अनिवृत्ति, २१ विजय, २२ विमल, २३ देवोपपात २४ अनन्तविजय ।

५. एए वुत्ता चउवीस,
भरहे वासम्मि केवली ।
आगमेस्साण होक्खति,
धम्मतित्थस्स देसगा ॥

ये चौवीस तीर्थङ्कर भविष्य मे भरतवर्ष मे धर्मतीर्थ के उपदेशक/प्रवर्तक होगे ।

११४. एतेसि ण चउवीसाए तित्थगराणं पुव्वभविया चउवीस नामधेज्जा भविस्सति, त जहा—

१. सेणिय सुपास उदए,
पोट्टिल अणगारे तह
दढाऊ य ।
कत्तिय संखे य तहा,
नद सुनदे सतए य बोद्धव्वा ॥

२. देवई च्चेव सच्चई,
तह वासुदेव बलदेवे ।
रोहिणी सुलसा चेव,
तत्तो खलु रेवई चेव ॥

३ तत्तो हवइ मिगाली,
बोद्धव्वे खलु तहा
भयाली य ।
दीवायणे य कण्हे,
तत्तो खलु नारए चेव ॥

४. अबडे दारुमडे य,
साईबुद्धे य होइ बोद्धव्वे ।
उस्सप्पिणी आगमेस्साए,
तित्थगराण तु पुव्वभवा ॥

११४ इन चौवीम तीर्थङ्करो के पूर्व-भविक नाम चौवीस थे, जैसे कि—

१ श्रेणिक, २ सुपार्श्व, ३ उदक, ४ अनगार पोट्टिल, ५ दृढायु, ६ कार्तिक, ७ शख, ८ नद, ९ सुनद, १० शतक, ११ देवकी, १२ सत्यकी, १३ वासुदेव, १४ बलदेव, १५ रोहिणी, १६. सुलसा, १७ रेवती, १८ मृगाली, १९ भयाली, २० कृष्णद्वीपायन, २१ नारद, २२ अम्बड, २३ दारुमड, २४ स्वातिवुद्ध ।

ये आगामी उत्सर्पिणी मे होने वाले तीर्थङ्करो के पूर्वभविक नाम है ।

११५. एतेसि णं चउवीसाए तित्थगराण चउवीस पियरो भविस्सति, चउवीस मायरो भविस्सति, चउवीस पढमसीसा भविस्सति, चउवीस पढमसिस्सिणीओ भविस्सति, चउवीस पढमभिक्खादा भविस्सति, चउवीस चेइयरुक्खा भविस्सति ।

११५ इन चौबीस तीर्थङ्करो के चौबीस पिता, चौबीस माताएँ, चौबीस प्रथम-शिष्य, चौबीस प्रथम-शिष्याएँ, चौबीस प्रथम-भिक्षा-दायक और चौबीस चैत्यवृक्ष होगे ।

११६ जंबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टी भविस्संति, त जहा—

१ भरहे य दीहदते,
गूढदते य सुद्धदते य ।
सिरिउत्ते सिरिभूई,
सिरिसोमे य सत्तमे ॥
२ पउमे य महापउमे,
विमलवाहणे विपुलवाहणे
चेव ।
रिट्ठे बारसमे वुत्ते,
आगमेसा भरहाहिवा ॥

११६ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे आगामी उत्सर्पिणी मे बारह चक्रवर्ती होंगे, जैसे कि—

१ भरत, २ दीर्घदन्त, ३ गूढदन्त, ४ शुद्धदन्त, ५ श्रीपुत्र, ६ श्रीभूति, ७ श्रीसोम, ८ पद्म, ९ महापद्म, १० विमलवाहन, ११ विपुलवाहन, १२ रिष्ट ।

११७. एतेसि ण बारसण्ह चक्कवट्टीण बारस पियरो भविस्सति, बारस मायरो भविस्सति, बारस इत्थी-रयणा भविस्सति ।

११७ इन बारह चक्रवर्तियो के बारह, पिता, बारह माताएँ और बारह स्त्रीरत्न होगे ।

११८ जंबुद्दीवे ण दीवे भरहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेवपियरो भवि-स्सति नव-वासुदेव-मायरो भविस्सति, नव बलदेव-मायरो भविस्सति, नव दसारमडला भविस्सति, त जहा—

११८ जम्बूद्वीप द्वीप के भरतवर्ष मे आगामी उत्सर्पिणी मे नौ बलदेव-वासुदेवो के नौ पिता, नौ वासुदेवो की नौ माताएँ, नौ बलदेवो की नौ माताएँ और नौ दशारमण्डल होंगे, जैसे कि—

उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयसी तेयसी एव सो चेव वण्णओ भणियव्वो जाव नीलग-पीतग-वसणा दुवे-दुवे राम-केसवा भायरो भवि-स्सति, त जहा —

उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, प्रधान-पुरुष, ओजस्वी, तेजस्वी, यावत् नील-पीत वस्त्र वाले दो-दो राम और केशव भाई होंगे, जैसे कि—

१ नदे य नदमित्ते,
दीहबाहू तहा महाबाहू ।

नद, नदमित्र, दीघबाहु महाबाहु अतिबल महाबल, बलभद्र, द्विपृष्ठ

अइबले महाबले,
बलभद्दे य सत्तमे ॥

२. दुविट्ठू य तिविट्ठू य,
आगमेसाण वण्हिणो ।
जयते विजय भद्दे,
सुप्पहे य सुदंसणे ।
आणदे नदणे पउमे,
सकरिसणे य अपच्छिमे ॥

और त्रिपृष्ठ—भविष्य मे ये नौ वासुदेव होगे ।

जयत, विजय, भद्र, सुप्रभ, सुदर्शन, आनन्द, नन्दन, पद्म और सकर्षण—ये नौ बलदेव होगे ।

११९. एएसि णं नवण्ह बलदेव-वासुदेवाण पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्सति, नव धम्मायरिया भविस्सति, नव नियाणभूमिओ भविस्सति, नव नियाणकारणा भविस्सति, नव पडिसत्तू भविस्सति, तं जहा—

१ तिलए य लोहजघे,
वरइजघे य केसरी पहराए ।
अपराइए य भीमे,
महाभीमे य सुग्गीवे ॥

२ एए खलु पडिसत्तू,
कित्तीपुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वेवि चक्कजोही,
हम्मिहिंति सचक्केहिं ॥

११९ इन नौ बलदेव-वासुदेवो के नौ-नौ पूर्वभविक नाम, नौ धर्माचार्य, नौ निदानभूमिया, नौ निदान-कारण और नौ प्रतिशत्रु होगे । जैसे कि—

१ तिलक, २ लोहजघ, ३ वज्र-जघ, ४ केसरी, ५ प्रभराज, ६ अपराजित, ७ भीम, ८ महाभीम, ९ सुग्रीव ।

ये कीर्तिपुरुष वासुदेवो के प्रति-शत्रु होगे, सभी चक्र-योधी होगे और सभी अपने ही चक्र से मारे जायेगे ।

१२०. जंबुदीवे ण दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीस तित्थगरा भविस्सति, त जहा—

१. सुमगले य सिद्धत्थे,
णिव्वाणे य महाजसे ।
धम्मज्झए य अरहा,
आगमिस्साण होक्खइ ॥

१२० जम्बूद्वीग द्वीप के ऐरवत वर्ष मे आगामी उत्सर्पिणी मे चौबीस तीर्थङ्कर होगे, जैसे कि—

१ सुमगल, २ सिद्धार्थ, ३ निर्वाण, ४ महायश, ५. धर्म-ध्वज, ६ श्रीचन्द्र, ७ पुष्पकेतु, ८ महाचन्द्र, ९ श्रुतसागर, १०

२ सिरीचंदे पुप्फकेऊ,
महाचंदे य केवली ।
सुयसागरे य अरहा,
आगमिस्साण होक्खइ ॥

३ सिद्धत्थे पुण्णघोसे य,
महाघोसे य केवली ।
सच्चसेणे य अरहा,
आगमिस्साण होक्खइ ॥

४ सूरसेणे य अरहा,
महासेणे य केवली ।
सव्वाणंदे य अरहा,
देवउत्ते य होक्खइ ॥

५ सुपासे सुव्वए अरहा,
अरहे य सुकोसले ।
अरहा अणंतविजए,
आगमिस्साण होक्खइ ॥

६ विमले उत्तरे अरहा,
अरहा य महाबले ।
देवाणंदे य अरहा,
आगमिस्साण होक्खइ ॥

७ एए वुत्ता चउव्वीसं,
एरवयम्मि केवली ।
आगमिस्साण होक्खंति,
धम्मतित्थस्स देसगा ॥

१२१ बारस चक्कवट्टी भविस्सति, बारस चक्कवट्टीपियरो भविस्संति, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति ।

नव बलदेव - वासुदेवपियरो भविस्संति, नव वासुदेव-मायरो भविस्संति, नव दसार-मंडला

पुण्यघोष, ११ महाघोष, १२ सत्यसेन, १३ शूरसेन, १४ महासेन, १५ सर्वानन्द, १६ देवपुत्र, १७ सुपार्श्व, १८ सुव्रत, १९ सुकौशल, २० अनन्तविजय, २१ विमल, २२ उत्तर, २३ महाबल और २४ देवानन्द ।

ये चौबीस तीर्थङ्कर आगामी उत्सर्पिणी में ऐरवत वर्ष में धर्म-तीर्थ के देशक/प्रवर्तक होंगे ।

१२१ बारह चक्रवर्ती, उनके बारह पिता बारह माताएं और स्त्रीरत्न होंगे ।

भविस्सति, उत्तमपुरिसा मज्भिमपुरिसा पहाणपुरिसा जाव दुवे दुवे रामकेसवा भायरो भविस्सति, णव पडिसत्तू भविस्संति, नव पुव्वभवणामधेज्जा, णव धम्मायरिया, णव णियाणभूमिओ, णव णियाणकारणा, आयाए, एरवए आगमिस्साए भणियव्वा ।

दशारमण्डल होगे । उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुप, प्रधानपुरुष यावत् दो-दो राम और केशव भाई होगे । उनके नौ प्रनिशत्रु, पूर्वभव के नौ नाम, नौ धर्माचार्य, नौ निदान-भूमियाँ और नौ निदान-कारण होगे । ऐरवत मे आकर भविष्य मे मुक्त होंगे, यह वक्तव्य है ।

१२२. एव दोसुवि आगमिस्साए भणियव्वा ।

१२२ इसी प्रकार भविष्य मे दोनो [भरत और ऐरवत] मे यह वक्तव्य है ।

१२३. इच्चेय एवमाहिज्जति, त जहा—
कुलगरवसेति य, एव तित्थगरवंसेति य, चक्कवट्टिवसेति य दासारवसेति य, गणधरवसेति य, इसिवसेति य, जतिवसेति य, मुणिवसेति य, सुतेति वा, वा, सुतगेति वा, सुयसमासेति वा, सुयखधेति वा, समाएति वा सखेति वा।

समत्तमगमक्खाय अज्भयण ।

—त्ति बेमि ।

१२३ इस प्रकार यह ऐसे कहा गया है, जैसे कि—
कुलकरवश, तीर्थङ्करवश, चक्रवर्तीवश, दशारवश, गणधरवश, ऋषिवश, यतिवश, मुनिवश, श्रुत, श्रुताग, श्रुतसमास, श्रुतस्कन्ध, समवाय और सख्या ।

यह समस्त अग-आख्यात अध्ययन है ।

—ऐसा मै कहता हूँ ।

□□